तांत्रिक बहल

महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय



गृह-क्लेश
मुकदमेबाजी
असाध्य रोग
विवाह न होना
संतान न होना
व्यापार में हानि
सम्पत्ति विवाद
मानसिक तनाव
पारिवारिक कलह
प्रेम में असफलता
शत्रुओं की प्रबलता
ऊपरी हवाओं का प्रकोप
दाम्पत्य जीवन में अवरोध
और भी अनेकों जीवन के हर मोड़ पर हर समय काम आने वाले अद्भुत महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय



202

महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय

यह कलियुग नहीं कर युग है, क्योंकि यहां सिद्धांतों से नहीं प्रयोग करने पर सफलता मिलती है। मानव जीवन अदृश्य बाधाओं, गुप्त शक्तियों, ग्रह नक्षत्र के प्रभावों से घिरा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं, आपदाओं से मुक्ति चाहता है। इसके लिए वह तंत्र मार्ग की शरण में आता है। किसी तांत्रिक ने ठीक ही कहा है, जहां पर भौतिक विज्ञान की सीमाएं समाप्त हो जाती हैं, वहां से तंत्र विज्ञान प्रारम्भ होता है।

तंत्र एक चमत्कारी, स्वयंसिद्ध और रहस्यमयी विद्या है। इस संसार में ऐसे अनेक लोग हैं जो पहले तो टोने टोटकों और उपायों की हंसी उड़ाते हैं, तथा इसे अंधविश्वास कहते हैं, लेकिन कष्ट आने पर इन्हें ही तंत्र की शरण में जाते देखा जा सकता है।

तंत्र विज्ञान में मनुष्य की समस्याओं का निदान बेहद सरल रूप में है। अथर्ववेद में कुछ तांत्रिक प्रयोग हैं, जैसे—आयुवृद्धि, सर्वविषनाश, गर्भधारण, मृत्यु से रक्षा, शत्रुभय से सुरक्षा, पैतृक विकार से मुक्ति, केश वृद्धि, काम नियंत्रण, वशीकरण, उच्चाटन आदि। इसमें मन्त्र, तन्त्र और औषधियों से ही समस्याएं सुलझाई गयी हैं। अथर्ववेद में अनेक स्थानों पर तंत्रात्मक सूत्रों का उल्लेख किया गया है।

तंत्र विद्या में तो वह उपाय हैं जो असंभव कार्य को भी संभव बना देते हैं, आवश्यकता केवल योग्य तंत्र गुरु की है। **तांत्रिक बहल** जिनका नाम ही काफी है।

तांत्रिक बहल द्वारा प्रस्तुत एक ऐसी पुस्तक जो सब जैसी दीखने पर भी सबसे अलग है। इसमें केवल और केवल आपके हित पर ही ध्यान दिया गया है।

“सतयुग में मानव धर्म ही सर्वमान्य था, त्रेतायुग में शास्त्रों द्वारा अनुमोदित कर्म के द्वारा जन–कल्याण निहित था। द्वापर युग में वेद और शास्त्र द्वारा बतलाये गये कर्मों के लुप्त होने के कारण संहितायें प्रकाश में आयीं। कलियुग में केवल पापकर्म, अनाचार होने के कारण तंत्र विद्या का चलन प्रारम्भ हुआ। तंत्र बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय होने के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय है।

—तांत्रिक बहल
(तंत्र गुरु)”

महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय

(जीवन के हर मोड़ पर, जिन्दगी के हर समय काम आने वाले अद्‌भुत महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय)

प्रस्तुति एवं व्याख्या :

तांत्रिक बहल

(तंत्र के लिए समर्पित एक विश्वसनीय नाम)

प्रकाशक

रजत प्रकाशन

हमारे द्वारा प्रकाशित प्रेमचंद साहित्य

- मानसरोवर की श्रेष्ठ कहानियां
- मानसरोवर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां
- प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियां
- प्रेमचंद की विश्वप्रसिद्ध कहानियां
- प्रेमचंद की चुनिन्दा कहानियां
- प्रेमचंद की यादगार कहानियां
- प्रेमचंद की अनमोल कहानियां
- प्रेमचंद की मशहूर कहानियां
- प्रेमचंद की शिक्षाप्रद कहानियां
- प्रेमचंद की अमर कहानियां
- प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियां
- प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां
- मानसरोवर (आठ भागों में) (प्रति भाग)
- प्रेमाश्रम (सम्पूर्ण उपन्यास)
- रंगभूमि (सम्पूर्ण उपन्यास)
- कायाकल्प (सम्पूर्ण उपन्यास)
- कर्मभूमि (सम्पूर्ण उपन्यास)
- गोदान (सम्पूर्ण उपन्यास)
- गबन (सम्पूर्ण उपन्यास)
- अहंकार (सम्पूर्ण उपन्यास)
- सेवासदन (सम्पूर्ण उपन्यास)
- कफन (कहानी संकलन)
- संग्राम (नाटक)
- मनोरमा (सम्पूर्ण उपन्यास)
- प्रतिज्ञा (सम्पूर्ण उपन्यास)
- निर्मला (सम्पूर्ण उपन्यास)
- वरदान (सम्पूर्ण उपन्यास)

ISBN : 978-81-7718-371-9

पुस्तक : महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय

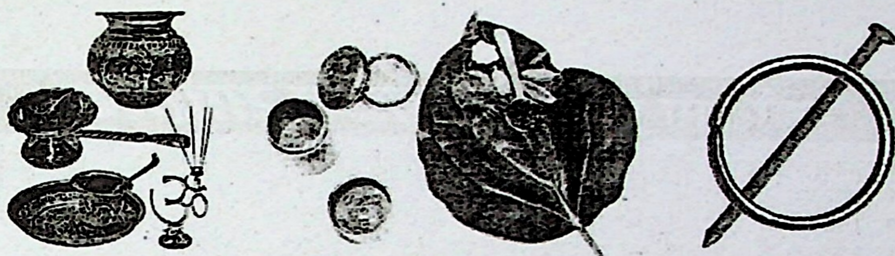
लेखक : तांत्रिक बहल

प्रकाशक : रजत प्रकाशन

ए-152, देवलोक कॉलोनी (स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स)
दिल्ली रोड, मेरठ-2 (उ०प्र०) Ph.:(0121)2529882, 3206684
Email : rajatprakashan@yahoo.co.in
rajatprakashan@gmail.com

शब्द संयोजन : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।

मुद्रक : न्यू ऋषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।



टोटके की शक्ति आपका विश्वास है !

यहां पर मुझे अपने साथी की एक बात याद आ रही है। मेरे मित्र ने मुझे बड़े ही मूड में आंखें नचाते हुए कहा था, आज के समय में तंत्र-मंत्र-यंत्र सबसे अधिक बिकने वाला विषय है। पहले तो मुझे उसकी बात बकवास लगी, पर बाद में उसकी बात एकदम सत्य लगी और मैंने उसकी बात मान ली। मैंने जब बाजार में तंत्र साहित्य की खोज की, तो अधिकांश पुस्तकें एक जैसी लगीं। उनमें कुछ भी नया नहीं था।

मेरी यह पुस्तक टोने-टोटकों पर आधारित है। बाजार भी टोने-टोटकों की पुस्तकों से भरा है, लेकिन इनमें से तांत्रिक द्वारा विरचित कितनी हैं? यह देखने का विषय है।

यह सत्य है कि भूत-प्रेतों की मान्यता के पीछे भय की भावना अधिक कार्य करती है। प्राचीन मानव ने भूतों से भयभीत होकर भूतों को शान्त करने की विधियों की खोज करी और उन्हें अपने धार्मिक ग्रन्थों में स्थान दिया। क्या भय से भूत को सत्य मानकर भूतों के अस्तित्व को नकारा जा सकता है? कदाचित नहीं। भूतों के अस्तित्व का संसार अदृश्य रूप में अनुभव होता है, जिसकी विज्ञान भी पुष्टि कर चुका है। भूत-प्रेत अन्तर्यामी होते हैं, जिनसे किसी प्रकार कुछ भी नहीं छिपाया जा सकता है। भूत-प्रेत बाधा पितृदोष आदि कारणों से भी होती है, अतः पितृऋण और पितृदोष दूर करने के उपाय भी किए जा सकते हैं, क्योंकि प्रायः देखा गया है कि आजकल के जनमानस में अनेक व्यक्ति किसी न किसी अदृश्य भूत-प्रेत की छाया से प्रभावित रहते हैं। आदमी जन्म से महान नहीं होता, परन्तु अदृश्य छाया के प्रभाव से वह जिस कार्य में भी हाथ डालता है, सफलता उसके चरण चूमती है, इसे पितृकृपा भी

कह सकते हैं। मनुष्य मनचाही उन्नति नहीं कर पाता है। प्रत्येक कार्य में विघ्न आते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति शोक संतृप्त और दुःखी रहते हैं। जितना कमाओ, उतना ही व्यय करो वाली कहावत जीवन में चरितार्थ होती है। साधारण रूप से जीवन व्यतीत होता है। लाभ के अवसर कम ही आते हैं। परिवार में सदैव अशान्ति का वातावरण बना रहता है। कोई भी नया कार्य प्रारम्भ करने से पहले घर में कलह हो जाती है। घर में असाधारण रूप से हानि होती रहती है। घर में रखी वस्तु का समय पर नहीं मिलना, भोजन करते समय अशान्त वातावरण रहना और किसी बाहरी व्यक्ति का अचानक आगमन आदि...यह सब कुछ प्रेत-बाधा के सामान्य कारण हैं।

तंत्र शास्त्र तथा गुरुत्वबोध से संपन्न महापुरुष यही बताते हैं कि न तो पृथ्वी आदि पंचभूतों का समुदाय है और न संसार की सृष्टि का कोई क्रम ही है। ये सबके तब मिथ्या हैं। इनसे संसार का भ्रम होता है। यह भ्रम ही वेदांत की भाषा में अज्ञान है। ज्ञान के द्वारा प्राप्त सत्य को परमात्मा तथा अज्ञान के सत्य को संसार कहते हैं। संसार में रहकर ही परमात्मा की प्राप्ति का प्रयत्न भी संभव हो पाता है। संसार ही वह स्थल है जहां गृहस्थाश्रम से लेकर वीतरागियों तक के आश्रम हैं अर्थात् उनके सान्निध्य के अवसर उपलब्ध हैं। सारा भौतिक ज्ञान, विज्ञान और उद्योग इसी के आंगन का शृंगार है। इसलिए हमें इस संसार में कुशलतापूर्वक जीने की कला जो सिखाता है, वह ही हमारा गुरु है और जो ज्ञान नाविक की भांति हमें भवसागर से पार कराता है, वह है आध्यात्म। नाविक वही कुशल होता है जिसे जल की गहराई, दोनों छोरों की दूरी के ज्ञान के साथ विपरीत परिस्थितियों में संयम बनाए रखने की क्षमता के साथ आपातकाल में तैरकर नदी पार करना भी आता हो। तंत्र शास्त्र गहन शास्त्र है। तांत्रिक इस शास्त्र को जानता है, इसलिए वह नाविक अथवा गुरु है।

देखो, यह बात तो प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि अग्नि में कुछ भी डालो, कितना ही डालो, वह जलकर स्वाहा हो जाता है और अग्नि पवित्र बनी रहती है। वह गर्मी देती है, उसकी लपट सदैव ऊपर की ओर जाती है। वह तपाती है, निखारती है, प्रकाश देती है और ऊंचाइयों की ओर अग्रसर होती है।

तंत्र शास्त्र भी अग्नि की तरह ही है। जीवन की जितनी भी बुराइयां हैं, सब उसमें जलकर भस्म हो जाती हैं। जिस प्रकार से अग्नि में तप कर सोने से कुंदन निकलता है, सारे विकार जल जाते हैं, ठीक उसी प्रकार तंत्र ज्ञान की अग्नि से जीवन भी कुंदन बनता है। आप बहुत शांत हो जाएंगे। अधिक बात और बलपूर्वक बोलने का मन ही नहीं करेगा। देखो, अगर अधिक बात

करने को मन करता है, व्यर्थ की बातें मन में आती हैं, मन भटकाव की ओर ले जाता है तो इसका अर्थ है कि कहीं हम निर्बल हैं। साधना अभी परिपक्व नहीं हुई है। तंत्र ज्ञान आपको कभी ऐसे कार्य की ओर नहीं ले जाएगा, जिससे कि आपको नीचा देखना पड़े। इसलिए जब भी और जहां भी समय मिले, साधना करें। गंगा किनारे या पर्वतों की शृंखलाओं में। ऐसी पवित्र जगहों में किया हुआ कोई भी कार्य कई गुना होकर फलित होता है, जिस प्रकार से पहाड़ों में ध्वनि प्रतिध्वनित होकर कई गुना होकर वह अधिक बल के साथ वापस आती है।

ठीक उसी प्रकार से तीर्थ स्थानों पर किया हुआ कोई कर्म भी प्रतिफलित होता है, चाहे वह बुरा हो या अच्छा हो। हमें वापस मिलता है। साधना से शांति का अनुभव होता है। मध्य में देखते रहें कि कहीं साधना हम से छूट तो नहीं गयी है। कहीं मन संकल्प विकल्पों के जाल में उलझ तो नहीं गया?

उपासना के दो मार्ग हैं—वेद और तंत्र। वैदिक उपासना पद्धति में शक्ति सौम्यरूपा, करुणामयी और मद्य, मांस बलिदानादि से दूर है, जबकि तांत्रिक परम्परा में वह उग्ररूपा तथा मद्य, मांस, बलिदानादि में लगी है। वैदिक पद्धति में गायत्री पुरश्चरण के साथ साथ विद्युत सूक्त का पाठ करते हुए ब्रह्म की खोज करने वाले साधक को कहते हैं "वेदोचारी"।

शाक्त धर्म के अनुसार तीन "भाव" और सात "आधार" होते हैं, जिन्हें दिव्य, वीर तथा पशुभाव एवं वेद, वैष्णव, शैव, दक्षिण, वाम, सिद्धांत एवं कौलाचार कहते हैं। "भाव" का तात्पर्य होता है मानसिक विचार एवं तद्नुसार आचरण "आधार" कहलाता है। इन साधना पथों पर तंत्र गुरु स्वयं शिष्य की प्रतिभा, क्षमता, धैर्य एवं वैराग्य देखते हुए विशेष आचार पद्धति पर दीक्षित करते हैं, क्योंकि भाव और आचार पद्धतियों के अनुसार साधना में भी महान अंतर होता है। उदाहरणार्य, पशुभावी साधक रात्रि में उपासना नहीं करते, जबकि दिव्य एवं वीरभावियों की साधनाएं रात्रि में हुआ करती हैं। शक्ति सिद्धांत के अनुसार उपरोक्त देव, वैष्णव, शैव तथा दक्षिण—ये चार आधार पशुभाव एवं प्रकृतिमार्गियों के लिए हैं और वाम सिद्धांत तथा कौलाचार वीर तथा दिव्य भावी निवृत्ति मार्गियों के लिए। इस प्रकार उभय मार्गियों के लिए साधना पद्धतियों का विभाजन पुरातन मनीषियों द्वारा किया गया था।

वर्तमान समय में तंत्र साधनाओं में सर्वाधिक प्रचलित परंपरा है वामाचार की। इन्हीं को दक्षिण एवं वाममार्ग भी कहते हैं। सामान्यतः लोग, जो तंत्र के वास्तविक कार्य से परिचित नहीं हैं, वे दक्षिण और वाम शंब्द का अर्थ लगाते

हैं सीधा और उलटा। सीधा अर्थात् सहज साधना एवं उलटा अर्थात् जहां मद्य, मांस, बलिदानादि का प्रयोग होता है।

तंत्र मार्ग में सर्वाधिक महत्व गुरु का होता है। उसके पश्चात् साधक का और अंत में भैरवी का होता है। भैरवी कैसी? यह आप अवश्य जानना चाहेंगे। मैं किसी अन्य को तो नहीं जानता, हां, भैरवी मिन्ही को अवश्य जानता हूं। मैं जब साधना हेतु उत्तराखण्ड में भटक रहा था तो एक दिन जब मैं भूख की ज्वाला से पीड़ित मौन लेटा हुआ सूर्योदय की प्रतीक्षा बेचैनी से कर रहा था, कि कुछ अद्‌भुत सा सुनाई पड़ा। एक महिला मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रही थी। अभी तक मैं आंखें बंद कर कुछ सोच रहा था, उसकी पुकार को सुन मैंने नेत्र खोले और ध्यान से देखने लगा, वाह! चमकीले लाल वस्त्रों से सुशोभित एक नवयुवती मेरे सम्मुख ही खड़ी थी। उसके हाथों में एक थाली थी। उसकी आकृति अत्यन्त सुन्दर थी, शुद्ध केसर मिश्रित दूध सा गोरा रंग, काले बादलों जैसी लहराती घनी खुली केशराशि व लम्बी गर्दन में सफेद गुलाब के पुष्पों की माला—लगा जैसे उसके रोम-रोम से प्रकाश फूट कर पूरे स्थान को आलोकित कर रहा है। मैंने नेत्र बंद कर लिये। स्निग्ध प्रकाश होने पर भी वह इतना तीव्र था, कि दूसरी बार देखने का साहस ही नहीं हुआ। पूरा वातावरण मनमोहक सुगन्ध से भर उठा था। इसी अवस्था में, मैं उस देव स्त्री के साथ अत्यन्त अन्तरंगता से बात करने लगा, मानो मैं जन्म जन्मान्तर से उनका परिचित हूं। तभी दूसरा आश्चर्य यह हुआ, कि नेत्र बंद करने पर ऐसा अनुभव हुआ, जैसे वह प्रकाश अपने भीतर से बाहर फूट रहा हो। उस स्त्री ने मुझे पुकार कर अत्यन्त स्नेहपूर्ण स्वर में कहा—''झरने में स्नान नहीं करोगे, विलम्ब हो रहा है।''

अब मैंने हाथ की अंगुलियों की दरार से थोड़ा सा नेत्र खोल कर देखा—वह थाली में खिले खिले फूल चुन रही थी। उस निर्जन स्थान पर अनेक प्रकार के फूलों के पौधे लगे हुए थे, उन्हीं में से वह फूल चुनकर थाली में सजा रही थी। प्रेम की साकार प्रतिमा ने पुनः कहा—''चलो! स्नान कर लो।''

झरने के निकट ही श्मशान था, वहीं जाकर वह रुक गयी। उसकी आंखों में असीम प्रेम का निर्झर प्रवाहित हो रहा था, मेरे मस्तक पर अपना दाहिना हाथ रख कर वे बोलीं—''घर लौट जाओ। मैं तुम्हारे घर में स्थायी रूप से रहूंगी। तुम्हारी अत्यन्त उच्चस्तरीय तंत्र-मंत्र शिक्षा के कारण ही मुझे यहां आने को बाध्य होना पड़ा, पर स्थायी रूप से मुझसे व्यवहार करने के लिए तंत्र साधना के पथ पर और अग्रसर होना आवश्यक है। इसके लिए गुरुकृपा ही एकमात्र मार्ग है, उनकी कृपा के बिना पूर्णत्व के पथ पर कुछ भी लाभ की संभावना

नहीं। सत्य दर्शन होने पर भी जिसके द्वारा जीवन का वास्तविक रूपान्तर न हो, वह दर्शन नहीं। इसी प्रकार की व्याकुलता और प्रेम जब गुरु चरणों के प्रति उपजेगा, तभी तुम वास्तविक, अत्यन्त जाज्वल्यमान तंत्र मार्ग का लाभ प्राप्त कर सकोगे, अभी केवल शिशु के समान उनका हाथ पकड़े रहो।''

इतना कह उसका हाथ अभय मुद्रा में उठ गया। हाथ का उठना था, कि मेरे नेत्रों के समक्ष दिव्य प्रकाश, जो अत्यन्त शीतल था, जगमगा उठा और उसी के मध्य मैंने देखा—परम आराध्य गुरुदेव को।

ऋग्वेद में कहा गया है ''येज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम् आदित्यासो भवता मृडयंतः'' जिसका भाव यह है कि पांच यज्ञों—जीवन यज्ञ, परिवार यज्ञ, समाज यज्ञ, राष्ट्र यज्ञ और विश्व यज्ञ का संचालन जब देवों के हाथ में होता है तो संसार में सुख की व्याप्ति होती है और जब इनका संचालन असुरों के हाथ में होता है तो संसार में दुःख व्याप्त हो जाता है। सुमति सुख को देने वाली और कुमति दुःख लाने वाली होती है। जीवन को सुखी बनाने के लिए विद्या से वह ज्ञान की ज्योति जाग्रत कर अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को निर्धारित कर सकते हैं। विद्या से विवेक को जाग्रत कर सत्कर्म के द्वारा अमरता की ओर अग्रसर होते हैं। जीवन को सुखी बनाने के लिए चारित्रिक गुणों का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। इनमें स्वावलंबन की भावना महत्त्वपूर्ण है।

स्वावलंबन जाग्रत होने पर मनुष्य की इच्छाशक्ति और मनोबल दृढ़ हो जाते हैं। जीवन को सुखमय बनाने के लिए सदाचार आवश्यक है। सदाचारी होने पर मनुष्य का चरित्र उन्नत होता है व आत्मबल एवं मनोबल आने पर स्वाभिमान, महत्त्वाकांक्षा, उदारता आदि गुणों का समावेश होता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए सत्संगति और सन्मार्ग पर चलते हुए दुर्गुण, दुर्व्यसन और कुकर्मों से बचें। तांत्रिक के लिए तो यह बहुत आवश्यक है। तंत्र साधना से शक्ति प्राप्त होती है और शक्ति से गर्व, अहंकार आता है। अहंकार नाश का कारण बनता है।

मन को विचारों के संग्रह के आधार पर दो भागों में बांटा जाता है। एक भाग काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद से भरा रहता है। दूसरा भाग ज्ञान, विवेक, क्षमा, दया, अहिंसा आदि से भरा रहता है। मन पर नियंत्रण है तो अच्छे गुणों से उसे परिपूर्ण किया जा सकता है, अन्यथा वह दुर्गुणों से ही भरा रहेगा। भारत के महान तांत्रिकों ने जीवन के सच्चे दर्शन व अथाह दुखों को समझने के लिए विविध साधनाओं एवं मंत्रों की रचना की थी। सच्चा ज्ञान कैसे संभव है—यह दर्शनों का सार है। लगभग सभी दर्शनों में मन को बुद्धि के स्तर पर समझाने का प्रयत्न किया गया है। भारतीय षट्दर्शन में योग दर्शन ने ही प्रत्यक्ष प्रयोगों

के साथ शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार और अंत में आस्था को समझने का व्यावहारिक मार्ग बताया है। ज्ञान दो प्रकार के होते हैं—(1) आध्यात्मिक ज्ञान, (2) भौतिक ज्ञान। भौतिक ज्ञान का संचालन बुद्धि करती है, अतः बुद्धिजीवी को प्रयोग के माध्यम से आत्मतत्व का ज्ञान करना आवश्यक है। वे बुद्धि की कसरत करने में ही संलग्न रहते हैं और उनमें प्रत्यक्ष प्रयोगों का पूर्णतः अभाव रहता है। सामान्य बुद्धि वाले लोग अगर प्रयोगों के साथ सिद्धांतों को भी अपनाएंगे, तभी उपरोक्त दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो सकते हैं। चित्त जब मन या बुद्धि का आकार धारण करता है, तब विषय का ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से होता है, उसे भौतिक ज्ञान कहते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के समय इंद्रियों का अस्तित्व नहीं रहता तथा चित्त का कोई भी भाग कार्यरत नहीं होता है; तब जो ज्ञान होता है उसे आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है। यह आनंद रूप होता है। इसका वर्णन वाणी या लेखन से समझाना असंभव है। चित्त का एक स्तर मन है। यह विचारों का पुंज है। जब तक मन हमारे नियंत्रण में है, तब तक वह अपना मित्र है; और नियंत्रण से बाहर हो जाता है, तब वह शत्रु बन जाता है। मन को दो भागों में बांटा जा सकता है—चेतन मन और अवचेतन मन। चेतन मन हमारे अधिकांश कार्यों को नियंत्रित, प्रभावित या प्रेरित करता है, जबकि अवचेतन मन हमारे संस्कार, इच्छाओं, आकांक्षाओं, वासनाओं और भावी योजनाओं को संग्रहीत करता है।

अनंत जीवन का भी अंत होता है। शरीर के रोग एक समस्या है, लेकिन जहां शक्ति की साधना हो, वहां रोग या परेशानी सभी को झुकना होता है। क्या ईश्वर के पास किसी वस्तु की कमी है? नहीं। निवेदन कितना प्रबल है, मिलने की संभावना उस पर निर्भर करती है। विश्वास, आस्था, श्रद्धा ही इसकी मुख्य खुराक है। अगर ये सब आप में हैं तो फिर परेशानी हो या रोग, सभी आपसे दूर भागेंगे। मंत्र उपचार की शरण में आने वाला परेशानी अथवा रोगमुक्त अवश्य ही हो जाता है। तब उसके शरीर की भीतरी शक्ति को जांच कर, उसकी परेशानी को परख एवं समझकर मंत्र शक्ति का प्रयोग किया जाता है। मंत्र उपचार और ज्योतिष एक-दूसरे के पर्याय ही हैं। ज्योतिष से जहां संभावनाओं को खोजा जाता है, उनके समाधान ढूंढे जाते हैं, वहीं मंत्र हीलिंग से सभी समाधान किए जाते हैं। ठीक उसी तरह जैसे ईश्वर एक है, रूप अनेक हैं। सदैव स्मरण रखें : अपनी आस्था का केन्द्र न बदलें। अपने विश्वास को सदैव बनाए रखें। अपना इष्ट अवश्य जानें, अपनी साधना को सही रूप, सही आकार दें। मंत्र हीलिंग से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं—माइग्रेन, तनाव, अनिद्रा,

दमा, रक्त कड़िका, डिप्रेशन, ऊपरी हवा, पुराने दर्द एवं अन्य पारिवारिक परेशानियों में।

शक्तियों से भरा तांत्रिक तो ऐसे व्यक्तियों को पहचान सकता है, लेकिन एक साधारण व्यक्ति कैसे जाने? हमारे अनुभव के आधार पर कुछ प्रमुख लक्षण निम्न हैं—स्थिर भाव से एकटक किसी भी वस्तु को घूरते रहना। बात करते करते बार बार ऊपर देखना और ऊपर देखकर बात करना। आंखों की पुतलियों का स्थिर रहना। व्यक्ति या वस्तु को कुछ अजीब तरीके से घूरना। अचानक गंदगी पसंद या इसका उलटा अर्थात् अत्यधिक सुगंध पसंद करना। अधिक मात्रा में शराब, सिगरेट, मांसाहार आदि चीजों का शौकीन हो जाना। मध्य रात के पश्चात् शरीर में कुछ अजीब-सा लगना, अपने आप में कुछ परिवर्तन पाना, गुप्त अंगों पर भारीपन या जलन का लगना। अभिमंत्रित, मंत्रोपचारित वस्तु आपकी मदद कर सकती है। वह आपके लिए अति सूक्ष्म एक्स-रे मशीन का कार्य करती है। व्यक्ति आपके सामने हो या न हो, भविष्य की स्थिति तक की संपूर्ण जानकारी निकाली जा सकती है।

अगर जन्म है, मृत्यु है, आकाश है, पृथ्वी है, विज्ञान है, तो ये सब भी हैं। ज्योतिषी एवं आध्यात्मिक मंत्र साधक के लिए अनहोनी को होनी करना असंभव नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि धर्म या आध्यात्म की शक्ति सर्वोपरि है, जो अपने सही कर्म करवाती है। बिना धर्म तो कर्म अपूर्ण है। एक बार स्थितियों की गहराई तक पहुंचते ही कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र कुछ नहीं होता, किसी ने देखा है क्या? लेकिन देखा तो ईश्वर को भी नहीं है, परंतु उस पर भी सभी को अटूट श्रद्धा है। देखा तो हवा को भी किसी ने नहीं है, लेकिन अनुभव तो सभी करते हैं।

तंत्र की शक्ति भी अनुभव करने योग्य है। खेद की बात है कि तंत्र के जानकार तो बहुत हैं, पर उनमें वास्तविक कितने हैं? यह खोजने का विषय है। इसी प्रकार तंत्र मार्ग में चलने वाले बहुत हैं, पर सच्ची लगन किसमें है? यह खोज करनी होगी। तंत्र ज्ञान के साथ वास्तव में कुछ ऐसा हुआ—जानकार समाप्त हो गये, सीखने वाले धन के लालच में भटक गये और जो कुछ गुरु रह गये, उन्होंने देना नहीं चाहा। कुछ नये साधक कर ही नहीं पाए कुछ। या तो ज्ञान लुप्त हो गया, या वे तांत्रिक समाप्त हो गए। कुछ मर गए, कुछ को ज्ञान रहा नहीं और कुछ ऐसे तांत्रिक हो गए जो अपने शिष्यों को ज्ञान दे नहीं पाए। पहले मुख से देते थे ज्ञान, किताबों में होता ही नहीं था। आज मैंने 250 पुस्तकें तैयार कीं तो आप दो, पांच किताबें लेंगे...कि चलो कम से कम मेरे पास यह ज्ञान रह जायेगा। और उस समय ऐसे भी गुरु थे जो मरते

दम तक कहते रहते थे कि बिलकुल अंत में सिखाऊंगा यह साधना। अरे गुरुजी सिखा दो, न जाने आप कब समाप्त हो जाओगे।

वे कहते, नहीं पुत्र! अंत समय में सिखाऊंगा। उनको लालच यह कि सेवा कौन करेगा? सीखा, तो चला जाएगा। और शिष्य सोचता, यह सिखाता कुछ नहीं है, प्रतिदिन काम करवाता है, पर कुछ देता नहीं है। अब दोनों में आपस में द्वन्द्व चल रहा है। वह उसको बोल नहीं पा रहा है और मरते समय कहता है—राम राम जपना वत्स, और गर्दन टेढ़ी। सद्गुरु की प्राप्ति हो गई, तो आपको जीवन का अर्थ समझ में आयेगा, तब आपको गर्व होगा, कि आप एक सद्गुरु के शिष्य हैं, जिनके पास हजारों-हजारों साधनाओं का ज्ञान है। अगर व्यक्ति में तनिक भी समझदारी है, अगर उसमें समझदारी का एक क्षण भी है, तो पहले तो उसे यह विचार करना चाहिए, कि उसे ऐसा जीवन जीना ही नहीं है, जो मल-मूत्र से भरा है, क्योंकि ऐसे जीवन की कोई सार्थकता ही नहीं है और फिर उसे सद्गुरु को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, जो उसे शक्तिवान बना सके, जो उसके शरीर को सुगन्ध युक्त बना सके। अगर ऐसा नहीं किया, तो भी यह शरीर रोगग्रस्तता और वृद्धावस्था को ग्रहण करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो ही जायेगा। फिर वह क्षण कब जायेगा, जब आप शक्तिवान बन सकेंगे?

भारत को देवभूमि कहा गया है—क्योंकि यहां समय-समय पर देवताओं ने मानव-कल्याण के लिए अवतार लिया। यही वह पावन-भूमि है जहां मंत्रों के उच्चारण हमारे मन को बहुत शान्ति पहुंचाते हैं। परंतु फिर भी जब भी मंत्रों से संबंधित कभी बात उठती है तो मन में अजीब सा भय उत्पन्न होता है कि कहीं यह मंत्र व टोटके हमारे जीवन को कुछ का कुछ (अहित) न कर दें। मंत्रों और टोटकों के इसी भय एवं इनसे संबंधित अधूरी जानकारी और अंधविश्वास को आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से आपके सामने प्रस्तुत करने का एक माध्यम है मेरी यह पुस्तक।

कहते हैं कि टोटकों-टोनों में शक्ति होती है, लेकिन यह शक्ति कैसे काम करती है, किस क्षेत्र में, किस सीमा तक उपयोगी है, तथा मंत्रों टोटकों के प्रयोग से क्या क्या संभव है, इन्हीं सब को उजागर करती है यह पुस्तक! इसलिए क्या हैं मंत्र? कैसे, कब, क्यों व कहां करें इनका उपयोग? कैसे इनकी मदद से जीवन को लाभ प्रदान किया जा सकता है। जानिए इस पुस्तक में!

कहते हैं कि समय से पहले एवं भाग्य से अधिक कभी कुछ नहीं मिलता। इस परिवर्तनशील संसार में सब खेल समय का है। समय अच्छा है तो भाग्य भी साथ देता है। और समय के इसी बदलते तेवरों की जानकारी देता है

ज्योतिष। ज्योतिष के द्वारा हम समय के उतार-चढ़ाव, भाग्य आदि को जान सकते हैं। और मेरा यही प्रयास रहता है कि समय के इन्हीं बदलते तंत्र को मैं पुस्तक के माध्यम से पेश करूं। मेरी पुस्तक का विषय यही है कि कौन से उपाय व टोटके एवं रत्न आदि को अपनाएं। इन तमाम प्रश्नों को शांत करती है यह पुस्तक।

अगर मानसिक शांति और आध्यात्मिक विकास में मंत्रों और टोने-टोटकों का बहुत बड़ा हाथ है तो हमारे स्वास्थ्य रक्षा में भी बहुत योगदान है, इसलिए मंत्रशक्ति के साथ साथ मंत्रों में छिपी उपचार क्षमता को भी उजागर करना आवश्यक है। शास्त्रों में निहित मंत्रों द्वारा चिकित्सा की इस पद्धति को मंत्रोपचार कहा जाता है। यह कहां हैं? कैसे व किन रोगों पर कार्य करते हैं? किस सीमा तक कितने उपयोगी हैं? टोटका विधि तथा कैसे करें इनका उपयोग आदि जानकारियों को समेट लायी है यह पुस्तक।

टोटकों की शक्ति असीम है। मैं यहां कुछ टोटके, मंत्रों के साथ लिख रहा हूं।

मृत्युतुल्य रोगकारक कष्टों को दूर करने के लिए व रोगों से उत्पन्न शारीरिक कष्टों के निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने से आशा से अधिक कष्टों का निवारण होता है। वैसे तो सभी दिन जाप करने से लाभ मिलता है, परन्तु अगर महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर इस मंत्र का जाप किया जाये तो उसके परिणाम निराले व अत्यंत लाभकारी होते हैं। चूंकि ये एक पूर्ण सिद्ध मंत्र है, अतः इसका प्रभाव भी अचूक होता है। इस मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर उसे धारण करने से भी बहुत लाभ होता है। ये मंत्र है–

"ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योरर्मुक्षीय मामृतात्। स्व० भुवः भूः ॐ।"

अगर व्यापार या नौकरी में आपको पूरे परिश्रम के पश्चात् भी सफलता प्राप्त नहीं हो रही हो, बल्कि लाभ के स्थान पर हानि ही मिल रही हो तो गाय के शुद्ध घी से भगवान शिव को स्नान करायें और गाय के ताजे दूध में शहद मिलाकर शिवजी का भोग लगायें और स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें।

उत्तम, स्वस्थ, दीर्घायु, बुद्धिमान संतान की प्राप्ति हेतु पीपल की लकड़ी से भगवान शिव की प्रसन्नता प्राप्ति के लिये हवन करें व निम्न मंत्र का जाप करें–

"परिणोरुद्रस्य"

अगर सौन्दर्य व वैभव प्राप्त करना चाहते हैं तो भगवान भोलेनाथ को

ग्यारह बार जल व कच्चे दूध को मिलाकर स्नान करायें, ग्यारह गुलाब के फूल चढ़ायें, चंदन का तिलक लगायें व "ॐ नमो भगवते रुद्राय" मंत्र का जाप करें। इस विधि व मंत्र के साथ भगवान शिव की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति की आभा बढ़ती है व रूप, गुण, सौन्दर्य की प्राप्ति होती है।

इसके साथ ही अगर शुक्र ग्रह दोषपूर्ण हो तो माता पार्वती व भोलेनाथ की पूजा एक साथ करें व "श्री गोरी शंकराभ्याम् नमः" मंत्र का जाप करें।

शनिदेव अगर दोषपूर्ण हो और उन्हें आप प्रसन्न करना चाहते हैं तो जल में काले तिल मिलाकर भगवान शिव को स्नान कराएं, उनको वस्त्र पहनाएं व शिव सहस्त्र नाम का जाप करें। शनिदेव की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

राहु केतु अगर दोषपूर्ण हैं तो कच्चे कोयले को काले वस्त्र में लपेट कर बहते जल में प्रवाहित करें व भगवान शिव की पूजा करें। इससे सभी ग्रह तो शांत होते ही हैं, साथ ही भगवान शिव की प्रसन्नता व आशीर्वाद भी बना रहता है। इसके साथ साथ भगवान शिव की प्रसन्नता उन सभी को मिलती है जो कि सदैव भगवान गणेश व माता पार्वती का ध्यान करते हैं। गाय की सेवा करते हैं। अपाहिजों की सेवा करते हैं, चन्द्रमा की पूजा करते हैं, उन्हें मीठे जल से अर्घ्य देते हैं; भगवान राम, हनुमान, भैरव जी की पूजा करते हैं।

अनेक तांत्रिक व वैदिक मंत्रों के विद्यमान होते हुए भी टोने-टोटके शीघ्र व तात्कालिक चमत्कारी प्रभाव से विद्वत्समाज चमत्कृत है। सर्प-बिच्छू के झाड़े से लेकर भूत-प्रेत निकालने व हाजरात सिद्ध करने हेतु मंत्रों का ही प्रयोग होता है। ग्रामीण सभ्यता टोटकों से ही प्रभावित है। टोटकों की गुप्त शक्ति एवं इनकी उत्पत्ति का रहस्य विद्वानों के लिए आज भी शोध का विषय बना हुआ है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान शिव और पार्वती ने जिस समय अर्जुन के साथ किरात वेश में युद्ध किया था, उस समय पार्वती व शिव के मध्य आगम-चर्चा को लेकर आपसी प्रश्नोत्तर हुए। चूंकि तंत्र विद्या के आदि देव उस समय शबर वेष में थे तथा आद्यशक्ति पार्वती शबरी वेष में थीं, अतः उनके द्वारा प्रदत्त तांत्रिक मंत्र "शाबरी-मंत्र" कहलाने लगे।

विद्वानों के एक बहुत बड़े वर्ग की यह मान्यता है कि कलियुग के परम सिद्ध औघड़ तपस्वी महर्षि गुरु श्री मत्स्येन्द्रनाथ के समय से शाबर मंत्रों की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, क्योंकि वैदिककाल व पौराणिककाल में ऐसे मंत्रों की चर्चा नहीं मिलती। गुरु श्री मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गुरु गोरखनाथ सिद्ध योगी व चमत्कारी तांत्रिक के रूप में विश्वविख्यात हुए। गुरु गोरखनाथ ने जनहित में लोकभाषा में कुछ मंत्र बनाये। वे मंत्र आगे चलकर शाबर मंत्रों के नाम से

विख्यात हुए। आगमशास्त्रों में शाबर मंत्रों की सिद्धि देने वाले निम्न ग्यारह आचार्य माने गये हैं।

1. नागार्जुन, 2. जड़भरत, 3. हरिश्चन्द्र, 4. सत्यनाथ, 5. भीमनाथ, 6. गोरखनाथ, 7. चर्पटनाथ, 8. अवघटनाथ, 9. कन्यधारी, 10. जलन्धरनाथ, 11. मलयार्जुनाथ।

कालांतर में अनेक योगियों, यतियों व पीरों के नाम शाबर मंत्रों के साथ जुड़ते चले गये। कुछ भी हो, शाबर मंत्रों का अपना अलग अस्तित्व व इतिहास है, जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

यजुर्वेद व अथर्ववेद के कई काण्ड अनेक प्रकार के अभिचार, मारण, उच्चाटन, आकर्षण, विद्वेषण एवं चमत्कारिक मंत्रों से भरे पड़े हैं। हालांकि इन वैदिक मंत्रों की प्रभावोत्पादक शक्ति से इन्कार नहीं किया जा सकता, तथापि शाबर मंत्रों का अपना अलग वैशिष्ट्य व चमत्कार है।

प्रिय साधको! तंत्र का अभिन्न अंग टोना, टोटका और उपाय हैं। आपको किस समय, क्या टोटका करना है? इस बात का निर्णय तो तांत्रिक करेगा, पर किस प्रकार के लक्षण दीखने पर आपको तांत्रिक से परामर्श लेना चाहिए, वे लिख रहा हूं।

– सर्वप्रथम गुप्तांगों में विकृति आनी प्रारम्भ होगी।
– जातक को स्वप्नदोष का रोग होगा। जातक स्वप्न में किसी से सम्भोग करेगा। वीर्य स्खलित होगा, पर उसका दाग नहीं पड़ेगा।
– जातक मानसिक रूप से चिड़चिड़ा हो जायेगा। बात-बात पर लड़ने को दौड़ेगा। लड़ाई, मार-पीट की भाषा अधिक बोलेगा।
– ऐसा व्यक्ति भोग-विलास के समय अपने जीवन-साथी से नफरत करेगा। अगर स्त्री है तो अपने पति से झगड़ा करेगी। पति के प्रत्येक कार्य में असहयोग करेगी। पति को मारने दौड़ेगी। उसको अजनबी की दृष्टि से देखेगी।
– जब व्यक्ति अकारण असुन्दर होने लगता है, प्रति पल मोहित सा रहता है एवं सुगन्धित द्रव्यों को अधिक पसंद करता है, तो ये प्रेतदोष के लक्षण हैं।
– मध्य रात को भयावह स्वप्न आवें, स्वप्न में काले कपड़े वाला पुरुष या स्त्री दीखे तो, यह पिशाच-बाधा के लक्षण हैं।
– गर्भवती स्त्री का किसी भय से गर्भ गिर जाये एवं जच्चे-बच्चे की मृत्यु पिशाच बाधा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
– सुनसान स्थान में व्यक्ति भरी दोपहरी को अगर लघुशंका करता है,

अथवा शौचादि से निवृत होता है और उसके पश्चात् घर पहुंचते पहुंचते व्यक्ति की तबीयत खराब हो जाती है तो व्यक्ति प्रेतदोष से बाधित हो चुका है।

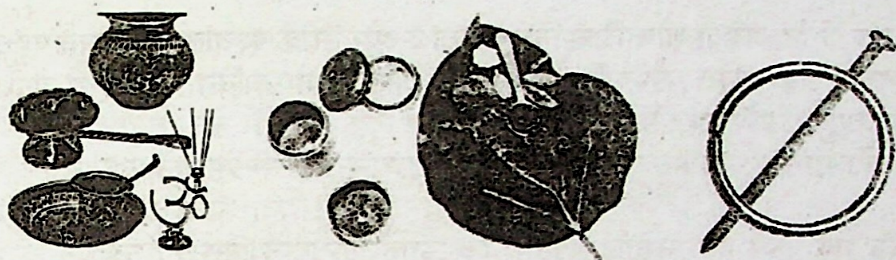
- सुनसान स्थान में, मध्यरात्रि को व्यक्ति किसी श्मशान, कब्रिस्तान, या किसी वृक्ष के नीचे लघुशंका करता है, अथवा शौचादि से निवृत होता है, और उसके पश्चात् घर पहुंचते पहुंचते व्यक्ति की तबीयत खराब हो जाती है तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति प्रेतबाधा से ग्रसित हो चुका है। माहवारी में काले रंग का खून गिरना प्रारम्भ होना भी बाधा के लक्षण हैं।
- श्मशान, कब्रिस्तान, कोई देवताओं के स्थान या किसी वृक्ष के नीचे रखा हुआ भोजन खाने के पश्चात् अगर तबीयत खराब होती है तो कोई अतृप्त आत्मा व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर चुकी है।
- किसी भी उग्रदेवता या बलिप्रसाद किसी व्यक्ति विशेष के कुलदेवता, कुलदेवी का बलिअन्न भूलकर भी ग्रहण न करना चाहिये, अन्यथा देवदोष एवं पितृदोष का भय रहता है।

प्रिय पाठको! इस जानकारी के साथ प्रस्तुत पुस्तक आपको अर्पण करता हूं। आशा है आप मेरी इस पुस्तक का स्वागत भी उसी प्रकार करेंगे जिस प्रकार पहले भी करते रहे हैं। आप इस बात को स्मरण रखें, यह तंत्र की पुस्तक है और स्थापित तांत्रिक द्वारा प्रस्तुत की गयी है।

आपका प्यार एवं प्रतिक्रियाएं मुझे पत्रों के रूप में मिलती रहती हैं। आप इसी प्रकार मुझसे रिश्ता बनाए रखें और मैं आपके लिए नये-नये विषय लाता रहूंगा। आपका पूरा जीवन आपके लिए मंगलकारी हो, इसी कामना के साथ आपका...

तांत्रिक बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधेपुरी, कृष्ण नगर
(जमुनापार) देहली-110051
www.tantrasabkeliyemission.webs.com
e-mail:- tantrik_bahl@yahoo.co.in





यह भी एक रही !

तंत्र मंत्र यंत्र विज्ञान है। तंत्र द्वारा हर समस्या का निदान सम्भव है। तंत्र द्वारा रोग निवारण भी सरलता से किया जा सकता है, यह बात लगभग सभी स्वीकार करते हैं। हमारे विद्वान साथियों ने तंत्र एवं ज्योतिष के उत्थान के लिये क्या नहीं किया! पर ऐसे विद्वान भी कम नहीं हैं, जिन्होंने बगैर समझे, देशकाल और परिस्थिति की आवश्यकता को पहचाने बिना, ऐसे टोटके (प्रयोग) लिख मारे, जिनका उपयोग करने पर अच्छा खासा व्यक्ति तमाशा और रोगी हास्य की तस्वीर बन जाता है। उदाहरण के लिये आप स्वयं देखें—

कौए की पूँछ में लगा सुनेहरी पंख लावें और उससे निम्न-निम्न कार्य लेवें। जरा उस विद्वान से पूछिए, क्या कौए के सुनेहरी पंख होता है? इसमें उस विद्वान का भी क्या दोष! उसने जैसा पुस्तक में पढ़ा, ठीक वैसा अनुभव बतलाकर लिख दिया। अब वह पंख मिलता है या नहीं, इससे उसे क्या लेना देना! लेख प्रकाशित हो गया और उन्हें मानसिक संतुष्टि प्राप्त हो गई।

एक उदाहरण और देखें—उक्त पौधे को लावें और उसको रोगी के मस्तक पर बांध देवें। तनिक कल्पना करें—एक पौधा सिर पर बंधा कैसा लगेगा? क्या आप बांध सकते हैं? यहां भी विद्वान का क्या दोष, उन्होंने तो जैसा पढ़ा था वैसा ही लिख मारा, समझने-सोचने का उनके पास समय ही कहां है?

अब आप यंत्र विज्ञान की स्थिति देखें। एक विद्वान लिखते हैं, निम्न यंत्र अमुक संख्या में लिखें और नदी में प्रवाहित कर दें। यंत्र के प्रभाव से संतान अवश्य होगी। वाह, क्या यंत्र है! इस यंत्र के द्वारा परिवार नियोजन भी हो सकता है। जब सन्तान चाहिए, यंत्र लिखें और जब नहीं चाहिए, यंत्र नहीं लिखें। यह यंत्र न हो गया जादू की छड़ी हो गयी। बस आप तो यंत्र लिख नदी में डालें।

हमारे एक विद्वान तो सबसे आगे निकल गये। उन्होंने किसी कार्य के

लिये आगन्तुक से सूअरी का दूध मंगवाया। यजमान पूरी निष्ठा के साथ सूअरी का दूध उपलब्ध कराने में जुट गया। बाद में पता चला कि सूअरी का दूध तो होता ही नहीं है। यजमान उस तांत्रिक महोदय की विद्वता को दूर से ही नमस्कार कर अन्यत्र चला गया।

आप यह स्मरण रखें, जब तक एक ही व्यक्ति विद्वान, डाक्टर, वैद्य, पंडित, ज्योतिषी, हस्तरेखा तांत्रिक, विशेषज्ञ, अंकशास्त्री सब कुछ होगा, तब तक यही कुछ होगा।

मेरे एक परिचित हैं, जब तक ज्योतिष का वातावरण गर्म था, वह ज्योतिषी रहे, पर जब तंत्र समाज में छाने लगा, तब वह तांत्रिक हो गये। अब वह, केवल तंत्र पर ही लिखते हैं। सम्भव है तांत्रिक बनने के पश्चात् धन्धा कुछ अधिक चमक गया होगा। जरा सोचें, अब वह विद्वान किसको धोखा दे रहे हैं—यजमान को या फिर स्वयं को?

हमारी प्राचीन विधाओं के साथ यह विडम्बना सदैव से ही रही है कि उनका अनुचित प्रयोग होता रहा है। हमारे विद्वान विद्या की कम, रोटी की चिन्ता अधिक करते हैं। मेरे एक मित्र हैं श्री 'क'। वह पहले ज्योतिषी बने, फिर तांत्रिक और अब वह सब कुछ हैं अर्थात् ज्योतिषी, हस्तरेखाविद्, तांत्रिक, समारोह के आयोजन कर्ता और न जाने क्या क्या!

प्रिय मित्रो! अब वह समय आ गया है, जब हमें अपनी पहचान एक दम साफ करनी होगी। रोजी-रोटी और पैसों के लिये सब कुछ और विद्वता के संदर्भ में कुछ नहीं। अगर हमने आज अपनी पहचान साफ नहीं की, कहने का उद्देश्य है कि आप डाक्टर, वैद्य, ज्योतिषी, तांत्रिक, हस्तरेखाविद्, अंकशास्त्री, समारोह कर्ता क्या हैं, तब एक दिन जनता प्रश्न करेगी और तब उत्तर देना भारी होगा।





दीपावली एक, टोटके अनेक

गुरु भक्ति के भी नौ सोपान कहे गये हैं—सत्संग, श्रद्धा, सेवा, कीर्तन, दृढ़ विश्वास, सत्कर्म, समभाव तथा निश्छलता। "पद्मपुराण" में एक आख्यान हैं : नारद जी ने भगवान से उनका निवास स्थान पूछा। उत्तर में उन्होंने कहा—हे नारद! न तो मैं वैकुण्ठ में वास करता हूं और न योगियों के हृदय में। मेरे भक्त जहां मेरा गुण-गान करते हैं, वहीं मैं रहता हूं।

आप अनुभव करें, किसी सद्गुरु के पास जायें तो आपको सुख मिलता है? जहां शास्त्रों में सुख-दुख का उपयोग हुआ है, वह आनंद के लिये हुआ है। जहां शास्त्रों में "सुख" शब्द का प्रयोग आया है, बहुधा आनंद के लिये आया है। मस्ती वह सुख नहीं है, जिसको हम सुख कहते हैं।

तो जब सद्गुरु के पास तुम जाते हो तो दुख तो नहीं मिलता, सुख भी नहीं मिलता है, तुम्हें शांति मिलती है। सुख तो तुम्हारे घर में है। सद्गुरु के पास क्या यह सुख मिलता है? सुख तो तुम्हारे प्रारब्ध में तुम लेकर आये हो। दुख भी लेकर आये हो। सद्गुरु केवल शांति देते हैं, आनंद देते हैं। तुम्हारी सुख और दुख की भ्रांतियां मिटा देते हैं, तीसरी वस्तु देकर कि देख, सत्संग में बैठने के पश्चात् कौन सी वस्तु बड़ी है?

किसी संत ने कहा था कि भाई देखो, आप गाड़ी चलाते हैं और गाड़ी मार्ग में बिगड़ गई और आपको मरम्मत करना आता है तो कर लो। लेकिन अगर आपको ठीक करना नहीं आये तो न करो। किसी मैकेनिक के पास ले जाओ। आप अगर ठीक कर पायें तो अच्छी बात है, लेकिन जीवन-गाड़ी को ठीक न कर पाओ तो सद्गुरु के समीप ले चलो उसको। वह तुम्हारा अधीरता का पहिया निकाल देगा और धीरता का पहिया लगा देगा। वह तुम्हारे जीवन-रथ को ठीक कर देगा। संदेह का रोड़ा प्रायः बिना सद्गुरु नहीं मिटता। सद्गुरु ही उसको मिटाता है।

यह अवरोध, यह रोड़ा दूर होगा नियमित सत्संग से, प्रतिदिन गुरु के समीप बैठने से, गुरु बिना अज्ञान कैसे दूर हो? इसलिए सद्गुरु के पास जाओ।

मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर गलतियों पर गलतियां करता जाता है। यही तो उसके दुःखों का कारण है। कभी यश के लिए, कभी संपत्ति के लिए और कभी सम्मान के लिए, तो कभी अन्य सांसारिक सुखों को प्राप्त करने के लिए अनेक तिकड़म करता हुआ वह जीवन जी रहा है। अंत में उसके हाथ शून्य ही शेष बचता है। मनुष्य की सबसे बड़ी भूल यह है कि वह इस शरीर को शाश्वत समझकर सजाता है और इसकी सुख-सुविधाओं के लिए तरह-तरह के उपक्रम करता है। वह यह भूल जाता है कि बुढ़ापा आने पर यह नष्ट हो जायेगा। उसकी दूसरी भूल धन संपत्ति बटोरने की होती है। इसके लिए वह कितने ही गलत कार्य करता है। अंत में यह सब भी साथ नहीं जाते। दूसरों को पीड़ा, देकर रिश्तों को बिगाड़कर वह अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने की भूल भी करता है। अंत में जब बात समझ में आती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

जब गुरु का शिष्य के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो वह धीरे-धीरे शिष्य के दोषों को दूर करता है। इस आन्तरिक प्रक्रिया को पूर्ण रूप से समझना कठिन है, क्योंकि गुरु-शिष्य सम्बन्ध आत्मिक स्तर पर होता है। गुरु सदैव अपने शिष्य का ख्याल करता है। कभी भूल ही नहीं सकता। जैसे ईसा ने कहा है—"लो, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं।" इस प्रकार गुरु-शिष्य का आन्तरिक सम्बन्ध कभी नहीं टूटता। दीक्षा का तात्पर्य गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा का संगम। गुरु का प्यार और शिष्य का आत्म-समर्पण, यह दीक्षा है। दीक्षा का अर्थ है गुरु द्वारा दान, शक्ति और ज्ञान का दान, शिष्य के अज्ञान और पाप का क्षय। क्योंकि जब तक पापों का मोचन और दोषों का शमन नहीं हो जाता, तब तक शिष्य में पूर्णता नहीं आ सकती। गुरु-मंत्र प्राप्त करना दीक्षा नहीं है, अपितु गुरु-प्रेम और गुरु-कृपा प्राप्त करना वास्तविक दीक्षा है। कान में मंत्र फूंकना, मंत्र को बार-बार बुलवाना दीक्षा नहीं है। यह ज्ञान नहीं है, जबकि दीक्षा का अर्थ ज्ञान (उपदेश) है।

गुरु के भीतर ऐसा क्या है जो इसे साधारण आदमी से अलग करता है? कौन झांकता है उसकी आंखों से जो हमें बस में कर लेता है? कौन छिपा है उसकी देह में जो उसके आकर्षण को कई गुना कर देता है? कौन विराजता है उसकी जिव्हा पर कि जब भी होंठ खोलता है तो अमृत बरसता है? क्या है गुरु में जो शिष्य को अपनी ओर खींच लेता है? क्या है गुरु में जिससे शिष्य

अलग होना भी चाहे तो वापस लौट-लौट आता है? कौन-सा आकर्षण, कौन-सा गुण, कौन-सा सम्मोहन है जो गुरु को गुरु बनाता है? वह कौन-सा ऐसा चुम्बक है जो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेता है?

वह है गुरु का ज्ञान, उसका अनुभव, उसका त्याग, उसकी तपस्या, उसका निश्छल प्रेम। गुरु वह शक्ति है जिसका दर्शन बंद आंखों से भी चारों प्रहर बना रहता है। गुरु वह है जिसके स्मरण मात्र से ही सभी दुखों से मुक्ति हो जाती है। जिसके अनछुए स्पर्श के सहारे हम भीतरी जगत की यात्रा पूरी कर लेते हैं। जिसके शब्दों से माधुर्य बरसता है और मौन में दिव्य शांति है, जिसके आगे मिटने को, झुकने को शिष्य तैयार है। गुरु वह है जो हमारी पल-पल खबर रखता है, जो हमारी चिंता करता है, हमें हमसे पार ले जाता है।

आज के मशीनी युग में व्यक्ति मानसिक तनाव का शिकार हो जाता है। मन कलुषित भावनाओं से भरने लगता है। आध्यात्मिक शक्ति कोसों दूर हो जाती है, तभी सच्चे गुरु की खोज उन्हें कभी-कभी गलत मार्ग की ओर ले जाती है। सही मार्गदर्शन न होने के कारण जीवन को नारकीय दिशा में चला देती है। केवल ललाट पर त्रिपुण्ड लागकर, रुद्राक्ष-स्फटिक के मनकों की माला पहन लेने या भगवे वस्त्र धारण कर लेने से कोई गुरु नहीं बन सकता, बल्कि गुरु की गरिमा पर गहरी चोट करते हैं। गुरु तो केवल देता है, वह अपने शिष्य की रक्षा ही नहीं करता, बल्कि उनकी हर समस्या का समाधान भी करता है। शास्त्रों के अनुसार गुरुओं के त्याग का उदाहरण तो मिलता ही रहा है, परन्तु भारतीय संस्कृति में ऐसे शिष्य भी हुए हैं, जिन्होंने अपने त्याग, परिश्रम और गुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम का समर्पण किया है।

शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य के तीन प्रत्यक्ष देव हैं—माता, पिता, गुरु। इन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उपाधि दी गई है। मां जन्म देती है, इसलिए ब्रह्मा है। पिता जीवन के पालनकर्ता हैं, इसीलिए विष्णु का रूप माने जाते हैं। गुरु व्यक्ति के जीवन के कुसंस्कारों को समाप्त करते हैं, इसीलिए वह महेश हैं। गुरु ही वह डोर है, जो आत्मा का परमात्मा से मिलान कराने में सक्षम है। जीवन के हर कार्य को सिखाने वाले मार्गदर्शक गुरु ही हैं।

जो मनुष्य गुरु को छोड़कर कुछ भी चाहता है तथा गुरु से कुछ भी मांगता है, वह गुरु के प्रेम का पात्र नहीं होता, अर्थात् उसको सद्गुरु भगवान का प्रेम नहीं मिलता। उसका कल्याण भी नहीं होता। गुरु शिष्यों को बिना चाहे और बिना मांगे ही देते रहते हैं और अनावश्यक वस्तु शिष्य के चाहने और मांगने पर भी नहीं देते। शिष्य को तो "स्व" में ही संतुष्ट रहना चाहिए। "स्व"

में संतुष्ट हुए बिना शिष्य न तो उदार हो सकता है और न प्रेमी हो सकता है। उदार हुए बिना संसार प्रसन्न नहीं होता है और प्रेमी हुए बिना भगवान प्रसन्न नहीं होते। उदार और प्रेमी से जगत और जगतपति, दोनों प्रसन्न रहते हैं। दोष और कामनायुक्त मनुष्य निर्भय और निश्चिंत नहीं रह सकता। दोषों के नाश होने पर भय मिटता है और कामना के नाश होने पर चिंता मिटती है। निर्भय और निश्चिंत होने पर ही ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। "स्व" में संतुष्टि कैसे हो? जो मनुष्य पराश्रय और प्रवृत्ति को पसंद करते हैं, वे "स्व" में संतुष्ट नहीं रह सकते। स्वाश्रय और निवृत्ति में ही जीवन है—जो ऐसा स्वीकार करते हैं, वे ही "स्व" में संतुष्ट रह सकते हैं। इसका मार्ग जानने के लिए शिष्य को सद्‌गुरु की शरण में आना ही होगा।

इसका सबसे उत्तम मार्ग नित्य साधना करना और सद्‌गुरु को अपने भीतर स्थापित करता है। संदेह का रोड़ा हटेगा सद्‌गुरुओं के पास जाने से। गुरु बिना अज्ञान कैसे मिटे? इसीलिए सद्‌गुरु के पास जाओ, नित्य साधना करो और स्वयं को सद्‌गुरु भगवान में समाहित कर दो।

गुरु का हृदय धरती की तरह विशाल है, कहीं कठोर तो कहीं संवेदनशील है। गुरु ज्ञान का भंडार है। गुरु अपने ज्ञान और अपने अनुभव को सौंपने की कला जानता है। गुरु के भीतर इस सृष्टि को बनाने वाले का वास है। गुरु एक पुल है परमात्मा और आत्मा के मध्य का। गुरु माध्यम है, जिसके सहारे परमात्मा उतरता है। गुरु आशा की किरण है, जिसके द्वारा शिष्य रहता है। गुरु का ही गुरुत्वाकर्षण जो शिष्य को गुरु से सदैव बांधे रखता है।

जिसने सब कुछ गुरु को ही मान लिया है, जिसकी पूजा, ध्यान, जप, तप सब गुरु ही बन गये हैं, जो सदैव गुरु-आज्ञा का पालन करने को तत्पर रहता है, उन्हीं की शरण को सर्वश्रेष्ठ मानता है, ऐसा शिष्य इस लोक को तो जीतता ही है, वरन् परलोक को भी जीत कर देवताओं द्वारा पूजित होता है।

एक शिष्य को गुरु के आश्रय में शिक्षा पाते-पाते काफी समय व्यतीत हो चुका था। कुछ दिन पश्चात् उसे घर जाना था। एक दिन संध्याकाल में जब वह अपने गुरु से पढ़कर उठा तो लगभग अंधेरा हो चुका था। उसे मंदिर जाना था। उसने सोचा कि अंधेरे में मंदिर की सीढ़ियां नहीं दिखेंगी, अतः गुरुदेव से दीपक मांग लिया जाए।

उसने गुरु से कहा—गुरुदेव! अंधेरे के कारण कुछ मार्ग नहीं दिखलाई दे रहा है। मैं मंदिर की सीढ़ियां नहीं चढ़ पाऊँगा। आप प्रकाश हेतु एक दीपक

दे दें। गुरु ने उसके हाथ पर एक दीपक रख दिया। किंतु जैसे ही शिष्य ने मंदिर की पहली सीढ़ी पर पैर रखा, गुरु ने दीपक बुझा दिया। शिष्य चकित होते हुए बोला, यह आपने क्या किया गुरुदेव? इस अंधकार में मैं अब कैसे आगे जा पाऊंगा?

तब गुरु ने उसे जीवन का अर्थ समझाया—जब एक सीढ़ी पर पैर रख दिया तो आगे भी सीढ़ियां मिलती चली जायेंगी। किसी अन्य के द्वारा प्रदत्त दीपक के सहारे जो प्रकाश मिलता है, उससे अपना अंधकार उत्तम है। अंधकार में स्वयं मार्ग खोजो। ऐसा करते-करते तुम्हारे भीतर एक नया दीपक जल उठेगा। अंधकार में गिरने से, टकराने से, असुविधाओं के मध्य से ही तुम्हारी आत्मा प्रकाशित होगी। इस दीपक के सहारे तुम गिरोगे तो नहीं, किंतु तुम्हारी आत्मा खो जायेगी। इसलिए मैंने तुम्हारे हाथ में रखा दीपक बुझा दिया।

यह सुनकर शिष्य के ज्ञान चक्षु खुल गये। वह भयरहित होकर अंधकार में आगे बढ़ता गया और अपने उद्देश्य तक पहुंच गया।

आज संसार में केवल भक्ति, भक्ति के नाम पर दिखावे की तथा भक्ति की आड़ लेकर स्वार्थसिद्धि की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है तो गुरु के प्रेमरस में डूब कर कुछ कर दिखाने की, समाज में गहराई तक बैठी पाखंड युक्त परंपराओं को तोड़ने की, शास्त्रों ने जिन मार्गों से जीवन में पूर्णता प्राप्त करने की बात कही है, उन मार्गों को जीवन में अपनाने की, क्योंकि केवल बलपूर्वक जय-जयकार करने से, भक्ति के प्रदर्शन करने से अथवा बड़े-बड़े तिलक लगाकर भिक्षा मांगने से ही श्रद्धा एवं प्रेम सिद्ध नहीं होता, यह तो एक विकृत अवस्था है। अब समय आ गया है जागने का, सद्गुरु को पहचानने का। अब यह कहना और सुनना पाप है कि सच्चे गुरु मिलते ही कहां हैं? आज यह पुस्तक आपकी खोज का अंत है, क्योंकि मुझे अगर सच्चे सद्गुरु मिले हैं तो आपको भी मिलेंगे। आवश्यकता केवल तपोभूमि तक पहुंचने की है। आप भी अपने जीवन में सद्गुरु तक पहुंच जायें, मैं सद्गुरु भगवान से ऐसी प्रार्थना करता हूं।

अगर आप पहले जीवन की हारी बाजी को पुनः जीतना चाहते हैं, आप निराशा और नीरसता के अंधेरे से बाहर निकलना चाहते हैं तो पढ़िए पुस्तक में लिखी बातों को और जीवन में उतारिए।

अंत में टोने-टोटके और सद्गुरु भगवान के प्रेम में डूबी आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन करती हुई इस पुस्तक को आपको ही समर्पित करता हूं। इस अनुभूति से ही मैं गद्गद् हो उठा हूं।

वर्तमान जंगत में श्री महालक्ष्मी की कृपा के सभी इच्छुक हैं तथा अधिकतर व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये निरन्तर महालक्ष्मी की उपासना का प्रयास करते हैं, किंतु आर्थिक दृष्टिकोण से पूर्ण स्थायित्व प्राप्त नहीं हो पाता है। कभी धन का लाभ भरपूर होता है, तो कभी धनहानि की स्थितियों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता और स्थायित्व के लिये श्री महालक्ष्मी सर्वाधिक प्रभावशाली देवियों में से एक है। श्री महालक्ष्मी साधना से सम्पन्न साधक की आर्थिक स्थिति सदैव सुदृढ़ रहती है। जिन व्यक्तियों को आर्थिक उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ रहा हो, उन्हें लक्ष्मी साधना अवश्य करनी चाहिए।

श्री महालक्ष्मी की, दीपोत्सव की रात की जाने वाली साधना का उद्देश्य यही है कि हमारा जीवन महालक्ष्मी के प्रकाश से प्रकाशित हो और हमारा मन महालक्ष्मी की उपस्थिति से पूर्ण हो। धर्म इसकी पीठ है। कहते हैं श्रद्धा, पवित्रता, स्वच्छता आदि के आधार पर धर्म, शक्ति, सौंदर्य एवं समृद्धि की पूजा सार्थक होती है।

आज का मनुष्य महंगाई से त्रस्त है। मध्यम आय वाला तो अत्यन्त दुखी है। वह अपने बल से जितना कमा लेता है, वह उसके परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त नहीं होता। कर्मों का जाल बड़ा विचित्र है। जिसे सुलझाने के लिए तांत्रिक बल काम आता है। गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में "भागहिं मेट सके त्रिपुरारी"—प्रभुकृपा क्या नहीं कर सकती! तांत्रिकों ने कहा है, ऐसा कोई पत्ता नहीं जिसमें औषधीय गुण ना हो, ऐसा कोई अक्षर नहीं जो मंत्र ना हो, इस संसार में ऐसा कोई मानव नहीं जो अयोग्य हो, हां, इन सबकी सीमाएं हो सकती हैं। अक्षरों का संयोजन कठिन है।

श्री महालक्ष्मी से सुख-समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, प्रखर वृद्धि की प्राप्ति होती है। मंत्र सिद्ध हो जाने पर उसका थोड़ा बहुत जप करते रहना चाहिए और महारात्रि, कालरात्रि, होली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के समय जप करके उसे दोहराते रहना चाहिए। मंत्र के साथ यथा शक्ति हवन भी करते रहना चाहिए। ऐसा करने से उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की कमी जीवन भर नहीं रहेगी। जब भी साधक को किसी आवश्यकता के लिए धन की कमी अनुभव हो, तो महालक्ष्मी से समस्या का निवेदन करते हुए 31 माला मंत्र की विधि विधान से जपनी चाहिए। धन आगमन का कोई न कोई साधन मां लक्ष्मी की कृपा से अवश्य बन जाएगा। और साधक स्वयं अनुभव करेगा कि श्री महालक्ष्मी ने किस प्रकार धनवर्षा कर दी है।

शास्त्रों में अनेक यंत्र, मंत्र, जप, अनुष्ठानों का वर्णन मिलाता है। इन सबको योग्य तंत्र गुरु के निर्देशन में करने से ही सफलता की प्राप्ति होती है। इस संसार में रहने वाले गृहस्थजनों को लक्ष्मी की आवश्यकता पग पग पर होती है और प्रत्येक मनुष्य लक्ष्मी की कृपा अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करता है। लक्ष्मी बड़ी चंचला हैं, विष्णुप्रिया हैं। इस कारण वह साधक की भक्ति की परीक्षा बार बार लेती हैं। वैसे जीवन में भी संघर्ष व परिश्रम के पश्चात् ही कार्यों में सफलता मिलती है। इसलिए श्रद्धा-भक्ति कठिन साधना से ही मिल पाएगी।

श्री महालक्ष्मी क्या नहीं दे सकतीं! अर्थात् वे इस संसार का ही नहीं वरन् समस्त ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक सुख दे सकती हैं। कंकड़ को कनक और कनक को रजकण बना सकती हैं। उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। क्योंकि वह महालक्ष्मी हैं और महालक्ष्मी धन, ऐश्वर्य, सुख, वैभव, आनन्द एवं जीवनोपरान्त अपने लोक में, अपने चरणों में चिर स्थान देने वाली देवी हैं।

तांत्रिक बहल को पढ़ने या जानने वाले सभी साधक जानते हैं कि मैं किसी भी साधना का प्रयोग पाठकों को करने के लिए नहीं कहता हूं। जब तक किसी साधना का, मैं प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर लेता हूं, या आप में से कुछ लोग अनुभव करके बताते हैं, तब मेरे विचार में आता है कि क्यों न सभी के लिये यह साधना लिख दी जाये। फिर भी लेख या पुस्तक लिखने के पूर्व उसके प्रत्येक पहलू पर विचार भी कर लेता हूं, ताकि कल पाठकों की आलोचना का पात्र न बन जाऊं या पाठकों के मन में साधना के प्रति जिज्ञासा तो उत्पन्न हो जाये, किन्तु उनकी शंकाओं का समाधान मैं न कर सकूं। इसीलिए ऐसी कोई साधना मैंने पाठकों के लिए कभी नहीं प्रकाशित करवाई, जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान मुझे न रहा हो। दीपावली मंत्रों से सजा सफलता या उन्नति का पर्व है।

आइए, आपको दीपावली के दिन किए जाने वाले कुछ उपयोगी टोटके बतलाते हैं। करें और लाभ उठाएं। दीपावली के दिन काली मिर्च के दाने "क्लीं" बीजमंत्र का जप करते हुए परिवार के सदस्यों के सिर पर घुमाकर दक्षिण दिशा में घर से बाहर फेंक दें। शत्रु शांत होंगे। पांच अखण्डित लवंग एवं कुछ हरिद्रा के दाने घर से दक्षिण दिशा में फेंक दें। बाधाएं समाप्त होंगी। प्रातःकाल तुलसी के पौधे में गंगाजल अर्पित करें और सूर्य को जल दें।

अगर घर में ऊपरी बाधा या अशान्ति रहती है तो चुटकी भर हीरा हींग

(मैदा ना हो) घर की दीवारों से स्पर्श कराकर किसी सुनसान स्थान पर फेंक दें। मुड़कर ना देखें।

दीपावली के दिन प्रातः उठकर तुलसी के पत्तों की माला बनाकर श्री महालक्ष्मी के चरणों में अर्पित करें। धनलाभ होगा।

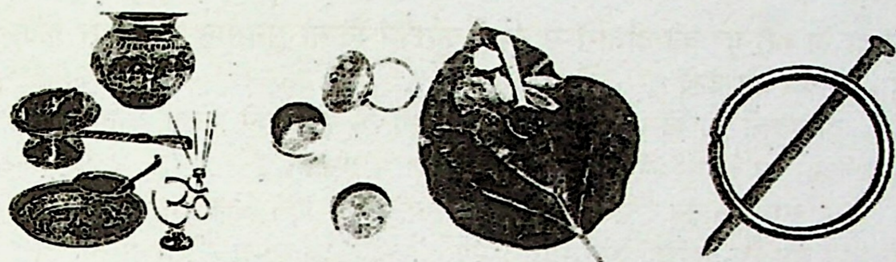
आइए, आपको दीपावली की रात सम्पन्न की जाने वाली साधना बतलाते हैं। इस साधना के लिए अभिमंत्रित सफेद हकीक की माला, पीला आसन और 21 बड़े अखण्डित गोमती चक्र ले लें। यह रात्रिकालीन साधना है। समय जानने के लिए कार्यालय से सम्पर्क करें। जहां तक संभव हो, वृषभ लग्न का ही चयन करें। आप सर्वप्रथम गोमती चक्र दोनों हाथों से ढककर 31 बार मंत्र जाप करें। इसके पश्चात् माला को दोनों हाथों से ढककर 54 बार मंत्र जाप करें। मंत्र वही रहेगा जो साधना के समय जपना है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री महालक्ष्मी आगच्छ गच्छ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ फट्।

श्री महालक्ष्मी साधना तो साधक के मन-उपवन का ऐसा सुगन्धित पुष्प है, जिसकी मनमोहक गन्ध एक बार पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाये, तो पूरे जीवन में प्राणों में आनन्द का संचार हो जाता है।

इस वर्ष श्री महालक्ष्मी साधना में सहायक बनने के लिए हम हैं ना!





महाशक्तिशाली टोने-टोटके

— प्रत्येक शुक्रवार को प्रातःकाल आप घर के पूजा-कक्ष में श्रीसूक्त का पाठ करें। श्री सूक्त के पाठ से घर की आर्थिक समस्याएं स्वयं ही दूर होने लगती हैं।

— गुरु पुष्य योग में काली हल्दी को काला सिन्दूर और धूप देकर चमकीले लाल वस्त्र में एक दो चांदी के सिक्के के साथ लपेट कर गले में रखने से धन की वृद्धि होती है।

— दुकान या व्यवसाय ठीक नहीं चल रहा हो तो उस दुकान या व्यवसाय के मुख्यद्वार पर इमली की लकड़ी की कील बनाकर शनिवार को ठोक देने से प्रतिष्ठान में प्रगति होने लगती है।

— विवाह योग्य लड़कियों को अपने दांय हाथ की मध्यमा अंगुली में पन्द्रह रत्ती का सार्डोनिक्स गुरुवार के दिन पहनना चाहिये।

— तुलसी की माला से रामचरितमानस की निम्न चौपाई का एक सौ आठ बार नित्य पाठ करना शीघ्र विवाह के लिये दिव्य प्रयोग है। राम-सीता की फोटो को अपने सामने रखें—

सुनिभय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मन कामना तिहारी।।

— अगर आपकी पत्नी आप पर बिना बात के सन्देह करती है तो शुक्ल पक्ष शुक्रवार को गाय को हरा चारा खिलायें।

— दाम्पत्य जीवन में तनाव का कारण पति-पत्नी का शंकालु स्वभाव हो तो शयन-कक्ष में मोरपंख इस प्रकार से लगायें कि कक्ष में प्रवेश करते समय तथा सोते समय मोरपंख दिखाई पड़े, इससे काफी सीमा तक मन की शंका समाप्त हो जायेगी।

— कन्या जन्म के पश्चात् पुत्र की कामना करने वाले को कन्या के

नामकरण वाले दिन उस कन्या के चरण स्पर्श करते हुए पुत्र जन्म की प्रार्थना करें तथा पूरा परिवार उस दिन जलेबी तथा खीर का प्रसाद ग्रहण करे तो अगली संतान लड़का ही होगा।

- शुभ नक्षत्र योग में गुंजा मूल को ताबीज में भरकर कमर में धारण करने वाली स्त्री अगर स्वस्थ है तो पति सम्पर्क करने पर पुत्रलाभ प्राप्त करती है।
- यदि बार बार गर्भपात होता हो तो शुक्रवार के दिन एक कहरूवाशमई गर्भवती महिला की कमर पर बांध दें, गर्भपात नहीं होगा।
- जब गर्भधारण हो गया हो तो एक चांदी की बांसुरी बनाकर राधा-कृष्ण जी के मन्दिर में पति-पत्नी दोनों गुरुवार के दिन चढ़ायें तो गर्भपात होने का भय नहीं रहता है।
- बांस की जड़ को प्रसव के समय स्त्री की कमर में बांध देने से प्रसव आराम से होता है।
- प्रसव के समय गर्भिणी की कमर में ओनेक्स रत्न बांध देने से भी उसका प्रसव सरलतापूर्वक हो जाता है।
- आश्लेषा नक्षत्र में धतूरे की जड़ घर में रखने से सर्प का भय नहीं होता।
- अनुराधा नक्षत्र में चमेली की जड़ को गले में बांधने से शत्रु मित्रवत् व्यवहार करते हैं।
- हस्त नक्षत्र में चंपा की जड़ लाकर शिशु के गले में बांधने से नजर नहीं लगती है।
- भरणी नक्षत्र में संखाहुली की जड़ लाकर यंत्र में पहन लें तो सभी प्रभावित होंगे।
- कृतिका नक्षत्र में प्याज का पत्ता लाकर गाय के दूध में पीने से समस्त रोग शांत होते हैं।
- पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में तुलसी की जड़ लाकर मस्तक पर रखें तो अग्नि भय नहीं होता।
- अश्विनी नक्षत्र वाले दिन बिल्व के पत्ते लेकर स्त्री को एक रंग वाली गाय के दूध में पिलाने से वह संतानवती होगी।
- आर्द्रा नक्षत्र में आक की जड़ लाकर यंत्र की तरह गले में बांधें तो जो बोलें, वही मान्य होगी।
- अश्विनी नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ लाकर यंत्र में रखकर जाएं, सभा अवश्य होगी।

— भरणी नक्षत्र में नागरबेल का पत्ता लाकर कत्था लगाकर, सुपारी डालकर चोरी वाले स्थान में रखें तो चोरी गई वस्तु का पता शीघ्र लगेगा।
— यदि किसी को मिर्गी आदि का कोई रोग हो तो गधे के अगले दाहिने पैर का नाखून लेकर, अंगूठी के द्वारा उसे अपनी उंगली में धारण करना चाहिए।
— घने जंगलों में विचरण करने वाला व्यक्ति यदि अपने जूते के तले में बिल्ली की जिव्हा जड़वा ले तो उसे किसी भी जानवर का भय नहीं रहेगा।
— गधे का दांत यदि किसी के सिरहाने रख दिया जाए तो उसकी अनिद्रा दूर हो जाती है।
— खच्चर का दांत जेब में रखने से व्यक्ति को कभी भी आर्थिक संकट नहीं झेलना पड़ता।
— पुनर्वसु नक्षत्र में दूधी की जड़ लाकर शरीर में लगाने से लाभ मिलता है।
— खंजन पक्षी की बीट और मुंह दोनों एक साथ पीसकर चूर्ण-सा बना लें। यह चूर्ण जिसके सिर पर डाला जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।
— पारी ज्वर के रोगी के शरीर से सौली मछली का स्पर्श कराकर किसी चौराहे पर फेंक देने से ज्वर शांत हो जाता है।
— कुंडली में चंद्रमा अशुभ होने पर पारिवारिक अशांति, धन की कमी तथा कार्य संचालन में परेशानी देता है। इस हेतु रविवार की रात को सोते समय, चांदी के गिलास में थोड़ा-सा कच्चा दूध रखकर उसे सिरहाने रखकर सो जाएं। सोमवार की सुबह इस दूध को कीकर पर चढ़ा आएं और फल अनुभव करें।
— हिरण की बाई आंख को तावीज में मढ़वाकर, काले धागे के द्वारा अपनी दाईं भुजा में बांधने के बाद जिस स्त्री के पास भी जाया जाएगा, वह पूरी तरह से मोहित हो जाएगी।
— यदि किसी को मिर्गी आदि का कोई रोग हो तो गधे के अगले दाहिने पैर का नाखून लेकर, अंगूठी के द्वारा उसे अपनी उंगली में धारण करना चाहिए।
— कुत्ते का दांत ताबीज में रखकर, बच्चे के गले में पहनाने से वह दांत निकलते समय होने वाले उपद्रवों से सुरक्षित रहता है।
— काली बिल्ली का दांत ताबीज में धारण करने वाला व्यक्ति कभी भी संकटों का सामना नहीं करता।

बालास्पमार

- चूहे का होंठ जन्तर में भरवाकर बालक के गले में धारण कराने से बालास्पमार रोग दूर हो जाता है।
- भेड़ की जूं कम्बल के रोएं में लपेटकर तांबे के जन्तर में धारण करने से बालास्पमार रोग दूर हो जाता है। स्त्रियों के हिस्टीरिया रोग के लिए भी यह सर्वोत्तम टोटका माना जाता है।
- अकरकरे को सूत में बांधकर लटका देने से बच्चों को मिरगी रोग में आराम मिलता है।

दांत निकलने का टोटका

- पूरब की दिशा में उगी सम्भालू की जड़ गले में धारण कराने से बच्चों के दांत आसानी से निकलने के साथ-साथ अन्य रोगों से भी रक्षा होती है।
- कपूर की चकतियों की माला पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।
- तांबे के तावीज में पत्थर चूर की जड़ को डालकर लाल धागे में पिरोकर गले में धारण कराएं तो बच्चे के दांत आसानी से निकल आएंगे।
- सीपियों की माला पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।
- छछून्दर का होंठ जंतर में भरकर गले में पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।
- लोहे अथवा तांबे के कड़े हाथ-पैर में पहनाने से बच्चे के दांत आसानी से निकल आते हैं।
- सिरस के बीजों की माला गले में पहनाने से बच्चे के दांतों के निकलने में कठिनाई नहीं होती। यह माला इतनी लम्बी हो कि छाती तक लटकती रहे।

हिचकियां, हिक्का

- रीठे की फली को धागे में पिरोकर बालक के गले में पहनाने से बच्चे की हिचकियां या वृष्टिदोष दूर हो जाता है।
- दूध पिलाने वाली मां या धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा फाड़कर पानी से भिगोकर बच्चे के माथे पर रखने से हिचकियां फौरन बन्द हो जाती हैं।

ज्वर, बुखार का टोटका

— रविवार की प्रातःकाल सहदेई तथा निर्गुण्डी की जड़ उखाड़ कर लाएं तथा कमर में बांधें तो सभी तरह का ज्वर दूर हो जाता है।

— शनिवार के दिन मयूर शिखा के पौधे को निमंत्रण दे आएं तथा रविवार को विधिपूर्वक उखाड़ लाएं, फिर उसे लाल डोरे में लपेटकर हाथ और कमर में बांधें तो एकालिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

— लाल पलाश की जड़ बांधने से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते है। जो भूत-प्रेतादि ज्वर हों, वह भी नष्ट हो जाते हैं। इसे रविपुष्य योग में लाकर दाएं हाथ में बांध दें।

— उल्लू के दाहिने डैने का पंख लेकर सफेद धागे में यंत्रवत गोल करके बांधें तथा रोगी के बाएं कान में धारण करा दें तो इकाई ज्वर में आराम हो जाता है।

— रविवार को सूर्योदय से पूर्व ही निर्वस्त्र होकर जयन्ती की जड़ को गुग्गल की धूनी देने के बाद उखाड़ लें। फिर इस जड़ को पुरुष के दाएं तथा स्त्री के बाएं हाथ में बांधने से तृतीयक ज्वर निश्चित ही दूर हो जाता है। यह रामबाण नुस्खा है तथा कभी भी असफल नहीं होता।

— मलेरिया बुखार दूर करने के लिए रविवार या सोमवार के दिन रोगी किसी ताड़ वृक्ष के पास जाकर उससे सीना चिपटाकर मन ही मन कहे—जब मेरा ज्वर उतर जाएगा तो मछली चढ़ाऊंगा। ऐसा मन में तीन बार कहें। जब ज्वर उतर जाए तो छोटी-छोटी मछलियां दो छोटी लकड़ियों से बांधकर रविवार या सोमवार के दिन ही ताड़ के पेड़ की जड़ में चढ़ा आना चाहिए तथा वृक्ष के समीप खड़े होकर कहना चाहिएं—मेरा ज्वर छूट गया।

— सन्निपात ज्वरनाश के लिए बकरे के बाल जो अश्विनी नक्षत्र में लेकर रखे गए हों, उन बालों के साथ निर्गुण्डी की छाल अथवा पुष्य मिलाकर गोली बनाएं। इसे रोगी की कलाई या भुजा पर बांधने से ज्वर खत्म हो जाता है।

— काकमांत्री की जड़ लाल धागे में बांधकर रोगी के दाहिने कान पर रखने से रात्रि में आने वाला ज्वर छूट जाता है।

— सात लड़ लाल धागे में अपामार्ग की जड़ लगाकर कमर में बांधने से रुक-रुककर आने वाले ज्वर में आराम होता है। अपामार्ग की जड़ ठीक रविवार के दिन उखाड़नी चाहिए।

- बबूल की जड़ को श्वेत धागे में लपेटकर शनिवार के दिन हाथ में बांध लें तो शीत ज्वर दूर हो जाएगा। ज्वर उतरने पर किसी सुनसान जगह में बिना किसी को दिखाए जड़ को फेंक दें।
- श्वेत जयन्ती की जड़ को रोगी के माथे में बांधने से कैसा भी पुराना ज्वर हो, छूट जाता है।
- रविवार के दिन मिट्टी के घड़े में जल भरकर रखें। उस घड़े में सोने की अंगूठी डाल दें। एक घण्टे बाद चौराहे पर या घर के सामने रोगी को उसी जल से नहला दें। स्नान कराने के बाद अंगूठी निकाल लें। यह क्रिया रविवार की संध्या को की जाती है। इससे बुखार जल्दी ही छूट जाता है।
- मंगल या रवि के दिन सात नग लहसुन पीसकर और काले कपड़े पर रखकर दाहिने पैर के अंगूठे में बांध दें। तीन घंटे बाद ठीक समय पर चौराहे पर खोलकर फेंक आएं। इससे शीत ज्वर आना रुक जाता है।

विजया तंत्र

- फाल्गुन मास में विजया का चूर्ण अथवा रस के साथ आंवले को पीसकर सेवन करने से शरीर का सम्पूर्ण नाड़ी जाल (स्नायु तंत्र) सतेज हो जाता है। वात और रक्त के समस्त अवरोध दूर हो जाते हैं। शरीर की सक्रियता और गतिशीलता बढ़ाने में यह प्रयोग बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है।
- अगहन मास में विजया चूर्ण, घी, शक्कर के साथ सेवन करने से नेत्र ज्योति की रक्षा करता है।
- पौष मास में काले तिल और विजया का सेवन किया जाए तो यह दृष्टि-शंक्ति में अपार वृद्धि करता है।
- माघ मास में नागरमोथा की जड़ के साथ विजया चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए। इस प्रयोग से शरीर के बल तथा कान्ति की वृद्धि होती है।
- रुद्रदन्ती और भांग को पीसकर गोली बनाएं। शर्बत बनाकर पीने से यह मस्तिष्क की ताजगी व शरीर को पुष्ट रखने में सहायक होता है तथा अपार संभोग शक्ति का विकास करता है। इसका सेवन सेक्स आनन्द में वृद्धि कर वाजीकरण का काम करता है।
- विजया की पत्ती, ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के साथ पीसकर कुआर

(क्वार) मास में पीने से शरीर निरोग, कांतियुक्त तथा बलिष्ठ हो जाता है।

— क्वार माह वाला प्रयोग ही बकरी के ताजे दूध के साथ कार्तिक मास में समस्त घटकों, मेवे आदि के साथ लेने से शरीर का बल व चेहरे की कान्ति बढ़ती है।

— बारह महीनों तक विभिन्न अनुपानों के साथ विजया का सेवन विजय कल्प कहलाता है। यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति विभिन्न अनुपानों के साथ पूरे वर्ष विजया का ही सेवन करे तो वह समस्त शारीरिक दोषों से दूर होकर पूर्ण शारीरिक शक्ति, सौन्दर्य तथा अपार पौरुष शक्ति वाला स्वस्थ व्यक्ति बन जाता है। नाड़ी संस्थान, स्नायु तंत्र की सक्रियता से समस्त रक्त विकारों की शुद्धि होती रहती है, जिससे किसी प्रकार का कोई रोग साधक पर नहीं हो पाता। यह निश्चित ही साधकों के प्रयोग के योग्य है जिससे उनकी कल्पनाशक्ति व विचारशक्ति में अपार वृद्धि हो, साधना का विकास होता है।

उष्ट्र (ऊंट) तंत्र का विशिष्ट प्रयोग

— ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर बच्चे की दाहिनी जांघ पर बांधने से बालक सोते में बिस्तर पर पेशाब नहीं करता। यह प्रयोग मात्र रविपुष्य योग में ही करना चाहिए तथा प्रयोग से पूर्व शिव का विधिवत पूजन तथा नैवेद्य इत्यादि चढ़ाकर प्रयोग करना चाहिए।

— जहां सर्प निवास हो, वहां ऊंट की चर्बी रख देने से सर्प आने की सम्भावना नहीं रहती।

— बहुमूत्र के रोगी की दाहिनी जांघ पर ऊंट के बालों से बना धागा बांध देने से वह रोगमुक्त हो जाता है।

— ऊंट के अगले दाहिने पैर का नाखून घर में रख देने से घर में चूहे नहीं आते। इसके प्रभाव से पहले से रहने वाले चूहे भी भाग जाते हैं। यह प्रयोग केवल मंगलवार को ही किया जाए।

— ऊंट के पांवों की हड्डी की कील बनाकर किसी गोशाला या जानवरों के निवास स्थल के चारों तरफ गाड़ देने से जानवर उसके बाहर नहीं जाते। प्रायः पशुओं को बांधने के लिए ऊंट के अगले दाएं पैर की हड्डी का खूंटा बनाकर गाड़ा जाता है। इसमें बांधा जाने वाला पशु अपना स्थान छोड़कर कहीं नहीं जाता।

— मंगलवार को किसी शुभ मुहूर्त में ऊंट के बालों को प्राप्त करके इसकी

रस्सी बनाकर दाहिनी जांघ पर बांधकर, सभोग करने से व्यक्ति का शीघ्र पतन रोग समाप्त हो जाता है। जब तक यह रस्सी बंधी रहती है, वीर्यपात नहीं होता। इसे खोलकर अलग रखने पर ही वीर्य स्खलन होता है। यह प्रयोग भी रविपुष्य योग में करें तथा भगवान शिव व कामदेव दोनों की पूजा करने के बाद अपना अभिप्राय कहकर इसका प्रयोग रविवार को ही करें।

— ऊंट की लीद काफी अग्निवर्द्धक मानी जाती है। तांत्रिक विधान से लाकर सिद्धि योग यानी रविपुष्य योग में इसे अग्नि में जलाकर शहद में बुझाकर रख लिया जाए। इसे किसी डिब्बी में बन्द करके रखें। जब चमत्कार दिखाना हो तो इसे सूखी हवा में तोड़ा जाएगा तो यह अपने आप सुलगने लगता है।

वशीकरण टोटके

— कुंवारी कन्या के हाथों से काते हुए सूत में सहदेई की जड़ को बांधकर, फिर उस सूत में बंधी हुई जड़ को जिस स्त्री की कमर में बांध दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगी।

— तगर की जड़, नीलकमल, भौंरे के दोनों पंख तथा सफेद काकजंघा दोनों को समान भाग में मिलाकर पीस लें, फिर जिस स्त्री के सामने खड़ा होगा, वह देखते ही वशीभूत हो जाएगी।

— ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म, सहदेई तथा वचा व कूठ को समान मात्रा में मिलाकर कूट चूर्ण बनाएं। यह चूर्ण समस्त वनस्पतियों को तांत्रिक विधान से प्राप्त करके तथा विधिवत् पूजन और इष्टदेव को निवेदित कर मंत्र से अभिमंत्रित करके रख लें। जिस समय प्रयोग करना हो, 108 बार मंत्र से अभिमंत्रित करके स्त्री के सिर में डाल देने से वह वशीभूत हो जाएगी।

— गोरोचन और सहदेई को पानी के साथ पीसकर उक्त मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें, फिर अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। तिलक लगाकर जिस साध्य स्त्री के पास जाएंगे, वह वशीभूत हो जाएगी।

— नागकेसर, जटामासी, वचा, तगर, कमलपुष्य इन सबको समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाएं तथा 108 बार मंत्र से अभिमंत्रित करें, फिर इसको किसी मिट्टी के नए सकोरे में रखकर खैर की लकड़ी के कोयले से अपने शरीर में धूनी या धूप देते हुए वांछित नारी का स्मरण करें तो वह वश में हो जाएगी।

सुगमतापूर्वक प्रसव साधनाएं व टोटके

— स्त्री को चारपाई पर लिटाकर उसके नीचे उपरोक्त धूनी के साथ यदि कमरे में सांप की केंचुली रख दी जाए तो बच्चा अतिशीघ्र एवं आसानी से पैदा हो जाता है।

— प्रसूता को घोड़े की धूनी देने से प्रसव पीड़ारहित तथा सरलतापूर्वक हो जाता है। यह प्रयोग प्रसव के समय पहले से लाकर रखे गए खुर का चूर्ण बनाकर किसी मिट्टी के पात्र में कोयलों पर चूर्ण बुरककर धूनी दें। वह धुआं उसके पेट व गर्भाशय स्थान पर लगे, ऐसा उपाय करना चाहिए।

— यदि प्रसव आसानी से न होता हो तथा बच्चा कुछ बाहर आकर फंस जाए तो ऐसे में गधे, घोड़े या खच्चर के खुरों को चूर्ण करके योनि पर धूनि देने से बच्चा आसानी से बाहर आ जाता है।

— गर्भवती को इन्द्र तथा समुद्र का नाम जोर से बोलकर सुनाने से गर्भस्थ मूल (शिशु) स्थान छोड़ देता है।

— सर्पदन्त को लाल रेशमी कपड़े में बांधकर गले में पहना देने से प्रसव आसानी से हो जाता है।

— प्रसव काल में स्त्री के स्तनों पर बारहसिंगे का सींग बांध देने से भी बिना कष्ट के प्रसव हो जाता है।

अद्भुत टोने-टोटके

— खच्चर का दांत जेब में रखने से व्यक्ति को कभी भी आर्थिक संकट नहीं झेलना पड़ता।

— एक रुपए का सिक्का ले लें। रात को इसे सिरहाने रखकर सो जाएं। प्रातः इसे श्मशान की सीमा में चुपचाप फेंक आएं। शरीर स्वस्थ होगा।

— अपने घर से किसी भी कार्य के लिए निकलते समय पहले विपरीत दिशा में चार पग जाएं, इसके पश्चात् कार्य पर चले जाएं, कार्य अवश्य ही बनेगा।

— किसी भी कार्य के लिए जाते समय एक बेदाग नींबू गाय के गोबर में दबा दें। उस पर थोड़ा-सा कामिया सिंदूर छिड़क दें। अब अपना कार्य कहकर चले जाएं। कार्य बन जाएगा।

— श्रावण के महीने में जब पहली बरसात हो, तब पतनाले से बहते पानी में स्नान करने से दुर्भाग्य दूर होता है।

– पुष्य नक्षत्र में सिंही की जड़ को उखाड़ लाएं। उसे कमर पर बांधकर जिसके भी पास जाएंगे, वह वश में हो जाएगा।
– शनिवार के दिन कच्ची घानी का सरसों का तेल ले लें। उसमें अपनी छाया देखें। इसके बाद इस तेल में गुड़ के गुलगुले उतार लें। यह गुलगुले किसी गरीब को दे दें। ऐसा करने से शनि का कोप भी शांत होगा।
– पारी ज्वर के रोगी के शरीर से सौली मछली का स्पर्श कराकर किसी चौराहे पर फेंक देने से ज्वर शांत हो जाता है।
– काली बिल्ली का दांत यंत्र में धारण करने वाला व्यक्ति कभी भी संकटों का सामना नहीं करता है, वह सदा संकटों से दूर रहता है।
– ज्वर-पीड़ित व्यक्ति के गले में कपड़े के सहारे उस गोली को बांधने से वह सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है।
– सर्पदंश के व्यक्ति की आंखों में समुद्रफेन बारीक पीसकर लगाने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।
– मोर का अस्थि-खंड एक रक्षात्मक कवच है। इसे बालक के गले में पहनाने से उसे भूत-प्रेत और जादू, टोने-टोटके की पीड़ा नहीं होती है।
– 7 साबुत हल्दी की गांठ, पीतल का एक टुकड़ा, थोड़ा-सा गुड अगर कन्या अपने हाथ से ससुराल की तरफ फेंक दे तो वह ससुराल में सदैव सुरक्षापूर्वक और सुखी रहती है।
– कन्या का जब विवाह हो चुका हो और वह विदा हो रही हो, तब एक लोटे में गंगाजल लेकर उसमें थोड़ी हल्दी डालकर, एक पीला सिक्का डालकर लड़की के ऊपर से उतारकर उसके आगे फेंक दें। उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।
– चमकीले हरे धागे की रील, हरा कागज, साबुत हरिद्रा, पीतल का टुकड़ा—यह सब मिलाकर घर का मुखिया अगर कुएं में अनटोक डाल दें तो घर से गया व्यक्ति वापस आ जाता है।
– हाथी की लीद को चांदी के तावीज में भर लें, वह तावीज जिस बच्चे के गले में पहनाया जाएगा, वह ऊपरी हवाओं से सुरक्षित रहेगा।
– हिरण की बाईं आंख को तावीज में मढ़वाकर, काले धागे के द्वारा अपनी दाईं भुजा में बांधने के बाद जिस स्त्री के पास भी जाया जाएगा, वह पूरी तरह से मोहित हो जाएगी।
– पेठे के रस में उल्लू की जीभ डुबोकर सुखा लें और फिर इसे लोबान की धूनी दें। यह प्रक्रिया करते समय जिन लोगों के नाम का स्मरण

किया जाएगा, उनमें मन-मुटाव उत्पन्न हो जाएगा। यह सब किसी भी शुभ योग में बनाना चाहिए। इसे पास रखने वाला व्यक्ति धनी अवश्य होता है।

— सेहुंड़ की जड़ चबाने से दांतों के रोगों से छुटकारा मिल जाता है। उसे खाना नहीं चाहिए, बल्कि चबाकर थूक देना चाहिए।

— ऊंट कटीरा की जड़ पानी में पीसें और उसका लेप नाभि से पेड़ू तक लगाने से गर्भ गिर जाता है।

— तिल्ली का रोग दूर करने के लिए छोटी प्याज की माला गले में डालनी चाहिए।

— कलिहारी की जड़, ओंगा की जड़ और इंद्रायण की जड़—इन तीनों का चूर्ण जननेंद्रिय में रखने से मासिक धर्म खुल जाता है।

— कृतिका नक्षत्र में लोहे की अंगूठी पहनने से भूत-प्रेत, जादू-टोने का भय नहीं रहता है।

— लाजवंती की जड़ का छल्ला बनाकर कमर में बांधने से आंत का रोग ठीक हो जाता है।

— मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाने के लिए सुलमानी लाल हकीक धारण करना उपयुक्त रहता है।

— अगर आपके परिवार में कोई महिला माहवारी (एम०सी०) में परेशानी अनुभव कर रही हो, तब आप एक मिट्टी की छोटी हंडिया में गंगाजल भर लें। उसमें थोड़ी शुद्ध लाल रोली डाल दें। उसे रोगी महिला पर 21 बार उतारकर अनटोक चौराहे पर रख दें। माहवारी की परेशानी दूर हो जाएगी।

— शनिवार के दिन प्रातः अपने काम पर जाने से पहले एक नींबू लेकर उसके दो भाग बराबर के करें। घर से निकलने के बाद जो भी पहला मोड़ आए, उस समय एक टुकड़ा आगे और दूसरा टुकड़ा पीछे फेंककर चले जाएं। उस दिन सारे काम बनेंगे। परेशानियां स्वयं ही दूर हो जाएंगी।

— एक हंडिया में सवा किलो साबुत हरी मूंग, दूसरी हंडिया में सवा किलो नमक रखकर यह दो हंडिया घर में कहीं रख दें। यह क्रिया केवल बुधवार के दिन करें। घर में धन आना शुरू हो जाएगा।

— अगर आपको किसी विशेष कार्य पर जाना है और आप यह चाहते हैं कि वह कार्य बन जाए, तब आप प्रातः लगभग चार बजे उठें और एक नीले रंग का रेशमी चमकदार धागा अपने घर के आगे पड़ने वाले

तीसरे खंभे पर अपनी कामना कहते हुए बांध दें। कार्य बनने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।

- आश्लेषा नक्षत्र में धामी की जड़ हाथ में धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।
- हीरा अथवा फिरोजा पहनने वाले को विषैले जंतुओं का कोई भय नहीं रहता है।
- केवड़ा की जड़ कान पर धारण करने से शत्रु का भय मिट जाता है।
- रवि पुष्य योग में प्राप्त सफेद मदार की जड़ लाकर दाहिनी भुजा पर बांधने से वन्य पशुओं का भय नहीं रहता है।
- मोरपंख घर में रख देने से सर्प कभी भी घर में प्रवेश नहीं करता है।
- बांस की जड़ जलाकर उसे कान पर धारण करने से शत्रु का भय मिट जाता है।
- सर्प द्वारा काटे गए व्यक्ति की नाक में कूलिका की जड़ का बारीक चूर्ण पहुंचाया जाए तो सर्पदंश का व्यक्ति ठीक हो जाता है।
- समुद्री झाग को शुक्रवार के दिन ले आएं। इसे पीस लें और कपड़छन कर लें। अब इसका एक चुटकी चूर्ण गंगाजल से सेवन करें। लिकोरिया का रोग धीरे-धीरे दूर हो जाएगा।
- दाएं हाथ की बीच की उंगली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी रोग दूर हो जाता है।
- धतूरे की जड़ का टुकड़ा कमर में बांधने से किसी भी प्रकार की बवासीर हो, ठीक हो जाएगी।
- गोरखमुंडी के हरे पौधे के रस की मालिश करने से शरीर की सारी पीड़ा मिट जाती है।

रोग निवारक टोटके

- जंगली सूअर के नख को अंगूठी की भांति बनवाकर मंगलवार को दाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली में पहनने से मिरगी का दौरा आना जल्दी रुक जाता है।
- नीलकंठ का पंख मंगलवार या शनिवार को लाकर बच्चा जिस खाट पर सोता है, उसमें खोंस देने से बालक का रोना तुरंत बंद हो जाता है।
- पूर्व दिशा में उत्पन्न सफेद संभालू की जड़ को बालक के गले में बांध देने से दांत निकलते समय का कष्ट कम हो जाता है।

– सफेद कबूतर का जोड़ा घर में रखने से बालक को जन्हुआ रोग की पीड़ा नहीं होती है।
– सूत के अन्दर अटकरा को बांधकर बालक के गले में लटका देने से बालक का मिरगी रोग दूर हो जाता है।
– अगर किसी बालक को नजर लग जाए तो लाल मिर्च को लेकर बालक के सिर पर से तीन बार उतारें और उन्हें जलते हुए अंगारों में झोंक दें। क्षणभर में ही नजर का दोष दूर हो जाएगा।
– बच्चों के हाथ-पांव में लोहे अथवा तांबे का कड़ा पहना देने से उसके दांत आसानी से निकल आते हैं और नजर भी कम लगती है।
– कपूर की टिकियों की माला पहनाने से बालक के दांत आसानी से निकल आते हैं।
– भेड़ की जूं को कम्बल के रोंए में लपेटकर तांबे के तवीज में भरकर पहनने से स्त्रियों का हिस्टीरिया रोग ठीक हो जाता है।
– सिरस के बीजों की माला बनाकर बच्चे के कंठ में इस प्रकार बांधनी चाहिए कि वह बालक की छाती को स्पर्श करती रहे। इससे बच्चे के दांत सरलता से निकलते हैं।
– काले रंग के कुत्ते का एक बाल तथा अकरकरा का दाना इनको बालक के गले में बांध देने से उसके आमाशय के रोग दूर हो जाते हैं।
– शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल लाकर छल्ला बनवाएं। इस छल्ले को नीचे की उंगली में पहनने से पथरी रोग शांत हो जाता है।
– नींद न आने की बीमारी में बिस्तर पर लेटने के पश्चात् शरीर एकदम ढीला छोड़ दें और धीरे-धीरे 10 तक गिनती गिनें। उसके सांस रोककर "ॐ कुम्भ कर्णाय नमः" बोलें और सांस छोड़ दें। इस प्रकार 108 बार करें। प्रारंभ में थोड़ी बेचैनी तो अवश्य होगी, पर नींद आ जाएगी।
– सेंहुड की जड़ को दर्द करने वाले दांत के नीचे दबा लें, दर्द समाप्त हो जाएगा।
– गायत्री मंत्र की एक माला कभी भी ग्रहण में जपकर सिद्ध कर लें। उसके पश्चात् जब भी कोई दांत पीड़ा वाला रोगी आए, उससे एक कील 3 इंच की मंगवा लें। नीम के पेड़ के पास ले जाएं। जिस दांत में दर्द है, उसे पकड़कर कील नीम में गायत्री मंत्र पढ़ते हुए ठोंक दें। दर्द काफी समय के लिए समाप्त हो जाएगा।
– फीलपांव रोग में आक (मदार) का पौधा उत्तर दिशा की ओर से तोड़कर रविवार के दिन लाएं। उसकी जड़ को लाल धागे के सहारे, जहां यह

रोग है, वहां बांध दें। जब यह रोग ठीक हो जाए तो उस जड़ को कहीं गहरा गाड़ आएं।

- भेड़ की खाल की अंगूठी गुरुवार के दिन बनाकर उसी दिन मध्यमा उंगली में पहनें। बवासीर रोग में लाभ होगा।
- शनिवार के दिन धतूरे की जड़ कमर में बांधने से बवासीर रोग दूर होता है।
- कौवे की बीट को लाकर कपड़े की थैली में बांध देने से बाल रोग दूर हो जाता है।
- रीठे के फल को धागे में गूंथकर बच्चे के गले में बांध देने से उसे नजर नहीं लगती तथा हिचकी का रोग भी दूर हो जाता है।
- शनिवार के दिन खरगोश का रक्त लाकर उसकी छोटी-सी गोली बनाकर उस बालक को दें जिसे पसली चलने का रोग हो। इस गोली से वह ठीक हो जाता है।
- अष्टधातु की अंगूठी को थोड़ा-सा गरम करके बिच्छू के डंक मारे हुए स्थान पर लगा देने से ही जहर उतर जाता है।
- मोर के पंखों को घर में रखने से सांप का भय कम हो जाता है।
- काला बैंगन लें। उसे चीरकर दोनों भागों को आपस में रगड़ें, इससे जो झाग उत्पन्न हो, वह मस्से पर लगाएं। ऐसा करने से चेहरे के मस्से दूर होते हैं।
- बिच्छू के काटे हुए स्थान पर अपामार्ग की जड़ को छुआ देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।
- प्रातःकाल उठकर अपना स्वयं का थूक मस्से पर लगा लें, तत्पश्चात् चूना लेकर उस पर लेप कर लें। पान की डंडी से उस मस्से को रगड़ें। मस्सा कट जाएगा और फिर दुबारा नहीं होगा। "ॐ भैरवाय नमः" का जाप करें।
- सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद सोंठ की जड़ का लेप करने से जहर उतर जाता है।
- जिस मनुष्य के सिर के बाल झड़ने लगे हों, उसे चाहिए कि वह सोते समय सूखा नमक पीसकर सिर में मल लिया करे। इस प्रकार करने से कुछ ही दिनों में बाल झड़ना बंद हो जाएगा और वे जम जाएंगे।
- स्याही सोखते कागज को शोरे में भिगोकर सुखा लें। फिर उस कागज को जिस घर में श्वास रोगी सोता हो, जलाएं तो श्वास के रोगी को लाभ होता है।

– थोड़े से नौसादर को पानी में मिलाकर शरीर पर लेप करने से पसीना आना बंद हो जाता है।
– सफेद सांठी की जड़ को घी में पीसकर आंखों में डालने से बहता हुआ पानी रुका हुआ नजर आता है।
– कपूर और बादाम को आधी-आधी रत्ती लेकर खूब महीन पीसकर, उंगली से अंजन करने पर दुखती हुई आंखें ठीक हो जाती हैं। थोड़ी मात्रा में रखने से गिद्ध जैसी तेज दृष्टि प्राप्त होती है।
– बीकामाली को घी में औटाकर कान में डालने से कान का दर्द तुरंत दूर हो जाता है।
– सफेद दूब को घी में औटाकर कान में डालने से बहरापन दूर हो जाता है।
– रविवार की सायं मारू बैंगन ले लें। रात को मारू बैंगन, काले तिल, साबुत काली उड़द और काला कपड़ा यह सब वस्तुएं सिरहाने रखकर सो जाएं और सोमवार की सुबह इन्हें किसी नदी में प्रवाहित करें। ऐसा करने से चेहरे के मस्से दूर हो जाएंगे।
– बवासीर के रोगी के मस्से के नीचे सर्प की केंचुल रखने से बवासीर का कष्ट दूर हो जाता है।
– एक पाव पानी में चार माशे राई डालकर अग्नि पर चढ़ाकर गुनगुना करें, फिर उसे पीस-छानकर रोगी को पिला दें, तो हिचकी बंद होकर गहरी नींद आ जाती है।
– छोटे बालक के गिरे हुए दूध के दांत को तवीज में मढ़वाकर पास रखने से दांत का दर्द दूर हो जाता है। यह प्रयोग सोमवार के दिन करें।
– आवा हल्दी, सेंधा नमक और कूट को समभाग लेकर नींबू के रस में पीसकर लेप करने से मुंह के धब्बे दूर होते हैं।
– लौंग, सेंधा नमक, सरसों और वच—इनको कूट-पीसकर मुंह पर लेप करने से कील आदि दूर होंगी।
– कुत्ते का नख, बिच्छू का डंक और कछुए के खून को ऊंट के चमड़े में मढ़कर तावीज की भांति बना लें। इस तावीज को किसी प्रेम में पागल मनुष्य के गले में बांध देने से पागलपन जल्दी ठीक हो जाता है।
– धवल वरुआ की जड़ को शिखा में बांध देने से पागलपन के रोगी का बकना-झकना बंद हो जाता है। उसे नींद आने लगती है।
– जिन व्यक्तियों के पसली या कमर में दर्द रहता हो, वह सायंकाल में

डूबते सूरज की ओर मुख करके जहां दर्द हो, कमर या छाती पर, उस भाग को खोलकर नीम की टहनी को 21 बार स्पर्श कराएं और स्वयं निम्न मंत्र—"ॐ भैरवाय नमः" बोलते रहें। फिर टहनी को कुंए या तालाब में फेंक दें।

– गौरेया पक्षी के अंडे को मक्खन में मिलाकर अपने तलवे में लेप करके सहवास में प्रवृत हो तो जब तक पांव को पृथ्वी पर नहीं रखा जाएगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।
– काले रंग के बिलाव के बाएं पांव की हड्डी को अपने दाएं हाथ में बांधकर सहवास करने से जब तक हड्डी को अलग नहीं किया जाएगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।
– गाय के ऊंचे सींग की त्वचा को छीलकर उसे अग्नि पर डाल दो, जो धुआं उठे, उसे एक वस्त्र में लगाओ। उस धूनी वाले कपड़े को पहनकर सहवास करने से जब तक वस्त्र को नहीं हटाया जाएगा, वीर्य स्खलित नहीं होगा।
– पुष्य नक्षत्र में नग्न होकर इन्द्रवारुणी बूटी की जड़ लाकर उसमें सोंठ, काली मिर्च, पीपल को पीसकर मिलाएं। फिर गाय का दूध मिलाकर गोली बनाकर छाया में सुखा लें। इस गोली को मुंह में रखकर सहवास करने से वीर्य स्खलित नहीं होता।
– गेहुंअन सर्प की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर पेडू के ऊपर बांधने से संग्रहणी रोग ठीक हो जाता है।
– चिरचिटे की जड़ को हाथ में बांधने से भूत-प्रेत आदि की बाधा के कारण होने वाले ज्वर दूर हो जाते हैं।
– रोगी की कमर में सर्प की केंचुल बांध देने से पारी का बुखार रुक जाता है।
– यदि किसी को पागल कुत्ता काट गया है तो उस स्थान पर आक का दूध, गुड़ तथा तेल का लेप लगाने से जहर दूर हो जाता है।
– फिटकरी की डली को कमर में बांधकर सहवास करने से अधिक देर तक स्तंभन होता है।
– माघ अथवा भादो माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को कलिहारी की जड़ उखाड़ लाएं, फिर आवश्यकता के समय उसे कमर में बांधकर सहवास करें तो बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता है।
– अपराजिता की जड़ और शिखा को रेशमी वस्त्र में लपेटकर अपनी

भुजा में बांधकर सहवास करने से बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता है।

- सुअर के दाईं ओर के दांत को कमर में बांधकर सहवास करने से जब तक उसे खोलकर अलग नहीं किया जाता, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होता।
- श्मशान भूमि में उत्पन्न होने वाले नीले वृक्ष की जड़ को कमर में बांधकर सहवास करने से बहुत अधिक देर तक स्तंभन होता है।
- चौलाई की जड़ को सिर में बांधने से भी विषम ज्वर ठीक हो जाता है।
- रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर दाएं हाथ में बांधने से पारी से आने वाला शीत-ज्वर एक ही दिन में दूर हो जाता है।
- चार बूंद अलसी चंदन के तेल को दस तोले पानी में डालकर सात दिन तक सेवन करने से सुजाक की बीमारी भी दूर हो सकती है।
- रविवार के दिन जब अनुराधा नक्षत्र आए, तब उस दिन कलिहारी की जड़ उखाड़कर ले आएं और जिस व्यक्ति को नपुंसक करना हो, उसके पेशाब करने की जगह पर गाड़ दें। जब वह व्यक्ति उस स्थान पर पेशाब करता है तो वह नपुंसक हो जाता है।
- जिस मनुष्य को नपुंसक करना हो, वह जिस स्थान पर पेशाब करे, वहां काला बिच्छू गाड़ दें तो वह पुरुष नपुंसक हो जाता है। यह क्रिया बुधवार के दिन करें।
- रविवार के दिन आक या सफेद कनेर की जड़ को कान पर बांधने से हर प्रकार के विषम ज्वर (पारी से आने वाले अथवा कम अधिक आने वाले बुखार) दूर हो जाते हैं।
- माघ अथवा मादो माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को कलिहारी की जड़ उखाड़ लाएं, फिर आवश्यकता के समय उसे कमर में बांधकर सहवास करें तो बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता है।
- अपराजिता की जड़ और शिखा को रेशमी वस्त्र में लपेटकर अपनी भुजा में बांधकर सहवास करने से बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता है।
- लोबान, घी, देवदारू, हींग, सरसों, केश नीम की पत्ती, इन्द्र जौ, गौदन्ती, कुटकी, कटेली, वच, जौ, चना, बकरे के बाल तथा मोर की पूंछ—इनको बछड़े के मूत्र में पीसकर सुखा लें, फिर मिट्टी के बर्तन में अग्नि जलाकर

उक्त वस्तुओं के चूर्ण की धूप दें तो भूत, प्रेत डाकिनी, शाकिनी आदि का प्रकोप दूर हो जाता है।

- इन्द्रवारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च को गाय-मूत्र में पीसकर नस्य लेने से ब्रह्मराक्षस, भूत आदि की बाधा दूर होती है।
- अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा फलों की गोली बनाकर बकरे के रोओं के साथ रोगी की भुजा में बांध देने से सन्निपात ज्वर दूर हो जाता है।
- शनिवार के दिन जिस स्थान पर मछली पकती हो, वहां पारी के ज्वर का रोगी पहुंचकर अपने संपूर्ण शरीर को कपड़े से ढककर पकती हुई मछली की भाप लें तो पारी का ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।
- रविवार तथा मंगलवार के दिन पारी वाले बुखार वाले रोगी के संपूर्ण शरीर से पाठा मछली का स्पर्श करके उसे चौराहे पर फेंक देने से ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।
- शनिवार के दिन बबुरा की जड़ को सफेद सूत में लपेटकर रोगी की भुजा में बांध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।
- रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर उसको दाईं भुजा पर बांधने से रोगी का बुखार एक ही दिन में दूर हो जाता है, परंतु यह ध्यान रखना चाहिए—अगर स्त्री हो तो बाईं भुजा में बांधना चाहिए।
- तिजारी नामक ज्वर के रोगी की कमर में सांप की केंचुल बांधने से बुखार की पारी रुक जाती है।
- तिजारी ज्वर में सिर से पांव तक की लंबाई का लाल डोरा लेकर उसमें नाल की जड़ लपेट लें, तदुपरांत उसे रोगी की कमर या फिर कान में बांध देने से ज्वर की पारी समाप्त हो जाती है।
- भांग की जड़ को सूत में लपेटकर सिर में बांधने से चौथेया ज्वर दूर हो जाता है।
- अपामार्ग की जड़ को रोगी की भुजा में बांधने से भूत ज्वर दूर हो जाता है।
- शनिवार की शाम को छोटी दूधी के पौधे की जड़ में पीले बादलों को रखकर न्यौता दे आएं। रविवार के दिन सूर्योदय के पहले ही उस स्थान पर जाकर, नग्न होकर गूगल की धूनी देकर उसको जड़ से उखाड़ लें। उसके पश्चात् उसकी जड़ पुरुष की दाईं और स्त्री की बाईं भुजा में बांध देने से तिजारी का बुखार उतर जाता है।

- सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, उन्हें लाल रंग के डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से दस्त बंद हो जाते हैं। सहदेई की जड़ सरलता से मिल जाती है।
- जायफल को रेशम के धागे में गूंधकर बांह या कंठ में धारण करने से मिरगी रोग दूर हो जाता है। इस प्रयोग को शनिवार के दिन करें।
- एक तोला असली हींग कपड़े में सीकर तावीज जैसा बनाकर गले में पहन लें, इससे मिरगी का दौरा नहीं आता। इसके अतिरिक्त अन्य रोग भी दूर हो जाते हैं।
- मंगलवार के दिन लहसुनिया रत्न को पीसकर, काले कपड़े में रखकर पांव के अंगूठे से बांध दें। तीन घंटे का समय बीत जाने पर उसे खोलकर चौराहे पर पटक दिया जाए तो सर्दी लगकर बुखार आने की पारी समाप्त हो जाती है।
- नारियल की जड़ को गले में बांधने से महाज्वर दूर हो जाता है।
- भांगरे की जड़ को डोरे सहित कान में बांधने से रात में आने वाला ज्वर भाग जाता है।
- रविवार के दिन प्रातःकाल के समय निर्गुण्डी तथा सहदेई की जड़ को उखाड़ लाएं। फिर उन्हें कमर में बांध दिया जाए तो सभी प्रकार के ज्वर भागते हैं।
- मकड़ी के जाले को यंत्र में भरकर गले में लटकाने से ज्वर समाप्त होता है।
- सफेद कनेर की जड़ को भुजा में बांधने से सर्दी से आने वाले बुखार को भागना ही पड़ता है।
- रविवार के दिन चचीड़ा की जड़ को उखाड़कर सात धागों में लपेटकर हाथ में बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।
- रविवार की सायंकाल को मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसके अंदर एक सोने की अंगूठी डाल दें और करीब एक घंटे के पश्चात् उसी पानी से रोगी को स्नान करवाया जाए। स्नान के बाद वह अंगूठी वापस निकाल लें। इससे बुखार दूर हो जाता है।
- मूसाकानी की जड़ को हाथ में बांधने से बुखार उतर जाता है।
- रविवार अथवा मंगलवार के दिन मलेरिया का रोगी ताड़ वृक्ष से अपना कलेजा स्पर्श कर यह कहे कि जब मेरा बुखार उतर जाएगा, तब मैं मछली चढ़ाऊंगा। अतः जब बुखार उतर जाए, उसके बाद दो मछली

लेकर लकड़ी से बांधकर मंगल या रविवार को ताड़ वृक्ष की जड़ में रख दें।

— कटेरी जड़ को सिर पर बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है। ज्वर उतरने के बाद उसे चौराहे पर रख दें।

— शनिवार के दिन मयूर शिखा के पौधे को न्यौत आएं तथा अगले दिन उखाड़ लाएं। यह सवेरे ही लाना चाहिए तथा उसे लाल डोरे में लपेटकर कमर तथा हाथ में बांधने से बुखार दूर हो जाता है।

— कमल की जड़, तिल और काली मिर्च को दूध में पिलाने से गर्भिणी स्त्री का गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

— आंवला-बहेड़ा-निसौत के चूर्ण को पानी के साथ पीसकर पीने से स्त्री का रक्त गिरना बंद हो जाता है।

— लिसोड़े की छाल और सौंठी के चावल की गांठ बांधकर स्त्री की योनि में रख देने से खून गिरना बंद हो जाता है।

— धतूरे की जड़ को कमर से बांध देने से गर्भस्राव नहीं होता है।

— लाल चंदन, दूध, घी, मिश्री और शहद इनको मिलाकर पिलाने से कैसा भी बहता हुआ रक्त रुक जाता है।

— बेल की जड़, देवदारू, बबूल तथा प्रियंगु इन सबको एक साथ पीसकर धूप देने से ग्रह, भूत-प्रेत, पिशाच, राक्षस, ब्रह्म राक्षस आदि की बाधा दूर हो जाती है।

— अनार का बांदा ज्येष्ठा नक्षत्र में लाकर घर के दरवाजे पर बांध देने से बालकों के अनेक दुष्ट ग्रहों का निवारण हो जाता है।

— रविवार के दिन सिरस के फूल और पत्ते लाकर उनमें घुग्घू की बीट, ऊंट के बाल, कुत्ते और बिल्ली की विष्ठा, गोबर, सफेद घुंघची और कड़वा तेल मिलाकर कूट करके धूनी देने से भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाती है।

— अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नख लेकर रख लें। उस नख को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेत भाग जाते हैं।

— जिस समय सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो, उस समय सफेद घुंघुची की जड़ को लाकर बालक के गले में बांध देने से डाकिनी आदि का भय दूर हो जाता है।

— जावित्री और सफेद अपराजिता के पत्ते के रस का नस्य लेने से डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधा दूर हो जाती है। यह क्रिया शनिवार या मंगलवार को ही करें।

- गूगल, लहसुन, घी, सर्प की केंचुल, बंदर के बाल, मुर्गे तथा कबूतर की बीट, इन सभी को एकत्र करके धूप देने से भूत ज्वर एकाहित आदि शीघ्र दूर हो जाता है।
- कथ के गूदे को ठंडे पानी में पीसकर, गाय के दूध के साथ मिलाकर पिलाने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- मुलहठी, पझाख मोथा, नागकेशर और गजपीपल इनको बराबर भाग में लेकर गाय के दूध के साथ पिलाने से आठवें मास के गर्भ की रक्षा होती है।
- कसेरू, पुस्करमूल, सिंघाड़ा और नील कमल इन सबको पानी में पीसकर पिलाने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- इन्द्रायण के बीज, ककोल और अंकोल को समान भाग में लेकर शहद के साथ घोंटकर खिलाने से नवें मास की गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- सोंठ डालकर पकाए हुए गाय के दूध को पीने से दसवें मास की गर्भ पीड़ा दूर होती है।
- पुरानी खांड, मुनक्का, शहद, छुहारा और नील कमल इनको गाय के दूध के साथ देने से दसवें मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- मिश्री और खैरसार को ठंडे पानी में पीसकर गाय के दूध के साथ पिलाने से छः मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- कसेरू, नागरमोथा, सिंघाड़ा और एरंड (अंडी) इन सबको समभाग लेकर चूर्ण बनाकर सतावर डालकर पकाए हुए गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ स्थिर हो जाता है।
- अनुराधा नक्षत्र में आधी सुपारी लेकर उसको धूप देकर कमर में बांध देने से गर्भस्राव नहीं होता है।
- तण्डुली की जड़ को चावल के धोवन पानी के साथ देने से गर्भस्राव नहीं होता है।
- धतूरे की जड़ का चूर्ण योनि में रखने से गर्भ स्तम्भन होता है।
- खरैंटी की जड़ को कुंवारी कन्या के हाथ से काते गए सूत में लपेटकर कमर में बांधने से गर्भ गिरना बंद होता है।
- कांकड़ी के बीज, डाम की जड़ और दो माशे गेरू—इन सभी को घोंटकर पिलाने से बहता हुआ रक्त रुक जाता है।
- कुंकुम के रंग में रंगे हुए लाल डोरे में एक करेज का बीज बांधकर गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से गर्भ नहीं गिरता।

– सरफोंका की जड़ को पीसकर चावल के धोवन के साथ पिलाने से गर्भस्राव नहीं होता है।
– घी, नीम, सरसों और पुनर्नवा के पत्तों को मिलाकर गर्भिणी स्त्री को धूप देने से गर्भ की रक्षा होती है।
– अरंडी के बीज पीसकर पानी के साथ सेवन करने से गर्भस्राव नहीं होता है।
– पुनर्नवा, काकोली, नील कमल, गोखरू इनको गाय के दूध के साथ पिलाने से पांचवें महीने का गर्भ नहीं गिरता है।
– क्षीरे, खरैटी, काकोली को मिलाकर दूध के साथ पिलाने से तीसरे महीने का गर्भ नहीं गिरता है।
– मंजीठा, काले तिल, सतावर और पीपल की छाल आदि को बराबर लेकर इससे चार गुना दूध के साथ पिलाने से दूसरे महीने का गर्भ नहीं गिरता है।
– मुलहठी, सिरस और देवदारू के बीज को काली गाय के दूध के साथ पीसकर पीना चाहिए। इसके पीने से पहले महीने का गर्भ नहीं गिरता।
– अतीस, नागरमोथा, ह्याबेर का काढ़ा, काली मिर्च मिलाकर पीने से गर्भ के रोग नहीं होते हैं।
– जंभीरी के फल के चूर्ण को शहद के साथ खाकर गाय का दूध पीने से गर्भ का सूखना बंद होता है।
– गाय के दूध में खांड मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बंद हो जाता हैं।
– उस बच्चे का दांत जो कि पहली बार गिर रहा है, वह जमीन पर गिरने से पूर्व उठा लें। तदुपरांत उस दांत को चांदी के तावीज में मढ़वाकर जो स्त्री अपनी बाईं भुजा में धारण कर ले, उसे गर्भ नहीं ठहरता है।
– मैथुन के समय मेंढक की हड्डी को अपने पास रखने से स्त्री को गर्भ नहीं ठहरता है।
– रजोधर्म से निवृत होने के पश्चात् पांच दिन तक जो स्त्री पान की जड़ को घोटकर पी लेती है, उसे गर्भ नहीं ठहरता है।
– धतूरे की जड़ को पुष्य नक्षत्र में दिन में लाकर कमर में बांधने से गर्भ नहीं ठहरता है।
– जिस स्त्री के प्रथम बार बच्चा हो रहा है, उसके होने के समय के खून को लेकर, जो स्त्री अपने संपूर्ण शरीर पर लगा लेती है, उसे जीवन-भर गर्भ नहीं ठहरता है।

- ब्रह्मी की जड़ को शरीर में धारण करने से रुका हुआ गर्भ भी गिर जाता है।
- इन्द्रायण, अपामार्ग, करियाई कंद की जड़ को चूर्ण कर पोटली बनाकर योनि में रखने से मासिक धर्म खुलता है।
- ज्येष्ठा नक्षत्र में अंडूसे की जड़ लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांध देने से 30 दिन के भीतर रजस्वला हो जाती है।
- रविवार के दिन कौए की चोंच लाकर धूनी दें और उससे पृथ्वी पर गुप्त लकीर खींचें। जो स्त्री उस लकीर को लांघे, वह रजस्वला हो जाती है। उसी कौए की चोंच को पिलाने से रक्तस्राव बंद होता है। यह एक प्रचलित टोटका है।
- सूर्यमुखी और पाटला की जड़ को गर्भिणी स्त्री के गले में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- चिरचिटा की जड़ के सात टुकड़े और उसी के सात पत्ते गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- गर्भिणी स्त्री की कमर में केले की जड़ बांधने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- सरफोंका की जड़ को गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बांधकर गर्भिणी के बाएं हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- कलिहारी की जड़ को रेशम के धागे में बांधकर गर्भिणी स्त्री के बाएं हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- स्त्री की कमर में नीम की जड़ बांध देने से प्रसव पीड़ा समाप्त हो जाती है।
- हुलहुल की जड़ को मस्तक अथवा भुजा में बांध देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।
- चकमक पत्थर को कपड़े में लपेटकर गर्भिणी स्त्री की जंघा में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- पुनर्नवा की जड़ के चूर्ण को योनि में रख देने से प्रसव की पीड़ा कम होकर बालक सुखपूर्वक उत्पन्न होता है।
- गर्भिणी स्त्री के कंठ में जीवित सर्प के दांत को निकालकर लटका देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

- गर्भिणी स्त्री के नितम्बों पर सांप की केंचुली बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- उत्तर दिशा में उत्पन्न हुई ईश की जड़ को उखाड़कर गर्भिणी स्त्री के शरीर के नाप के बराबर सूत में लपेटकर कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- मालकांगनी के नए पत्तों को दुपहरिया के फूल के साथ खाने से बंद मासिक धर्म भी खुल जाता है।
- अंडी की 9 अंगुल प्रमाण जड़ पर गंधक का लेप करके योनि मार्ग में रखने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।
- काली मिर्च, पीपरमिंट की जड़, ब्रह्मादंडी की जड़, मुलहठी इन सबको कूटकर काढ़ा बनाकर पीने से बंद मासिक धर्म खुल जाता है।
- शहद में कबूतर की बीट मिलाकर पीने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।
- काली मूसली की जड़ को हाथ अथवा पांव में बांधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।
- गाय के दूध में खांड मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बंद हो जाता है।
- जमीरी के फल के चूर्ण को शहद के साथ खाकर गाय का दूध पीने से गर्भ का सूखना बंद होता है।
- आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रायः इस बीमारी के कारण व्यक्ति का कामकाज में मन नहीं लगता, बात करते सुस्ती जा जाती है, बदन टूटने लगता है। ऐसे व्यक्ति सुबह स्नान करते समय रेशम का एक धागा हाथ में लेकर सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं और 108 बार 'ॐ' नमो भगवते सूर्याय स्वाहा " का जाप करें। फिर धागा बाएं हाथ के अंगूठे पर बांध दें। अगर धागा न बांधना चाहे तो प्रतिदिन नियम से एक टांग पर खड़े होकर इस मंत्र का जाप करें।
- बहुत से व्यक्तियों की यदाकदा भूख कम हो जाती है। कुछ भी खाने के लिए मन नहीं होता। शरीर आलस्य और टूटन से भर जाता है। चेहरा निस्तेज होने लगता है। इस प्रकार के रोग से पीड़ित व्यक्ति को रोज कम से कम एक घंटा पेट के बल सोना चाहिए। प्रातःकाल सोकर उठने पर एक गिलास शुद्ध जल को हाथ में लेकर जल की ओर देखें और ओम अग्निचक्रायहीन नमः का 108 बार पाठ करें। पाठ करते समय केवल हाथ में लिए जल की ओर देखते रहें। जाप

पूरा होते ही सारा जल एकदम पी जाएं और गिलास को औंधा करके रख दें। मेरा यह अनुभूत प्रयोग है, तुरंत भूख लगने लगेगी।

— बहुत से लोग अनावश्यक रूप से मोटे या थुलथुल हो जाते हैं। उनको इससे परेशानी होती है। ज्यादा मोटा होना भी ठीक नहीं है। जो अपना मोटापा कम करना चाहते हैं, वे रविवार के दिन काला धागा अनामिका में बांध लें और उसे रांगे की अंगूठी से ढक दें। धीरे-धीरे मोटापा स्वयं कम हो जाएगा।

— बांदा वृक्ष पर उत्पन्न होता है। आम और बेर का बांदा सरलता से प्राप्त होता है। आम के बांदे की पत्तियों को पशुओं को खाने के लिए दिया जाता है। शेष लकड़ी जलाने के काम आती है। बेर के बांदे को पीसकर दही में मिलाकर खाने से आमाशय के रोग ठीक होते हैं।

— गर्भिणी स्त्री के शरीर के नाप के बराबर कुंवारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत में चिरचिटा की जड़ को लपेटकर कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— गर्भिणी स्त्री का नाम लेकर ताड़ वृक्ष के उत्तर की ओर का सिरा उखाड़ लाएं, फिर उसे लाल धागे में लपेटकर स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक धतूरे की जड़ को उखाड़कर रख लें। इस जड़ को गर्भिणी स्त्री की कमर में बांधने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— भेड़ की खाल की अंगूठी गुरुवार के दिन बनाकर उसी दिन मध्यमा उंगली में पहनने से लाभ होगा।

— आजकल नींद न आने की बीमारी काफी बढ़ गई है। नींद न आने के कारण लोग नींद लाने वाली गोलियों का खुलकर प्रयोग करते हैं। अगर किसी को इस बीमारी से पीड़ित देखते हैं तो उसे यह प्रयोग बता दें। बिस्तर पर लेटने के पश्चात् शरीर एकदम ढीला छोड़ दें और धीरे-धीरे 100 तक गिनती गिनें, उसके बाद सांस रोककर "ॐ कुंभ कर्णाय नमः" बोलें और सांस छोड़ दें। इस प्रकार 108 बार करें। प्रारंभ में थोड़ी बेचैनी तो अवश्य होगी, पर नींद आ जाएगी।

— इस रोग से आराम पाने के लिए शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल लाकर इसका छल्ला बनवा लें। इस छल्ले को नीचे की उंगली में पहनने से पथरी रोग शांत हो जाता है।

— गेहुंअन सांप की पूरी केंचुली को कपड़े में लपेटकर पेड़ू से बांध लें। यह बीमारी जाती रहेगी।

- आंत के लिए शनिवार के दिन लाजवंती पौधे की जड़ लाकर छल्ले के रूप में कमर से बांधें तो आंत का उतरना बंद हो जाएगा। भिंडी की जड़ भी इसी तरह प्रयोग करें। तुरंत लाभ होगा।
- सिरदर्द बहुत अधिक होने पर मजीठ के पौधे की जड़ कपड़े में बांध लें। फिर उसे माथे पर रख लें। जब सिरदर्द समाप्त हो जाए तो यह जड़ चौराहे पर दक्षिण की ओर फेंक दें। सिरदर्द दूर होने के बाद एक गिलास ठंडा पानी पी लें। सिरदर्द काफी समय के लिए टल जाएगा।
- शुक्रवार या मंगलवार को लोबान के पौधे की जड़ लाकर गले में बांध दें, खांसी में आराम मिल जाएगा।
- कुछ लोगों के शरीर में वायु का गोला घूमता है। इससे बड़ी तकलीफ और बेचैनी होती है। रविवार या मंगलवार के दिन काठ की नाव की कील और काले घोड़े की नाल का एक छल्ला बनवा लें। यह कड़ा हाथ में पहनने से वायु गोले का वेग शांत हो जाता है।
- अधिक दस्त लगने पर सहदेई के पौधे की जड़ के सात बराबर-बराबर टुकड़े करें। इसकी एक माला कमर में बांधें। अतिसार समाप्त हो जाएगा।
- प्रातः सोकर उठते ही बिना कुल्ला किए ही अपना थूक सफेद दाग पर लगाएं। दाग धीरे-धीरे ठीक हो जाएंगे या जिस हकीक पत्थर पर सूर्य अंकित हो, वह गले में मंगलवार के दिन पहन लें।
- ब्लड प्रेशर के लिए रुद्राक्ष की माला पहनना अति उत्तम है। ध्यान रखें, रुद्राक्ष काले धागे में ही पिरोएं।
- शरीर में प्रायः फोड़े-फुंसी हो जाया करते हैं। वे पक जाते हैं। मवाद निकलती है, फिर उनका मुंह बंद हो जाता है। कुछ समय बाद फिर मवाद बन जाती है। इस प्रकार के फोड़े-फुंसी जब पक जाएं और मवाद निकल जाए तो फुंसी के मुंह पर केले के पत्ते को पीसकर बांध दें। जब घाव ठीक हो जाए तो यह लुगदी पीले कपड़े में लपेटकर जमीन में दबा दें।
- बहुत से स्त्री-पुरुषों को अचानक दौरे पड़ते हैं या चक्कर आते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका मुख्य कारण दुर्बलता बताया गया है। प्रायः बीमारी से उत्पन्न दुर्बलता के बाद इस तरह से होता है। इसके लिए तंत्र में यह उपाय बताया गया है—रोगी व्यक्ति सूर्योदय के समय उठे और सूरजमुखी का फूल लेकर अपने माथे पर घिसें। रोगी को चाहिए कि फूल घिसते समय "ॐ सूर्याय नमः" का जाप

करता रहे। इसके पश्चात् वह फूल दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। इसके तुरंत बाद स्नान कर ले। स्नान के पश्चात् कुछ समय सूर्य की रोशनी में खड़ा रहे। अगर संभव हो तो थोड़ी क्रीम पी ले। बीमारी से लाभ होगा।

— जिन व्यक्तियों की पसली या कमर में दर्द रहता हो, वे सायंकाल में डूबते सूरज की ओर मुख करके जहां-जहां सर्दी हो, कमर या छाती पर नीम की टहनी को 21 बार स्पर्श कराएं और स्वयं निम्न मंत्र बोलते रहें—"ॐ भैरवाय नमः। इसके पश्चात् टहनी को कुएं या तालाब में फेंक दें।

— हकलाने वाला व्यक्ति प्रत्येक सोमवार या शुक्रवार को सूर्योदय से पूर्व उठे। पवित्र होकर वह उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाए और "ॐ सरस्वत्यै नमः" का जाप कम से कम 108 बार करे। जाप से पूर्व एक गिलास में जल सामने रख ले। जाप के बाद वह उसे पी ले। इसके बाद सायंकाल को 2 सुपारियां अपने ऊपर से वारकर दक्षिण दिशा में फेंक दे।

— मंगलवार के दिन लगभग 6 ग्राम धनिया लेकर किसी कलई किए गए पीतल के बर्तन में आधा किलो पानी में डालकर पकाएं। जब पानी आधा रह जाए तो उतार लें और उसमें 200 ग्राम मिश्री मिला दें। अब इसे बृहस्पतिवार से प्रारंभ कर रविवार तक थोड़ा थोड़ा पिलाएं। मासिक धर्म नियमित हो जाएगा।

— यात्रा से उत्पन्न थकावट को दूर करने के लिए ठंडे पानी से दोनों पैर धो लें। पैरों के तलुओं में हल्के-हल्के निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ फेरें—"ॐ वासुदेवाय नमः"। थोड़ी देर में थकावट दूर होकर स्फूर्ति का संचार होगा।

— काले रंग के घोड़े की लीद जला लें। भस्म बन जाने पर उसकी राख तिल्ली के तेल में मिलाकर बालों में मालिश करें और लगातार यह तेल लगाते रहें। इसके नियमित प्रयोग से बाल लंबे और घने होंगे।

— बहुत से स्त्री-पुरुषों के सिर के बाल गायब हो जाते हैं। इस प्रकार बालों का झड़ना या टूटना गंजापन कहलाता है। औघड़ तंत्र में इसके लिए एक विचित्र प्रयोग है। इस प्रयोग को संभवतः घृणा या गंध के कारण, करने में लोग हिचकते हैं। मैंने स्वयं इसका प्रयोग नहीं किया, पर विधि में बताया गया है। गधे के सिर की हड्डी को जैतून के तेल से घिसकर लेप बनाएं और गंज के स्थान पर लगाकर रात को सो

जाएं। प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके लेप को धो लें।

– आंखों के सभी प्रकार के विकारों और नजर कमजोर होने पर गोरखमुंडी का पौधा उखाड़ लाएं। फिर घर लाकर जल से धोकर सुखा लें। चार-पांच दिन बाद जब यह सूख जाए तो कूट-पीसकर उसका चूर्ण बना लें। रात को सोते समय एक चुटकी लोटे में डाल दें। प्रतिदिन प्रातः उठकर उस जल से आंखों को धो लें। इससे सभी प्रकार के आंखों के रोग समाप्त होते हैं। इसी चूर्ण की एक चुटकी दूध में डाल लें और इस दूध को पी लें। इससे शारीरिक शक्ति का विकास होता है, नेत्रों में अपूर्व कांति आ जाती है।

– प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को संध्याकाल में हनुमानजी के चरणों का सिंदूर पागल के माथे पर लगाते रहिए। शीघ्र ही शुभ फल सामने आएगा।

– नेत्रपीड़ा के मध्य प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमन करें। उसके बाद सूर्यमुखी का फूल सूंघें तथा शुद्ध जल आंखों में डालें। इस प्रयोग से नेत्रपीड़ा समाप्त होती है। यह प्रयोग सिरदर्द में भी किया जा सकता है।

– प्रायः देखा गया है कि बुखार में भय से कंपकपी प्रारंभ हो जाती है। कई बार तो अनेक गर्म कपड़ों से ढकने के बाद भी कंपकपी बंद नहीं होती है। ऐसे समय में निम्न मंत्र का जाप कर एक लवंग खिला दें, कंपकपी तुरंत बंद हो जाएगी। मंत्र निम्न प्रकार है—"ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।"

– शनिवार या मंगलवार के दिन हनुमान के पैरों से थोड़ा-सा सिंदूर ले आएं। इसके बाद इस मंत्र से अभिमंत्रित कर सिरदर्द के रोगी के माथे पर तिलक कर दें, शीघ्र ही लाभ होगा। यह एक शाबर मंत्र है, इसमें विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता नहीं होती है। मंत्र इस प्रकार है—"हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाये, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, मेरे गुरु का वचन सांचा।"

निम्न मंत्र का जाप करें और उस जड़ को रोगी के हाथ पर बांध दें। मंत्र निम्न प्रकार है—"ॐ ह्रीं चामुण्डे ज्वल ज्वल स्वाहा।"

– यौवन काल में या शरीर की अतिरिक्त गर्मी के कारण प्रायः मुहांसे (कीले) हो जाया करते हैं। यह पकने पर फ़ूटते हैं। इनका अगर ठीक उपचार न किया जाए तो चेहरे पर काले निशान डालकर व्यक्तित्व का नाश कर देते हैं। तंत्र ज्ञान में कहा गया है कि 12 ग्राम चिरायता

500 ग्राम पानी में खौलाकर जब कुछ गाढ़ा-सा बन जाए तो उसमें थोड़ा गंगाजल डाल दें। इसके काढ़े का नियमित प्रयोग करें।

– किसी भी प्रकार की कर्णपीड़ा में प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमस्कार करें। फिर उत्तर की ओर मुख करके प्राणायाम करें। आसन करते समय कानों को अंगुलियां से बंद कर लें, केवल श्वास छोड़ते समय कानों से अंगुलियां हटा लें। प्रत्येक बार जोर से उच्चारण करें "ॐ वायुदेवाय नमः", इससे कानों के रोग से मुक्ति मिलेगी।

– यह रोग स्त्रियों को ही होता है। मेरा स्वयं का अनुभव है कि यह रोग अविवाहित एवं संतानहीन स्त्रियों को अधिक होता है। इसमें रोगी के दांत कस जाते हैं और शरीर ऐंठ जाता है। बड़ी कठिनता से होश आता है। इस प्रकार का दौरा पड़ने पर हल्दी या प्याज सुंघाने से शीघ्र लाभ होता है। हिस्टीरिया का दौरा न पड़े, इसके लिए प्रत्येक रविवार को भी पूजन और चन्द्रमा का दर्शन पूजन करना चाहिए।

– प्रायः देखा गया है कि छाती की पसली में तेज दर्द उठता है, जिसे शूल भी कहते हैं। दर्द से आदमी बेचैन हो जाता है। एक आटे का दीपक बनाएं और उसके समक्ष "राम रमेति राम राम राम" का जाप करें। कुछ समय पश्चात् उस दीप को हाथ से बुझा दें। (मुंह से फूंक मारकर कदापि न बुझाएं) दीपक की बाती निकाल लें और छाती पर मलें। शूल रोग ठीक हो जाएगा। संभव हो तो उक्त मंत्र का जाप निरंतर करते रहें।

– बदहजमी या अफारा होने पर तत्काल तुलसी के 7 पत्ते लेकर उन पर "राम दूताय हनुमान, पवनपुत्र हनुमान" कहते हुए 31 बार फूंक मारें और वह पत्ते रोगी को खिला दें। याद रखें, यह पत्ते रोगी चबाए नहीं, तुरंत लाभ हो जाएगा। यह मेरा स्वयं का अनुभूत प्रयोग है।

– अगर दाद, खाज, खुजली का रूप अत्यंत घिनौना हो गया हो तो एक अगरबत्ती शिव की पिंडी के आगे जलाएं। इस अगरबत्ती की विभूति को उक्त लेप में मिला लें। ध्यान रहे, अगरबत्ती केवल शुद्ध चंदन की हो। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का जाप कर अभिमंत्रित कर लें– "ॐ भं भूं ॐ"। भगवान शिव की कृपा से अवश्य ही लाभ होगा। यह क्रिया सोमवार के दिन अधिक प्रभावी होगी।

अनुभूत सरल टोटके

– केला ज्यादा खा लेने पर दो छोटी इलायची खा लें, फौरन हजम होगा।

– अगर आपने आम ज्यादा खा लिए हों तो ऊपर से चार जामुन खा लें और जामुन ज्यादा खा लिए हों तो थोड़ा नमक खा लें, हजम हो जाएंगे।
– अरहर की दाल (50 ग्राम) को पानी में उबालकर उसका पानी पिलाने से भांग का नशा उतर जाता है।
– जो बालक रात सोते हुए मूत्र करता हो और डरता हो तो किसी चांदी के बर्तन में श्मशान की मिट्टी रखकर उसके हाथ से कहीं गड़वा दें, वह कभी भी पेशाब नहीं करेगा और डरेगा भी नहीं।
– अगर आप लौंग को जलाकर उसका चूरा पानी के अन्दर करके डालें और उसे मिलाकर नाक में डालें तो आपकी नकसीर तुरंत बंद हो जाएगी।
– आप बाजार से मूली और फिटकरी लाओ। उसे पानी में घिसकर डाल दो। अब आपकी औषधि तैयार है। जिसे नशा हो, उसे पिला दो, एक मिनट में नशा दूर हो जाएगा।
– अगर आप कपूर और रोली मिलाकर उसमें आग लगाएं और दीवाली के दिन उस राख को अपने गल्ले में रखें तो आपका व्यापार दिन दुगना रात चौगुना बढ़ जाएगा।
– अगर आप भोजपत्र पर कटहरी का रक्त निकालकर उसमें चूल्हे की राख मिलाकर उसे किसी जगह गाड़ दें तो आप ज्यादा भोजन खाने लगेंगे।
– अगर आप अपनी नजर तेज रखना चाहते हैं तो सुबह नहाते समय एक बाल्टी पानी के अन्दर आंखें खोलकर इधर-उधर दस सेकंड तक सांस लेते रहें, इसके बाद तौलिए से 15 बार आंखों को धीरे-धीरे दबाएं, ताकि आंखों से बाल्टी का पानी निकल जाए। अंत में मुंह का पानी निकाल दें।
– अगर पांव की अंगुलियां गलने लगें तो सरसों का तेल मलकर ऊपर मेंहदी छिड़क दें और रात को लगाएं।
– सोते समय हाथ-पैर धाकर सोएं, इससे नींद गहरी आएगी और रात को स्वप्नदोष नहीं होगा।
– मछली खाने के बाद दूध हरगिज न पीएं, वरना सफेद कोढ़ हो जाएगा।
– गन्ना अधिक खाने पर ऊपर से बेर खा लें तो गन्ना हजम हो जाएगा।
– हल्दी 2 माशा, माहवारी होने के पांच दिन बाद तीन दिन ताजा पानी से खाने से गर्भ नहीं होगा।

— अगर शराब ज्यादा पी ली हो तो 6 माशे फिटकरी को दूध या गर्म पानी में घोलकर पिला दें या सेबों का रस निचोड़कर पिलाने से नशा उतर जाता है।

— धतूरा के जहर पर गर्म पानी में थोड़ा-सा नमक मिलाकर पिलाएं, जहर खत्म होगा।

— दस बूंद बरगद का दूध बताशे में डालकर रोज गाय के दूध के साथ पीने से जिस्म की कमजोरी और पेशाब की जलन व रुककर आने में लाभ देता है। मर्दाना ताकत को बढ़ाता है।

— तरबूज ज्यादा खा लेने पर थोड़ा-सा काला नमक खाएं।

— अरहर के पत्तों का अर्क पिलाने से अफीम का नशा कम हो जाता है या दूध-घी पिलाएं।

— इक्कीस दिन तक श्रीदुर्गा देवी की मूर्ति के आगे रक्त पुष्पों को चढ़ाकर धूप दीपादि जलाकर 108 बार जाप करने से कार्यों में बाधाएं समाप्त हो जाती हैं और शत्रु का नाश होता है।

— मूली के पत्ते खाने से हिचकी रुक जाती है। गोश्त व मूली अधिक खाने पर ऊपर से थोड़ा गुड़ खा लो, फौरन हजम हो जाएगा।

— रोगी को उल्टी दस्त हों तो दो तोला आम के नरम-नरम पत्ते कुचलकर आधा सेर पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाए तो छानकर गरम-गरम दो बार पिलाएं।

— दो कच्चे आम गर्म राख में भूनकर उनका गूदा निचोड़कर एक पाव पानी में थोड़ी बर्फ और चीनी मिलाकर दिन में दो बार पीने से लू की बीमारी तुरंत ठीक हो जाती है।

— शारीरिक शक्ति के लिए मीठे आम का रस आधा पाव, दूध एक पाव, चीनी आधी छटांक मिलाकर लस्सी की तरह बना लें। दो महीने तक लगातार शाम को पीएं जिससे मर्दानगी और शरीर की कमजोरी ठीक होगी। अगर बर्फ डालकर पीना चाहें तो पी सकते हैं, लेकिन अधिक बर्फ न डालें।

— सोंठ आधा पाव रात को आधा सेर दूध में भिगोकर रखें। सुबह सोंठ को पीसकर एक सा कर लें। आघा सेर आटा, आधा सेर घी में भूनकर पिसी हुई सोंठ में मिलाकर दें और आधा सेर चीनी मिलाकर रख लें। एक छटांक प्रतिदिन एक बार खाएं। वायु का दर्द और कमर दर्द को फायदा करेगा। दो तोला सुरंज़न शीरा पीसकर इसमें मिलाएं, अदरक वाला दूध इसमें फेंट लें।

- मसूड़ों के फूलने पर तीन माशा सोंठ दिन में एक बार पानी के साथ चार दिन तक खाओ तो साथ ही अगर दांत दर्द है, वह भी ठीक हो जाएगा।
- अनार के फूल छाया में सुखाकर बारीक करके मंजन की तरह मलने से खून बंद होकर दांत मजबूत होते हैं।
- मीठे अनार का छिलका पानी में उबालकर गर्म पानी से कुल्ले करने से मुंह की बदबू दूर होती है। दांत के रोग भी दूर हो जाते हैं।
- बार-बार पेशाब आना—अनार का छिलका बारीक करके 4 माशे ताजे पानी के साथ दिन में दो बार खाने से मसाने की गर्मी और पेशाब का बार-बार आना बन्द हो जाता है। लगातार दस दिन तक खाएं।
- कंधारी अनार का छिलका बारीक कर लें। 3 माशे सुबह-शाम पानी के साथ खाने से स्वप्नदोष नहीं होता है। रात को दूध न पीएं, दस दिन तक खटाई का परहेज रखें।
- एक पके हुए अंबरी सेब में जितने लौंग आ सकें, चुभोकर किसी चीनी के बर्तन में आठ दिन पड़ा रहने दें। आठ दिन के लौंग निकालकर शीशे के बर्तन में रख दें और रोजाना तीन बार बारीक करके सुबह दूध से खाएं, मर्दानगी अनुभव होने लगेगी। इसे 21 दिन खाएं।
- शुद्ध शहद में थोड़ा नींबू का रस डालकर बच्चे को चटाने से बच्चे का दूध डालना बंद हो जाता है।
- हैजे के लिए—नींबू का रस और प्याज का अर्क बराबर मिलाकर एक तोला प्रति घंटा पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है।
- सुन्दरता के लिए—हमारा यह नुस्खा बड़ा खरा उतरा है, जिसके प्रयोग से चेहरा साफ और सुन्दर हो जाता है। उसके लिए गाजर का रस, टमाटर का रस, संतरे का रस, चुकंदर का रस दो-दो तोला दो महीने पीने से चेहरे की झाइयां, दाग मुंह से दूर हो जाते हैं।
- खुलकर माहवारी न आना—माहवारी खुलकर आने के लिए स्त्रियों को चाहिए कि गाजर के बीज एक तोला कूटकर पाव भर पानी में उबाल लें, जब पानी आधा रह जाए तो शक्कर मिलाकर 2-3 दिन पिलाएं, जिससे माहवारी सदैव खुलकर आएगी।
- पथरी पड़ने पर पेशाब बन्द हो गया हो, शरीर की आंतों में पथरी पड़ गई हो तो गाजर के बीज और शलजम के बीज दो-दो तोला लें और एक मूली को भीतर से खोखला करके उसमें यह बीज भर दें। उसको भूनने के लिए रख दें। जब भुन जाएं तो उसमें से बीज निकाल लें।

खुराक 6 माशे मात्रा की सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करें।

– अगर किसी स्त्री को कोई भी उपहार देने का अवसर आए तो उस स्त्री को उपहार रूपी सुहाग की कोई भी सामग्री दे सकती हैं, इससे एक तो आप उस स्त्री के लिए सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त करेंगी ही, साथ में स्वयं के लिए भी अपने लिए अनेक प्रकार के मार्ग प्रशस्त करेंगी।

– यदि आप किसी भी नवरात्रि (दोनों पारी के) की पंचमी तिथि को या फिर किसी भी पूर्णिमा को 9 वर्ष से कम आयु की किसी कन्या को वस्त्र का दान करना आपको संतान पक्ष के सौभाग्य एवं सुख का मार्ग प्रशस्त करेगा।

– यदि आप आर्थिक अभावों से परेशान हैं तो बुधवार को बेसन के 5 लड्डू तथा थोड़ी सी हरी घास या कोई हरी सब्जी अपने शयनकक्ष में किसी सुरक्षित स्थान पर रखें। अगले दिन गुरुवार को प्रातःकाल स्नान करके स्वयं से 11 बार बेसन के लड्डुओं को उसार कर घास के साथ गाय को खिला दें। ऐसा 3 गुरुवार अवश्य करें। आर्थिक समस्याओं से छुटकारा प्राप्त होगा।

– अगर आपके पति का स्वास्थ्य ढीला रहता है तो उसके लिए आपको यह उपाय 3 गुरुवार अवश्य ही करना है। सर्वप्रथम गुरुवार की रात्रि को पति के सिरहाने एक रुपये का सिक्का तथा एक केसर की डिब्बी रखें। अगले दिन एक पीले वस्त्र में 300 ग्राम चना दाल, 400 ग्राम लाल मसूर, 125 ग्राम गुड़, 5 हल्दी की साबुत गांठ, 5 लौंग तथा 21 काली मिर्च के दाने लेकर पति के सिर से 7 बार उसार कर इस सामग्री के साथ सिरहाने रखी सामग्री को किसी वृद्ध को दे दें। ऐसा उपाय 3 गुरुवार को करना है।

– यदि आपकी कन्या का किसी भी कारणवश विवाह नहीं हो पा रहा हो तो आपके संबंधों में जब किसी कन्या का विवाह हो तब आप अपनी कन्या के हाथ से सुहाग के जोड़े के साथ अन्य सुहाग सामग्री का दान करवायें। आपको कुछ ही समय में इस दान का फल अवश्य दिखाई देगा।

– आपके जो भी इष्टदेव हैं, उनके सौभाग्य स्वरूप की तस्वीर को पूजा स्थल में स्थान दें।

– यदि परिवार में कोई पढ़ने वाला बच्चा हो तो माता सरस्वती की तस्वीर भी अवश्य होनी चाहिए।

– पूजा के दीये के लिए सदैव शुद्ध घी का ही प्रयोग करना चाहिए और दीपक में कलावे को बत्ती के रूप में लगा सकते हैं। दीपक में लाल धागा प्रयोग करने से देवी लक्ष्मी अतिशीघ्रता से प्रसन्न होती है।

– दैनिक पूजन में प्रभु को 5 बताशे, 5 किंशमिश एवं एक लौंग का जोड़ा भोग के रूप में अर्पित करना चाहिए।

– प्रत्येक बुधवार को श्री गणेश अर्ध्यशीर्ष का पाठ अवश्य करें, ऐसा करने से किसी भी कार्य में कोई बाधा नहीं आएगी। आपके परिवार में सौभाग्य का आगमन भी अवश्य होगा।

– किसी भी भवन का मुख्यद्वार कभी भी गंदा, कूड़ा एवं कोई भी अवरोध नहीं होना चाहिए, इससे सौभाग्य प्राप्ति में बाधाएं आती हैं।

– भवन में सीढ़ी के नीचे पूजा-स्थल अथवा शौचालय का स्थान नहीं होना चाहिए।

– पानी की टंकी आदि भवन की छत पर नैतृत्य कोण में रखनी चाहिए।

– ईशान कोण में कभी भी नवविवाहित का कमरा नहीं होना चाहिए। ऐसा होने से संतान संबंधी समस्याएं आती हैं।

– निवास में धन से संबंधित समस्त सामग्री ऐसी अलमारी में रखें जिसका मुख उत्तर दिशा की ओर खुलता हो, ऐसा करने से आपके सौभाग्य में तीव्रता में वृद्धि होगी।

– यदि किसी कारणवश परिवार में तनाव, कलह-क्लेश रहता हो तो अपने निवास के पूजा स्थल में श्री यंत्र रखें तथा गुरुवार तक श्रीसूक्त का पाठ करें। एक ही सप्ताह में आपको अंतर दिखलाई देगा।

– सर्वाधिक प्रभावी एवं शक्तिशाली देव श्री गणेश, भगवान शंकर, मां दुर्गा एवं मां शक्ति का कोई भी रूप, श्री हनुमान जी, श्री हरि एवं माता लक्ष्मी, श्रीराम या श्रीकृष्ण एवं नवग्रह माने जाते हैं, इनमें से जिस पर भी आपकी सबसे अधिक आस्था, श्रद्धा, विश्वास हो, वही आपके ईष्ट हैं। अतः उनकी पूजा करनी चाहिए। इससे सौभाग्य प्राप्ति होती है।

– किसी भी देवी-देवता को अपना इष्ट मान सकते हैं, परंतु उनके साथ आप श्री गणेश जी का पूजन अवश्य करें, क्योंकि श्रीगणेश की पूजा के बिना कोई भी देवी-देवता पूजा स्वीकार नहीं करते हैं।

– दैनिक पूजन में कम से कम तिलक, बिन्दी, धूप, दीप, अगरबत्ती के बाद भोजन आदि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार प्रभु को भी दैनिक श्रृंगार एवं भोजन आदि की आवश्यकता होती है।

– यदि आपकी इष्ट कोई देवी है, जैसे कि मां दुर्गा या फिर उनका कोई भी रूप, तो दैनिक पूजन से सौभाग्य प्राप्ति के लिए आप यह उपाय 7 बुधवार या 7 शुक्रवार को करें। किसी सुहागिन स्त्री को सुहाग सामग्री उपहार में दें जिसमें एक लाल चुनरी, सिंदूर, मेंहदी, महावर, चूड़ियां, इत्र, एक कंघी, शीशा, काजल एवं कुछ नगद दक्षिणा भी हो।

– यदि आपके इष्ट कोई देव हैं तो आप यह उपाय करें। इस उपाय को करने से आपके ईष्ट देव अवश्य ही प्रसन्न होंगे तथा आपकी विनती, पुकार अवश्य सुनेंगे। यह उपाय आपको 3 गुरुवार करना है। किसी भी ब्राह्मण को एक पीला वस्त्र, एक कोई भी पुस्तक अथवा पंचांग, एक केशर की डिब्बी, 11 सूखे छुआरे, थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लौंग, नागकेशर, 125 ग्राम बताशे तथा नगद दक्षिणा भी दान में दें।

– पुनर्वसु नक्षत्र में आप किसी भी प्रकार की औषधि, मिष्ठांन अथवा कोई भी अन्न खरीदकर पूर्ण सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

– अश्लेषा नक्षत्र में चांदी या कोई भी सफेद परंतु महत्वपूर्ण एवं मंहगी सामग्री खरीदने से अवश्य ही सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

– गुरु पुष्य नक्षत्र में कोई भी वस्तु खरीद कर सौभाग्य प्राप्ति कर सकते हैं। यह नक्षत्र यदि शुक्रवार को आता है तो चाण्डाल् योग कहलाता है।

– हस्त नक्षत्र में कोई भी सोने, चांदी धातु अथवा इनसे निर्मित आभूषण भी आपके सौभाग्य में वृद्धि करेंगे।

– मघा नक्षत्र में आप कोई भी लोहे से निर्मित सामग्री खरीद सकते हैं।

– पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में भूमि, भवन अथवा भूमि पर निर्मित किसी भी प्रकार का निर्माण खरीद कर सौभाग्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

– उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आप दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली भोज्य-सामग्री या किराना सामग्री खरीद कर सौभाग्य प्राप्ति कर सकते हैं।

– चित्रा नक्षत्र में आप कोई भी आभूषण एवं औषधि आदि खरीद कर सौभाग्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

– स्वाति नक्षत्र में आप कोई भी अनाज जैसे कि गुड़, चना, अरहर, दालें आदि खरीद कर सौभाग्य की प्राप्ति कर सकते हैं। इस नक्षत्र में मोती भी खरीद सकते हैं।

– विशाखा नक्षत्र में कोई भी वृक्ष आदि अथवा वृक्ष से संबंधित कोई भी सामग्री खरीद सकते हैं।

- यदि आप माता लक्ष्मी की पूजा कर रहे हैं तो आप प्रयत्न करें कि पूजन सामग्री में लाल रंग का प्रभाव अधिक हो; यहां तक कि पूजा के दीपक में रूई की जगह मौली की बत्ती लगाएं।
- माता लक्ष्मी के पूजन में चावलों का प्रयोग न करें। अगर यदि माता लक्ष्मी की कृपाप्राप्ति के लिए कोई उपाय कर रहे हैं तो चावलों का प्रयोग कर सकते हैं।
- माता लक्ष्मी का पूजन संध्याकाल में अवश्य ही करें।
- माता लक्ष्मी की स्थाई कृपाप्राप्ति के लिए आप माता लक्ष्मी की तस्वीर के साथ श्रीयंत्र का भी पूजन अवश्य करें। यंत्र पूजन से माता लक्ष्मी अत्याधिक प्रसन्न होकर आपके निवास अथवा व्यवसाय में प्रवेश करेंगी।
- माता लक्ष्मी का पूजन कभी भी दोनों हाथ जोड़कर नहीं बल्कि दोनों हाथों को फैलाकर करें, जैसे कि आप अपनी माता से मांग रहे हैं। दोनों हाथों को जोड़कर मांगने से लक्ष्मी विदा ले लेती है।
- प्रभु श्री हनुमान जी की जब भी पूजा-अर्चना करें, वह दोपहर के बाद ही करें।
- जब भी हनुमान जी की सेवा करें तो पूजा करते समय आपके शरीर पर कोई न कोई चमकीला लाल वस्त्र अवश्य ही होना चाहिए।
- श्री हनुमान जी कीं सेवा में मंगलवार को शुद्ध घी का दीपक एवं शनिवार को चमेली के तेल का दीपक अर्पित करें। इससे हनुमान शीघ्र ही प्रसन्न होंगे।
- लाल रंग के आसन का ही प्रयोग करना चाहिए।
- जब भी आप बजरंग बाण का पाठ करें तो प्रभु को चमकीले लाल रंग का आसन अवश्य ही अर्पित करें। इस आसन को बाद में उठाकर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें, इस आसन को कभी भी अन्य प्रयोग में न लें।
- हनुमान जी को कभी भी गुलाब के फूल नहीं चढ़ाने चाहिएं। प्रभु को पूजन के लिए लाल गुड़हल, गेंदे के फूल अर्पित कर सकते हैं, इससे प्रभु अति शीघ्र ही प्रसन्न होंगे।
- हनुमान जी को बेसन के लड्डू या गुड़-चना अर्पित करें।
- घर में किसी भी प्रकार की समस्या या कष्ट आ रहे हों तो शुद्ध घी का दीपक-या गुग्गल की धूप अर्पित कर हनुमान चालीसा का पाठ कर आरती करें।

- किसी गंभीर रोग से मुक्ति पाने के लिए श्रावण मास के प्रथम सोमवार को श्री महामृत्युंजय मंत्र करें (जाप करें)
- शनिदेव का पूजन सदैव संध्याकाल में अंधेरा होने के पश्चात् ही करें, क्योंकि शनिदेव रात्रिकाल के देवता हैं।
- शनिदेव की पूजन में यथासंभव आप काले वस्त्र ही धारण करें।
- शनिदेव की कृपा प्राप्त करने के लिए भोजन में काला नमक एवं काली मिर्च का ही प्रयोग करें।
- शनिदेव को शीघ्र प्रसन्न करने के लिए किसी निर्धन, निर्बल, बेसहारा व्यक्ति का अपमान न करें, बल्कि उनकी सहायता करें।
- शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए शनिवार को अवश्य ही शनि पूजन करें तथा सरसों के तेल से निर्मित कोई भोज्य पदार्थ निर्धन मजदूर एवं कुत्ते को अवश्य दें।
- शनिदेव के पूजन में सरसों का तेल, काला नमक, सुरमा, देसी कपूर से निर्मित काजल, काली उड़द, काले तिल, लोहे की कटोरी, शीशा, सुरमा आदि का प्रयोग कर सकते हैं।
- शनिदेव के पूजन के पश्चात् पीपल वृक्ष का भी पूजन करें।
- प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा, शनि स्त्रोत एवं शनिदेव के 108 नामों का उच्चारण करने से भी शनिदेव अतिशीघ्र प्रसन्न होकर सौभाग्य प्रदान करते हैं।
- माता दुर्गा की आराधना करते समय अपने सिर को अवश्य ढकें।
- माता की पूजा करते समय भोग में 5 बताशे, 1 जोड़ा लौंग तथा 5 किशमिश अवश्य ही होनी चाहिएं।
- यदि आप माता के मंदिर में पूजन के लिए जाते हैं तो शुद्ध घी का दीपक, चंदन की धूप, अगरबत्ती एवं नैवेद्य के साथ एक जटा नारियल अवश्य अर्पित करें। इससे माता खुश होंगी।
- माता दुर्गा की पूजा अर्चना करते समय लाल रंग के या कोई भी हल्के रंग के वस्त्र धारण कर सकते हैं, परंतु काले रंग के वस्त्र नहीं धारण करने चाहिएं, इससे मां दुर्गा नाराज हो जाती हैं।
- यदि आपके घर में कम आयु की कन्या है तो देवी अर्चना के बाद उस कन्या के चरण स्पर्श अवश्य करें।
- यदि आपके पास समय नहीं है तो आप मां दुर्गा चालीसा एवं दुर्गा सप्तश्लोकी का पाठ अवश्य ही करें। बुधवार को तो अवश्य ही दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

— यदि आपके निवास पर कोई शुभ कार्य हो रहा है और घर का छोटा सदस्य बिना किसी बात के बहुत रोता है तो आप यह समझ सकते हैं कि आपकी मेहनत का आपको पूर्ण फल प्राप्त नहीं हो रहा है।

— यदि आपकी पूजा अर्चना करते समय धूप या अगरबत्ती पूरी जलने पर समाप्त होने से पहले ही टेढ़ी हो जाती है तो समझें कि आपको आपके भाग्य का पूर्ण फल प्राप्त नही हो रहा है।

— पूजा के समय आपको कोई किसी भी प्रकार के अशुभ समाचार प्राप्त होते हैं तो आपके भाग्य में कहीं न कहीं कोई रुकावट है अथवा आपकी मेहनत का पूर्ण फल प्राप्त नही हो रहा है।

— यदि आपके निवास अथवा व्यवसाय स्थल में मकड़ी के जाले अधिक एवं जल्दी-जल्दी लगते हैं तो आपके भाग्य में कोई रुकावट है एवं आपको अपनी मेहनत के अनुरूप पूर्ण सौभाग्य प्राप्त नहीं हो रहा है। इसके साथ ही भविष्य में आप पर कोई अधिक संकट आने वाला है।

— यदि आपके निवास पर कोई शुभ आयोजन चल रहा है और इसके चलते आपका कोई रिश्तेदार बिना किसी कारण कोई क्लेश या मन-मुटाव उत्पन्न करे तो भी आपकी मेहनत का आपको पूर्ण फल प्राप्त नहीं हो रहा हैं।

— आप जब कभी कोई नया वस्त्र या चादर धारण करते हैं और वह तुरंत ही फट जाती है या हानि होती है तो समझें कि आपके भाग्य में कोई रुकावट है।

— यदि आपके घर में कांच का सामान अधिक टूटता है तो इससे आप समझ सकते हैं कि आपकी मेहनत का फल आपको प्राप्त नहीं हो रहा है।

— आपके परिवार का कोई बच्चा सुबह उठते ही बिना किसी बात के रोता है अथवा उठते ही खाने के लिए कुछ मांगता है तो उसको वह वस्तु देने पर अगर वह चुप नहीं होता है तो आप समझ सकते हैं कि आपके भाग्य में रुकावट है। आपको पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं हो रही है।

— दूध उबालते समय अधिक उफान आ जाता है, तो भी आपके सौभाग्य में बाधा है एवम् आपके परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त नहीं हो रहा है।

— यदि आपके निवास अथवा व्यवसाय स्थल के मुख्यद्वार पर कोई कुत्ता अथवा कोई अन्य जानवर अशुभ प्रकार की आवाजें निकालता है, तो भी आपकी भाग्यप्राप्ति में बाधा है।

— यदि आपके स्वप्न में कोई पुराना मंदिर, वृद्ध-वृद्धा आदि दिखाई देते हैं तो भी आपकी सौभाग्य प्राप्ति में बाधा है।
— अपने निवास को सदैव ही साफ-सुथरा रखें, इससे मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।
— घर का मुख्यद्वार सदैव साफ-सुथरा होने पर लक्ष्मी की प्राप्ति होगी।
— अपने निवास पर कुछ-कुछ समय बाद धार्मिक आयोजन करते रहें अथवा सत्यनारायण की कथा अथवा श्रीसूक्त का पाठ या हवन करवाते रहें। इससे आपको लाभ की प्राप्ति होगी।
— अपने घर का ईशान कोण सदैव साफ सुथरा रखें, क्योंकि ईशान कोण में भगवान का वास होता है।
— आप अपने निवास की अलमारी को हमेशा साफ सुथरा रखें, इससे मां लक्ष्मी की कृपाप्राप्ति होती है।
— अपने पूजा स्थल में शिव परिवार को अवश्य स्थान दें।
— अपने निवास, पूजा स्थल में माता लक्ष्मी की मूर्ति के साथ श्री विष्णु जी को भी स्थान दें, इससे लक्ष्मी माता की कृपाप्राप्ति होगी।
— आप अपने निवास में इतना स्थान रखें कि अग्नि व जल का संपर्क न होने पाये।
— डॉक्टर द्वारा कोई विशेष रोग नहीं बताते हुए भी स्वास्थ्य नरम गरम बना रहता है या घर में कोई न कोई सदैव रोगी बना रहता है। शरीर में भारीपन रहना, भयानक स्वप्न देखना। कोई विशेष प्रकार का सपना बार बार आना। शरीर में बाहरी हवा का प्रभाव रहना आदि।
— कभी कभी मनुष्य जिस मकान में रहता है (पूर्व जन्म के कर्मानुसार) उस भवन में आने के पश्चात् अवनति होने लगती है। साथ ही निराशा, भय, परेशानी और असफलताओं से उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है। शुभ कार्यों में विलम्ब होता है।
— पानी रखने (जहां पीने के पानी का मटका या कोई बर्तन रखते हैं) पर दोनों समय शुद्ध घी का दीया और गुलाब की अगरबत्ती पूर्वजों के नाम पर लगानी चाहिए, जिससे घर में शान्ति का वातावरण बनता है और आर्थिक परेशानियों से मुक्ति मिलती है।
— आर्थिक तंगी के लिए एक ताख में प्रतिदिन शाम को घी का दीया और गूगल की अगरबत्ती लगाएं एवं नैवेद्य घर का बनाकर लगाएं।
— शारीरिक कष्ट के लिए शनिवार को एक कटोरी में कड़वा तेल लेकर

अपनी छाया तेल में देखना और उस कटोरी के तेल को आटे में गूंधकर उसे काली गाय को खिलाएं।

— भोजन करते समय एक ओर थाली में रखवाना (जिस व्यक्ति को ऊपरी हवा का प्रभाव हो) उस आस्था को भोजन पर आव्हान आमंत्रित करना।

— पूर्वजों के लिए अमावस के दिन धूप देना और धूप में जो भोजन बना हो, उसका नैवेद्य लगाना, साथ ही नारियल फोड़कर चढ़ाना चाहिए।

— प्रेत बाधातारक और शारीरिक दर्दनिवारक "ॐ ऐं घं दं" मंत्र को पीपल के पत्ते पर रविवार को और मंगलवार को लिखकर बहते पानी में 21 रविवार को अथवा मंगलवार तक बहाते रहें।

— भूत-प्रेत से भय दूर करने के लिए (रामायण की चौपाई का अधिकाधिक निरन्तर नित्य जप कम से कम 108 बार) करें। हनुमान जी का ध्यान करें।

प्रनवउ पवन कुमार खल बन पावक ग्यान धन।
जातु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप घर।।

— गंगा के किनारे एकान्त स्थान में एकाग्रचित होकर गणेश जी की प्रतिमा को पांच मुट्ठी चावल से नहलाएं और उन पर पांच बार हनुमान जी के रंग का सिंदूर छिड़ककर यह कहें कि अब तक मेरे साथ बहुत अन्याय और अत्याचार हुआ है। अब मुझे दुष्टात्माओं के कुचक्र से मुक्त कर दीज़िए, जिससे मैं स्वतंत्र, स्वाभाविक, भौतिक चिन्तन कर सकूं। यह उपाय किसी शुभ तिथि और प्रातःकाल के मुहूर्त में करना चाहिए।

उपर्युक्त मंत्र के अतिरिक्त "पं दं लं" मंत्र भी रविवार को जपकर जामुन की जड़ सोमवार को "ऐ दं लं" बोलकर अमरबेल लाकर पीले कपड़े में बांधकर रखें। "ऐं दं लं" की दो माला प्रतिदिन जपें, लाभ होगा।

— पेट दर्द को ठीक करने के लिए नमक, अजवायन, जीरा, चीनी सब दो-दो माशे बारीक करके थोड़ा निचोड़कर खाएं, साथ ही गर्म पानी का सेवन करें।

— नीम के फल की गिरी, सफेद पीपल दोनों चीजें सम भाग लेकर करेले के रस में 24 घंटे खरल करके सुखा लें। सूख जाने पर पुनः करेले के रस में घोटें, सुखाकर कपड़े में छानकर रख लें। इस चूर्ण को चढ़े ज्वर में सलाई द्वारा सुरमे की तरह आंखों में लगाने से बुखार उतर जाता है।

— बच्चों की बलवर्द्धक दवा—तुलसी के पत्तों का रस 5 या 10 बूंद नित्य

थोड़े से पानी में डालकर पिलाने से बच्चों की मांसपेशियां व हड्डियां मजबूत बनती हैं।

- लू लगने की दशा में तुलसी के पत्ते का रस चीनी मिलाकर पीने से गरमी के कारण लगने वाली लू का असर नहीं होता।
- दांतदर्द में तुलसी के पत्ते तथा कालीमिर्च को पीसकर गोली बना लें। इस गोली को दर्द वाले दांत के नीचे दबा लें, तुरंत लाभ होगा।
- गर्भ स्थिति की दवा—अगर किसी स्त्री को मासिक धर्म तो होता है, परंतु गर्भ नहीं ठहरता तो वह स्त्री मासिक धर्म के समय में तुलसी के बीज चबाए या काढ़ा पीए तो निश्चय ही गर्भ धारण होगा।
- तुलसी के बीजों को पीसकर यदि घाव पर बांधें तो घाव शीघ्र ठीक हो जाएगा।
- तुलसी के पत्तों को पीसकर लेप करने से बवासीर को फायदा होता है।
- दाद के स्थान पर तुलसी के पत्ते रगड़ने से दाद को फायदा होता है।
- भूत-बाधा नाशक तंत्र—तुलसी के पत्ते, काली मिर्च 8, रविवार के दिन पवित्र होकर लाई गई सहदेवी की जड़—इन तीनों को एकत्र करके तावीज बनाकर गले में बांधने से भूत-बाधा दूर होती है।
- वीर्य पतन या धातु रोग—इमली के बीज आधा पाव, एक पाव दूध में भिगोकर रखें, तीसरे दिन छिलके उतारकर साफ कर लें। इसको पीसकर छः माशा शाम को दूध के साथ खाने से धातु रोगी को निश्चित आराम होता है।
- स्वप्नदोष—एक तोला धनिया, एक तोला खसखस, एक तोला पोस्त का डोडा, तीन तोला मिश्री—सबको कूट-छानकर तीन माशा दूध के साथ सेवन करने से स्वप्नदोष का नाश होता है। इसके समाप्त होने से शरीर स्वस्थ रहता है।
- शुद्ध शहद में थोड़ा नींबू का रस डालकर बच्चे को चटाने से बच्चे का दूध डालना बंद हो जाता है।
- हैंजे के लिए—नींबू का रस और प्याज का अर्क बराबर मिलाकर एक तोला प्रति घंटा पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है।
- खुलकर माहवारी न आना—माहवारी खुलकर आने के लिए स्त्रियों को चाहिए कि गाजर के बीज एक तोला कूटकर पाव भर पानी में उबाल लें, जब पानी आधा रह जाए तो शक्कर मिलाकर 2-3 दिन पिलाएं, जिससे माहवारी हमेशा खुलकर आएगी।

- दिल की कमजोरी—सेब का मुरब्बा 1 छटांक, चांदी के वर्क लगातार सुबह के वक्त सेवन करें, जिससे दिल की धड़कनें व दिल की कमजोरी ठीक हो जाएगी। इसे रोजाना 15 दिन तक खाएं।
- पेट के कीड़े—दो मीठे सेब लेकर उनमें एक तोला लौंग चुभो दें। दस मिनट बाद लौंग निकालकर तीन लौंग रोजाना चाय से खाएं। परहेज में चावल व बादी चीजों का सेवन न करें। पेट की गैस समाप्त हो जाएगी।
- नकसीर के लिए—एक पका हुआ केला शक्कर मिले दूध के साथ आठ दिन लगातार खाने से नकसीर फूटना बंद हो जाता है।
- तंदुरुस्ती के लिए—दो केले रोजाना एक पाव दूध के साथ खाने से तन्दुरुस्ती बनती है, वजन बढ़ाता है। अफारे की दशा में केले का सेवन न करें।
- घाव में—किसी शस्त्र से कटने पर उस जगह चूना लगाने से वह पकेगी नहीं और ठीक हो जाएगी।
- बिच्छू के काटने से—चूना और शहद बराबर मिलाकर बिच्छू काटने के स्थान पर रखें, दर्द तुरंत दूर होगा।
- बलगम आना—आंवला सूखा दो माशा, मुलहठी दो माशा बारीक करके दिन में दो बार गर्म पानी के साथ खाने से बलगम साफ हो जाता है।
- बवरान या धातु—सूखे आंवले एक पाव बारीक करके आंवले के साथ पाव रस को बीस दिन तक सेवन करो। सूखने पर बराबर की मिश्री मिला लो। वजन खुराक दो माशा सुबह-शाम गाय के दूध के साथ खाने से धातु को बड़ा फायदा करता है।
- खूनी बवासीर—सूखे आंवले बारीक करके 6 माशा सुबह 6 माशा शाम को गाय के दूध के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर को फायदा पहुंचता है।
- कब्ज—हरड़ व आंवला बराबर बारीक पीसकर रखो। एक तोला गर्म दूध के साथ खाने से कब्ज दूर होती है। 3 माशा पानी के साथ खाने से स्वप्नदोष भी ठीक हो जाएगा।
- दिल की ताकत के लिए—किशमिश दो तोला, केशर एक रत्ती रात को मिट्टी के बर्तन में पानी एक छटांक डालकर मलमल के कपड़े से ढककर रात को ओस में रखें। सुबह उठकर किशमिश का सेवन

करें और उसके ऊपर से पानी पी लिया जाए तो दिल को बहुत ताकत देता है। आठ दिन पिएं।

— आंखों के लिए—अंगूर का रस कलई के बर्तन में करके आग पर पकाएं। जब पककर गाढ़ा हो जाए, तब शीशी में भर लें, रात को सलाई से आंख में लगाएं। आंख की खारिश और बाल गिरने से रोकने में फायदा करता है।

— सूखी खांसी के लिए—बादाम की गिरी, मुलहठी, मुनक्का एक-एक तोला बारीक करके कच्चे चने के बराबर की गोलियां बना लें। दो-दो गोली दिन में चार बार मुंह में डालकर चूसें। मुनक्का के बीज निकाल दें।

— पागलपन—इसमें दिल हिलता है और कभी-कभी रोगी बेहोश हो जाता है। दो माशा नरवशी शवाब या पुलाव के साथ बहुत बारीक पीसकर दें। दिल की ताकत और शांति देने के अद्भुत और तिरयाक के बराबर गुणकारी है। उम्दा नरवशी की पहचान है कि वह घिसने में बनफली रंग का होता है और जो घिसने से काला रंग दे, वह खराब होता है।

— बाल चढ़ाना—सीताफल के बीज और बेरी के पत्ते दोनों बारीक पीसकर बालों की जड़ में लगाएं तो बाल बढ़ते हैं या नींबू के रस में आंवला पीसकर बालों की जड़ों में लगाने से बाल बढ़ेंगे।

— सोते हुए डरना—बच्चे के सिरहाने कपड़े में फिटकरी की डली बांधकर रखें तो रात के समय डर न लगेगा; या बच्चे की चारपाई के नीचे तवा उलटा रख दें तो बच्चा नहीं डरेगा।

— स्मरण-शक्ति बढ़ाने के लिए—बादाम गिरी आधा पाव, सौंफ आधा पाव सबको बारीक कूटकर रखें। एक तोला रात को सोते समय पानी से पीएं। सिरदर्द व दिमागी कमजोरी दूर करके नजर तेज करती है।

— मिरगी—इसमें बीमार जमीन पर गिरकर बेहोश हो जाता है, हाथ-पांव अकड़ जाते हैं और मुंह से झाग निकलते हैं। गधे के पैर के नाखून की अंगूठी पहनाएं, मिरगी के रोग की सैकड़ों औषधियों से बढ़कर है।

— अकस्मात धनलाभ के लिए सफेद कपड़े की ध्वजा को पीपल वृक्ष पर लगाना चाहिए। अगर व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान एवं पतन की संभावना प्रबल हो रही हो तो यह प्रयोग करने से स्थिरता आती है तथा बाधाएं दूर हो जाती हैं।

— घर के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन सरसों के तेल का दीपक जलाएं तथा

दीपक बुझ जाने पर बचे हुए तेल को पीपल के पेड़ पर संध्या के समय चढ़ा दें। इस प्रकार सात शनिवार करने से आर्थिक संकटों से मुक्ति मिलती है। इस प्रयोग का प्रारंभ किसी शनिवार से ही करना चाहिए।

– जिस व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो, उस व्यक्ति को शुक्रवार के दिन कमल का पुष्य लाकर अपनी तिजोरी अथवा किसी अलमारी में लाल वस्त्र में लपेटकर रखना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति धन सरलतापूर्वक जुटा लेता है।

– प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों की हथेलियों को कुछ क्षण देखकर उन्हें चूमें और अपने चेहरे पर तीन-चार बार फिराएं।

– खाने में से पहली रोटी गाय और कुत्ते के नाम की निकालें।

– अपने खाने में से थोड़ा-सा अंश निकालकर कौओं को डाला करें।

– प्रत्येक शनिवार को घर से गंदगी निकालने का नियम बना लें। इस दिन घर के मकड़ी के जाले, रद्दी, टूटी-फूटी सामग्री घर से बाहर फेंक दिया करें।

– घर के मुख्य द्वार के ऊपर गणेशजी की प्रतिमा अथवा चित्र इस प्रकार लगाएं जिससे कि उनका मुंह घर के भीतर की ओर रहे।

– घर में अगर तुलसी लगी हो तो सायंकाल वहां एक दीपक जला दिया करें।

– रविपुष्य-योग में ''कुशमूल'' ले आएं। उसको गंगाजल से स्नान कराकर देव प्रतिमा की भांति पूजन करें और लाल कपड़े में लपेटकर तिजोरी में रख दें। दैनिक धूप-दीप करें।

– गुरु पुष्य योग के दिन स्नान करके एक गांठ हल्दी की लें। उसे पीले रूमाल में रखें, कुछ चावल के दाने भी उसमें रखें और इस प्रकार हल्दी रचित नारियल का समूचा गोला और एक सुपारी भी रखें। इसके उपरांत उसे धूप-दीप करके कोई सिक्का, जो पहले से हल्दी में रंगा रखा हो, उसे भी उसमें रख दें। प्रतिदिन धूप-दीप अवश्य करते रहें। यह धन-धान्य से समृद्ध बनाता है।

– एक नवीन पीले वस्त्र में नागकेसर, हल्दी, सुपारी, एक सिक्का, तांबे का टुकड़ा या सिक्का, चावल रखकर पोटली बना लें। इस पोटली को शिवजी के सम्मुख रखकर, धूप-दीप से पूजन करके सिद्ध कर लें, फिर तिजोरी में कहीं भी रख दें।

– जो व्यक्ति दुकान चलाते हैं तो, उनके लिए यह अधिक लाभदायक है। जब आप सुबह दुकान खोलें, कार्य प्रारंभ करने से पूर्व नित्य अगर

लक्ष्मीजी के चित्र को धूप-दीप कर प्रणाम किया जाए तो अवश्य ही बिक्री बढ़ जाती है।

— अर्क (आकड़े), छाक (छिला), खैर, अपामार्ग (आंधीजड़ा), पीपल की जड़, गूलर की जड़, खेजड़े की जड़, दुर्वा एवं कुशा की जड़ को एक पीतल की डिब्बी में रखकर नित्य पूजा करने से उस मनुष्य के जीवन में कभी असफलता प्राप्त नहीं होती है।

— प्रमोशन नहीं हो रहा हो तो जितने वर्ष की नौकरी है, गोमती चक्र लेकर शिवलिंग पर चढ़ा दें, निश्चय ही प्रमोशन के मार्ग खुल जाते हैं।

— व्यापार वृद्धि के लिए बारह गोमती चक्र लेकर उसे बांधकर चौखट पर लटका दें और ग्राहक उसके नीचे से निकले तो व्यापार में वृद्धि होती है।

— तिथियों के आधार पर लोम-विलोम क्रिया से नित्यप्रति घी के दीपक घर में जलाने से उस परिवार में कभी कलह, अशांति आदि नहीं होती एवं लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए, एक तारीख को एक, दो को दो...बीस को बीस दीपक जलाएं।

— भवन के ईशान कोण में श्रीयंत्र ताम्रपत्र अथवा भोजपत्र पर बना हुआ प्राण प्रतिष्ठा करके नित्य पूजा करने से विविध ऐश्वर्य के साथ लक्ष्मी भी प्राप्त होती है।

— नारियल को चमकीले लाल वस्त्र में लपेटकर घर में रखने से धन की वृद्धि होती है। व्यापार स्थल पर रखने से व्यापार में वृद्धि होती है। जिस घर में एकाक्षी नारियल होता है, वहां स्वयं लक्ष्मी वास करती है। रोग शोक, दुःख, कष्ट, विपत्ति, दारिद्रय नष्ट होता है एवं मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त होता है। व्यापार दिनोदिन बढ़ता है।

— हल्दी-चावल पीसकर उसके घोल से, घर के प्रवेश द्वार पर "ॐ" बना दें। घर समस्त बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

— किसी भी मंगलवार को ऋण नहीं लेना चाहिए। साथ ही सक्रांति के दिन, वृद्धि नामक योग, हस्त नक्षत्र तथा रविवार को भी ऋण नहीं लेना चाहिए। इन दिनों में कर्ज वापस करना शुभ है। बुधवार के दिन किसी को भी ऋण अथवा धन नहीं देना चाहिए, अन्यथा उसके वापस आने में बांधा रहेगी।

— धन की आवश्यकता सभी को होती है। धन संकट से छुटकारा पाने

के लिए आए किसी देवी स्वरूप की उपासना करें और प्रतिदिन पूजा के समय, उस देवी की प्रतिमा पर 'लौंग' भी अर्पित करें। वह आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि करेगा।

– अकस्मात धनलाभ के लिए सफेद कपड़े की ध्वजा को पीपल वृक्ष पर लगाना चाहिए। अगर व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान एवं पतन की संभावना प्रबल हो रही हो तो यह प्रयोग करने से स्थिरता आती है तथा बाधाएं दूर हो जाती हैं।

– घर के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन सरसों के तेल का दीपक जलाएं तथा दीपक बुझ जाने पर बचे हुए तेल को पीपल के पेड़ पर संध्या के समय चढ़ा दें। इस प्रकार सात शनिवार करने से आर्थिक संकटों से मुक्ति मिलती है। इस प्रयोग का प्रारंभ भी किसी शनिवार से ही करना चाहिए।

– जिस व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो, उस व्यक्ति को शुक्रवार के दिन कमल का पुष्प लाकर अपनी तिजोरी अथवा किसी अलमारी में लाल वस्त्र में लपेटकर रखना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति धन सरलतापूर्वक जुटा लेता है।

– दरिद्रता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप कहा जा सकता है, क्योंकि दरिद्रता के रहते व्यक्ति का समस्त व्यक्तित्व प्रभावहीन रहता है। साधन के अभाव में कोई भी कार्य नहीं कर सकता। इसके कारण समाज में तिरस्कृत रहता हुआ, अभाव की जिंदगी से त्रस्त होकर आत्महत्या जैसे जघन्य कार्य को भी अपनाना चाहता है।

– अब थोड़े समय श्रीमहालक्ष्मी का स्मरण करें और वहीं सो जाएं। ऐसा केवल नौ दिन करना है।

– श्रीसूक्त का पाठ जिस घर में प्रतिदिन होता है, उस घर में लक्ष्मी का वास होता है।

– व्यापार वृद्धि हेतु श्रीयंत्र के साथ कुछ नागकेसर रखने से इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

– श्री यंत्र को कमलगट्टे की माला पर स्थापित किया जाए तो व्यापार का विस्तार होने लगता है।

– श्री यंत्र को पूजा के स्थान में रखकर उसकी पूजा करें और फिर लाल वस्त्र में बांधकर जहां धन रखते हों, वहां स्थापित कर दें; तो निरंतर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

– बहुत प्रयास करने के पश्चात् भी अगर घर में लक्ष्मी स्थिर न रहती

हो, व्यय बढ़ता जाए तो इस स्थिति में इस साधना को संपन्न करना चाहिए। क्योंकि ऐसी बाधाओं को समाप्त करना आवश्यक होता है, तभी सुख और शांति की स्थिति बनती है, पारिवारिक सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

— रात्रि लगभग दस बजे के पश्चात् सब कार्यों से निवृत होकर उत्तर दिशा की ओर मुख करके पीले आसन पर बैठ जाएं। अपने सामने तेल के नौ दीपक जला लें। यह दीपक साधना काल तक जलते रहने चाहिएं। दीपक के सामने एक लाल चावल की ढेरी बनाएं, उसमें श्री यंत्र रखें। उनका भी कुंकुम, पुष्प, धूप-दीप से पूजन करें और उसके पश्चात् सामने किसी प्लेट पर स्वास्तिक बनाकर पूजन करें।

— जिस व्यक्ति को प्रायः ज्वर आता रहता है, अथवा काफी समय तक ज्वर रहता हो, उसके मस्तक पर केकड़े के बिल की मिट्टी लगा देने पर वह धीरे-धीरे ज्वर से मुक्त हो जाता है।

— किसी भी बच्चे को नजर दोष से बचाने के लिए मूंगे का टुकड़ा मंगलवार के दिन गले में पहना देना चाहिए।

— कई बच्चों को दांत निकलते समय कष्ट का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय बच्चे को सीपी की माला पहना देने से दांत बिना कष्ट निकल आते हैं।

— घोड़े का एक दांत या शेर के नख का तावीज बनाकर गले में बांध दें। ऐसे करने से बच्चा सदैव स्वस्थ रहता है।

— दुकान में तिजोरी के पास लक्ष्मी-गणेश की तस्वीर लगाएं। दुकान खुलते ही मनोभावना से लक्ष्मी की पूजा करके बैठें। व्यापार में वृद्धि होगी।

— सफेद दूध को घी में औटाकर कान में डालने से बहरापन दूर हो जाता है।

— माघ अथवा भादो माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को कलिहारी की जड़ उखाड़ लाएं। फिर आवश्यकता के समय उसे कमर में बांधकर सहवास करें तो बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता।

— पुष्य नक्षत्र जब रविवार के दिन हो, तब गिलोय की जड़ लाकर उसकी माला बनाकर कंठ में पहनने से सर्प का भय दूर हो जाता है। निर्गुण्डी की जड़ को उखाड़कर घर में रखने से वहां सर्प के आने का भय नहीं रहता।

— जिसको सर्प ने काटा हो, उसे त्रिलय में मोर के साबुत पंख रखकर धुआं निगलवाने से जहर उतर जाता है।

– रात्रि में सोते समय आस्तीक स्थिति को बारम्बार नमस्कार करने से सर्प का भय नहीं रहता।
– अष्ट धातु की अंगूठी को थोड़ा-सा गर्म करके बिच्छू के दंशित स्थान पर लगा देने भर से ही जहर उतर जाता है।
– बिच्छू के काटे हुए स्थान पर अपामार्ग की जड़ को छुआ देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।
– सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद गांठ की जड़ का लेप करने से जहर उतर जाता है।
– स्याही सोखने के काग़ज को शोरे से भिगोकर सुखा लें। फिर उस कागज को जिस घर में श्वास रोगी सोता हो, जलाएं तो श्वास के रोगी को लाभ होता है।
– थोड़े से नौसादर को पानी में मिलाकर शरीर पर लेप करने से पसीना आना बंद हो जाता है।
– सफेद साठी की जड़ को देशी घी में पीसकर आंखों में डालने से बहता हुआ पानी रुका हुआ नजर आता है।
– देशी कपूर और कागजी बादाम को आधी-आधी रत्ती लेकर खूब महीन पीसकर उंगली से अंजन करने पर दुखती हुई आंखें ठीक हो जाती हैं। थोड़ी मात्रा में रखने से गिद्ध जैसी तेज दृष्टि प्राप्त होती है।
– बीकामाली को घी में औटाकर कान में डालने से कान का दर्द तुरंत दूर हो जाता है।
– रविवार के दिन जब अनुराधा नक्षत्र आए, तब उस दिन कलिहारी की जड़ उखाड़कर ले आएं और जिस व्यक्ति को नपुंसक करना हो, उसके पेशाब करने की जगह गाड़ दें। जब वह व्यक्ति उस स्थान पर पेशाब करेगा तो नपुंसक हो जाएगा।
– काले कौंच के बीज और शतावर को समभाग लेकर दोनों के बराबर घुंघची मिलाकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण जिस व्यक्ति के शरीर के जिस अंग पर डाल दिया जाएगा, वहीं खुजली होने लगेगी।
– कमलगट्टे को पीसकर नाभि के ऊपर लेप करके सहवास करें तो ज़ब तक लेप लगा रहेगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।
– काले रंग के बिल्लवा के बाएं पांव की हड्डी को अपने दाएं हाथ में बांधकर सहवास क़रने से जब तक हड्डी को अलग नहीं किया जाएगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।
– गाय के ऊंचे सींग की त्वचा को छीलकर उसे अग्नि पर डाल दें, जो

धुआं उठे, उसे एक वस्त्र में लगाएं। उस धूनी वाले कपड़े को पहनकर सहवास करने से जब तक वस्त्र को नहीं हटाया जाएगा, वीर्य स्खलित नहीं होगा।

— पुष्य नक्षत्र में नग्न होकर इंद्रवारुणी बूटी की जड़ लाकर उसमें सोंठ, काली मिर्च, पीपल को पीसकर मिलाएं। फिर गाय का दूध मिलाकर गोली बनाकर छाया में सुखा लें। इस गोली को मुंह में रखकर सहवास करने से वीर्य शीघ्र स्खलित नहीं होता।

— श्मशान भूमि में उत्पन्न होने वाले नीले वृक्ष की जड़ को कमर में बांधकर सहवास करने से बहुत अधिक देर तक स्तम्भन होता है।

— सुअर के दाईं ओर के दांत को कमर में बांधकर सहवास करने से जब तक उसे खोलकर अलग नहीं किया जाता, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होता।

— अपराजिता की जड़ और शिखा को रेशमी वस्त्र में लपेटकर अपनी भुजा में बांधकर सहवास करने से बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता।

— फिटकरी की डली कमर में बांधकर सहवास करने से अधिक देर तक स्तम्भन होता है।

— यदि किसी को पागल कुत्ता काट गया है तो उस स्थान पर आक का दूध, गुड़ तथा तेल का लेप करने से जहर दूर हो जाता है।

— आप उपरोक्त सभी सरल प्रयोगों से अपनी अनेक जटिल समस्याएं सरलतापूर्वक दूर कर सकते हैं। इस तथ्य को सदैव ध्यान में रखें कि प्रयोगों में शुद्धता का ध्यान रखना अति आवश्यक कृत्य है।

— मंगलवार के दिन लहसुन रत्न को पीसकर, काले कपड़े में रखकर पांव के अंगूठे से बांध दें। तीन घंटे का समय बीत जाने पर उसे खोलकर चौराहे पर रख दिया जाए तो सर्दी लगकर बुखार आने की पारी समाप्त हो जाती है।

— नारियल की जड़ को गले में बांधने से महाज्वर दूर हो जाता है।

— भांगरे की जड़ को डोरे सहित कान में बांधने से रात में आने वाला ज्वर भाग जाता है।

— रविवार के दिन प्रातःकाल के समय निर्गुण्डी तथा सहदेई की जड़ को उखाड़ लाएं। फिर उसे कमर में बांध दिया जाए तो सभी प्रकार के ज्वर भागते हैं।

- मकड़ी के जाले को यंत्र में भरकर गले में लटकाने से ज्वर समाप्त होता है।
- सफेद कनेर की जड़ को भुजा में बांधने से सर्दी से आने वाले बुखार को भागना ही पड़ता है।
- रविवार के दिन चचीड़ा की जड़ को उखाड़कर सात धागों से लपेटकर हाथ में बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।
- रविवार की सायंकाल को मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसके अंदर एक सोने की अंगूठी डाल दें और करीब एक घंटे पश्चात् उस पानी से रोगी को स्नान करवाया जाए। स्नान के बाद अंगूठी वापस निकाल लें। इससे बुखार दूर हो जाता है।
- मूसाकानी की जड़ को हाथ में बांधने से बुखार उतर जाता है।
- रविवार अथवा मंगलवार के दिन मलेरिया का रोगी ताड़ वृक्ष से अपना कलेजा स्पर्श कर यह कहे कि जब मेरा बुखार उतर जाएगा, तब मैं मछली चढ़ाऊंगा। जब बुखार उतर जाए, उसके बाद दो मछलियां लेकर लकड़ी से बांधकर मंगलवार या रविवार को ताड़ वृक्ष की जड़ में रख दें।
- कटेरी की जड़ को सिर पर बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है। ज्वर उतरने के बाद उस जड़ को चौराहे पर रख दें।
- शनिवार के दिन मयूर-शिखा के पौधे को न्यौत आएं तथा अगले दिन उखाड़ लाएं। यह सवेरे ही लाना चाहिए। उसे लाल डोरे में लपेटकर कमर तथा हाथ में बांधने से बुखार दूर हो जाता है।
- जिस मनुष्य को नपुंसक करना हो, वह जिस स्थान पर पेशाब करे, वहां काला बिच्छू गाड़ दें तो वहां पेशाब करने से वह पुरुष नपुंसक हो जाता है। यह क्रिया बुधवार के दिन करें।
- चार बूंद शुद्ध चंदन के तेल को दस तोले पानी में डालकर सात दिन तक सेवन करने से सुजाक की बीमारी दूर हो सकती है।
- जिस व्यक्ति का पेशाब बंद करना हो, तो वह जिस स्थान पर पेशाब करता हो, वहां की मिट्टी को मंगलवार के दिन लाकर उसे एक गिरगिट के मुंह में भरकर गिरगिट को धतूरे अथवा बेर के पेड़ से बांध दें तो उस मनुष्य का पेशाब बंद हो जाएगा। जब गिरगिट को वापस खोल दिया जाएगा तो पुनः पेशाब खुल जाएगा।
- रविवार के दिन आक या सफेद कनेर की जड़ को कान पर बांधने

से हर प्रकार के विषम ज्वर (पारी से आने वाले अथवा कम अधिक आने वाले बुखार) दूर हो जाते हैं।

— रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर दाएं हाथ में बांधने से पारी से आने वाला शीत ज्वर एक ही दिन में दूर हो जाता है।

— चौलाई की जड़ को सर में बांधने से भी विषम ज्वर ठीक हो जाता है।

— ओंगा (अपामार्ग) अथवा नीम की जड़ को अपने सिर से पांव तक की लंबाई वाले लाल डोरे में बांधकर बाएं कान अथवा कमर में धारण करने से तिजारी बुखार ठीक हो जाता है।

— रोगी की कमर में सर्प की केंचुल बांध देने से पारी का बुखार रुक जाता है।

— चिरचिटे की जड़ को हाथ में बांधने से भूत-प्रेत आदि की बाधा के कारण होने वाले ज्वर दूर हो जाते हैं।

— गेहुंअन सर्प की केंचुल को कपड़े की थैली में सी लें, इसे पेड़ू के ऊपर बांधने से संग्रहणी रोग ठीक हो जाता है।

— सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, उन्हें लाल रंग के डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से दस्त बंद हो जाते हैं। सहदेई की जड़ सरलता से मिल जाती है।

— जायफल को रेशम के धागे में गूंथकर बांह या कंठ में धारण करने से मिर्गी रोग दूर हो जाता है। इस प्रयोग को शनिवार के दिन करें।

— रविवार के दिन सिरस के फूल और पत्ते लगाकर उनमें घुग्घू की बीट, ऊंट के बाल, कुत्ते और बिल्ली की विष्ठा, गोबर, गंधक, सफेद घुंघची और कड़वा तेल मिलाकर कूट करके धूनी देने से भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाती है।

— गुग्गल, लहसुन, घी, सर्प की केंचुल, बंदर के बाल, मुर्गे तथा कबूतर की बीट— इन सबको एकत्र करके धूप देने से भूत ज्वर एकाहित आदि शीघ्र दूर हो जाते हैं।

— अपामार्ग की जड़ को रोगी की भुजा में बांधने से भूत ज्वर दूर हो जाता है।

— शनिवार के दिन बबुरा की जड़ को सफेद सूत में लपेटकर रोगी की भुजा में बांध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

— जंगली भांग की जड़ को सूत में लपेटकर सिर में बांधने से चौथेया ज्वर दूर हो जाता है।

- तिजारी ज्वर में सिर से पांव तक की लम्बाई का लाल डोरा लेकर उसमें नाल की जड़ लपेट लें। तदुपरांत उसे रोगी की कमर या फिर कान में बांध देने से ज्वर की पारी समाप्त हो जाती है।
- तिजारी नामक ज्वर के रोगी की कमर में सांप की केंचुल बांधने से बुखार की पारी रुक जाती है।
- रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर उसको दाईं भुजा पर बांधने से रोगी का बुखार एक ही दिन में दूर हो जाता है, परंतु हां, यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि अगर स्त्री हो तो बाईं भुजा में बांधना चाहिए।
- लिसोड़े की छाल और सोंठी के चावल की गांठ बांधकर स्त्री की योनि में रख देने से खून गिरना बंद हो जाता है।
- लाल चंदन, दूध, घी, मिसरी और शहद—इन सबको मिलाकर पिलाने से कैसा भी बहता हुआ रक्त रुक जाता है।
- बेल की जड़, देवदारू, बबूल तथा प्रियंगु—इन सबको एक साथ पीसकर धूप देने से ग्रह, भूत-प्रेत, पिशाच, राक्षस, ब्रह्मराक्षस आदि की बाधा दूर हो जाती है।
- अनार का बांदा ज्येष्ठा नक्षत्र में लाकर घर के दरवाजे पर बांध देने से बालकों के अनेक दुष्ट ग्रहों का निवारण हो जाता है।
- अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नख लेकर रख लें। उस नख को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेत भाग जाते हैं।
- जिस समय सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो, उस समय सफेद घुंघची (धुंधली) की जड़ को लाकर बालक के गले में बांध देने से डाकिनी आदि का भय दूर हो जाता है।
- चंदन, सेंधा नमक, कूट, बच, तेल, घृत और चर्बी को मिलाकर धूप देने से बालकों के राक्षस आदि ग्रह शांत हो जाते हैं।
- जावित्री और सफेद अपराजिता के पत्ते के रस का नस्य लेने से डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधा दूर हो जाती है। यह क्रिया शनिवार या मंगलवार को ही करें।
- लोबान, घी, देवदारू, हींग, सरसों, केश, नीम की पत्ती, इंद्र जौ, गौदंती, कुटकी, कटेली, बच, जौ, चना, बकरे के बाल तथा मोर की पूंछ—इनको बछड़े के मूत्र में पीसकर सुखा लें। फिर मिट्टी के बर्तन में अग्नि जलाकर उक्त वस्तुओं के चूर्ण की धूप दें तो भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी आदि का प्रकोप दूर हो जाता है।

— इन्द्ररुवारूणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च को गाय के मूत्र में पीसकर नस्य लेने से ब्रह्म राक्षस, भूत आदि की बाधा दूर होती है।

— अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा फलों की गोली बनाकर बकरे के रोओं के साथ रोगी की भुजा में बांध देने से सन्नि दपात ज्वर दूर हो जाता है।

— अरंडी के बीज को पीसकर पानी के साथ सेवन करने से गर्भस्राव नहीं होता।

— धतूरे की जड़ को कमर से बांध देने से गर्भस्राव नहीं होता है।

— आंवला, बहेड़ा, निसौत के चूर्ण को पानी के साथ पीसकर पीने से स्त्री का रक्त गिरना बंद हो जाता है।

— कमल की जड़, तिल और काली मिर्च को दूध में मिलाकर पिलाने से गर्भिणी स्त्री का गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

— घी, नीम, सरसों और पुनर्नवा के पत्तों को मिलाकर गर्भिणी स्त्री को धूप देने से उसके गर्भ की रक्षा होती है।

— सरफोंका की जड़ को पीसकर चावल के धोवन के साथ पिलाने से गर्भस्राव नहीं होता।

— कुंकुम के रंग में रंगे हुए लाल डोरे में एक करेज का बीज बांधकर गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से गर्भ नहीं गिरता।

— कांकड़ी के बीज, डाभ की जड़ और दो माशे गेरू—इन सभी को घोटकर पिलाने से बहता हुआ रक्त रुक जाता है।

— खरैंटी की जड़ को कुंवारी कन्या के हाथ से काते गए सूत में लपेटकर कमर में बांधने से गर्भ गिरना बंद होता है।

— धतूरे की जड़ का चूर्ण योनि में रखने से गर्भ स्तंभन होता है।

— अनुराधा नक्षत्र में आधी सुपारी लेकर उसको धूप देकर कमर में बांध देने से गर्भस्राव नहीं होता है।

— काई की जड़, शुद्ध शहद और देशी घी—इनको दूध में डालकर उबालें। फिर ठंडा करके सात दिन तक पीने से गर्भ आदि विकार दूर हो जाता है।

— कसेरू, नागरमोथा, सिंघाड़ा और एरंड (अरंडी)—इन सबको बराबर (समभाग) लेकर चूर्ण बनाकर सतावर डालकर पकाए हुए गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ स्थिर हो जाता है।

– मिसरी और खैरसार को ठंडे पानी में पीसकर गाय के दूध के साथ पिलाने से छः मास तक गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
– पुरानी खांड, मुनक्का, शहद, छुहारा और नीलकमल, इनको गाय के दूध के साथ देने से दसवें मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
– मुलेहठी, पझाख मोथा, नागकेसर और गजपीपल–इनको बराबर भाग में लेकर गाय के दूध के साथ पिलाने से आठवें मास के गर्भ की रक्षा होती है।
– रजोधर्म से निवृत होने के पश्चात् पांच दिन तक जो स्त्री पान की जड़ को घोटकर पी लेती है, उसे गर्भ नहीं ठहरता।
– मैथुन के समय मेंढक की हड्डी को अपने पास रखने से स्त्री को गर्भ नहीं ठहरता।
– उस बच्चे का दांत जो कि पहली बार गिर रहा हो, वह जमीन पर गिरने से पूर्व उठा ले। तदुपरांत उस दांत को चांदी के तावीज में मढ़वाकर यदि कोई स्त्री अपनी बाईं भुजा में धारण कर ले तो उसे गर्भ नहीं ठहरता।
– गाय के दूध में खांड मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बंद हो जाता है।
– जमीरी के फल के चूर्ण को शहद के साथ खाकर गाय का दूध पीने से गर्भ का सूखना बंद होता है।
– अतीस, नागरमोथा, हयोबेर का काढ़ा, काली मिर्च मिलाकर पीने से गर्भ के रोग नहीं होते।
– गुलेहठी, सिरस और देवदारू के बीज को काली गाय के दूध के साथ पीसकर पीना चाहिए। इसके पीने से पहले महीने का गर्भ नहीं गिरता।
– मंजीठा, काले तिल, शतावर और पीपल की छाल आदि को बराबर लेकर इससे चार गुना दूध के साथ पिलाने से दूसरे महीने का गर्भ नहीं गिरता।
– क्षीरे, खरैंटी, काकोली को मिलाकर दूध के साथ पिलाने से तीसरे महीने का गर्भ नहीं गिरता।
– पुनर्नवा, काकोली, नीलकमल, गोखरू तथा तगर– इनको कपिला गाय के दूध के साथ पिलाने से पांचवें महीने का गर्भ नहीं गिरता।
– तंडुली की जड़ को चावल के धोवन के साथ देने से गर्भस्राव नहीं होता।
– कैथ के गूदे को ठंडे पानी में पीसकर, गाय के दूध के साथ मिलाकर पिलाने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।

- सोंठ डालकर पकाए हुए गाय के दूध को पीने से दसवें मास की गर्भ पीड़ा दूर होती है।
- ब्राह्मी की जड़ को शरीर में धारण करने से रुका हुआ गर्भ भी गिर जाता है।
- काली मूसली की जड़ को हाथ अथवा पांव में बांधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।
- शहद में कबूतर की बीट मिलाकर पीने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।
- मालकांगनी के नए पत्तों को दुपहरिया के फल के साथ खाने से बंद मासिक धर्म भी खुल जाता है।
- गर्भिणी स्त्री के नितम्बों पर सांप की केंचुली बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- पुनर्नवा की जड़ के चूर्ण को योनि में रख देने से प्रसव की पीड़ा कम होकर शिशु सुखपूर्वक उत्पन्न होता है।
- चकमक पत्थर को कपड़े में लपेटकर गर्भिणी स्त्री की जंघा में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- गर्भिणी स्त्री की कमर में केले की जड़ बांधने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- हुलहुल की जड़ को मस्तक अथवा भुजा में बांध देने से प्रसव होता है।
- स्त्री की कमर में नीम की जड़ बांध देने से प्रसव पीड़ा समाप्त हो जाती है।
- कलहारी की जड़ को रेशम के धागे में बांधकर गर्भिणी स्त्री के बाएं हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- लाल कपड़े में थोड़ा-सा नमक बांधकर गर्भिणी स्त्री के बाएं हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- सरफोंका की जड़ को गर्भिणी स्त्री की कमर व बाएं हाथ में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- चिरचिटा की जड़ के सात टुकड़े और उसी के सात पत्ते गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- सूर्यमुखी और पाटला की जड़ को गर्भिणी स्त्री के गले में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक धतूरे की जड़ को उखाड़कर रख लें। इस

जड़ को गर्भिणी स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— गर्भिणी स्त्री का नाम लेकर ताड़ वृक्ष का उत्तर की ओर से सिरा उखाड़ लाएं, फिर उसे लाल धागे से लपेटकर स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— गर्भिणी स्त्री के शरीर के नाप के बराबर कुंवारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत में चिड़चिड़े की जड़ को लपेटकर कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— व्यक्ति विशेष या समूह में से किसी एक व्यक्ति का वह जूता जो अलग पड़ा हो, उठा लें और उसे पानी में डुबो दें। उनका झगड़ा प्रारंभ हो जाएगा और तब तक बना रहेगा जब तक वह जूता पानी में डूबा रहेगा।

— किसी शनिवार को कारखाने की ओर आते हुए मार्ग में पड़ी कोई भी कील उठा लें। कारखाने में लाकर उस कील को प्रथम भैंस के मूत्र में, तत्पश्चात् गंगाजल में धोकर उस स्थान या कमरे में ठोक दें, जहां कर्मचारी काम करते हैं। उस कील के प्रभाव से कर्मचारी अचानक भागने बंद हो जाएंगे।

— किसी भी दीपावली की रात कच्चा सूत ले आएं। उसे मां लक्ष्मी के आगे बैठकर श्रद्धापूर्वक बटें। रोली के छींटे भी लगाएं। इसके पश्चात् व्यापार स्थल पर कहीं ऊपर टांग दें। प्रयत्न करें कि हर दीपावली पर वह क्रिया दोहराई जाती रहे। ऐसा करने से साझेदारी बनी रहेगी।

— शनिवार के दिन पुराने कार्यालय से कोई भी लोहे की वस्तु नये संस्थान में लाकर रख दें। रखने से पूर्व उस स्थान पर थोड़े से साबुत काले उड़द डाल दें। यह ध्यान रहे कि वह वस्तु बार-बार हटाई न आए। इस प्रकार करने से पुराने उद्योग के साथ-साथ नया उद्योग भी चल निकलता है।

— किसी भी दिन, रात के लगभग 12 बजे थोड़े से बाल चुटिया के स्थान पर से काट लें और उन्हें अपने पास रख लें। अगले दिन भी यही क्रिया करें। इस टोटके को करते हुए जब पांच दिन हो जाएं तो रविवार के दिन इन बालों को जलाकर बाहर फेंक दें। संभव हो तो पैर से भली-भांति रगड़ दें। बच्चा धीरे-धीरे कुशाग्र बुद्धि का होने लगेगा। अगर संभव हो तो इस मंत्र का उच्चारण करें—ॐ ह्री ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

— अगर कोई व्यक्ति आपके काम में विघ्न डाल रहा है तो प्रातः उठते

ही तीन बार उस व्यक्ति का नाम लेकर अपशब्द कहें, इसके बाद भोजपत्र पर उस व्यक्ति का नाम काली स्याही से लिखें। फिर उसे ले जाकर श्मशान स्थित पीपल के पेड़ की जड़ में गहरा दबा दें। आपकी सारी विघ्न बाधाएं समाप्त हो जाएंगी और वह व्यक्ति अनुकूल हो जाएगा।

– दो लौंग फूलदार और एक कपूर का टुकड़ा लें। इन्हें तीन बार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। इसके बाद इन्हें जला दें। ध्यान रखें, जलाते समय आपका मुख पूर्व की ओर हो और गायत्री मंत्र का उच्चारण बराबर चलता रहे। अब जो भस्मी बनी है, उसे किसी कागज में समेट लें। दिन में दो समय यह भस्म जीभ पर लगाएं। धीरे-धीरे मजबूरी समाप्त हो जाएगी।

– बृहस्पतिवार के दिन 7 साबुत हल्दी, 7 जनेऊ, 7 छोटी सुपारियां, 7 पीले फूल, 7 छोटी छोटी गुड़ की डलियां, 7-15 के यंत्र (किसी योग्य तांत्रिक से बनवा लें), 7 छोटे बच्चे (जिनकी आयु 12 वर्ष से कम हो)– इन सभी वस्तुओं को एकत्रित करें और इन्हें किसी पीले वस्त्र में एक स्थान पर बांध लें। अब बच्चों को थोड़ी-थोड़ी पीली बर्फी और कुछ पैसे देकर विदा करें और वह पोटली घर में किसी भी निजी स्थान पर रख दें। इस टोटके से आपके रुके हुए व असफल कार्य स्वयं बन जाएंगे।

– मंगलवार के दिन लाल मूंगा ले आएं। उसी दिन उसे सुनार से जड़वा भी लें। इसके पश्चात् "श्री राम दूताय हनुमान नमः" का जाप कर पहन लें। मेरा यह निश्चित मत है कि एक माह के भीतर आलस्य दूर भाग जाएगा और कार्य-कुशलता बढ़ जाएगी।

– प्रातःकाल से सूर्य जब तक चढ़ रहा हो तो आप इस टोटके को कर सकते हैं, सूर्य जब ढलने लगे तो यह टोटका प्रभावशाली नहीं रहता है। सर्वप्रथम आप सूर्य को नमन करें, इसके बाद कच्चा सूत लेकर उस पर निम्न मंत्र को पढ़ते हुए सात गांठें लगाएं। अब आप इस सूत के तावीज को सामने वाली जेब में रखकर चले जाएं। बिगड़ा कार्य सिद्धि होगा और उस दिन काम बनते चले जाएंगे। मंत्र इस प्रकार है–"ॐ गं गं गणपतये नमः।"

– रविवार के दिन शराब की एक बोतल ले लें। सर्वप्रथम उसे भैरव पर अर्पण करें। उसके बाद उस बोतल को सात बार उस पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से उतारकर किसी को दान दे दें या फिर दिन ढले किसी

चौराहे पर, मरघट में या पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। आप परिस्थिति में तुरंत सुधार अनुभव करेंगे।

– कटेरी की जड़ शुद्ध मधु में पीसकर केवल सूंघने मात्र से आलस्य दूर हो जाएगा।

– रविवार की सायं सफेद कनेर की जड़ को सिरहाने रखें। रात्रि में वहीं रखी रहने दें और सो जाएं। प्रातःकाल उस जड़ को चौराहे पर फिंकवा दें। यह क्रिया चार दिन तक नियमित करें, ज्वर से मुक्ति मिल जाएगी।

– एक बेदाग बड़ा-सा पीला नींबू लें और उसके चार बराबर-बराबर टुकड़े कर लें। दिन ढले चौराहे पर जाकर चारों दिशाओं में फेंक दें। काम का अभाव समाप्त हो जाएगा। यह प्रयोग सात दिन तक नियमित करें।

– अगर आप यह अनुभव कर रहे हैं कि लाख प्रयत्न करने पर भी आपका व्यापार उन्नति नहीं कर पा रहा है तो आप श्यामा तुलसी के चारों ओर उग आई खरपतवार को किसी पीले वस्त्र में बांधकर व्यापार स्थल पर रख दें। यह क्रिया केवल गुरुवार को ही करें।

– कबूतर का दिल, उल्लू का पंख और श्मशान की राख—इन सबको एक स्थान पर रखकर पीस लें। जब चूर्ण बन जाए तो इत्र मिला लें। जितने भी भागीदार हैं, अपने-अपने यंत्र में ये वस्तुएं भर लें और अपने पास रखें। न केवल हिस्सेदारों में प्रेम रहेगा, बल्कि उनके स्वयं के घर में भी सुख-शांति और समृद्धि निरंतर बनी रहेगी।

– प्रत्येक मंगलवार को पीपल के 11 पत्ते ले लें। उन पर लाल चंदन से हर पत्ते पर राम राम चार बार लिखें, इसके बाद हनुमान के मंदिर में चढ़ा दें। इस क्रिया को करने में नियमितता और शुद्धता अभीष्ट है। इसे गोपनीय भी रखें।

– थोड़ा-सा कच्चा सूत ले लें, उसे शुद्ध केसर से रंग लें। इस रंगे हुए कच्चे सूत को अपने व्यापारिक स्थल पर बांध दें। व्यापार आगे बढ़ने लगेगा। नौकरी से संबंधित व्यक्ति इसे अपनी दराज में डाल दें। तरक्की का योग बनने की आशाएं अवश्य बलवती होंगी।

– प्रायः व्यापारिक यात्रा पर जाने वाले व्यापारियों को चाहिए कि वह प्रस्थान से पूर्व सवा रुपया किसी भी गुप्त स्थान पर रखकर चले जाएं। यात्रा पर से वापिस आने के पश्चात् वह उस पैसे को लेकर एक फक़ीर को खाना खिला दें। यात्रा सफल होगी और व्यापार में इच्छित उन्नति प्राप्त होगी।

— सोमवार को प्रातः नवनिर्मित अंगूठी को गंगाजल में धोकर गाय के दूध में डुबो दें, उसमें थोड़ी-सी शक्कर, तुलसी के पत्ते और कोई भी सफेद फूल डाल दें। इसके पश्चात् स्नान ध्यान से निवृत होकर अंगूठी को पहन लें। ऐसा करने से व्यापार में मनवांछित उन्नति प्राप्त होगी।

— अगर आप चाहते हैं कि आपका भागीदार या मित्र आपके पक्ष में रहे तो रविवार के दिन उल्लू का पंख ले आएं, उस पर उस व्यक्ति का नाम लाल चंदन से लिखें, फिर उसको भागीदार या मित्र के शरीर से स्पर्श कराकर जला दें, अगर संभव हो तो पंख की राख उसके सिर पर या बदन पर डाल दें। भागीदार सदैव पक्ष में रहेगा। यह एक सात्विक क्रिया है। इससे अहित की कोई संभावना नहीं है।

— शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार के दिन घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगाजल से धो लें। इसके पश्चात् हल्दी से स्वास्तिक (सतिया) बनाएं। उस पर चने की दाल और थोड़ा-सा गुड़ रख दें। इसके बाद स्वास्तिक को बार बार ना देखें। प्रभुकृपा से आप शीघ्र ही लाभ का अनुभव करेंगे। यह एक शुद्ध सात्विक क्रिया है।

— तांबे की लुटिया ढक्कन सहित, चांदी का सर्प-सर्पिनी का जोड़ा, चांदी का एक छोटा-सा पतरा, पूजा वाली पांच छोटी सुपारियां, हल्दी की सात साबुत और साफ गांठें—इन सब वस्तुओं को तांबे की लुटिया में पानी भरकर डाल दें। इसके पश्चात् ढक्कन अच्छी तरह बंद कर दें। अब यह लुटिया मुख्य द्वार के पश्चिम की ओर दबा दें। अगर संभव हो तो किसी योग्य तांत्रिक या विद्वान पंडित का परामर्श भी लें, ताकि कोई त्रुटि न रह जाए। इससे धनलाभ की प्राप्ति होती है।

— शनिवार के दिन सायंकाल जब दोनों समय मिल रहे हों तो उड़द के दो साबुत बड़े लेकर उन पर तनिक सी सादी दही और सिंदूर छिड़क दें। इसके बाद यह बड़े किसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। यह ध्यान रहे, पलटकर नहीं देखना है। इस टोटके को 21 दिन नियमपूर्वक करें। इसे करने से धनलाभ होता है।

— मंगलवार के दिन 7 साबुत डंठल सहित हरी मिर्च और एक नींबू लाएं। इसके पश्चात् उन्हें एक डोरे में पिरो लें। इन सबको कार्यालय या व्यापार स्थल के बाहर टांग दें। ऐसा हर मंगलवार करें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता है और नजर या टोक भी नहीं लगती। यह प्रयोग शनिवार के दिन भी किया जा सकता है।

— घोड़ी जब प्रसव कर रही हो तो बच्चे के साथ एक झिल्ली भी बाहर

आती है। घोड़ी प्रयत्न कर उसे तुरंत खा जाती है। उस झिल्ली की रचना सफेद होती है। अगर इसको संभालकर रखा जाए तो असीम धन प्राप्त होता है।

– काली बिल्ली की जेर को तिजोरी, व्यापार-स्थल या जेब में रखने से जीवन धनधान्य से पूर्ण होता है। यह प्रयोग मैंने स्वयं समय समय पर आजमाया है और शत-प्रतिशत ठीक पाया है।

– मंगलवार के दिन लाल चंदन, लाल गुलाब के फूल और रोली ले आएं। इन सब वस्तुओं को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी या द्रव्य रखने के स्थान पर रख दें। धनलाभ प्रारंभ हो जाएगा। इस टोटके को प्रत्येक छः माह के बाद दोबारा करें।

– संपत्ति में बरकत हेतु किसी भी बृहस्पतिवार को बाजार से जलकुंभी ले आओ। उसे पीले कपड़े में लपेटकर लटका दो। इस क्रिया में जलकुंभी को एक बार लटका देने के पश्चात् उसे दोबारा छूना निषेध है। स्मरण रखें, जलकुंभी ठहरे पानी में स्वयं ही उत्पन्न होती है।

– जिस दिन लाटरी का टिकट खरीदना हो, उस दिन आप प्रातःकाल ही स्नान करें। लक्ष्मी के चित्र के आगे धूप, दीप लाएं। पीले पुष्य अर्पण करें और पीली वस्तु खाकर, पीले वस्त्र पहनकर लाटरी का टिकट खरीदकर लाएं। यह ध्यान रखें, उस टिकट के अंकों का जोड़ आपके मूलांक के जोड़ से मिलता हुआ हो। वह टिकट लाकर लक्ष्मी के चित्र के आगे रख दें। मां लक्ष्मी की कृपा से हो सकता है आपको कोई पुरस्कार मिल जाए। मूलांक आप अपनी जन्मतिथि से ज्ञात कर सकते हैं। ध्यान रहे, जन्मतिथि शुद्ध होनी चाहिए, वरना गणित में त्रुटि होने पर आप लाभ से वंचित भी हो सकते हैं।

– रविवार के दिन घुग्घु का दिल निकालकर ले आएं। फिर इसे धूप-दीप देकर सोते हुए मनुष्य के हृदय पर रख देने से वह अपने मन की सब गुप्त बातें ज्यों की त्यों बता देता है।

– चकवी, चकोर और मैना की बीट तथा कगवर पक्षी की बीट इनको मिलाकर गोली बनाकर मुंह में रखकर यात्रा करने से यात्रा आराम से की जा सकती है।

– काले तीतर को लाकर तीन दिन तक भूखा रखें। चौथे दिन उसे पारा पिला दें। उसके पश्चात् दूध में भीगे चावल खिलाएं। जब तीतर बीट करे, तब उसमें से पारे को निकालकर गुटिका बना लें। इस गोली को

मुख में रखकर लंबी यात्रा करने से भी थकावट बिल्कुल अनुभव नहीं होती है।

— जंगल में जाकर जिस वृक्ष पर अमरबेल हो, उसकी सात परिक्रमा कर अमरबेल युक्त एक लकड़ी को तोड़ लाएं, फिर उस लकड़ी को धूप देकर जला दें तथा लता को सिरहाने रखकर विचार करते हुए सो जाएं तो स्वप्न में भविष्य की बातें मालूम हो जाती हैं।

— माह मास की पूर्णिमा को अपामार्ग की जड़ लाकर उसे सिर अथवा भुजा में बांधने से सब प्रकार की विपत्तियों से छुटकारा मिलता है। यह प्रयोग दो बार अवश्य करें।

— गोमूत्र, हरताल, गंधक और विष मिलाकर चूर्ण की अग्नि में धूनी देने से सब संकट और विपत्तियां दूर होती हैं।

— बंदर की हड्डी को लाकर धूप-दीप देकर गांव के बाहर गाड़ दें। फिर उसका प्रतिदिन पूजन करते रहें तो तब दीपक में अंकोल का तेल भरकर घर में जलाने से भूत-प्रेत दिखाई देते हैं, ऐसा कहा जाता है। घुंघची की जड़ को बेलपत्र के रस में पीसकर आंखों में आंजने से भी भूत-प्रेत दिखाई देते हैं।

— मेढ़े के सींग को रविवार के दिन न्यौतकर ले आएं, फिर उसे जलाकर गोली बनाएं तथा गोली को पृथ्वी में गाड़कर कड़वे तेल से सींचें। आधी रात के समय एकांत में उसके पास बैठकर मन में जिस कार्य को सिद्ध करने की इच्छा करें, वह पूर्ण होती है।

— भादों मास के कृष्ण पक्ष में भरणी नक्षत्र हो, उस दिन जल से भरे हुए चार कलश लेकर वन में जाएं और वहां उन कलशों को एकांत में रखकर चुपचाप चले आएं। शेष को वहीं छोड़ दें। खाली कलश को घर के एकांत कोने में रखकर प्रतिदिन उठकर पूजा करें तो उस व्यक्ति पर लक्ष्मी प्रसन्न होकर उसी के घर में निवास करती है।

— माघ मास की कृष्ण पक्ष की तेरस की रात्रि में ऊंट की हड्डी को न्यौता देकर फिर अगले दिन की रात्रि को उसे लाकर धूप दें। इसके पश्चात् उसे जल से धोकर कुंकुम, चंदन आदि लगाकर मनवांछित वस्तु की याचना करें तो वह इच्छा पूरी होगी।

— मुस्ता की जड़ को सोने में मढ़वाकर दाएं हाथ में बांधने से सुख एवं धन की प्राप्ति होती हैं।

— कटेली, आक व धतूरे का ऊपरी भाग पुष्य नक्षत्र में लाकर चूर्ण कर

लें। इस चूर्ण को जिस व्यक्ति के सिर पर डाला जाए, उससे इच्छित वस्तु को प्राप्त किया जा सकता है।

– गाय के बाएं सींग की अंगूठी बनवाकर बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली में पहनने से मिरगी का दौरा कभी नहीं आता।

– नागफनी की जड़ की माला पहनने से यकृत और प्लीहा (तिल्ली-जिगर) रोग शीघ्र ठीक हो जाता है।

– बांझककोड़े की गांठ को रविवार के दिन लाकर रोगी के समीप एक जलते हुए चूल्हे से बांध दें। वह गांठ जैसे-जैसे सूखती जाएगी, वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जाएगी।

– जिसे अधिक हिचकियां आ रही हों, उसे यदि अचानक डरा दिया जाए तो हिचकी आना बंद हो जाता है।

– हिचकी आने वाले व्यक्ति के मुंह पर अचानक पानी के छींटे मार देने से भी हिचकी बंद हो जाती है।

– जो व्यक्ति किसी के प्रेम करने के कारण पागल हो गया हो, उसके लिए बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून तथा कछुए के नाखून को ऊंट के चमड़े में मढ़कर तावीज की तरह गले में बांध देने से उसका पागलपन कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

– प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री की कमर में यदि नीम की जड़ बांध दी जाए तो प्रसव सुखपूर्वक होता है।

– प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की एक डली लेकर उसे दांत से काटें। इसके बाद आधासीसी का रोगी खा ले तो वह ठीक हो जाता है।

– थोड़ा-सा नमक लाल कपड़े में बांधकर प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री के बाएं हाथ की ओर लटकाने से प्रसव काल का कष्ट बहुत कम रह जाता है।

– केले की जड़ को स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है। बच्चे की नाल के निकलने की जड़ को खोलकर फेंक देना चाहिए।

– मासिक धर्म की खराबी के कारण स्त्री के पेडू में दर्द हो तो उसे रात को सोते समय अपनी कमर से मूंज की रस्सी बांधकर सोना चाहिए तथा प्रातःकाल उस रस्सी को खोलकर चौराहे पर फेंक देना चाहिए। इससे माहवारी की खराबी के कारण होने वाला पेडू का दर्द दूर हो जाता है।

– सीपियों की माला बनाकर बच्चे के गले में पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।
– संभालू की जड़ को गले में बांध देने से बच्चे के दांत आसानी से निकल आते हैं।
– जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो, उसे चिरचिटे की जड़ को स्पर्श कराने अथवा दो बार दिखा देने से ही जहर उतर जाता है।
– ऊंटकटेरी तथा गंधक को समान भाग में लेकर पीस लें, इसे राख में मिलाकर हरे खेत में डाल देने से खेत सूखकर पत्थर हो जाता है। यह प्रयोग वर्जित है।
– आर्द्रा नक्षत्र में रीछ की हड्डी के टुकड़े को खेत में गाड़ देने से खेत सूखकर नष्ट हो जाता है।
– कुत्ते की झिल्ली लाकर छाया में सुखा लें, फिर उसके साथ सोंठ, काली मिर्च और पीपल को खूब महीन पीसकर रख लें। उक्त चूर्ण को पानी में घोलकर अपने बाएं हाथ में लगाएं तथा उसी हाथ से जिस वृक्ष को छुएं, उसके फूल, पत्ते और कोंपल झड़कर गिर पड़ेंगे।
– भिलावे के रस में घुंघची, विष, चित्रक और कांच को मिलाकर देने से भूत जग जाता है। चंदन, खल, मालकांगनी, तगर, और कूठ को एक साथ पीसकर शरीर में लेप करने से भूत उतर जाता है।
– प्रातःकाल श्मशान में जाकर जहां-जहां ढेरी हो, वहां मदिरा और राल को इस तरह बिखेर आएं कि किसी को पता न चले। एक प्रहर रात्रि बीतने पर पांच सात लोगों को साथ लेकर फिर श्मशान में पहुंचें तथा ढेरियों में आग लगा दें। उससे अनेक प्रकार के उत्पात होने लगेंगे तथा मसान जाग उठेगा।
– चंदन, गुग्गल, भिलावा और वायविडंग, अर्जुन वृक्ष के फल व पुष्प इन सबको बराबर लेकर कूट करके इस चूर्ण को धूप देने से मच्छर, मक्खी, खटमल, चूहे और सर्प आदि भाग जाते हैं।
– त्रिफला, लाख और याक तथा सफेद गुड़ और चंदन—इनको कूट करके धूप देने से घर से सर्प-बिच्छू भाग जाते हैं।
– नागरमोथा, सरसों, भिलावा, कोंच के फल, गुड़ और मदार—इनको कूट करके धूप देने से घर से सर्प तथा कीड़े भाग जाते हैं।
– गन्धक, नरगिस और ऊंट कटीरा की जड़ को बराबर भाग लेकर पानी के साथ बारीक पीसकर जिस स्थान पर छिड़क दिया जाए, वहां मक्खियां नहीं रहतीं, भाग जाती हैं।

— काली मिर्च पिसी हुई एक भाग, गुड़ एक भाग और दूध दो भाग—इन्हें एक साथ मिलाकर रकाबी में भरकर रख दिया जाए, तो वहां मक्खियां नहीं आतीं।

— मघा नक्षत्र में महुए के वृक्ष का बांदा लाकर खेत में गाड़ देने से चूहे आदि अनाज को नहीं खाते।

— क्वाशिया की लकड़ी का चूर्ण कर एक किलो पानी में भिगोकर घंटे भर बाद उसे छानकर पानी में दस तोले काली मिर्च पीसकर मिला दें। इस पानी को जहां पर रखा जाएगा, वहां पर मक्खियां नहीं आएंगी।

— रविवार के दिन अग्नि पर हांडी चढ़ाकर गाय के दूध में लटजीरा के चावल पकाकर खीर बनाएं। फिर उसमें अपामार्ग डालकर गूगल की धूनी दें, तदुपरांत चना और गुड़ को उसके साथ ही मिलाकर उसे हांडी के मुंह को इस तरह बंद करें कि उसके भीतर पानी न जा सके। फिर संकल्प करके उस हांडी को बहते हुए पानी के भीतर खोदकर गाड़ दें। जितने दिन की अवधि का संकल्प होगा, उतने दिन तक भूख नहीं लगेगी।

— जमीरी नींबू की छाल, साल्हिक की छाल तथा कुन्दरू के बीज—इन सबको घी में मिलाकर खीर बनाकर प्रातःकाल खाने से भूख नहीं लगती है।

— बकरी के दूध में तालमखाने के बीज, भांगरे के बीज और पान की जड़ मिलाकर खीर प्रातःकाल खाने से बारह दिन तक भूख-प्यास की पीड़ा नहीं सताती है।

— कुतुनी वृक्ष के नए पत्ते, फूल तथा जड़ को पान में रखकर प्रातःकाल खाने से भूख और प्यास नष्ट हो जाती है।

— सायंकाल शिखवृक्ष को न्यौता देकर दूसरे दिन प्रातःकाल उसके पुष्प लाकर, माला बनाकर माथे पर धारण करके बहुत खाना खा सकते हैं।

— रविवार के दिन नर चकोर पक्षी को लाकर कोरी हांडी में बंद करके लोबान की धूनी देकर, उस हांडी को खेत में गाड़ दें, जो व्यक्ति उस खेत में चोरी करके खाएगा, उसका पेट बोलने लगेगा।

— बहेड़े का पत्ता तथा सफेद कुत्ते का दांत इन दोनों को कमर में बांधकर भोजन करने बैठें तो ज्यादा भोजन करेंगे।

— मघा नक्षत्र में महुए के वृक्ष का बांदा लाकर खेत में गाड़ देने से चूहे आदि अनाज को नहीं खाते।

आलस्य दूर करने के लिए

अगर किसी व्यक्ति को ऐसा अनुभव हो कि आलस्य के कारण उसे किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिल रही है तो उसे कटेरी की जड़ शुद्ध शहद में पीस लेनी चाहिए। इसको सूंघने मात्र से आलस्य से राहत अनुभव होगी।

झगड़ा होने पर

घर में क्लेश रहता हो तो यह उपाय करें। घर में गेहूं का आटा केवल सोमवार को ही पिसवाएं। पिसवाने से पहले उसमें थोड़े काले चने डाल दें। इस प्रकार का आटा खाने से धीरे-धीरे सारे क्लेश खत्म हो जाएंगे।

पीछा छुड़वाने के लिए

अगर कोई व्यक्ति व्यापार में या नौकरी में तंग करता हो तो इस उपाय को करें। सफेद रंग का आधा मीटर कपड़ा लें। उस पर काजल से उस व्यक्ति का नाम केवल तर्जनी उंगली से ही लिखें। उस व्यक्ति के नाम के जितने अक्षर हों, उतनी बार उस पर थूकें।

कन्या के विवाह में विलम्ब होने पर

कन्या के विवाह के लिए किसी भी कारण से योग्य वर नहीं मिल पा रहा हो तो कन्या किसी भी गुरुवार के दिन, प्रातःकाल नहा-धोकर, बेसन के लड्डू स्वयं बनाए। उनकी गिनती 109 होनी चाहिए। फिर प्लास्टिक की पीले रंग की टोकरी में, पीले रंग का कपड़ा बिछाकर, उन लड्डुओं को उसमें रख दें तथा अपनी श्रद्धानुसार कुछ दक्षिणा रख दें। पास के किसी शिव मंदिर में जाकर विवाह हेतु प्रार्थना कर घर आ जाएं।

ऋण मुक्ति के लिए

शुक्ल पक्ष में मंगलवार के दिन से आटे में गुड़ डालकर पूए बनाकर हनुमानजी के मंदिर में चढ़ाएं या गरीबों को खिलाएं। ऋण से मुक्ति मिल जाएगी।

कार्यसिद्धि एवं संपन्नता हेतु

बुधवार को एक कटोरी बासमती चावल दान में दें। ऋण नाश, धन लाभ, व्यापार वृद्धि हेतु चमकीले लाल रंग का कपड़ा लें। उसे बिछा लें। उसमें लाल

चंदन का टुकड़ा, लाल गुलाब के पुष्प, रोली तथा 58 पैसे रखें। फिर कपड़े में सारा सामान लपेटकर कपड़े की पोटली बनाकर अपने गल्ले अथवा अलमारी या संदूक में रख दें। 6 माह पश्चात् पुनः नवरात्रि की अष्टमी को इस प्रक्रिया को दोहराएं।

थकावट के लिए

यात्रा से आने पर थकावट हो तो पैरों को अच्छी तरह धोकर निम्नलिखित मंत्र का जप करते हुए तलवों पर हल्का-हल्का हाथ फेरें और कहें—ॐ वासुदेवाय नमः"। थोड़ी ही देर बाद पूरे शरीर में स्फूर्ति का संचार होगा।

संतान की प्राप्ति के लिए

शुक्रवार के दिन चने के आटे की दो रोटियां बनाकर उस पर सूखी सब्जी रखकर, किसी गरीब को खिलाएं। इस क्रिया को सात बार करें तो स्वस्थ संतान की प्राप्ति होगी। सोमवार के दिन गर्भवती स्त्री देशी कपूर का एक टुकड़ा ले। उसमें से आधा काटकर जला दें। आधा शिवजी के मंदिर में डाल दे तो स्वस्थ संतान की प्राप्ति होती है। गऊशाला में दान करने से संतान की प्राप्ति हो जाती है। कुंवारी लड़कियों के चरण छूने से भी संतान प्राप्त हो जाती है। शुक्रवार को आटे में पनीर डालकर गाय को खिलाएं। ऐसा करने से भी संतान की प्राप्ति हो जाती है।

बच्चे की रक्षा हेतु

बच्चे को दूध पिलाने से पहले दूध को घर में बनाए हुए मंदिर में रख दें। फिर बच्चे को दूध पिलाएं तो बच्चे को दूध हजम हो जाएगा।

एक देशी कपूर का टुकड़ा लें। उसको थोड़ा-सा तोड़कर बच्चे को चटाएं। शेष को हनुमानजी के मंदिर में चढ़ा दें।

बच्चा दूध न पीता हो

थोड़ा दूध लें। उसे बच्चे के सिर से 21 बार उतारकर काले कुत्ते को पिला दें तो बच्चा दूध पीने लगेगा।

वशीकरण तिलक

जिस स्त्री को वश में करना हो, उसका नाम कमल के पंत्र पर गोरोचन से शनिवार को लिखें, फिर उसी से तिलक करने से वह स्त्री वश में हो जाती है।

सर्वस्त्री साधु योग

खस, चंदन, इसमें शहद मिलाकर तिलक करें और स्त्री के गले, बांह में बांह डालकर वश में करें तो स्त्री वश में हो जाएगी।

अद्भुत वशीकरण

चिता की भस्म, बचकुट, केसर और गोरोचन—इन सबको सम भाग में लेकर चूर्ण बनाकर यदि किसी स्त्री के सिर पर छोड़ें तो वह वश में हो जाएगी।

पति वशीकरण

सफेद सरसों और अनार का फल, फूल, पत्र तथा जड़ को एकत्रित कर योनि के ऊपर इसका लेप करके पति से संभोग करने से यदि स्त्री कुरूप हो तो भी अपने पति को वश में कर लेती है।

शत्रु वशीकरण

लाल चंदन से अखंडित भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखें या उसको शुद्ध मधु में डुबा दें तो शत्रु वश में हो जाता है।

वशीकरण बुकनी

चिता की राख, कूट, बच, तगर और कुंकुम को पीसकर स्त्री के सिर पर छोड़ें तो वह वश में हो जाती है।

वशीकरण तिलक

सफेद आक की जड़ को छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में मिलाकर उसका तिलक कर लें। जो देखेगा, वही वश में हो जाएगा।

वशीकरण लेप

सफेद गाय के दूध को कपिला गौ के दूध में मिलाकर शरीर पर उसका लेप करने से हर कोई वश में हो जाता है।

अनेक प्रकार के चित्र दिखने का टोटका

चिरचिटे की जड़ को रुई में लपेटकर बत्ती बनाएं तथा दीपक में काली गाय के घी को भरकर उस बत्ती को डालकर जलाएं। जलाने के पूर्व दीपक——

को चौका लगाकर रखना चाहिए तथा गुग्गल की धूनी देकर, सिंदूर पूजना चाहिए। दीपक के जलने पर, उस रोशनी में अनेक प्रकार के चित्र दिखाई देंगे।

स्त्री वशीकरण चूर्ण

— भांग का बीज और घीग्वार की जड़ का तिलक मस्तक पर करने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

— बेलपत्र और मातुंगल को काली बकरी के दूध में मिलाकर तिलक करने से सर्वसाधारण वशीभूत हो जाते हैं।

— कुंकुम, शुद्ध केसर, सोंठ, कुट, बर्फी, हरताल तथा मैनसिल को एकत्रित करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त मिलाएं। फिर उसका तिलक लगाने से सब व्यक्ति वश में हो जाते हैं।

— मैनसिल और असगंध को आंवले के रस में मिलाकर ललाट पर लेप करने से सब वश में हो जाते हैं।

— देशी पान और श्यामा तुलसी के पत्र को कपिला गौ के दूध में मिलाकर मस्तक के अग्र भाग पर तिलक लगाने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

— अपामार्ग का बीज बकरी के दूध में मिलाकर तिलक बनाने से सब लोग वश में हो जाते हैं।

— काला नमक, भंवरे के दोनों पंख, तगर मूल, सफेद कौआ गोड़ी इन सबका चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के सिर पर डालें, वह वशीभूत हो जाती है।

चित्र के हंसने का टोटका

— बीरबहूटी को गंधक में सानकर चित्र के समीप अग्नि पर डालने अथवा इन दोनों को बत्ती में लपेटकर दीपक में जलाने से चित्र हंसता हुआ-सा अनुभव होता है।

नज़र लगने पर

— किसी को भी नजर लग गई हो, खाना-पीना छूट गया हो, अस्वस्थ रहने लगा हो तो चौराहे की रेत लाएं, उसमें नमक, राई व सात साबुत लाल मिर्च मिलाकर शनिवार व रविवार को तीनों समय सूर्य अस्त के समय उस व्यक्ति के ऊपर से घुमाकर चूल्हे में डाल दें, तो उसकी नजर उतर जाएगी।

- नजर लगे व्यक्ति के ऊपर चारों ओर से सफेद फिटकरी का टुकड़ा घुमाकर चूल्हे में डाल दें। तीन दिन लगातार तीनों समय करें तो व्यक्ति स्वस्थ हो जाएगा।
- हाथी की लीद को चांदी के यंत्र में भरकर छोटे बच्चे के गले में पहना दें, तो उस बच्चे को नजर का दोष नहीं लगता।
- नमक, राई, लहसुन, प्याज के छिलके व लाल मिर्च अंगारे पर डालकर उस आग को रोगी के ऊपर इक्कीस बार घुमाने से नजर का दोष मिटता है।
- सहदेवी और अपामार्ग के रस को तांबे के पात्र में अच्छी तरह पीसकर उसका तिलक लगाकर जाने से शत्रु आत्मसमर्पण करता है।
- कनेर पुष्प व शुद्ध गोघृत दोनों मिलाकर जिस किसी स्त्री का नाम लेकर 108 बार हवन किया जाए, तो वह स्त्री दस दिन के भीतर साधक के वश में होकर इच्छा पूर्ण करती है।
- नमक, राई, राल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके व सुर्ख मिर्च, अंगारे पर डालकर उस आग को रोगी के ऊपर ग्यारह बार घुमाने से बुरी नजर का दोष मिटता है।
- भूत-प्रेत व नजर से बचाने के लिए बच्चों के गले में काले रंग के धागे में रुद्राक्ष, चांदी का चंद्रमा, तांबे का सूर्य, शेर का नाखून आदि पहनाते हैं।
- गांवों में रविवार या शनिवार के दिन नजर लगे व्यक्ति के ऊपर से तीन बार दूध उतारकर एक मिट्टी के ढक्कन में रखकर कुत्ते को दे देते हैं।
- शनिवार के दिन हनुमान मंदिर में जाकर उनके कंधे पर से सिंदूर लाकर नजर लगे हुए व्यक्ति के माथे पर लगाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर होता है।
- भवन निर्माण के समय भवन के ऊपर बाहरी भाग को काजल से पोतकर घड़ा टांग देने से भवन को नजर नहीं लगती।
- अल्प आयु में ही जन्मे शिशु की मां को उसके दीर्घायु होने की कामना से अपने बाएं हाथ पर "अश्वत्थामा", "हनुमान" आदि चिरंजीवी नाम खुदवाने चाहिएं।
- भोजन में नजर लगने पर तैयार भोजन में प्रत्येक में से थोड़ा-थोड़ा लेकर उस पर गुलाल छिड़ककर रख देते हैं। फिर बाद में सभी खाना खाएं, नजर ठीक हो जाती है।

— गोबर के बनाए गए छोटे दीपक में गुड़ का टुकड़ा, तेल और रूई की बत्ती डालकर दरवाजे में रखने से बुरी नजर का प्रभाव जाता रहता है।

शुभ-अशुभ लक्षण टोटका

— सेही के कांटे को जिस घर के दरवाजे में गाड़ दिया जाएगा, उस घर में झगड़ा होता रहेगा।

— अगर दुल्हन सुहाग के जोड़े में अचानक इतना हंस ले कि अति प्रसन्नता के कारण आंसू छलक आएं और वह आंसू घर का कोई सदस्य अपनी अंगुली में लेकर चाट ले तो उसके दुःख में कमी आएगी।

— घर आई दुल्हन के कपड़ों में अगर आपको कोई मकड़ी दिख जाए तो उसे किसी कागज, झाड़ू आदि से घर के दरवाजे के बाहर छोड़ दें। यह शांतिवर्धक प्रयोग है।

— अगर कोई व्यक्ति किसी आवश्यक कार्य से बाहर जा रहा है, अचानक उसके आगे किसी वृक्ष से पका हुआ कोई फल टूटकर आ गिरे तो वह उठा ले। आगे मार्ग में कहीं पर उसे खा ले, यात्रा सफल और सुखमय होगी।

— गर्भवती स्त्री अगर बैठकर कोई फल खा रही है और वह छूटकर उसकी गोद में गिर जाए तो यह शुभ लक्षण है। अगर गोद में से ही यह फल उठाकर बिना टोके ऐसी स्त्री खा ले जिसके बच्चे नहीं होते तो उसके लिए यह टोटका फलदायक हो सकता है।

— मार्ग में आते-जाते यदि आपको कोई शव यात्रा दिखाई दे तो आप उस यात्रा के साथ कुछ पग चलें, फिर अपने गंतव्य की ओर बढ़ें, उस दिन सारे कार्य सिद्ध होंगे। शव दिखाई देना शुभ होता है।

— अगर अचानक आपको नीलकंठ दिखाई दे और आपके सामने उसका कोई पंख टूटकर गिर जाए तो उसे उठा लें। अपने घर पर लाकर यह ऐसे ही किसी स्वच्छ साफ कपड़े में लपेटकर रख लें।

— अगर आप किसी घर से निकल रहे हैं और अचानक आपको बछड़े की दूध पिलाती हुई गाय दिख जाए तो आप तुरंत घर लौट जाएं। घर से एक रोटी और गुड़ लाकर उस दूध पिला रही गाय को खिला दें। आपका दिन सौभाग्यशाली सिद्ध होगा।

— रविवार के दिन श्मशान की धूल लाकर गुग्गल की धूनी जिसके घर में गिरा दें, उस घर में कलह रहेगी।

– प्रातः अचानक कोई नहा-धोकर सजी संवरी महिला दिखाई दे जाए तो समझिए आपका सारा दिन मंगलमय बीतेगा। अगर कोई सताई महिला ऐसे में उसके बाएं पांव के नीचे की चुटकी भर मिट्टी चुपचाप उठाकर अपनी मांग में भर ले तो उसके लिए वह दिन सौभाग्य देने वाला होगा।

– बारह सरसों, तेरह राई, चाक की मिट्टी, श्मशान की राख, खैर की लकड़ी से घृत डालकर हवन करें। ठंडा होने पर उस राख को जिन दो मित्र के बीच में गिरा दें, उनकी मैत्री टूट जाएगी।

– हाथी की पूंछ व घोड़े के मुंह के बाल की जिस सभा में धूनी दी जाए तो उस सभा में झगड़ा हो जाता है।

– रविवार के दिन चूहे व बिलाव के बाल लेकर जिसके घर के आगे गाड़ दें, उस घर में कलह रहेगी।

– आक के फूलों को लेकर जिन दो व्यक्तियों के नाम से भावना दी जाएगी, उनमें बैर हो जाएगा।

– घुग्घू और कौवे का पंख शनिवार की अर्द्धरात्रि को जलाकर उपरोक्त जिन दो के सिर पर गिरा दें, उनका आपस में बैर हो जाएगा।

– पुरुष का पहना वस्त्र व स्त्री के सिर के बाल मंगलवार को जलाकर उस भस्म को खिला दें तो उनमें आपस में वैमनस्य हो जाएगा।

– हाथ, पांव अथवा शरीर की कोई भी हड्डी बार-बार चटकने पर आप परांदा (जिसे चुटीला भी कहते हैं, इसे स्त्रियां अपने बालों में गूंथती हैं) के 7 धागे लेकर उसे दीपक के ऊपर से घुमाकर हाथ में बांध दें। हड्डियों का चटकना तुरंत बंद हो जाएगा।

– घृत-घर में लग जाने पर घर का फर्श और नींवें खोखली हो जाती हैं। दिन में आप मिट्टी भरो तो रात में घूस पुनः मिट्टी बाहर निकाल देती है। आप ऐसा करें, घर की समस्त स्त्रियां एक सप्ताह तक अपने टूटे बाल एकत्रित करती रहें। कृष्ण पक्ष के मंगलवार को घूस के बिल में उन बालों को भर दें और उस घूस के घर को बंद कर दें, तब या तो घूस मर जाएगी या फिर स्वयं ही भाग जाएगी।

– काले सर्प के दांत को स्त्री के गले में लटका देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

– खड़िया मिट्टी का यंत्र बनाकर गले में लटका दें तो बच्चे का रोना बंद हो जाएगा।

– नाग की केंचुली और नेवले के बालों को एक साथ जलाकर गुग्गल

की धूनी देकर जिन दो व्यक्तियों के बीच में धूप की तरह जलाएंगे उनमें आपस में बैर-वैमनस्य हो जाएगा।

– अपनी मां का नाम एक भोजपत्र पर लिखकर सिरहाने रखकर सो जाएं तो कभी स्वप्नदोष नहीं होगा।

– मेड़िया की विष्ठा और उसकी कमर की हड्डी पास में रखने से मिरगी नहीं आती।

– सूर्य ग्रहण के दिन स्नान कर पूर्व दिशा की ओर से सरपंखा की जड़ लाएं। उसका यंत्र बनाकर गले में डालने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

– श्वेतगुंजा की जड़ मस्तक के नीचे रखें तो अधिक निद्रा आएगी।

– सफेद सोंठ की जड़ को प्रसूति के समय गुप्तांग में रखें तो सुखपूर्वक प्रसव होता है।

– मंगलवार को नीलकंठ का पंख लाकर चारपाई में लगा दिया जाए तो बच्चे का रोना बंद हो जाएगा।

– चमकीले रेशमी लाल वस्त्र में नमक बांधकर स्त्री की बाईं तरफ बांधें तो प्रसव सुखपूर्वक होता है।

– शनिवार के दिन कच्ची घानी का सरसों का तेल ले लें। उसमें अपनी छाया देखें। इसके बाद इस तेल में गुड़ के गुलगुले उतार लें। यह गुलगुले किसी गरीब को दे दें। सब बाधाएं शांत हो जाएंगी। शनि का कोप भी शांत होगा।

– एक रुपये का सिक्का ले लें। रात को इसे सिरहाने रखकर सो जाएं। प्रातः इसे श्मशान की सीमा में चुपचाप फेंक आएं। शरीर स्वस्थ होगा।

– कन्या का जब विवाह हो चुका हो और वह विदा हो रही हो, तब एक लोटे में गंगाजल लेकर उसमें थोड़ी हल्दी डालकर, एक पीला सिक्का डालकर लड़की के ऊपर से उतारकर उसके आगे फेंक दें। वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।

– चमकीले हरे धागे की रील, हरा कागज, साबुत हरिद्रा, पीतल का टुकड़ा यह सब मिलाकर घर का मुखिया अगर कुएं में अनटोक डाल दे तो गया व्यक्ति वापस आ जाता है।

– श्रावण के महीने में जब पहली बरसात हो, जब पतनाले से बहते पानी में स्नान करने से दुर्भाग्य दूर होता है और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

– स्त्री जिन दिनों रजस्वला हो, उन दिनों पांच अखण्डित लौंग लेकर उन्हें अपनी भग में भिगोएं। तत्पश्चात् उन लौंगों को पीसकर जिस पुरुष के मस्तक पर डालें, वह उसके वश में रहता है।

— मालती के फूलों को सरसों के तेल में डालकर पका लें। उस तेल को अपने गुप्तांगों में लगाकर जो स्त्री मैथुन करती है, वह अपने पति को वश में कर लेती है।
— रविवार को काले धतूरे की अभिमंत्रित जड़ बांह में बांधें तो भूत-बाधा हट जाए।
— नीलकमल, गूगल और अगर सबको समभाग लेकर अपने सब अंगों में धूनी दें तो उसे देखते ही सभी लोग मोहित हो जाते हैं।
— भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा देने से शत्रु वशीभूत हो जाता है।
— परिवार में सुख-शांति और समृद्धि के लिए प्रतिदिन प्रथम रोटी के चार बराबर भाग करें, एक गऊ को, दूसरा काले कुत्ते को, तीसरा कौए को और चौथा चौराहे पर रख दें। परिवर्तन आप स्पष्ट देखेंगे।
— पांच प्रकार के फल से तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।
— सफेद सरसों, तुलसी, धतूरा, ओंगा और तिल का तेल—इन सबको एकत्र कर खूब महीन पीसकर जो स्त्री अपने शरीर पर लेप करती है, उसका पति वश में हो जाता है।
— आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन जो अपनी कमर से सिरिस की जड़ बांधता है तथा चावल का पानी पीता है, उसे सर्पदंश का भय नहीं होता।
— रविवार को तुलसी पत्र, काली मिर्च प्रत्येक आठ-आठ तथा सहदेई की जड़ लाकर तीनों को तांबे के यंत्र में भर, धूप देकर धारण करने से भूतादिक दूर हो जाते हैं।
— मुंडी, गोखरू ओर बिनौली समभाग लेकर गौमूत्र में पीसकर ब्रह्मराक्षसग्रस्त को सुंघाएं तो ठीक हो जाए।
— चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन चीते के पेड़ को न्यौत आएं। फिर नवमी के दिन उसे लाकर धूप-दीप देकर अपने पास रखें तो लोग मोहित हो जाते हैं।
— हल्दी, गौमूत्र, घी, सरसों और पान के रस को पीसकर, शरीर पर लगाने से स्त्रियां वशीभूत होती हैं।
— बिजोरे की जड़ और धतूरे के बीज को प्याज के साथ पीसकर जिसे सुंघाया जाए, वह वश में हो जाता है।
— काकजंघा, तगर, केसर और मेनसिल—इनको समभाग में लेकर चूर्ण बनाकर स्त्री के मस्तक पर डाल देने से वशीभूत होती है।

— गोरोचन, कुरैवा, पारा तथा कश्मीरी केसर—इस सभी को धतूरे के रस में घोटकर शिश्न पर लेप करके जिस स्त्री के साथ मैथुन किया जाए, वह वशीभूत हो जाती है।

— तगर, कुट, हरताल और केसर इनको समभाग में लेकर अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

— चावल की भूसी, उल्लू के बाएं भाग के पंख, कौए के दाएं भाग के पंख और बबूल के कांटे लेकर "ॐ स्वाहा" कहकर जलाएं। तुरंत विद्वेषण होगा।

— नदी के झाड़, वृक्ष की जड़ लाकर उसमें कूड़े की छान मिलाएं तथा चूर्ण कर लें, फिर उन दोनों के बराबर श्मशान की राख मिलाकर जिसके ऊपर इसे डाला जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

— सेंधा नमक, देशी कपूर को पीसकर शुद्ध शहद में मिलाकर मैथुन किया जाए तो स्त्री वश में हो जाती है।

— हिरण की बाईं आंख को तावीज में मढ़वाकर काले धागे के द्वारा अपनी दाईं भुजा में बांधने के बाद जिस स्त्री के पास भी जाया जाएगा, वह पूरी तरह से मोहित हो जाएगी।

— कमल बीजों को चावल के साथ बकरी के दूध में पीसकर घी में हलुवा या ख़ीर बनाकर खाएं। इसका सेवन करने से कई दिनों तक भूख का अनुभव नहीं होगा।

— मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाने के लिए सुलेमानी लाल हकीक धारण करना उपयुक्त रहता है।

— लाजवंती की जड़ का छल्ला बनाकर कमर में बांधने से आंत का रोग ठीक हो जाता है।

— दाएं हाथ की बीच की उंगली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी रोग दूर हो जाता है।

मयूर पक्षी तंत्र (टोटका)

मयूर पक्षी वर्तमान समय में भारत का राष्ट्रीय पक्षी बन चुका है, परन्तु प्राचीन काल से ही कला के क्षेत्र में इस पक्षी के सौन्दर्य व नृत्य की प्रशंसा होती आई है। प्राचीन किलों, मीनारों तथा महलों में, विशेषकर कुओं व बावड़ियों पर मयूर का चित्र पत्थरों पर बना दिखाई देता है। कला के साथ ही यह तंत्र में भी अपना कम स्थान नहीं रखता।

आकर्षक व्यक्तित्व का तंत्र

रवि पुष्य योग में मयूर (मृत मयूर का) का मुख लेकर उसमें अकोल का बीज डालकर जमीन में दबा दें। उसमें वृक्ष आने के बाद जब फल लग जाएं तो उसका बीज लेकर त्रिलोह के तावीज में भरकर दाहिनी भुजा में बांधें, तो चेहरा मयूर के समान आकर्षक हो जाएगा।

सम्मोहनकारक तंत्र (टोटका)

मयूर (नर) के मस्तक पर उगने वाली चोटी (कलंगी) को किसी भी शुभ मुहूर्त में धूप-दीप देकर पगड़ी या टोपी (सिर पर) में धारण करने अथवा रेशमी वस्त्र में सुरक्षित रूप से (बिना तोड़-मरोड़) जेब में रखने से सम्मोहन का प्रभाव उत्पन्न होता है।

रक्षात्मक कवच

मयूर अस्थि यानी हड्डी को बालक के गले में तावीज बनाकर तांबे या काले कपड़े में बांध देने से बालक हर प्रकार की नजर व टोने-टोटके से हमेशा बचा रहता है। यह प्रयोग रविवार को करें। रवि पुष्य रोग अथवा मंगलवार को यह टोटका ज्यादा प्रभावकारी साबित होता है।

मयूर के कुछ तांत्रिक प्रयोग

– लाल चन्दन तथा केसर से स्याही बनाकर मयूर की चोंच से पन्द्रह का यंत्र बनाएं तथा इसके बाद धूप देकर भोजपत्र का टुकड़ा उसी चोंच में लपेट दें, फिर दुबारा धूप देकर लाल रेशमी वस्त्र में लपेटकर अपने पास रखें। रवि पुष्य योग में बनाए गए इस यंत्र को धारण करने वाला व्यक्ति समृद्धिशाली होता है।

– मयूर अस्थि खण्ड भोजपत्र में लपेटकर, तावीज में रखकर बालकों को पहनाने से नजर, टोने इत्यादि से रक्षात्मक कवच के रूप में काम करता है।

– घर में मयूर पालने से किसी भी प्रकार घर में सर्प आने का भय नहीं रहता। मयूर निवास होने से घर में लक्ष्मी का स्थाई निवास होकर श्रीवृद्धि होती है।

– मयूर शिखा (कलंगी) को बिना तोड़े-मरोड़े किसी शुभ योग में प्राप्त करके, अपने पास रखने से काफी सम्मोहन शक्ति प्राप्त होती है। वह

व्यक्ति मान-सम्मान प्राप्त करने वाला सम्मोहन प्रभाव वाला हो जाता है।

– मयूर पंख को पुस्तकों व धार्मिक ग्रंथों में रखने से विद्या, मान-सम्मान तथा सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है। परन्तु ध्यान रहे, स्वतः मरे हुए मोर के अंगों या स्वयं गिरे हुए मोर के पंखों का प्रयोग करना चाहिए। जीवित पक्षियों को मारकर तंत्र में प्रयोग करना वर्जित है।

वशीकरण हेतु टोटके

– तगर की जड़, नीलकमल, भौंरे के दोनों पंख तथा सफेद काकजंघा दोनों को समान भाग में मिलाकर पीस लें, फिर निम्नलिखित मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करके साधक जिस स्त्री के सामने खड़ा होगा, वह देखते ही वशीभूत हो जाएगी।

– ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म, सहदेई तथा वचा व कूठ को समान मात्रा में मिलाकर कूटकर चूर्ण बनाएं। यह चूर्ण समस्त वनस्पतियों को तांत्रिक विधान से प्राप्त करके तथा विधिवत पूजन और इष्टदेव को निवेदित कर मंत्र से अभिमंत्रित करके रख लें। जिस समय प्रयोग करना हो, 108 बार यंत्र से अभिमंत्रित करके स्त्री के सिर में डाल देने से वह वशीभूत हो जाएगी।

– नागकेसर, जटामासी, वचा, तगर, कमल पुष्प इन सबको समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाएं तथा 108 बार यंत्र से अभिमंत्रित करें, फिर इसको किसी मिट्टी के नए सकोरे में रखकर खैर की लकड़ी के कोयले से अपने शरीर में धूनी या धूप देते हुए वांछित नारी का स्मरण करें तो वह वश में हो जाएगी।

– गोरोचन और सहदेई को पानी के साथ पीसकर उक्त मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें, फिर अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। तिलक लगाकर जिस साध्य स्त्री के पास जाएंगे, वह वशीभूत हो जाएगी।

– कुंवारी कन्या के हाथों से काते हुए सूत में सहदेई की जड़ को बांधकर, फिर उस सूत में बंधी हुई जड़ को जिस स्त्री की कमर में बांध दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगी।

दमा रोग निवारण टोटका

भारत में 60 प्रतिशत लोग दमे का शिकार हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण प्रदूषित वायु तथा धूम्रपान करना है। रोगी की सांस अवरुद्ध हो जाती है।

ऐसा लगता है मानो प्राण ही निकल जाएंगे। बहुधा रोगी को सांस लेने में काफी तकलीफ होती है तथा वह भारी मेहनत का काम व भागने-दौड़ने में अक्षम हो जाता है।

— दमा के रोगी को चाहिए कि वह शुद्ध शहद एक पाव लेकर चांदी के पात्र में रखकर हवन वेदी पर रखे तथा इसमें गायत्रीं मंत्र पढ़ते हुए 108 आहुतियां दे। इसके बाद शेष बची हुई शहद को दिन में तीन बार एक-एक चम्मच की मात्रा में खाएं तो दमा रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

शत्रुताकारक उलूक टोटका प्रयोग

शत्रुताकारक प्रयोग हेतु साधक को चाहिए कि वह माघ मास की अमावस्या को एक उल्लू अर्द्धरात्रि के समय पकड़कर लाए तथा पूजा करने के बाद, पूंछ से तीन पंख निकालकर उल्लू को उड़ा दे।

अगले दिन अर्द्धरात्रि में किसी भी श्मशान में जो नदी या तालाब के पास हो, वहां जाकर नदी में स्नान करने के समय दाएं हाथ में पंखों को किसी कपड़े में बांधकर रखें। स्नान के बाद जलती चिता के सामने बैठकर निम्नलिखित मंत्र का 1008 बार जप करें तथा उपरोक्त प्रयोगों के समान पूर्वाभिमुख अर्थात् पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके लाल कम्बल अथवा कुशा के आसन पर बैठकर मंत्र जाप पूर्ण करके वापस लौट आएं।

मंत्र जाप करते समय प्रत्येक बार मंत्र पढ़कर पंख पर फूंक मारनी चाहिए। इसे किन्हीं दो व्यक्तियों की मित्रता, जिससे साधक को नुकसान होने की आशा हो, उनके बीच दुश्मनी कराने के लिए कारगर प्रयोग होता है। मंत्र से यह सिद्ध करने के बाद इसकी भस्म बनाकर रख लेनी चाहिए। प्रयोग के लिए साध्य व्यक्तियों के द्वार पर बिना किसी के देखे व टोके आधी-आधी भस्म जमीन में गाड़ देनी चाहिए। इसके प्रभाव से दोनों व्यक्तियों में आपस में दोस्ती के बजाय दुश्मनी हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमः उलूक राजाय, लक्ष्मी वाहनाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।"

शत्रुनाशक कौआ तंत्र

— यदि अवांछित प्रेम उत्पन्न हो जाए जिससे मान-मर्यादा की हानि होती हो, ऐसे प्रेम को खत्म करने के लिए रविवार व मंगलवार को कौए की आंख को जलती चिता की आग में जलाकर, कोयलों पर रखकर

जिन दो प्रेमियों को उनका स्पर्श करा दिया जाता है, उनमें प्रेम खत्म होकर दूरी बढ़ जाती है तथा वे एक-दूसरे को देखना पसंद नहीं करते।

– किसी सोमवार को कौए के दो पंखों को लेकर अर्द्धरात्रि में श्मशान में जाकर उनको किसी जलती चिता की अग्नि में जलाकर भस्म बनाकर रख लें। वह राख जिन दो प्रेमियों के मस्तक पर डाली जाती है, आपस में मित्र होते हुए भी वे शत्रुता का व्यवहार करने लगते हैं।

– रवि पुष्य योग यानी जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, किसी गिरगिट को मारकर उसका रक्त निकालकर एक शीशी में रखें तथा इसी शीशी में समान मात्रा में कौए का रक्त मिलाएं तथा दोनों के वस्त्रों का छोटा-छोटा टुकड़ा लेकर उसी शीशी में डालकर तर कर लें।

इसके बाद कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को अर्द्धरात्रि के समय चिता से अग्नि लेकर उनकी भस्म बनाकर रख लें, फिर मुक्त रूप से उन दोनों के मस्तक पर यह भस्म रविवार या मंगलवार को डाल देने से दोनों में घोर शत्रुता हो जाती है। यह शक्तिशाली प्रयोग सदा के लिए दुश्मनी पैदा कर देता है।

गुप्त भेद जानने का तंत्र

यदि किसी के मन का गुप्त भेद जानना हो तो यह करें कि रवि पुष्य योग में कौए की जबान तथा सहराई मेंढक की जबान दोनों को एक डिब्बी में बन्द करके रख लें। जिस स्त्री या पुरुष के मन का भेद जानना हो, रात्रि को सोते समय वह डिबिया धीरे से उसके सीने पर रख दें तो वह बड़बड़ाकर अपना सारा भेद बता देता है। जगने पर उसे इसका कोई आभास नहीं रहता है।

सम्मोहन टोटका

किसी माह की कृष्ण पक्ष की पूर्णिमा में गौरैया पक्षी के दाएं-बाएं दोनों डैनों से एक पंख निकालकर, किसी निर्जन स्थान या नदी के निकट वाले श्मशान में जाकर थोड़ी जगह साफ-सुथरी करके हवन कुण्ड बनाएं तथा उसके सामने पूर्व दिशा में मुख करके बैठ जाएं।

धूप-दीप, गुलाब के सात फूल, माला, इत्र की फुहेरी चारों दिशाओं में लगाकर स्थान को सुगन्धित बनाने के बाद हवन करते हुए 12500 बार निम्न मंत्र से आहुति दें।

जिसका सम्मोहन करना हो, उसका नाम लेकर पंखों पर फूंक मारते रहें,

जब मंत्र पूर्ण हो जाएं तो एक साथ सारी सामग्री हवन में डाल दें। तदोपरान्त दोनों पंखों को लेकर वापस आ जाएं। लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। जिसे सम्मोहित करना हो, उसके सिर पर उन दोनों पंखों को रख दें।

वह जी-जान से सम्मोहित हो जाएगा तथा साधक के इशारे पर नाचने के लिए विवश होगा।

मंत्र इस प्रकार है—

"ॐ नमो वशीकरण शक्तिं भुवनमोहिनी योग मायायै अमुकं सम्मोहितं कुरु कुरु स्वाहा।"

प्रेमिका वशीकरण तंत्र

जो व्यक्ति कबूतर की बीट, सेंधा नमक को शहद में पीसकर मदनाकुश (लिंग) पर लेप करने के बाद स्त्री से मैथुन करता है, वह स्त्री सदा के लिए उसकी दासी बन जाती है। फिर किसी पराए पुरुष की कल्पना नहीं करती। यह तंत्र का सिद्ध योग है।

स्तम्भनकारी प्रयोग

कबूतर के मस्तिष्क की हड्डी को किसी रवि पुष्य योग में कमर में बांधकर सहवास करने से देर तक स्तम्भन शक्ति प्रयोग होती है।

बाल दोष निवारण

चील पक्षी के दाएं डैने का पंख बच्चे के सिरहाने रख दिया जाए तो बच्चे को स्वप्न में डरने तथा चौंकने की बला से मुक्ति मिल जाती है। इसके लिए उल्लू का भी पंख प्रयुक्त हो सकता है।

स्त्री आकर्षण टोटका

यदि आप किसी सुन्दरी को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं तो पुष्य नक्षत्र वाले दिन श्मशान भूमि में जाकर सरसों के तेल का दीपक जलाकर चिता के पास रखें तथा दाहिने हाथ में चिता-भस्म लेकर वापस आ जाएं। इस भस्म में बगुले की बीट, सुहागा व हरताल बराबर मात्रा में मिलाकर जिस स्त्री पर डालें, वह आकर्षित हो जाती है।

बगुला दर्शन टोटका

मंगलवार के दिन मरे हुए बगुले का सिर लाकर उसमें कपास का बीज

डाल दें तथा किसी सुरक्षित स्थान में गाड़ दें। कुछ दिन बीत जाने के बाद जब उस पौधे में फल आएं तो उसकी रूई निकालकर बत्ती बनाकर, अरण्ड के तेल में जलाएं तो चारों तरफ बगुले ही बगुले दिखाई देने लगते हैं।

शत्रुभय निवारण तंत्र

काले घोड़े तथा काले बकरे के अगले दोनों पांव की खाल तथा काले मुर्गे व कौए के चार पंख लेकर सबको रविवार तथा मंगलवार को जलाकर भस्म बना लें। इसे किसी चौड़े मुंह की शीशी में रख दें। आवश्यकता पड़ने पर भस्म को गीला करके तिलक लगाएं तो शत्रुभय नहीं रहता है।

मूत्र पीड़क दत्तात्रेय तंत्र (टोटका)

। ग्सी रविवार को छछून्दर को एक ही बार में मार दें तथा उसकी खाल में शत्रु के मूत्र किए स्थान की मिट्टी लाकर भरें तथा उसे किसी ऊंचे स्थान वृक्षादि पर लटका दें।

जब तक यह मिट्टी खाल में बंधी रहती है, शत्रु का पेशाब रुका रहता है तथा वह कष्ट से तड़पता रहता है। जब इसे खोलकर निकाला जाता है, तभी उसका पेशाब खुल सकता है। यह बिना मंत्र के सिद्ध योग है।

शत्रुमारक प्रयोग

किसी शनिवार को गिरगिट को मारकर, उसकी चर्बी प्राप्त करें। इसे निम्नलिखित मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करके, शत्रु पर डाल दिया जाए तो उसे इन्द्र भी नहीं बचा सकता। यह दत्तात्रेय का सिद्ध तंत्र योग है। मंत्र निम्नवत है–

"ॐ नमो कालरूपाय अमुकस्य भस्म कुरु कुरु स्वाहा।"

बिना खूंटी के खड़ाऊं पर चलने का टोटका

सफेद चिरमिटा को पानी में पीसकर खड़ाऊं पर मलें और जमाकर खड़ाऊं पर पैर रखें। दो किलोमीटर तक चलें, फिर भी आप नहीं गिरेंगे तो लोग देखकर आश्चर्य प्रकट करेंगे।

मरी मछली जल में तैरने का टोटका

मरी हुई मछलियों को मंगाकर उनमें भिलावे का तेल लगा दें तथा पानी में डालें तो मरी हुई मछलियां जल में तैरने लगेंगी।

हुक्मी जल की धार का टोटका

इसे प्रायः वे बाजीगर करते हैं, जो लकड़ी की किश्ती या हुक्के से दिखलाते हैं। इस कौतूहल को देखने वाले प्रायः ताज्जुब-सा मानने लगते हैं और बाजीगरी पर मोहित हो जाते हैं।

पानी पर मृगछाला तैरने का टोटका

लिसोढ़े का पका फल लाकर उसका गूदा मृगछाले पर लपेटें तथा सुखाएं। इस प्रकार आठ बार करें। इसके बाद पानी पर बिछाएं तथा भगवान शंकर का ध्यान करें तो पानी में मृगछाला तैरने लगेगी, डूबेगी नहीं। इस पर आसन बांधकर बैठें तथा ध्यान करें। लोग देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

पेट में अनाज बोलने का टोटका

मंगल या रविवार के दिन चकोर पक्षी (नर) को हांडी में बन्द करके उत्तर की तरफ किसी खेत में गाड़ दें। फिर जो कोई उस खेत के अनाज को ज़बरदस्ती खाएगा, वह अनाज पेट में बोलने लगेगा। यह देखकर सभी लोट-पोट हो जाएंगे।

पृथ्वी का गड़ा धन जानने का टोटका

पृथ्वी को खोदने पर यदि कमल जैसी सुगंध आए तो निश्चय जानें कि यहां धन गड़ा है, तब उसे खोदकर निकाल लें।

मिट्टी खाने में मीठी लगने का टोटका

पहले गुंजा की पत्ती लाकर चबाएं तथा रात के अंधेरे में मिट्टी खाएं तो वह मीठी लगेगी।

शराब को दूध बनाने का टोटका

आम के बौर को सुखाकर पीस लें। इसमें थोड़ी-सी शराब डाल दें तो वह दूध की तरह सफेद दिखाई देने लगेगी।

भूत उतारने का टोटका

घुग्घू का मांस मंगाकर सुखाकर रखें तथा उसकी धूनी प्रेतबाधित व्यक्ति को दें तो भूत-प्रेत भाग जाएंगे।

मनुष्य को बन्दर दिखाने का टोटका

सफेद चिरचिटा और मिट्टी मरे हुए बन्दर के मुख में भरकर गाड़ दें तथा जल से सींचा करें। जब फल लगें तो रविवार के दिन तोड़ लाएं। जब तमाशा दिखाना चाहें तो उसकी माला बनाकर मनुष्य के गले में डाल दें तो मनुष्य बन्दर की तरह दिखाई देने लगेगा।

तमाशा करने की तरकीब

पहले जरी का काम किया हुआ रेशमी कपड़ा लेकर उसकी पीठ पर गोंद लगाकर सुखा लें। फिर उसकी छोटी-छोटी तितली बनाकर छाती पर नीचे की ओर से लम्बा बारीक काला धागा लेकर चिपका लें। दोनों तितलियों को बाएं हाथ पर बिठाकर दाएं हाथ से कागज का मोड़ा हुआ पंख खोलें। तितली अपने आप उड़ेंगी, बस पंखों से हवा करें। देखने वालों से कहें कि तितली अपने आप उड़ेंगी, उन्हें पंखों से हवा नहीं करनी पड़ेगी। कहकर दोनों तितलियों को उड़ाएं। जिधर जाएंगे, उधर ही चलना पड़ेगा। आपको ऐसे घूमना पड़ेगा कि पंखे की हवा आपके घूमने से उन तितलियों को लगे। इस प्रकार से आप खेल दिखाकर लोगों को अचम्भे में डाल देंगे।

चूहे भगाने का मंत्र व टोटका

ओं गौरा के पुत्र यदि गणेश तिनको वाहन सौ एक दन्त दुहाई का ठउतिर चौड़ा पंत रतोरि फल मारि काटो महाव के जटा फाटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि : इस मंत्र को 108 बार जपकर पानी अभिमंत्रित करके घर में चारों तरफ छींटा मारें। चूहे वहां से फौरन भाग जाएंगे।

दीपक में जवाहरात देखने का टोटका

काले सांप की चर्बी को दीपक में जलाएं तो जवाहरात दिखाई देंगे।

कोल्हू रोकने की विधि व टोटका

साबुन का इंक लगाकर कोल्हू के अन्दर डालें तो चलता कोल्हू रुक जाएगा।

पानी से आग पैदा करने का टोटका

गन्धक तथा नौसादर दोनों की पोटली बनाएं, फिर जब पानी में डालकर मलेंगे तो अग्नि पैदा हो जाएगी।

पानी पर चलने का टोटका

पुष्य नक्षत्र में रविवार के दिन आडू की लकड़ी काटकर लाएं। उसकी खड़ाऊं बनाएं। इसे पहनकर आदमी जल पर चल सकता है।

चांदनी में न जलने का टोटका

चिनिया कपूर तथा हल्दी को पान के रस में पीसकर गोलियां बनाएं और चांदनी पर गोला रखें तथा चांदनी में आग दिखाएं तो चांदनी कभी नहीं जलेगी।

बिच्छू पैदा करने का टोटका

एक नए मिट्टी के पात्र में भैंस का गोबर रखें तथा ऊपर से गधे का मूत्र डालें तथा थोड़ा-सा बुरादा भी डालें। इन सबको बर्तन में भरकर जहां कूड़ा हो, वहां गाड़ दें तो आठ दिन में बिच्छू पैदा हो जाएंगे।

चूल्हा बांधने का टोटका

अंजीर की लकड़ी और मेंढक की चर्बी मिलाकर चूल्हे में गाड़ दें, तो जब तक वह लकड़ी न निकलेगी, चूल्हा नहीं जलेगा।

छलनी में पानी न छनने का टोटका

छलनी में घीग्वार के पत्ते का रस मलें और ढककर छांव में सुखाएं। फिर उसमें जल भरें तो जल उसमें नहीं छनेगा।

शीशा चबाने का टोटका

मशालची जब मशाल जलाए तो शीशे को मशाल में रख दें। जब शीशा लाल अग्नि के समान हो जाए तो उसे अदरख के रस में रखें। फिर जो उसे लेकर चबाएंगे तो जरा भी घाव नहीं करेगा।

जल में पत्थर तैरने का टोटका

सियार की विष्ठा और झड़बेर की गुठली लाकर सबको पीसकर पत्थर पर खूब लेप करें तो जल में डालने पर पत्थर अपने आप तैरने लगेगा।

बिना अग्नि के ज्वार भुनने का टोटका

दूध में ज्वार को भिगोकर छाया में सुखाएं। फिर कुछ देर तक धूप या मिट्टी में रख दें और फिर कपड़े में डालें तो ज्वार के दाने अपने आप भुन जाएंगे।

मालिन की डलिया उछलने का टोटका

भादों व क्वार मास में मंगल या रविवार को एक मेंढक लाएं और उसके मुंह में मिट्टी भरकर जमीन में गाड़ दें। जब उसके ऊपर वर्षा पड़ने लगे तो सात दाने उड़द के उसके मुंह में डाल दें। जब उसके ऊपर वृक्ष उग आएं तथा फल आ जाएं, तब उस फल को निकालें। फिर इसके सात सात दाने किसी मालिन की डलिया में डालें तो उसकी डलिया उछलने लगेगी।

घर में भूत दिखाने का टोटका

घोड़े की ताजी विष्ठा को रूई की बत्ती में लपेटकर तिल के तेल में जलाएं तो जहां तक प्रकाश जाएगा, वहां तक भूत ही भूत दिखाई देंगे।

हथेली पर सरसों जमाने का टोटका

दूधी के रस में सरसों को भिगोकर चार पहर छाया में सुखाएं। फिर जब तमाशा दिखाना हो तो सरसों को हाथ पर रखकर पानी के छींटें मारे तो सरसों जल्दी ही जम जाएगी।

हवा से आग पैदा करने का टोटका

ऊंटनी की लीद को अग्नि में जलाकर शहद में डुबोकर रख लें। लीद को हवा में तोड़कर रख दें तो आग अपने आप पैदा हो जाएगी।

नींबू उछालने का टोटका

नींबू से उसका रस निकालकर उसमें नौसादर तथा पारा बराबर मात्रा में भर दें। सुराख को मोम से बंद करके चैत-बैसाख की धूप में रख दें तो नींबू उछलने लगेगा।

आग से मुंह न जले

पहले थोड़ा-सा नौसादर और अकरकरा लेकर मुंह में चबाएं और उसका

पानी मुंह में रख लें, फिर उसे कुल्ली कर लें। इसके पश्चात् आग का छोटा-सा अंगारा मुंह में रख लें तो मुंह नहीं जलेगा।

आग से कपड़ा न जले

लगभग आधा गज कपड़ा लीजिए और उसे घीक्वार या कवार अन्दल के अर्क में भिगोकर सुखा लें। यही अमल सात बार करें।

अब यदि इस कपड़े को आग में डाला जाएगा तो कदापि न जलेगा। देखने वाले चकित होकर रह जाएंगे।

आग से हाथ न जले

24 ग्राम नौसादर और 20 ग्राम काफूर लेकर दोनों को बारीक पीस लें। दोनों को एक जगह मिलाकर लेप-सा बना लें। अब इस लेप को आप अपने हाथों पर मल लें। जब सूख जाए तो इन हाथों से आग या दहकता हुआ कोयला उठा सकते हैं। इन्हीं हाथों पर आप अंगारा भी रख सकते हैं। आपका हाथ नहीं जलेगा।

पानी का दूध बन जाए

अरंड के बीजों को पानी में बारीक पीसकर उसके अर्क का एक बरतन पर लेप कर दो और इस बरतन को छाया में सुखा लो। अब इस बर्तन में पानी भरकर जोर से हिलाओ, बर्तन का पानी तुरंत दूध में बदल जाएगा।

कच्चे घड़े में पानी भरना

एक कच्चा घड़ा लेकर उस पर घीक्वार के पौधे का लेप करके उसे सुखा लें और यही अमल सात बार करें। इसे छाया में सुखाना चाहिए। लेप अंदर और बाहर दोनों तरफ किया जाना चाहिए। जब इस घड़े में पानी भरा जाएगा तो न तो घड़ा पानी के कारण टूटेगा और न ही कच्ची मिट्टी पानी में घुलेगी।

दिन में तारे नजर आएं

सफेद सुरमा महीन पीसकर इसमें अगस्त के फूलों का अर्क डालकर सात दिन तक खरल करके इसे तैयार कर लें। इस सुरमे को जो भी आंख में लगाएगा, उसे दिन में तारे नजर आएंगे।

दो घंटे में आम पैदा करना

आम की गुठली को लेकर थोहर के दूध में 21 बार भिगोकर छाया में सुखा लें। बस़ इस गुठली को जब आपका मन करे, खेत की मिट्टी में गाड़ दें और इस पर मीठे पानी का छींटा देते रहें, लेकिन पानी देने के बाद इसके ऊपर कपड़ा अवश्य ढक दें। दो घंटे में ही आम का पेड़ तैयार हो जाएगा और उस पर फल भी आ जाएंगे।

पानी खींचने वाला धुआं

एक कुंडे के बीच एक छोटी-सी डीवट रखकर चिराग जलाओ और उस चिराग के ऊपर एक मटकी उल्टी करके रखो और कुंडे में पानी भर दो तो मटकी सारा पानी पी जाएगी और उठाई न जाएगी। जब चिराग बुझ जाएगा, तब पानी फिर से कुंडे में आ जाएगा।

चिरागों की लड़ाई

एक चिराग में भेड़ की चरबी और दूसरे चिराग में बकरी की चरबी रखकर साबुन की बत्ती बनाकर दोनों चिराग जलाएं, दोनों चिरागों को इस प्रकार रखें कि उनका मुंह आमने-सामने रहे। उनके बीच लगभग एक गज की दूरी होनी चाहिए। इन दोनों चिरागों के शोले आपस में बड़ी जोर से लड़ेंगे और देखने वालों को आश्चर्य होगा।

तेल की कड़ाही गर्म न हो

यदि तेल की कड़ाही में थोड़ा-सा बैल का पेशाब डाल दें तो कड़ाही गर्म न होगी, चाहे कितना ही ईंधन क्यों न जलाया जाए!

अंधेरे में देखना

आप ऐसी जगह पर जाएं, जहां दरिया बहता हो। दरिया किनारे जाकर ऐसा मेंढक जो मेंढकी पर चढ़ा हुआ हो, उसे लाकर छाया में सुखाकर जला दें। उसकी राख यदि आंख में लगाएंगे तो अंधेरे में भी नजर आएगा।

गर्म लोहा हाथ में उठाना

जल भंगर और मुलहठी के पत्तों का अर्क लिया जाए। इस अर्क को थोड़ा काढ़ा कर लें, फिर अपने हाथों पर अच्छी तरह मल लें, हाथों को छाया में

सुखा लें। इसके बाद आप गर्म लोहा आसानी से उठा सकते हैं। आपका हाथ नहीं जलेगा। देखने वाले इसे जादू ही समझेंगे। यह शोबदा रात में दिखाएं तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

चूल्हे को बांधना

शनिवार या रविवार की अमावस को वनबसी लाएं और उसे जलाकर गधे के पेशाब में बुझाकर कोयले बना लें। फिर इन कोयलों को जिस भट्ठी या चूल्हे में डालोगे, वह बंध जाएगा। अर्थात् इस पर कोई चीज नहीं पक सकेगी, बल्कि आग ही न जलेगी।

लगी हुई आग को बुझाना

यदि कहीं आग लग जाए तो लोटे में पानी भरकर आग की ओर रुख करके खड़े हो जाएं और आग को संबोधित करके कहें कि ऐ अग्नि देवता! तुम ठंडे हो जाओ। ये शब्द बार बार कहते जाएं और उलटा सांस खींचें और लोटे का पानी पीते जाएं, बस आग बुझ जाएगी।

आग से शरीर न जले

अंडे के छिलके में मैन. पारा बराबर जवन लेकर इसे सिरके में मिला लें। इसके बाद इसके लेप को अपने शरीर पर मलें। बस, इस लेप के कारण शरीर पर आग का कोई असर नहीं होगा। जलती हुई आग में आराम से कूद जाइए।

होंठों को सफेद करना

पान में यदि किसी को गन्थक रखकर खिला दी जाए तो होंठ सफेद हो जाएंगे और यदि कांजी के पानी से कुल्ला करें तो होंठ फिर से ठीक हो जाएंगे।

हाथ न जले

अफीम, फिटकरी, नमक, कतीरा और अंडे के छिलके बराबर वजन के साथ लेकर सिरके में मिला लें। इस लेप को अपने हाथों पर कर लें और अब इन हाथों से आग उठाओ। आग से हाथ बिलकुल नहीं जलेगा।

आग से फर्श न जले

काफूर और हल्दी दोनों को पीसकर इसकी गोंद बना लें और इसे छाया

में रखकर सुखा लें। अब इसे आग लगा दें। इस आग को फर्श या दरी पर डाल दें। दरी या फर्श नहीं जलेगा।

आदमी कुत्ते जैसा नजर आए

आषाढ़ के महीने में शनिवार के दिन काले कुत्ते का सिर लाकर उसके मुंह में सन के बीज बोएं और उसमें पानी डालते रहें, यहां तक कि पौधा उग जाए, फिर वह पूरा पेड़ बन जाए और उस पेड़ पर फल आ जाएं।

जब फल पक जाएं तो उस फल को इतवार के दिन तोड़ें। उसके बीजों को रस्सी में पिरोकर उनका तावीज बना लें तो यह गंडा जिस आदमी की गर्दन में डाला जाएगा, दूसरों को वह कुत्ता नजर आएगा, मगर जब गर्दन में से गंडा निकाल लिया जाएगा तो वह आदमी ही नजर आने लगेगा।

आदमी जैसे बंदर नजर आए

मुर्दा बंदर का सिर लाकर उसके मुंह में भादों के महीने में भरणी नक्षत्र में सफेद नुरमटी काली मिट्टी के साथ बोएं। इसमें जब पेड़ उग जाए और उस पेड़ पर फल लगने लगें, तब उन्हें रविवार के दिन तोड़ें और सावधानी के साथ उन्हें रख लें या उनका गंडा बना लें। यह गंडा जिस आदमी के गले में डाला जाएगा, वह बंदर नजर जाएगा। गंडा उतार लेने के बाद वह आदमी ही नजर आएगा।

आदमी भैंसा नजर आए

मुर्दा भैंसे का गमला बनाकर उसमें भंग के बीज मिट्टी भरकर शनिवार के दिन बो दें और पानी से सींचते रहें। जब उस गमले में पेड़ आ जाए और उस पेड़ पर फल लगने लगें तो किसी भी रविवार के दिन सुबह ही उसके फल तोड़ लें। इस फल के बीजों को जो भी आदमी अपने मुंह में रखकर लोगों के सामने आएगा, वह उन्हें भैंसा दिखाई देगा और बीज को मुंह से निकाल देने के बाद फिर से आदमी नजर आएगा।

आदमी गीदड़ जैसा नजर आए

एक मुर्दा गीदड़ लाकर उसके मुंह में भंगरे के बींज मिट्टी में डालकर बो दें, फिर इसे जमीन में गाड़ दें और उसे पानी देते रहें। यहां तक कि पेड़ उग जाए और फल आने लगें। इसके पहले फल को सावधानी से रख लें, क्योंकि यदि इसे मुंह में रखा जाएगा तो रखने वाला दूसरों को गीदड़ नजर आएगा।

हवा में से आग उत्पन्न करना

ऊंट की मींगनी आग में जलाकर शहद में बुझा लें और एक शीशी में सुरक्षित रख लें। अब जब ये मींगनी बाहर निकाली जाएगी और उन्हें तोड़ा जाएगा तो हवा लगते ही इनमें अपने आप ही आग लग जाएगी। माचिस के बिना ही आग पैदा करने की यह बड़ी अच्छी तरकीब है।

आग ही न जले

बेर के पेड़ की जड़ और घोड़े के खुर बराबर वजन लेकर, पीसकर चूल्हे या भट्ठी में डाल दें। इसके डालते ही आग नहीं जलेगी, केवल धुआं ही उठता रहेगा।

आदमी घोड़ा नजर आए

रविवार के दिन किसी मुर्दा घोड़े का सिर तलाश करके लाएं। उसके मुंह में सन के बीज और खेत की मिट्टी भर दें। उसे ले जाकर ऐसी जगह गाड़ दें, जहां उस पर किसी इंसान की छाया न पड़े। अपनी भी छाया न पड़े। इसको रोजाना पानी देते रहें, यहां तक कि पेड़ उग आए और जब वह काफी बड़ा हो जाए, तब उसका छिलका उतारकर उसकी रस्सी बना लें। यह रस्सी जिस आदमी के गले में डाली जाएगी, वह घोड़ा नजर आएगा।

आदमी बिल्ली जैसा दिखाई दे

काले रंग की बिल्ली को मारकर उसकी गर्दन अलग कर लें। फिर उसके मुंह में अरंडी के बीज और मिट्टी डालकर पेड़ लगा दें और उसे जंगल में जाकर दफन कर दें। फिर उसे पानी देते रहें। जब उस स्थान पर पेड़ उग आए और उस पर फल लगें तो उस फल को मुंह में रखें, अब जो भी तुम्हें देखेगा, बिल्ली ही समझेगा, क्योंकि इस फल को मुंह में रखते ही बिल्ली जैसे बन जाओगे और जब वह फल मुंह से निकाल लोगे, तुम नजर आने लगोगे।

जुए में जीतना

रविवार को जब हस्त नक्षत्र पड़े, उससे पूर्व शनिवार की शाम के समय पेड़ों को पानी देकर आ जाएं अर्थात् चार पेड़ों की दावत करें और रविवार को सुबह सवेरे जाकर उस पेड़ की जड़ उखाड़ दें। वापस आकर अपने मकान में साफ जगह पर बैठें, फिर इस जड़ को गोकुल की धूनी देकर तावीज की

तरह अपने बाजू पर बांधें। इस तावीज के साथ जब जुआ खेलोगे तो निश्चय ही तुम्हारी जीत होगी।

घड़े का पानी जम जाए

लसौढ़े की गुठली निकालकर सुरमे की तरह अच्छी तरह बारीक पीस लें, फिर इस चूर्ण को पानी से भरे घड़े में डाल दें। इसके डालते ही पानी बर्फ की तरह जम जाएगा।

बर्फ का पिघलना

यदि घड़े के बर्फ की तरह जमे हुए पानी में सेंधा नमक पीसकर डाल दें तो जमा हुआ पानी फिर वैसा ही पानी हो जाएगा अर्थात् बर्फ पिघल जाएगी।

लिखा हुआ चमके

पारा और रांगा पीसकर गोंद के पानी में मिला लें। इस स्याही से सुर्ख या जर्द कागज पर लिखें। जब सूख जाएगा तो चांदी जैसा लिखा हुआ चमकेगा। फ़िटकरी के पानी से कागज पर लिखें। जब सूख जाएगा, तो वह पढ़ा न जाएगा, लेकिन जैसे ही कागज पानी में डाला जाएगा, वह चमक उठेगा।

बिना अग्नि चिराग को रोशन करना

गंधक, हरताल, काफूर का चूर्ण बनाकर रख लें और तुरंत बुझे हुए चिराग पर एक चुटकी डाल दें। चिराग बिना जलाए ही जल उठेगा। न माचिस की जरूरत न आग की।

औरत की छातियां गायब हो जाएं

शनिवार के दिन एक चमगादड़ पकड़कर लाएं और उसे सात रविवार तक गुग्गल की धूनी दें। फिर दोपहर को नंगा होकर रूई और थोड़ी लाजवंती लपेटें और तांबे के चिराग में मालकांगनी का तेल डालें, फिर इस तेल को हाथों पर मलकर जिस औरत को दिखाएं और मुट्ठी बंद कर लें, उसकी छातियां गायब हो जाएंगी। जब मुट्ठी खोल दें तो छातियां वापस आ जाएंगी।

सारी महफिल नाच उठे

जब मंगलवार या रविवार को चंद्रमा निकले तो पहले नंगे होकर एक पुराना गिरगिट एक चोट में मारें। जब तक वह तड़पता रहे, मारने वाला बराबर नाचता

रहे। जब वह मर जाए तो उसकी दुम काट ली जाए और उसे सुखाकर बत्ती बना लें। फिर इस बत्ती को मीठे तेल के चिरागों में जलाएं, जिस महफिल में यह चिराग जलता जाएगा, उस महफिल के सारे ही लोग नाचने लगेंगे।

अग्नि पर चलना

जंगली मेंढक की चरबी तीन बार तलवे में अंगूठे से एड़ी तक मलकर आग पर चलें तो पैर नहीं जलेंगे।

चिराग के बिना रोशनी उत्पन्न होना

साफ सिरके में हरताल मिलाकर उसे एक साफ शीशी में भरकर रख लें। यह रोशनी करेगा। या फास्फोरस को किसी शीशी में भरकर रखें तो शीशी के अंदर से रोशनी निकलेगी। जुगनू शीशी में बंद कर लें तो रोशनी होगी।

रात को पढ़ा जाए

कबूतर के खून से लिखें तो दिन में पढ़ा न जाएगा, बल्कि रात में पढ़ा जाएगा। शीर आक से कागज पर लिखें। जब सूख जाए तो कुछ न पढ़ा जाएगा और जब उपलों की राख डालेंगे तो अक्षर चमकने लगेंगे।

बर्तनों की लड़ाई

रविवार या मंगलवार के दिन कुछ नक्षत्र में एक काले कुत्ते के दो दांत लाइए। इसी प्रकार से दो दांत काली बिल्ली के लाएं। अब इन चारों दांतों के ऊपर सिंदूर लगाकर इन्हें एक प्याले में रख दें और ऊपर से ढक दें। अब दो दांत मेंढक के लें और दो दांत बकरी के लें। इन पर भी सिंदूर चढ़ाकर बकरी के दांत प्याले में बंद करके मेंढक के एक तीसरे प्याले में बंद कर दें और इन प्यालों को आधे गज की दूरी पर रख दें। उनका मुंह आमने-सामने रहना चाहिए। अब इन दोनों के बीच तीन कुत्ते और बिल्ली वाला प्याला रख दें तो वह प्याले आपस में लड़ेंगे और तीसरा प्याला उन्हें छुड़ाएगा। उसे भी चमड़े की धूनी देकर आपस में लड़ाया जा सकता है।

अजीब शिकार

एक बंदूक लें। उसमें गोली की जगह पारा भरकर कपड़े की आड़ में शिकार पर बंदूक का फायर करें तो शिकार मर जाएगा मगर न तो वह घायल होगा और न कपड़े में सुराख का निशान होगा।

अंडे को हवा में उड़ाना

एक अंडे में सुई से बारीक सुराख कर लें, उस सुराख से अंडे के अंदर की जर्दी व सफेदी निकाल लें। इसके बाद उसमें ओस भर दें, फिर उसका सुराख मोम से बंद कर दें। जब अंडे को धूप में रखा जाएगा तो यह हवा में उड़ जाएगा।

बोतल में अंडा उतारना

एक मुर्गी का अंडा लेकर उसे तेज सिरके में डालें। चार-पांच दिन में यह खुद ही नर्म हो जाएगा। अब इसे सावधानी से बोतल में उतार दो। इसके बाद बोतल में पानी भर दो। अंडा फूलकर फूल की तरह हो जाएगा और उसे जो भी बोतल के अंदर देखेगा, बड़ा आश्चर्य करेगा।

कबूतरों के पंखों कर नक्श

नौसादर और बलादर को बराबर बराबर वजन में लें और सिरके में मिलाकर अच्छी तरह पीसकर उसमें सफेद कबूतर के अंडे पर मनचाहे फूल बूटे बना दें। इस अंडे को कबूतरी के नीचे रख दें। जब इस अंडे से बच्चा निकलेगा तो उसके पैरों पर रंगीन नक्श निगार होंगे।

मुर्गे परस्पर लड़ने लगें

एक मुर्गे की आंख में मकनातीस और दूसरे की आंख में लोहा घिसकर लगा दें। ये तीनों मुर्गे आपस में बड़े जोरों से लड़ेंगे और लड़ने से पीछे नहीं हटेंगे।

लिखा हुआ मिट जाना

सुहागा, नौसादर और संखिया बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को पानी में मिलाकर लिखी हुई इबारत पर लगा दें और धूप में सूखने के लिए रख दें। धूप में रखते ही लिखा हुआ अपने आप मिट जाएगा और कागज पूरी तरह साफ हो जाएगा।

कांच को मुंह से चबाना

टूटी हुई बोतल का टुकड़ा लेकर आग में डालकर खूब गर्म करें। जब वह सुर्ख हो जाए, तब उसे निकालकर अदरक के अर्क में बुझा लें। लगातार

सात बार यही अमल करें। आप जब इसे चबाएंगे तो मुंह में घाव नहीं होंगे और न ही वह कष्ट देगा, लेकिन यह बात याद रखें कि उसे मुंह ही मुंह में रखें। चबाकर निगलने की कोशिश न करें, क्योंकि यदि कांच को निगल लिया जाए तो उससे कलेजा कट जाएगा और मरने की नौबत आ जाएगी।

कटे हुए सिर से आवाज आना

किसी भी जानवर के कटे हुए सिर में मेंढक रख लो और फिर लोबान की धूनी दे दो, तो उसमें से आवाज आनी शुरू हो जाएगी।

बिना खूंटी की खड़ाऊं से चलना

घुंघची (सफेद) में पानी डालकर पीसो और उसका लेप खड़ाऊं पर करके उसे छाया में सुखा लो, फिर पांव को धो लो और इन खड़ाऊं को पहन लो। इन्हें पहनकर चलने में कोई परेशानी नहीं होगी।

नींबू नाचने लगे

नींबू को अंदर से खाली करके उसमें पारा व नौसादर बराबर बराबर भर दो और इसका सुराख मोम से बंद कर दो, फिर इसे तेज धूप में या आग पर रख दो, आग में या धूप में रखते ही वह उछलने लगेगा।

घर के सभी आदमी सोते ही रहें

जो आदमी मंगल के दिन मर जाए, उस आदमी की कब्र की मिट्टी लाई जाए। जिस घर के आदमी सोते हों, उस घर में जाकर इस मिट्टी को डाल दें तो वे आदमी सोतें ही रहेंगे। चाहे कितना भी शोर हंगामा हो, वे उठ नहीं सकेंगे। यह मिट्टी जब वहां से हटा दी जाएगी तो आदमी उठ जाएंगे।

स्वस्थ शरीर के लिए

एक रुपए का सिक्का लें। रात को उसे सिरहाने रखकर सो जाएं। प्रातः इसे दूर ही से श्मशान की सीमा में फेंक आएं। शरीर स्वस्थ रहेगा।

ससुराल में सुखी रहने के लिए

7 साबुत हल्दी की गांठें, पीतल का एक टुकड़ा, थोड़ा-सा गुड़ अगर कन्या अपने हाथ से ससुराल की तरफ फेंक दे तो वह ससुराल में सुखी रहती है।

सुखी वैवाहिक जीवन के लिए

कन्या का जब विवाह हो चुका हो और वह विदा हो रही हो, तो तब तांबे के लोटे में गंगाजल, थोड़ी सी हल्दी, एक पीला सिक्का डालकर लड़की के सिर के ऊपर से 21 बार वारकर उसके आगे फेंक दें। उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।

कष्ट दूर करने के लिए

जाती हुई अर्थी के नीचे एक बार निकलें और कहें—हमारा ताप, दुख, रोग, शोक तथा मुसीबत साथ ले जाना। ऐसा कहकर अर्थी के विपरीत दिशा में दूर तक चले जाएं।

रोग दूर करने के लिए

अगर बच्चा रोगी हो तो उसका नाम लेकर जाती अर्थी से निकलकर कहें कि हमारे बच्चे के रोग को साथ ले जा, ऐसा कहने से बच्चा ठीक हो जाएगा। अगर बच्चा रोता हो, दूध न पीता हो, रोग ठीक नहीं होता तो रात को दूध मंदिर में रखकर बच्चे को पिलाएं। बच्चा शीघ्र स्वस्थ हो जाएगा।

बाधाएं दूर करने के लिए

गणेश चतुर्थी को अगर गणेशजी की मूर्ति को अच्छी प्रकार सजाकर जल प्रवाह करें तो सब कष्ट तथा बाधाएं दूर हो जाती हैं और घर में सुख-शांति रहती है।

दूर्भाग्य दूर करने के लिए

श्रावण के महीने में जब पहली बरसात हो, तब परनाले से बहते पानी से स्नान करने से दुर्भाग्य दूर होता है।

सुख के लिए

परिवार में सुख-शांति तथा समृद्धि के लिए प्रतिदिन प्रथम रोटी के चार बराबर भाग करें। एक गाय को, दूसरा काले कुत्ते को, तीसरा कौए को दें तथा चौथा भाग चौराहे पर रखें। आप परिवर्तन स्पष्ट महसूस करेंगे।



कुछ विशिष्ट टोटके

— पेड़ पर से कौए के घोंसले को लाकर जला लें। इस राख को जिसके सिर पर डाला जाएगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

— थूहर के कांटों का चूर्ण, वानर की टट्टी और कलिहारी की जड़ का चूर्ण बनाकर जिसके सिर पर डाला जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

— गोरोचन और ताड़ के बीजों को किसी भी वशीकरण यंत्र से अभिमंत्रित करके जिसके भी सिर पर डाला जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

— महुए का बांदा अगर विशाखा नक्षत्र में प्राप्त कर लिया जाए तो यह शक्ति में वृद्धि करता है।

— अगर कोई व्यक्ति अपनी दाईं भुजा पर कनेर का बांदा अनुराधा नक्षत्र में अभिमंत्रित कर बांध ले तो उसके विरोधी शांत हो जाते हैं। इसी नक्षत्र में रोहित वृक्ष का बांदा मुख में धारण करने से वह ओझल हो जाता है।

— अगर थूहर का बांदा धारण किया जाए तो साधक को वाक्‌सिद्धि की प्राप्ति होती है। अगर इसी नक्षत्र में कपित्थ वृक्ष का बांदा मुंह में रखा जाए तो शस्त्र स्तंभन हो जाता है।

— बिल्व के वृक्ष का बांदा अश्विनी नक्षत्र से पूर्व निमंत्रण के द्वारा लाकर बांह पर बांधा जाए तो विद्या भी सिद्ध हो जाती है।

— कपाल का बांदा भरणी नक्षत्र में धारण करने से साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

— नीलोफर, भौंरे के पंख, पोखरमूल, तगर, श्वेत वोंटली—इनका चूर्ण डालने पर वशीकरण होता है।

— स्त्री अगर पति को वशीभूत करना चाहे तो अपने रज को शुद्ध गोरोचन में मिलाकर मस्तक पर तिलक करें।

– उल्लू का सिर, मैनसिल और हरताल, इन तीनों को आपस में पीसकर एक गुटिका तैयार कर लें। इसे कुछ दिनों तक पास में रखने से रात्रि में भी आंखें देखने में समर्थ हो जाती हैं।

– उल्लू के पांव की हड्डी को शत्रु के घर में गाड़ देने से उसका सर्वनाश हो जाएगा। उल्लू की पीठ के बालों को उखाड़कर अभिषिक्त कर, उन्हें चांदी के यंत्र में रखकर भुजा पर बांध लेने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

– स्वाभाविक रूप से अर्थात् जिसे मारा न जाए, उसका अस्थि खंड एक रक्षात्मक कवच है। इसे बालक के गले में पहनाने से उसे टोने-टोटके की पीड़ा कभी नहीं होती। श्वेत पौधे की जड़ का माथे पर तिलक कर लेने से किसी का भी सम्मोहन हो, समाप्त हो जाता है।

- विष्णुकांता, भंगरा, गोखरू और गोरोचन को पीसकर गोली बना लें। इस गोली को घिसकर तिलक करना भी वशीकरण का प्रयोग है। पुरुष-स्त्री के वशीकरण के लिए लाजवंती, मुलेहठी और कमल-गट्टे को पीसकर अपने वीर्य के साथ मिलाकर तिलक करे। रति के अंत में पुरुष अपने बाएं हाथ में अपना वीर्य लेकर स्त्री के बाएं पगतलुए में लगा दे तो वह स्त्री दूसरे को नहीं चाहती।

– गोरखमुण्डी गोखरू और बिनौला को गाय के मूत्र में मिलाकर सुखाकर भूत-प्रेतग्रस्त रोगी को इसकी धूनी देने से भूत-प्रेतग्रस्त रोगी के भूत भाग जाते हैं।

– मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाने के लिए लाल सुलेमानी हकीक धारण करना उपयुक्त रहता है।

– आंवले की जड़ आश्लेषा नक्षत्र में दाईं भुजा पर धारण करने से व्यक्ति को कोई भय नहीं रहता।

– हीरा अथवा फिरोजा पहनने वाले को विषैले जंतुओं का कोई भय नहीं रहता। आश्लेषा नक्षत्र में धामी की जड़ हाथ में धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।

– अगर बिना कुंडली मिलान के विवाह हो रहा है—वह प्रेम विवाह है या कोई अन्य प्रकार की विवशता है, तब आप निम्न उपाय करें—

– कन्या को फेरों से पहले पीले रंग का डोरा पांच गांठें (पांच सौगंध मानकर) लगाकर हाथ में बांध दें। यह डोरा चूड़े (कंगना) को स्पर्श

करता रहे। विदा के समय गंगाजल में थोड़ी शुद्ध हल्दी डालकर कन्या के सिर से उतारकर उसके आगे फेंक दें और पीला डोरा खोल दें। यह डोरा माता पार्वती के चरणों में रखवा दें। जीवन सुखी रहेगा।

— कृतिका नक्षत्र में लोहे की अंगूठी पहनने से भूत-प्रेत, जादू-टोने का भय नहीं रहता। यह अंगूठी रक्षात्मक होती है। रवि-पुष्य योग में काले धतूरे की जड़ को धारण करने से भय दूर हो जाता है। रवि-पुष्य योग में ही गुरुच की माला बनाकर धारण करने से कभी सर्प-दंश का भय नहीं रहता।

— गोरखमुंडी के हरे पौधे के रस की मालिश करने से सारी पीड़ा मिट जाती है। सर्प द्वारा काटे गए व्यक्ति की नाक में अगर कलिका की जड़ का बारीक चूर्ण किसी नली की सहायता से पहुंचाया जाए तो व्यक्ति ठीक हो जाता है।

— गधे का दांत अगर किसी के सिरहाने रख दिया जाए तो अनिद्रा रोग दूर हो जाता है। संभोगरत गधे की पूंछ के बाल प्राप्त करके, इन्हें अपनी जंघा में बांधने वाला व्यक्ति शीघ्रपतन की व्याधि से मुक्त हो जाता है।

— किसी भी प्रकार का ज्वर हो, श्वेत ओंगा की पत्तियों को पीसकर और गुड़ में मिलाकर खाने से वह दूर हो जाता है।

— रांगे की अंगूठी पहनने से मोटापा कम होता है।

— गोरखमुंडी के पौधे को सुखाकर उसका चूर्ण बनाएं। प्रातःसायं दूध के साथ उसका सेवन करने से बल की प्राप्ति होती है।

— चकोंड़ा के पौधे की जड़ हस्त नक्षत्र में लाकर दाईं भुजा पर धारण की जाए तो साधक अजेय होता है। रवि-पुष्य योग में चमेली की जड़ को तावीज (यंत्र) में रखकर, भुजा पर बांध लिया जाए तो इसको धारण करने वाला शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ हो जाता है।

— देशी पान का पत्ता रविवार को श्मशान भूमि पर पीसकर ले आएं। गर्भवती स्त्री की नाभि पर लगा दें तो प्रसव बिना कष्ट होता है।

— पत्नी, पति से या पति, पत्नी से नाराज हो गया हो तो खुंबी का पुष्य शहद में मिलाकर खिलाने से (एक माशा के बराबर) पुनः मेल-मिलाप हो जाता है।

— रुद्राक्ष के पांच दाने बाल डोरे में पहनने से रक्तचाप ठीक रहता है।

— नागफनी की जंड़ को बालक के गले में बांधने से जिगर व तिल्ली के रोग समाप्त हो जाते हैं।
— राई के फूल, चंदन, प्रियंगु, नागकेसर, मैनसिल, नागर—इन सब पदार्थों को चूर्ण करके अभिमंत्रित करके सिर पर डालने से वशीकरण होता है।
— लाल गुलाब के फूल को पीसकर सिरदर्द या किसी भी प्रकार का दर्द क्यों न हो, माथे पर लगाने से तुरंत आराम मिलता है। जले-कटे घावों पर भी इसका लेप तत्काल पीड़ा का हरण करता है।
— अमावस्या की रात्रि में लटजीरा की जड़ श्मशान में जलाकर उसकी भस्म बना लें और शनिवार की रात्रि में पीड़ित व्यक्ति के मस्तक पर उसका लेप लगा दें। पानी मिलाकर इस प्रकार का लेप बनाया जा सकता है।
— पान का पत्ता रविवार की रात को श्मशान भूमि पर पीसकर ले आयें। गर्भवती स्त्री की नाभि पर लेप लगा दें तो प्रसव बिना कष्ट होता है।
— नमक श्मशान में ले जाकर भूमि में गाड़ दें। एक सप्ताह बाद ले आयें। इस नमक को पानी में मिलाकर कान में डालने से कर्ण के सभी रोगों को ठीक किया जा सकता है। नियमित रूप से चालीस दिन तक प्रयोग से बहरापन कम होता है।
— आंखें बंद कर पलक पर वह नमक पीसकर रख दें। पन्द्रह-बीस मिनट के बाद पलकें धो डालें तो आंखों की अनावश्यक लाली, फूली, भाड़ा, रोहा कट जाता है। नब्बे दिन तक इसका प्रयोग करने से मोतियाबिंद भी ठीक हो जाता है।
— हड्डी के दर्द में, भीतरी चोट में इस नमक की पुलटिस बनाकर बांधने से आराम होता है।
— कुत्ता काटने पर यह नमक पीसकर घाव या कुत्ते के दांत लगे निशानों पर बांधने, रगड़ने से कुत्ते के विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।
— यह नमक पानी में अधिक मात्रा में मिलाकर किसी को भी पिला देने से वमन हो जाती है। मादक द्रव्यों का प्रभाव कम करने का विष आदि बाहर निकालने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।
— चर्म रोगों पर इस नमक को घिसते रहने से वह ठीक हो जाते हैं। सफेद दाग पर प्रतिदिन दस मिनट तक रगड़ते रहने से वह ठीक हो जाते हैं।

- श्मशान घाट के सबसे अलग स्थान पर जहां अन्य पेड़-पौधे न हों, गुलाब के फूल का पौधा लगा दें। इस पौधे के फूल पूर्णमासी की रात को ले आयें। जिसे ये देंगे, वह वशीभूत हो जायेगा। दुश्मन के सामने यह फूल लगाकर जाने पर वह किसी प्रकार का अहित नहीं कर सकता।
- इस गुलाब के फूल को पीसकर सिरदर्द, वह किसी प्रकार का भी क्यों न हो, माथे पर लगाने से तुरन्त आराम मिलता है।
- जले-कटे घावों पर भी इसका लेप तत्काल पीड़ा का हरण करता है। पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा से तुरन्त छुटकारा मिल जाता है।
- अनिद्रा के रोगी के सिरहाने इसको रखने से उसे गहरी नींद आती है। छोटे बच्चों के सिरहाने रखने से वह रात को चौंकना या डरना, अकारण रोना बंद कर देते हैं।
- सूखे रोग से पीड़ित बच्चों के गले में तावीज में एक फूल भरकर बांध देने से सूखा रोग दूर हो जाता है और बालक स्वस्थ हो जाते हैं।
- इस पौधे के फलों से बनाया गया इसका फोहा कान में रखने से मुकदमें, वाद-विवाद में विजय, व्यापार में लाभ और सर्वत्र प्रभाव पड़ता है। असफलता या निराशा का सामना नहीं करना पड़ता है। यात्रा बिना विघ्न के पूरी होती है। तथा प्रत्येक कार्य मनोनुकूल होता है। पर इस फोहे का गिरना, गुम हो जाना सारे गुणों को समाप्त कर देता है। इस कारण इस प्रयोग में अत्यंत सतर्क रहना आवश्यक है। रति-क्रीड़ा के समय इसका प्रयोग पुरुष की क्षमता को कई गुना अधिक बढ़ाता है।
- श्मशान साधक अगर श्मशान के किसी भाग में धान की बालियां रोप दे और उचित समय पर पके धान का संग्रह करके रख ले तो निम्नलिखित रूप से उसका सदुपयोग कर सकते हैं : ज्वर पीड़ित व्यक्ति का ज्वर, इलाज के बावजूद न जा रहा हो तो इस धान के चावल को पकाकर केवल मांड पिला देने से, किसी भी प्रकार के लाइलाज ज्वर से छुटकारा मिल जाता है। केवल एक बार ही ऐसा करने की आवश्यकता होती है।
- ज्वर की मात्रा 103 होते ही पीड़ित व्यक्ति मौत के मुंह में जाने लगता है। उसी समय बर्फ की थैली सिर पर रखकर तापमान कम करने का प्रयास किया जाता है। पानी की पट्टी भी माथे पर रखी जाती है, पर प्रायः तापमान नीचे नहीं उतरता है। अतएव ऐसे श्मशान के पके चावलों की पुलटिस बनाकर माथे पर रख देने से तत्काल तापमान नीचे आ जाता है।

– श्मशान में उत्पन्न इन चावलों का प्रयोग तंत्र-मंत्र में भी किया जाता है। इन चावलों का हल्दी मिला टीका लगाकर बाहर जाने वाले जातक का प्रत्येक कार्य सफल होता है।

– इन चावलों के केवल 3-4 कच्चे दाने पीसकर छोटे शिशु को चटा देने से सांस चलने, पेट फूलने, दांत आने के दर्द और दूध न हज्म होने जैसे शिशु रोगों की तत्काल शांति हो जाती है। वास्तव में श्मशान में उत्पन्न होने के कारण मानव-हड्डियों की खाद का प्रभाव इन चावलों पर आ जाता है। श्मशान जितना प्राचीन होगा, यह चावल उतने ही गुणकारी और तत्काल प्रभावशाली होंगे। सम्भवतः इन गुणों का यही वैज्ञानिक तथ्य है और इसी कारण उनमें इस प्रकार का प्रभाव आ जाता है।

– बच्चों की उलटी व दस्त बेहिसाब लगती हो तो रविवार के बच्चे के सिर पर से गेहूं का आटा सात बार उवारें व एक पानी का लोटा भी सात बार उवारें। घर के बाहर कहीं भी कैसी भी हड्डी पड़ी हो, उसके ऊपर वह आटा डालकर, लोटे के पानी से हड्डी के चारों ओर पानी की धार निकाल दें। अगर इससे भी अंतर न पड़े तो दिन में तीन बार यह क्रिया करें, तुरन्त फायदा होगा।

– अगर आप भोजन पात्र पर कटकेरी का रक्त निकालकर उसमें चूल्हे की राख निकालकर उसे किसी जगह गाड़ दें तो आप ज्यादा भोजन खाने लगेंगे।

– अगर आप लौंग को जलाकर उसका चूरा करके पानी के अंदर डालें और उसे मिलाकर नाक में डालें तो आपकी नकसीर तुरंत बंद हो जाएगी।

– सूर्योदय से पूर्व यदि कोई स्त्री या पुरुष किसी चौराहे पर जाकर छोटा-सा गुड़ का टुकड़ा दांतों से काटकर वहीं फेंक दे, तो वह भयंकर आधी सीसी के दर्द एवं पीड़ा से मुक्त हो जाएगी। इस प्रयोग में दांत से गुड़ काटते समय रोगी का मुख दक्षिणी दिशा की ओर रहना चाहिए।

– बकरी की मेंगनी 50 ग्राम, हल्दी का चूर्ण 15 ग्राम, सेंधा नमक 15 ग्राम मिलाकर चूर्ण कर लें, जिसे तीन-तीन ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में तीन बार प्रयोग में लेने से पीलिया रोग ठीक हो जाता है।

बार बार गर्भपात होने पर

बार बार गर्भपात होना अच्छा शगुन नहीं है। ऐसी स्थिति में तुरंत और सटीक उपचार करना चाहिए। यहां मैं एक दवा और अनुभूत टोटका लिख रहा हूं, प्रयोग कर लाभ उठाएं।

– मुलेहठी, आंवला और सतावर को काटकर इन सबको भली-भांति पीसकर कपड़छन कर लें। इसके बाद इस औषधि को रविवार से आरम्भ करें। इस औषधि का गाय के दूध से सेवन गुणकारी माना गया है। मात्रा लगभग छः ग्राम है।

– मंगलवार के दिन लाल कपड़ा लें, इसमें थोड़ा-सा सेंधा नमक बांध लें। इसके बाद हनुमान मंदिर जाएं और इस पोटली को हनुमानजी के पैरों से स्पर्श कराएं। वापस आकर गर्भिणी के पेट से बांध दें। गर्भपात तुरंत बंद हो जाएगा।

प्रथम बार गर्भपात होने पर

ऐसी स्थिति में केवल शुक्रवार के दिन कुम्हार के घर जाएं और उसके हाथ से मिट्‌टी उतरवाकर ले आएं। इसके बाद इस मिट्‌टी को थोड़ी मात्रा में शहद और बकरी के दूध में मिलाकर गर्भिणी को नियमिल खिलाएं। मेरा स्वयं का अनुभव है कि गर्भपात की आशंका समाप्त हो जाती है। इस क्रिया को करने से पूर्व कुम्हार की स्वीकृति प्राप्त कर लें, अन्यथा फल प्राप्त होने में सन्देह रहता है।

संतान प्राप्ति हेतु

प्रकृति ने मनुष्य की उत्पत्ति की जो जटिल व्यवस्था की है, उसके समक्ष मनुष्य विज्ञान सदा नतमस्तक होता आया है। नर-नारी के रूप में उसने स्पष्ट विभाजन कर दिया है। नर-नारी का मिलन ही संतान या "मनुष्य" की उत्पत्ति करता है। प्राचीनकाल में चाहे जो भी व्यवस्था रही हो, वर्तमान में हमारे सामने विवाह रूपी धार्मिक व्यवस्था है। विवाह कर नर-नारी पहले पति-पत्नी बनते हैं। पति-पत्नी बनकर वह संतान उत्पन्न करते हैं। संतान उत्पत्ति की क्रिया मनुष्य की दैहिक प्यास बुझाने के साथ साथ शिशु का निर्माण भी करती है।

विश्व का ऐसा कोई पति-पत्नी का जोड़ा नहीं है, जो संतान उत्पत्ति की कामना न करे। विवाह के शुरू में भले ही न करे, पर आगे चलकर तो कामना करता ही है। आज की बढ़ती आबादी की समस्या के कारण संतान एक या

दो ही उचित रहती हैं। चलो इसी मात्रा में सही, लेकिन संतान की कामना तो वह अवश्य करता है।

संतान के साथ मनुष्य का अहम भी जुड़ा है। अगर किसी पुरुष को पत्नी के साथ-साथ रहने पर संतान उत्पन्न नहीं होती तो लोग उसे "हिजड़ा," "नपुंसक" न जाने क्या क्या कहने लगते हैं। इसे बड़ा ही अपमानजनक माना गया है। बांझ की छाया को भी लोग अपशगुन मानते हैं।

इस प्रकार संतान का जन्म होना विवाहित स्त्री-पुरुषों के मध्य प्यार का प्रतीक माना जाता है। आमतौर पर संतान न होने पर पुरुष का दोष कोई नहीं देखता, इसके लिए स्त्री को ही दोषी ठहराया जाता है और पुरुष के परिवार के लोग उसे ही बार-बार कोसते हैं।

संतान दो प्रकार की होती हैं—लड़का या लड़की। पुरुष प्रधान समाज की व्यवस्था के कारण लड़के का होना शुभ और लड़की का होना अशुभ माना गया है। यह बात अलग है कि धीरे-धीरे यह भेद खत्म होता जा रहा है। लड़के-लड़की के बीच का अंतर धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

विज्ञान के अनुसार प्रकृति ने संतान की बड़ी जटिल प्रक्रिया बना रखी है। अन्य जीव-जन्तुओं या पशुओं के समान मनुष्य में केवल एक बार के मिलन में गर्भाधान की कोई सुनिश्चित व्यवस्था नहीं है।

मनुष्य को कई बार मिलन करना पड़ता है। कभी-कभी तो सब ठीक-ठाक रहने पर भी डिम्ब और शुक्र की परस्पर आंख-मिचौली के कारण गर्भ नहीं ठहरता, इसमें महीनों लग जाते हैं। किसी-किसी का साथ ठहर जाता है। यह सब कुदरत का खेल है। गर्भाधान हो जाने पर कभी-कभी गर्भपात भी हो जाता है। मनुष्य के साथ यह एक बेहद आश्चर्य की बात है कि वह कई-कई बार मिलता है और अनेक बार गर्भपात का सामना करता है। क्या अन्य किसी जीव-जन्तु, पशु-पक्षी के विषय में आपने सुना है कि उसका गर्भपात हुआ है या एक बार मिलने के पश्चात् गर्भ नहीं ठहरा है?

मनुष्य के साथ गर्भाधान हो जाने पर यह भी पता लग पाना बहुत कठिन है कि आने वाली संतान लड़का है या लड़की? वैसे अब इस संबंध में विज्ञान ने कुछ खोज की है कि गर्भाधान के लगभग चार माह बाद बताया जा सकता है कि होने वाली संतान लड़का है या लड़की। इन सब जटिलताओं के कारण संतान मनुष्य के लिए एक समस्या बन गई है। मनुष्य अपनी इच्छानुसार संतान पैदा नहीं कर सकता, यह सबसे बड़ी विडम्बना है।

इसके बावजूद पौराणिक गाथाओं में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जबकि

मुनियों द्वारा व्यक्ति विशेष को इच्छित संतान दी गई। फल वगैरह दिए और व्यक्ति की पत्नी को गर्भवती होने पर पुत्र रत्न मिला। आखिर यह रहस्य क्या था? क्या मनुष्य इच्छित संतान प्राप्त कर सकता है?

विज्ञान का विश्लेषण है कि समगुण होने पर कन्या और विषम होने पर पुत्र की प्राप्ति होती है, और अगर किसी व्यवस्था या क्रिया के द्वारा इस प्रकार का कार्य संपन्न किया जा सके तो निश्चय ही फल इच्छानुसार पाया जा सकता है। शायद प्राचीनकाल के मुनियों के फल आदि में यही गुण होते हों।

पौराणिक ग्रंथों में वर्णित "पुत्रेष्ठि यज्ञ" पुत्र प्राप्ति के लिए किए जाते थे और पुत्र प्राप्त होता था। अवश्य ही इसके पीछे भी विज्ञान सम्मत सिद्धांत रहा होगा।

अब इस प्रकार संतान पुत्र या पुत्री होने की बात सम्भव है और विज्ञान भी इनका समर्थन करता है तो इन सबको झुठलाया कैसे जा सकता है? अतएव आप मनचाही संतान पैदा कर सकते हैं।

संतान के साथ-साथ उसकी रक्षा, सुख, स्वास्थ्य और आयु का प्रश्न भी हमेशा बना रहता है। इस कारण इसकी भी पूर्ण व्यवस्था है। इन सरल विधियों या टोटकों के पीछे यही रहस्य या भावना निहित है। इन सबका अपना-अपना सिद्धांत था। जगत जननी सीता की उत्पत्ति की कथा में उनका जन्म घड़े से होना बतलाया गया है। यह घटना बड़ी अटपटी-सी लगती है। आज विज्ञान ने टेस्ट ट्यूब में शिशुओं को उत्पन्न कर इस बात को सम्भव बना दिया है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इन पर पूर्ण विश्वास और सावधानी के साथ अमल किया जाए। संतान के इच्छुक यही आस्था रखकर कार्य करें।

डॉक्टरी चिकित्सा जो कुछ भी करने में सक्षम है, वही कार्य टोटके भी करते हैं। अंतर केवल अपनी समझ का है। जो चिरायता आयुर्वेद में ज्वर लाभ के लिए काम में लाया जाता है, उसी से कुनैन बनी और अब उसके और भी परिष्कृत रूप सामने आ गए हैं। तंत्र प्रयोग एक प्रकार से वनस्पति और जड़ी-बूटियों का ही सटीक प्रयोग है। अब एक डॉक्टरी चिकित्सा और डॉक्टरी दवा के ही समान यह अपना भी प्रभाव दिखाते हैं। इस विषय पर मेरी अन्य पुस्तकें भी पढ़ें।

सभी दम्पतियों की इच्छा होती है कि वे एक मनचाही संतान प्राप्त करें, एक स्वस्थ संतान प्राप्त करें। इसके विषय में विज्ञान समर्थन करता है, गर्भस्थ शिशु पर माता कें विचारों का जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। अतएव मनोवैज्ञानिकों और डॉक्टरों आदि का कथन है कि गर्भावस्था के समय स्त्री प्रसन्न रहे, सुंदर

शिशु की कल्पना करे। अपने शयनकक्ष में सुंदर शिशुओं के चित्र लगाएं। बराबर नियम से उन्हें देखें। इस प्रकार सुंदर, स्वस्थ और हंसमुख संतान प्राप्त होती है।

पौराणिक कथा है कि अर्जुन ने अभिमन्यु को गर्भावस्था में ही चक्रव्यूह का खंडन करना सिखा दिया था। यह विचारों के द्वारा अवश्य ही सम्भव है।

अतएव जो विचार-भावनाएं मन में होंगी, उनका संतान पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा। आशय यह है कि आप अपने विचारों पर नियंत्रण कर मनोनुकूल संतान प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान इसका पूर्ण समर्थन करता है कि ऐसा करना पूर्णतः सम्भव है। इसी धरातल पर टोटके अपना कार्य करते हैं। इनमें शंका करना व्यर्थ है। आप इनका प्रयोग कर इच्छित संतान प्राप्त कर सकते हैं। इनके साथ-साथ उसकी समुचित सुरक्षा भी कर सकते हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखें कि टोटके गुप्त रूप से और अनटोके ही करें, अन्यथा प्रभावी फल प्राप्त होने में संशय बना रहता है।

भिक्षा

प्रायः भिक्षा मांगने वाले आते ही रहते हैं। सबको भिक्षा न दें। केवल अपंग, असहाय को ही दें और देते समय देहरी न लांघें। देहरी में रहकर ही दें। साथ ही भिक्षु को कभी घर के भीतर न आने दें। ऐसा करने से आप दरिद्रता से बचे रहेंगे।

वैसे रविवार के दिन ही भिक्षा दें। जब तक आप पर शनि का प्रकोप न हो, तब तक शनि का दान सर्वथा वर्जित है।

नई खरीद

जब भी घर-गृहस्थी का कोई सामान, कपड़ा, बर्तन या उपयोगी वस्तु नई खरीदकर लाएं तो उसे कच्ची हल्दी का स्पर्श करा दें। ऐसा करने से वह वस्तु काफी समय तक चलती है तथा उससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती। इस क्रिया से सदैव शुभ फल मिलते हैं।

- परिवार में सदैव अशान्ति का वातावरण बना रहता है। कोई भी नया कार्य आरम्भ करने से पहले घर में कलह हो जाती है। घर में नुकसान होता रहता है। घर में रखी वस्तु का समय पर नहीं मिलना, भोजन करते समय अशान्त वातावरण रहना और किसी बाहरी व्यक्ति का अचानक आगमन आदि।
- डॉक्टर द्वारा विशेष रोग नहीं बताते हुए भी स्वास्थ्य सदैव नरम गरम

बना रहता है या घर में कोई न कोई सदैव रोगी रहता है। शरीर में भारीपन रहना, खराब स्वप्न देखना। कोई विशेष प्रकार के सपने बार-बार आना। शरीर में बाहरी हवा का प्रभाव रहना आदि।

— कभी-कभी मनुष्य जिस भवन में रहता है (पूर्व जन्म के कर्मानुसार) उस मकान में आने के पश्चात् अवनति होने लगती है। साथ ही निराशा, भय, परेशानी और असफलताओं से उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है। शुभ कार्यों में विलम्ब होता है।

— आपको जब भी किसी प्रिय मित्र या रिश्तेदारों को कोई उपहार देना हो तो उसको तीक्ष्ण, नुकीली वस्तु या कोई नमकीन भोज्य सामग्री उपहार में बिल्कुल न दें, इससे आपके आपसी संबंधों में कटुता, नजर दोष की नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव नहीं आएगा।

— अगर किसी सामग्री को आपने चौराहे पर डालना है और डालकर उसे पीछे मुड़कर भी देखना नहीं है, अगर आपने पीछे मुड़कर देख लिया तो उस सामग्री या उपाय का प्रभाव समाप्त हो जाएगा।

— कभी भी चौराहे के ऊपर से नहीं निकलना चाहिए, चौराहे पर दीपक जलता हुआ देखें तो उसकी तरफ ध्यान न दें।

— नजर दोष की सामग्री को पीपल वृक्ष के नीचे रखने के बाद जल से भरा दूध या मीठा जल को 3 अथवा 5 बार पीपल वृक्ष की जड़ों में दें। हाथ जोड़कर प्रणाम कर घर वापस आ जाएं।

— किसी भी समस्या के समाधान के लिए कोई भी प्रयोग करने के पश्चात् हमें दान अवश्य ही करना चाहिए। दान देने से हमारे ऊपर आने वाली अनेक समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

— बच्चे को नजर लग जाने पर 7 मिर्चियाँ उस पर से उतारकर जलते हुए चूल्हे में जला दें।

— बच्चे को नजर लग जाए तो एक नींबू लेकर उसको बच्चे पर उतारकर उस नींबू के चार टुकड़े करके चौराहे पर डाल दें। नजर दोष दूर हो जाएगा।

— बच्चे को नजर दोष लगने पर उसके ऊपर से नींबू को 7 बार उतार कर उस नींबू के 4 टुकड़े करके 4 दिशाओं में भी फेंक सकते हैं, इससे बच्चे पर से नजर दोष समाप्त हो जाएगा।

— अगर बच्चा बहुत ही बुरी तरह बेतहाशा होकर रोये जा रहा हैंतो उस पर से 7 या 11 अगरबत्तियाँ उतार कर अपने घर की छत पर जाकर

जला दें, अगरबत्तियों के पूरी तरह जल जाने पर आपका बच्चा बिल्कुल शांत हो जाएगा, नजर दोष से मुक्त हो जाएगा।

– बच्चे के गले में काला डोरा या उसके माथे पर काला टीका लगाने से भी बच्चे पर नजर दोष नहीं लगता।

– अगर बच्चा बहुत ही शरारती, चंचल है, हमेशा ही मुस्कराता रहता है, तो उसको नजर लगने से बचाने के लिए उस बच्चे को प्यार से एक चपत लगा दें, इससे बच्चा रोने लग जाएगा; इस प्रकार वह नजर लगने से भी बच जाएगा।

– माँ जब बच्चे को दूध पिलाती है और वह बच्चा दूध को उलट देता है तो ऐसी स्थिति में आप शनिवार को संध्याकाल में एक मिट्टी के बर्तन में थोड़ा सा कच्चा दूध लें। दुग्धपान के बाद उस पात्र को बच्चे के ऊपर से 7 बार उतार कर किसी काले कुत्ते को पिला दें। काले तिल बच्चे का हाथ लगवा कर उस दूध में मिला दें। इस उपाय का लाभ आपको अवश्य ही दिखेगा।

– बच्चे के जन्म के बाद बच्चे को चांदी का चन्द्र एवं सोने का सूर्य अवश्य ही धारण करा दें। इससे बच्चा बुरी नजर से बचता है।

– यदि आपकी संतान को नजरदोष है तो आप एक काली मिर्च और 1 लौंग को जलाकर उसको थोड़ी दूरी से सुंघाएं। तुरंत लाभ की प्राप्ति होगी।

– यदि बच्चे को नजरदोष के चलते बुखार आ जाए तो शुद्ध घी में गेंदे के पुष्प की पत्ती का रस मिलाकर हल्के हाथों से माथे पर तिलक की तरह लगाएं, तुरंत लाभ होगा।

– यदि आपकी संतान नजरदोष पीड़ा से पीड़ित हो तो उसको अपनी गोद में लेकर माता दुर्गा का स्मरण कर 21 बार 'ह्रीं हुं दुर्गायै नमः' का जप करने से आप इसका तुरंत लाभ देख सकते हैं।

– शिशु को नजर लगी हो तो बुधवार शाम से पहले एक हरे वस्त्र में 11 लौंग, 11 काली मिर्च, 5 हरी इलायची एवं थोड़ी सी हींग बांधकर बच्चे के सिर से 7 बार उतार कर किसी भी वृक्ष के नीचे रख दें। तुरंत लाभ होगा।

– अपने व्यवसाय स्थल के पूजाघर में विधि-विधान से दक्षिणावर्ती शंख की स्थापना करें। प्रतिदिन शंख में जल भरें। दूसरे दिन शंख में भरे जल से अपने व्यवसाय स्थल पर हल्के-हल्के छींटे दें और फिर शेष

जल को पीपल के वृक्ष में डाल दें और फिर इसमें जल भरकर पूज
करें।

— आप पर किसी भी प्रकार की विपत्ति अथवा किसी भी प्रकार की बाध
अड़चन न आए, इसके लिए आप निश्चय कर लें कि प्रत्येक माह आप
कितनी धनराशि का दान करें, चाहे तो गरीबों को खाना खिला सकते
हैं या फिर गाय को चारा खिला सकते हैं, इससे आप व्यवसाय को
नजर दोष से मुक्त रख सकते हैं।

— प्रत्येक शनिवार को शनि के नाम पर अपनी श्रद्धा के अनुसार दान
करें।

— अपने व्यवसाय स्थल पर गुग्गल की धूप का धुआँ लगायें, इससे
व्यवसाय स्थल नजर दोष से मुक्त रहेगा।

— शनिवार के दिन किसी भी विकलांग को खाद्य सामग्री का दान करें।

— व्यवसाय स्थल पर नजर न लगे, इसके लिए आपको महीने में एक
बार हनुमानजी के दर्शन अवश्य ही करने जाना चाहिए। यह उपाय
आपके व्यवसायिक स्थल को नजर दोष से मुक्त रखेगा।

— अपने घर को नजर दोष से बचाए रखने के लिए महीने या वर्ष भर
में एक बार तो अवश्य ही हनुमान चालीसा या सुंदर कांड करवाना
चाहिए।

— जब भी अपने भवन का निर्माण कार्य शुरू करायें तो सर्वप्रथम भवन
में वास्तु पुरुष का पूजन अवश्य ही करायें। इससे आपका भवन नजर
दोष से मुक्त रहेगा।

— यदि आप अपने भवन का निर्माण कराते समय ईशान कोण की दीवार
में अभिमंत्रित नजर दोष नाशक शंख को दबाते हैं तो आपका भवन
नजर दोष से मुक्त रहेगा, वास्तुदोष से भी मुक्त रहेगा।

— आप अपने भवन के ईशान कोण में एक मटकी में जल भर रखें।
इस उपाय से आपके भवन की नजर दोष से रक्षा के साथ-साथ वास्तु
दोष से भी राहत प्राप्त होगी।

— आप अपने भवन के पूजा स्थल में श्री यंत्र की स्थापना अवश्य ही
करें। इससे माता लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी। अतएव माता लक्ष्मी
का स्थाई वास भी रहेगा। नजर दोष से भी मुक्ति मिलेगी।

— जब कोई स्त्री गर्भवती हो तो, सबसे पहले वह अपनी बाईं भुजा पर
एक काला एवं एक लाल धागा अवश्य ही बांधे। इससे गर्भवती पर

किसी प्रकार की नजर नहीं लगेगी। अगर डोरे खराब होने लगें तो उसे बदल लें। प्रसव के बाद इन डोरों को पीपल के वृक्ष के नीचे रखवा दें।

- पहली बार गर्भ धारण करने हेतु पति-पत्नी को गर्भ रक्षा के लिए पत्नी को अपने बायें हाथ में तांबे की पतली चूड़ी धारण करनी चाहिए। इसी प्रकार पति को भी अपने दायें हाथ में तांबे का कड़ा धारण करना चाहिए। इससे गर्भ की रक्षा होती है।
- गर्भावस्था काल में आए भगवान श्रीकृष्ण के बालरूप का एक लॉकेट लें। किसी भी पंचमी तिथि को उस लॉकेट को अपने निवास के पूजा स्थल में रखकर दीप-धूप अर्पित कर काले धागे में पिरोकर गले में धारण करें। इससे नजर नहीं लगेगी। गर्भ सुरक्षित रहेगा।
- गर्भावस्था के समय अगर आप सोते समय सफेद सुरमे का प्रयोग अपनी नेत्रों पर करती हैं तो भी आप पर नजर दोष नही आएगा।
- यदि आप गर्भावस्था में किसी नवजात कन्या को कोई वस्त्र उपहार में देती हैं तो भी आप पर कोई नजर दोष का प्रभाव नही आएगा।
- गर्भवती स्त्री पर किसी हिजड़े का आशीर्वाद मिल जाए तो उस व्यक्ति स्त्री अथवा उसके परिवार पर किसी भी प्रकार की बड़ी से बड़ी नजर का भी प्रभाव नहीं हो सकता है। ये उपाय आप अवश्य ही करें। इससे गर्भ भी सुरक्षित रहेगा।
- किसी एक शुक्रवार को कन्याओं को मिश्री का प्रसाद बांटें। इससे भी आपके परिवार पर माँ लक्ष्मी की पूर्ण कृपा होगी तथा आर्थिक लाभ के साथ नजर दोष से भी रक्षा होगी।
- अगर आप चाहते हैं कि आपने जो नया व्यवसाय शुरू किया है, उस पर किसी की बुरी नजर न लगे तो इसके लिए आपको यह बात किसी व्यक्ति से न करके बल्कि अपने इष्ट देव से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि हम नया व्यवसाय या कार्य करना चाह रहे हैं—आप अपनी कृपा इस व्यवसाय पर बनाए रखें; ऐसा करने पर आप खुद ही महसूस करेंगे कि आपके इष्टदेव आपके पास खड़े होकर आपकी प्रार्थना सुन रहे हैं, इससे आपके व्यापार पर किसी भी तरह की नजर नहीं लगेगी।
- तीन अभिमंत्रित गोमती चक्र की व्यवस्था करके आप इसे अपनी जेब में रखें अथवा एक छोटी चांदी की डिब्बी में रखकर अपनी जेब में रखेंगे तो कभी भी किसी नजर दोष की नकारात्मक ऊर्जा नहीं आएगी।

- लौंग व हरी इलायची किसी चांदी की डिब्बी में रखकर हमेशा अपने पास रखें और अपनी व्यवस्था अनुसार दिन में समय-समय पर इसको प्रयोग में लें तो सदैव ही नकारात्मक ऊर्जा एवं किसी भी प्रकार की नजर से मुक्त रहेंगे।
- आप भगवान शंकर, माँ दुर्गा आदि शक्ति भवानी अथवा हनुमानजी के मंदिर में कम से कम महीने में एक बार मंदिर जाकर इनके दर्शन कीजिए, इससे भी नजरदोष से छुटकारा होगा।
- प्रत्येक शनिवार को एक नींबू को स्वयं से 7 बार उतार कर दक्षिण दिशा में फेंकें। इससे भी नकारात्मक ऊर्जा से सुरक्षित रहेंगे।
- आप जब भी कोई वाहन खरीदें तो वाहन के आगे एक छोटा काला रिबन तथा किसी अन्य स्थान पर लाल एवं पीला रिबन भी बांधें। इससे आपके वाहन पर किसी की बुरी नजर नहीं लगेगी। वाहन सदैव सुरक्षित रहेगा।
- परिवार में यदि पति-पत्नी में से कोई एक भी अभिमंत्रित दोमुखी रुद्राक्ष धारण करता है तो उनके दाम्पत्य पर किसी भी प्रकार का नजर दोष नहीं लगेगा।
- प्रत्येक गुरुवार को गाय को 3 रोटी व गुड़ दिया करें। जब कभी कोई कोढ़ी आपके सामने आकर कुछ भीख मांगे तो उसे निराश न करें, फिर चाहें आप उसे एक रुपया ही क्यों न दें! ऐसा करने से दाम्पत्य संबंधों पर आया नजर दोष दूर हो जाएगा।
- किसी भी शनिवार को 300 ग्राम तले हुए चने व सवा किलो इमरती मिलाकर किसी भी मंदिर पर भिखारी व विकलांगों में बांटें। इससे भी आपको दाम्पत्य सुख की प्राप्ति होगी। दाम्पत्य सुख नजर दोष से मुक्त होगा।
- जब भी आपको किसी रोगी व्यक्ति का हालचाल जानने के लिए जाना हो, तो उससे पहले आप अपनी जेब में थोड़े से काले तिल किसी कागज में बांधकर अपनी जेब में रख लें। वापस आते हुए आप किसी चौराहे पर इस पुड़िया को फेंक दें। इससे आप नजर दोष से बच जाएंगे।
- किसी भी शनिवार को पीपल के वृक्ष के नीचे एक दोने में थोड़ा गुड़, एक जायफ़ल, 3 हरी इलायची, थोड़ी मिश्री एवं एक पनीर का टुकड़ा रखें और प्रणाम कर बिना पीछे देखें वापस आ जाएं। इस उपाय से आपका स्वास्थ्य हमेशा ठीक रहेगा।

काले घोड़े की नाल का विशेष टोटका

नजर दोष में नाल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अकसर ऐसा देखा जाता है कि मकान, दुकान, संस्थान के मुख्यद्वार पर नाल लगी हुई होती है। यह बुरी नजरों के प्रभाव से बचाती है, लेकिन इस कार्य के लिए किसी भी घोड़े की नाल प्रभावी नहीं होती। प्रभावी विधान टोटका निम्न है।

विधि : काले घोड़े की नाल नजर व टोक में विशेष प्रभावशाली होती है। शनिवार या मंगलवार को काले घोड़े की नाल निकलवाकर लाएं, फिर इसको गंगाजल से धोकर शुद्ध कर लें और नाल का मुंह ऊपर की तरफ करके दरवाजे पर ठोक दें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि दरवाजे का मुख्यद्वार पूर्व या पश्चिम दिशा की तरफ हो तो शुक्रवार को ठोकें। नजर दोष से मुक्ति मिलेगी।

ऋण मुक्ति के लिए टोटका

आज के भौतिक युग में पचास प्रतिशत व्यक्ति ऋण के बोझ से दबे हुए हैं और ऋण की दलदल से जितना बाहर आना चाहते हैं, उतना ही डूबते चले जाते हैं। जीवन के किसी न किसी मोड़ पर वैसे हर व्यक्ति को ऋण लेना पड़ता है। अगर ऋण लेने की स्थिति ऐसी हीं बनी रही तो उसको चुकाने में कई पुश्तें गुजर जाती हैं और ऋण समाप्त नहीं होता। पाठकों के लाभार्थ एक टोना-टोटका निम्नवत हैं :

विधि : सर्वप्रथम पांच गुलाब के फूल लाएं। ध्यान रहे कि उनकी पंखुड़ी टूटी हुई न हो। तत्पश्चात् सवा मीटर सफेद कपड़ा सामने रखकर बिछाएं और गुलाब के चार फूलों को चारों कोनों पर बांध दें, फिर पांचवां गुलाब मध्य में डालकर गांठ लगा दें। इसे गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम में प्रवाहित करें। प्रभुकृपा से ऋण मुक्ति और घर में सुख-संमृद्धि की प्राप्ति होगी।

बिक्री विधि के लिए टोटका

जिन उद्योगपति या व्यापारियों को काफी प्रयास और अथक परिश्रम करने के बावजूद बिक्री में वृद्धि नहीं हो पा रही हो तो प्रस्तुत अचूक टोटके का प्रयोग करें।

विधि : यह टोटका शुक्ल पक्ष में गुरुवार से प्रारम्भ करें और प्रत्येक गुरुवार को इस क्रिया को दोहराते रहें। घर के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगाजल से धोकर शुद्ध कर लें। शुद्ध किए गए स्थान पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाएं

और उस पर थोड़ा दाल और गुड़ रख दें। ध्यान रहे कि स्वास्तिक का चिन्ह हल्दी से ही बनाएं।

सावधानी : स्वास्तिक बनाने के पश्चात् बार बार न देखें, अन्यथा अशुभ प्रभावों का शिकार होना पड़ेगा। इस क्रिया से बिक्री में वृद्धि होगी। प्रभुकृपा से शीघ्र लाभ मिलेगा।

नए मकान में खुशहाली के लिए टोटका

मेरे जीवन में बहुत से व्यक्तियों से मेरा सम्पर्क हुआ और अकसर ऐसा देखा गया कि वे मकान, दुकान बनाकर पतन की ओर जाने लगे और अन्ततः पूर्ण रूप से बर्बाद हो गए।

ऐसी परिस्थिति से बचाव के लिए प्रस्तुत है, शुद्ध टोटका।

विधि : जब भी मकान, दुकान बनाएं, नीचे अंकित सामग्री पश्चिम दिशा के कोने में अवश्य डालें।

यह टोटका खुशहाली तो लाएगा ही, साथ ही दूसरों के द्वारा किए गए टोने-टोटके के अशुभ प्रभाव से भी रक्षा करेगा। यह मेरा स्वयं का अनुभव है।

अगर संभव हो तो किसी मार्गदर्शक से परामर्श ले लें और अगर सलाह नहीं ली तो भी कोई हर्ज नहीं।

1. हल्दी की सात साबुत साफ गांठें।
2. सात साफ और साबुत पूजा वाली सुपारी।
3. चांदी का छोटा-सा पतरा।
4. सर्प-सर्पिणी का जोड़ा।
5. तांबे की लुटिया ढक्कन सहित।

उपर्युक्त सामग्री को तांबे की लुटिया में डालकर पश्चिम दिशा के कोने में डाल दें।

भाग्योदय के लिए टोटका

प्रातः सुबह उठकर जो भी स्वर चल रहा हो, वही हाथ देखकर तीन बार घूमें, तत्पश्चात् वही पांव धरती पर रखें और वही कदम आगे बढ़ाएं। ऐसा नित्य प्रतिदिन करने से निश्चित रूप से भाग्योदय होगा।

पागलपन या उन्माद का टोटका

प्रेम के दीवाने मनुष्य के लिए यह टोटका विशेष प्रभावकारी है। लोहे

के एक टुकड़े को अग्नि में गर्म करें तथा पानी में बुझाएं। यही क्रिया तीन बार करें। बुझाते समय यह कहते जाएं कि जिस प्रकार यह टुकड़ा पानी में शीतल हो रहा है, उसी प्रकार अमुक लड़के का अमुक लड़की से प्रेम भी शीतल हो जाए। फिर उसी पानी से प्रेम में पागल रोगी का मुंह धुलाएं। थोड़ा पानी उसके वक्ष स्थल पर भी छिड़क दें। तीन दिन यह क्रिया करने से वह अपनी प्रेमिका को भूल जाएगा। यह क्रिया शनिवार से प्रारम्भ करें।

— बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून तथा कछुए के खून को ऊंट के चमड़े में मढ़कर तावीज बनाकर रख लें। फिर इस तावीज को किसी प्रेम में पागल मनुष्य के कण्ठ में बांध दें। इससे उन्माद रोग शीघ्र ही शांत हो जाएगा।

— उन्मादग्रस्त रोगी को चोटी में धमरबरूआ की जड़ बांधने से उसका प्रलाप रुक जाता है तथा नींद भी गहरी आने लगती है।

गज (हाथी) के तंत्र प्रयोग

— किसी शुभ मुहूर्त योग में तांत्रिक विधि-विधान से हाथी की हड्डी लाकर विधिवत मंत्र सिद्धि के बाद मिर्गी के रोगी की दाहिनी भुजा में बांध दें तो वह रोगमुक्त हो जाएगा।

— हाथी की लीद बारह आने भर चांदी के तावीज में भरकर बालक को पहनाई जाए तो वह भूत-प्रेत बाधा व जादू-टोने से मुक्त रहता है।

— हाथी दांत का बुरादा बनाकर तथा आग में सुलगाकर इसकी धूनी जिस वृक्ष को दी जाए, वह कीड़े-मकोड़ों से मुक्त हो जाएगा। इसी धूनी को अगर घर में सुलगाया जाए तो मक्खी व मच्छर दूर भाग जाते हैं।

सर्व स्त्री साधू लोग

खस, चंदन, इसमें शहद मिलाकर तिलक करें और स्त्री के गले, बांह में बांह डालकर वश में करें तो स्त्री वश में हो जाएगी।

अद्भुत वशीकरण

चिता की भस्म, बचकुट, केसर और गोरोचन—इन सबको सम भाग में लेकर चूर्ण बनाकर यदि किसी स्त्री के सिर पर छोड़ें तो वह वश में हो जाएगी।

तावीज लेखन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री

तावीजों को प्रायः लकड़ी की कलम (या फिर किसी वृक्ष की टहनी की कलम) द्वारा सादा कागज, मृगछाला इत्यादि पर केशर, मुश्क, जाफरान अथवा गुलाब के अर्क से लिखने का विधान है। व्यावहारिक तौर पर नक्श लेखनार्थ प्रायः लाल अथवा काली स्याही का ही प्रयोग किया जाता है। प्रायः अन्य किसी विशेष परिस्थितियों में स्याही में थोड़ी-सी चीनी और खुशबू भी मिला दी जाती है। तावीज लेखन में पेन अथवा बालपेन का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है। साथ ही तावीज बनाते समय लौह धातु स्पर्श भी वर्जित है। नक्श लेख के स्थान पर लोबान, गुग्गुल अथवा धूप-अगरबत्ती जलती रहनी चाहिए।

आमिल को अलग-अलग कामना के लिए अलग-अलग कलम और स्याही से नक्श लिखना चाहिए। आतिशी, बादी, आबी और खाकी नक्श के लिए साईत (मुहूर्त) निर्धारित हैं, अतएव कलम और साईत को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

- सोने की कलम व निब से हितकारी इच्छाओं के नक्श लिखे जाते हैं।
- चांदी की कलम व निब से मांगलिक कामनाओं के नक्श लिखे जाते हैं।
- प्रजनन के लिए पुरुष में स्तंभन शक्ति का होना बहुत जरूरी है। यदि पुरुष में इसकी कमी है तो आमिल को इसके लिए बरगद की कलम का उपयोग करना चाहिए।
- अधिकारियों अथवा किसी को वश में करने के लिए कुश की कलम से नक्श लिखना चाहिए।
- समृद्धि व अन्य कामनाओं की सिद्धि के लिए चमेली की कलम व निब से नक्श लिखना उचित है।
- कुछ नक्श जमीन पर उंगली से लिखे जाते हैं और लिखकर मिटा दिए जाते हैं। फिर उन पर पानी उंड़ेलकर नक्श की मिट्टी उठा ली जाती है और नदी-नहर में फेंकी जाती है।
- आमतौर पर आमिल स्याही के स्थान पर अगर, चंदन, कस्तूरी, कपूर और केसर आदि के घोल का उपयोग करते हैं। कुछ नक्श ऐसे होते हैं, जिनको लिखते समय स्याही में तेल की एकाध बूंद मिला दी जाती है।

गरीबी दूर करने का अमल

जो आदमी अपनी गरीबी से तंग आ गया हो, उसे चाहिए कि अधिकांश समय में यह दुआ पढ़ता रहे। खुदा के हुक्म से उसकी तंगी आसानी से खत्म हो जाएगी और उसकी गरीबी मालदारी में बदल जाएगी :

वा मा काइमिल इज्ज वलमुल्का पल बकाई या जुल जलाली वल जवदि वल फजली वल अताया व जुल आर्शिल हीदु या फजालु हलिमा युरीद।

सूरः ताहा का अमल

हजरत हाजी इमाददुल्लाह साहब मुहाफिर मक्की रह. इर्शाद फुरमाते हैं कि सूरः ताहा का पढ़ने वाला कभी किसी का मोहताज नहीं रहता। इस अमल में सूरः ताहा एक खास तरीके से पढ़ी जाती है। तरीका यह है कि नौचंदी जुमेरात से इसे पढ़ना शुरू करें, समय चाश्त का हो अर्थात् दिन के 11 बजे खड़े होकर पढ़ें और लगातार चौदह दिन तक पढ़ते रहें। पढ़ने से पहले चौदह बार शुरू में तथा चौदह बार आखिर में दुरूद शरीफ पढ़ें। पढ़ने के दौरान किसी से बात न करें। पढ़ने की नागा भी न करें, वरना अमल बेकार हो जाएगा। चौदहवें दिन जब पढ़ चुकें तो दो रकाअत नफ्ल नमाज पढ़ें जिसमें पहली रकाअत के बाद सूरः फातिहा के बाद सूरः जाकर (पारा 30) और दूसरी रकाअत में सूरः कदर (पारा 30) पढ़ें, फिर सज्दे में जाकर 12 बार ताहा ताहा पढ़ें और अल्लाह से दुआ मांगें और फिर नामाज खत्म करें। जिस मकसद के लिए इस अमल को करेंगे, वह पूरा होगा। इंशा अल्लाह अमल के दौरान ही मुराद पूरी हो जाएगी।

बुखार ख़त्म करने हेतु अमल

यदि कोई व्यक्ति बुखार के जोर से परेशान हो और किसी भी दवा से बुखार न उतर रहा हो तो उसे हर इलाज व दवा को त्यागकर अमल व रुहानी इलाज की ओर ध्यान देना चाहिए।

हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० ने फरमाया कि सूरः फातिहा चालीस बार पानी के प्याले पर पढ़कर बुखार वाले रोगी के मुंह पर छींटा मारने से सेहत ठीक हो जाती है और पुराने से पुराने बुखार का भी जोर टूट जाता है।

क्रोध समाप्ति का अमल

यदि कोई व्यक्ति क्रोध और गुस्से से भरा हो तो उसे चाहिए कि—आऊजु

बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम पढ़े–

उपरोक्त अमल को पढ़ने से इंशा अल्लाह गुस्सा दूर हो जाएगा और शैतानी फरेबों से भी निजात मिलेगी।

बुरे स्वभाव से बचने का अमल

यदि कोई आदमी बुरे स्वभाव का हो, तेज कलाम हो तो उसे चाहिए कि अधिकता से इस्तगफार पढ़ा करे अर्थात् यूं पढ़े।

अस्तगफिरुल्लाहा रब्बी मिनकुल्ली जम्बिंव वअतूबु अलयहि

चोरी का माल मिल जाने का अमल

चोरी का माल मिलने के लिए नबी करीम सल्ल पर दरूद भेजकर यह पढ़ें–

लाहवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अजीम

बिच्छू का विष उतारने हेतु अमल

यदि किसी के बिच्छू काटे तो सूरः फातिहा पढ़कर काटी हुई जगह पर दम करो। बिच्छू का जहर खत्म हो जाएगा।

आग बुझाने के लिए अमल

जब कोई आग लगी हुई देखें तो वह अल्लाहु अकबर बार बार कहें। आग बुझ जाएगी। उलेमा ने इसे बड़ा कामयाब अमल बताया है।

माल/संतान की सुरक्षा के लिए अमल

जो आदमी आयतुल कुर्सी को अपने माल या अपनी औलाद पर पढ़कर दम करे या लिखकर गले में लटका दे तो वे शैतानी हमलों से व बला से सदा बचे रहेंगे।

जिन्न/आसेब से बचाव हेतु अमल

यदि आयतुल कुर्सी को लिखकर घर में दाखिल होने वाले दरवाजे पर लटका दी जाए या हर दिन तीन बार पढ़कर घर में फूंक दें तो जिन्न व भूत उस घर में कभी भी दाखिल न हो सकेंगे।

हर बीमारी से निजात का अमल

सूरः फातिहा हर बीमारी की दवा है। फज्र की नमाज के फर्ज व सुन्नतों के बीच 41 बार पढ़कर रोगी के ऊपर दम कर दें। हर बीमारी दूर हो जाएगी।

मनोकामना पूर्ति का अमल

इशा की नमाज के बाद चार रकाअत नमाज और पढ़ें जिसकी पहली रकाअत में सूरः फातिहा के बाद आयतल कुर्सी तीन बार और बाकी तीन रकाअतों मे सूरः फातिहा के बाद सूरः इख्लास और सूरः फलक़ और सूरः नास एक-एक बार पढ़ें और सलाम के बाद दुआ मांगें तो आपकी दि़ली मुराद अल्ला पूरी कर देगा।

भूख व तंगहाली से बचाव का अमल

भूख व तंगी दूर करने के लिए ला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अजीम पढ़ना बड़ा जरूरी है। जो भी पढ़ेगा, थोड़े ही दिनों में मालामाल हो जाएगा।

दुख, परेशानी व कैद से छुटकारा पाने हेतु अमल

हर प्रकार की बीमारी, दुख, परेशानी और कैद से नजात हासिल करने के लिए नीचे लिखी आयत करीमा को दिल की गहराई के साथ पढ़ें। यह आयत हर रोग के लिए बड़ी अकसीर है।

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन

कर्ज अदायगी हेतु अमल

यदि कोई आदमी कर्जदार हो और कर्ज वाला उसे परेशान कर रहा हो, आए दिन तंग करता हो तो ऐसी सूरत में उसे शहर या घर छोड़कर भागने की कोई जरूरत नहीं, बल्कि उसे इरादा कर लेना चाहिए कि सारा हिसाब बहुत जल्द साफ कर सकता है। वह अपनी परेशानी दूर करने के लिए हर रात को 12 बजे उठकर सूरः फातिहा पढ़ें और 55 दिन तक लगातार इसे पढ़ता रहे। इंशा अल्लाह गैब से मदद होगी और समस्त परेशानियां भी जल्द दूर होंगी।

वशीकरण टोटके

- रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में जब अमावस्या हो, उस दिन अपना

वीर्य किसी मिठाई में मिलाकर जिस स्त्री को खिला दिया जाए, वही वश में हो जाती है।

- कनेर पुष्प व गौघृत मिलाकर जिस किसी स्त्री का नाम लेकर 108 बार हवन किया जाए तो वह स्त्री सात दिन के अंदर साधक के वश में होकर हर इच्छा पूर्ण करती है। मगर ध्यान रहे, कुविचार मन से किया गया अनुष्ठान दुखदाई है।
- उल्लू पक्षी की रीढ़ की हड्डी, केसर, कस्तूरी और कुंकुम सब को एक साथ घिसकर ललाट पर तिलक लगाकर जिस स्त्री के भी सामने जाएं, वही वशीभूत हो जाती है।
- शनिवार के दिन भोजपत्र पर लाल चंदन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबो देना चाहिए। यह जब तक उस शहद में डूबा रहेगा, तब तक शत्रु वश में रहेगा।
- उल्लू की विष्ठा किसी तरह पान में रखकर यदि शत्रु को शनिवार के दिन खिला दी जाए तो वह शत्रुता भूलकर वशीभूत हो जाता है।

स्तम्भन

अग्नि स्तम्भन मंत्र :

अनेक बार ऐसा भी देखा गया है कि गांवों में कई लोग आग को बांधने का मंत्र पढ़ते हैं, जिससे आग आगे न बढ़ने पाए। कई लोग ऐसे भी हैं जो आग को बांधकर आग पर से ऐसे गुजरते हैं जैसे वे जमीन पर से गुजर रहे हों, उन पर आग का प्रभाव नहीं पड़ता। तांत्रिक प्रायः ऐसा करते देखे जा सकते हैं। उन पर आग का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ता। नीचे अग्नि स्तम्भन मंत्र दिए जा रहे हैं।

मंत्र इस प्रकार हैं—

ॐ नमः अग्निरूपाय मे देहि स्तम्भय कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र से मेंढक की चर्बी को 108 बार अभिमंत्रित करके मालिश कर लेने से शरीर पर आग का प्रभाव नहीं पड़ता।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

इसको पहले 10 हजार बार जप कर सिद्ध कर लिया जाता है। फिर इस मंत्र से सोंठ, काली मिर्च तथा पीपल को 108 बार अभिमंत्रित करके पहले अच्छी तरह चबा लें, तत्पश्चात् आग का प्रभाव नहीं होता।

जल स्तम्भन मंत्र :

ॐ नमो भगवते रूपाय जलस्तम्भाय ठः ठः ठः।

जिस तरह लोग आग को स्तम्भित करके उस पर चलते हैं, उसी प्रकार ऐसे अनेक महात्माओं को देखा गया है, जो पानी के ऊपर चलते हैं। वे लोग जल को स्तम्भित कर उस पर से गुजरते हैं।

इस मंत्र को पहले सवा लाख बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए, उसके बाद घड़ियाल की चर्बी तथा हुण्डल पक्षी की खोपड़ी को लेकर अच्छी तरह एक साथ कूट-पीसकर मिलाने के बाद तेल में पकाते हैं। इस तेल को लोहे के ताम्र में रखकर श्रीकृष्ण पक्ष की अष्टमी में पूजा करके उसमें 1008 बार आहुति देकर तेल का पूरे शरीर में लेप करने के बाद व्यक्ति पानी पर निर्भय होकर चल सकता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भयः ठः ठः स्वाहा।

कहा जाता है पद्माक्ष चूर्ण को उक्त मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित कर जल में डालने से प्रवाह रुक जाता है। नमक डालने पर प्रवाह खुल जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

एं अस्फोट पति धारा उल्मू लका क्रां क्रां क्रां।

खटकुली पक्षी के पंख को इस मंत्र से 1108 बार अभिमंत्रित कर पंख को बगल में दबाकर जल में खड़ा होने से भी प्रवाह रुक जाता है।

अतिवृष्टि स्तम्भन

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवते मेघ स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को पहले दस हजार की संख्या में जप करके सिद्ध कर लिया जाता है। फिर दो नई ईटें लेकर उसे सम्पुट बनाकर उस पर चिता के कोयले से "मेघ" शब्द लिखकर मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करते हैं। अब ईटों को जमीन में गाड़ देने से जलवृष्टि रुक जाती हैं।

बुद्धिनाशक मंत्र :

मंत्र इस प्रकार हैं—

नमो भगवते मम शत्रु बुद्धि विनष्टाय आगच्छ स्वाहा।

इस मंत्र को पहले एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद हरताल और हल्दी के चूर्ण को पानी में घोलकर अनार की कलम से भोजपत्र पर मंत्र लिखकर तावीज बनाकर हरे वस्त्र में लपेटकर शत्रु के द्वार पर गाड़ देने से उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

सर्प स्तम्भन :

गांवों में जहां घरों में सर्प प्रायः निकला करते हैं, तब यह प्रयोग करते हैं।

मंत्र इस प्रकार हैं—

ॐ लहरि लहरि तुरंग ते मारो।
देखिं भूत ब्रह्मांड खू मारो।।

इस मंत्र को ग्रहण के दिन रात्रि में 21 हजार बार जपकर सिद्ध कर लेते हैं। फिर मिट्टी के सात ढेले अभिमंत्रित कर सर्प की तरफ फेंकने से सर्प ठहर जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

काला कपड़ पहरिया, भगवा किया भेष,
मैं तो सर्पा छोड़ियो, फिर-चर त्यारै देश।।

उक्त मंत्र को दस हजार बार जपकर सिद्ध करने के बाद, सर्प के सामने आने पर हाथ में मिट्टी लेकर सात बार मंत्र से अभिमंत्रित करके सर्प की तरफ फेंकने से वह भाग जाता है। आक्रमण नहीं करता।

वीर्य स्तम्भन :

अपामार्ग को सोमवार की सायं निमंत्रण दे आएं और मंगलवार की प्रातः उखाड़ लाएं।

मैथुन के समय इसे कमर में बांध लेने से वीर्य स्तम्भित हो जाता है। स्त्री सम्भोग के समय काले कौंच की जड़ अथवा इमली के गूदे को गुड़ में मिलाकर गोली बनाकर मुख में रखने से रज स्तम्भित हो जाता है।

तिजारी ज्वरनाशक

शनिवार को नहा-धोकर धनवंतरि का नाम जपते हुए श्वेत धतूरे की जड़ को आमंत्रित कर आएं।

फिर रविवार के दिन उस धतूरे को लाकर पुरुष के दाएं हाथ तथा स्त्री के बाएं हाथ में बांधने से तिजारी ज्वर नष्ट होता है।

ज्वरनाशक

ज्वर से ग्रस्त रोगी को बहुत दिनों तक कष्ट होता है। रोगी दवा खाते खाते परेशान हो जाता है, परंतु ज्वर से मुक्त नहीं हो पाता।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये।

पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा॥

इस मंत्र को कागज पर कोयले से लिखकर दाएं हाथ में बांधने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्र च।

उषा स्मरण संत्रणे ज्वर व्याधि विमुच्चते॥

इस मंत्र को भी कागज पर लिखकर गले में बांधने से पाठ करते रहने से ज्वर का नाश होता है। जब ज्वर आता हो तो आने वाले दिन रोगी किसी पीपल के वृक्ष में धागे को लपेटते हुए कहता जाए कि—"मेरा मेहमान आए तो तू ही सम्भाल लेना"—ऐसा करने से ज्वर पुनः नहीं आता।

ज्वर निवारण

निम्नांकित मंत्र से सहदेई की जड़ रविवार के दिन तीन बार मंत्र से अभिमंत्रित कर पुरुष रोगी की दाईं बांह में तथा स्त्री रोगी की बाईं बांह में बांधने से समस्त प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ भैरव भूतानां ये विकराल काये,

अग्निवर्ण धामे सर्व ज्वर बंध मोचय अम्बकेतु हूं।

यह मंत्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र से रोगी को सात बार झाड़ते हैं। फिर तीन बार खुद रोगी से मन ही मन बुलवाते हैं, जिससे ज्वर दूर हो जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरु का।

धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड-राख, लगाता गुरु गोरखनाथ

आवन्ता-जावन्ता-धावन्ता हांक देत, धार-धार मार-मार।

शब्द सांचा, फुरो वाचा।

यह मंत्र दशहरे की रात्रि में 110 बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। फिर मंत्र को 108 बार जप कर बरगद (वटवृक्ष) के पत्ते पर कच्चे कोयले से लिखकर रोगी को दिखाने से ज्वर बहुत जल्द उतर जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

पहेर भगवे कपड़े, कर मरदाना भेस। बन्धी बन्धीपन छुट गई, फिरी आचारों देस। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति।

फुरो मंत्र-ईश्वरों वाचा

पक्षाघात रोगी के लिए

सोंठ, हरे तुलसी काष्ठ व रास्ना, सब समभाग लेकर अच्छी तरह से इमामदस्ते में कूट-छानकर महीन पाउडर तैयार कर लें। चार-चार घंटे के अंतर से इस पाउडर को रोगी के व्याधिग्रस्त भाग पर मलें तथा सवेरे-शाम रेशमी वस्त्र से सहलाते रहें। दिन में 1-2 केले भी खाने को देते रहें। साथ ही व्याधिग्रस्त भाग की तरफ ही रोगी को लिटाएं। कमर में बांधने से कमर की पीड़ा दूर होती है।

मंत्र इस प्रकार है—

तू काली, तू कामणी, कलुआ छप्पर छाए। दुढी अपनी ठाकां, पीड़ा (अमुक) की जाए। मेरी भक्ति, गुरु की भक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

तंत्र एक गोपनीय विज्ञान है। यह निश्चय ही लाभकारी है। इसी पावन उद्देश्य को लेकर आप साधना मार्ग की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हों।

गठिया निवारण

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्ष तमः।
प्रकीर्ण अंग प्रस्तार प्रस्तार मुंच मुंच।।

इस मंत्र के द्वारा मंगलवार के दिन मोरपंख से झाड़ना चाहिए। अगर पेट में वायु का दोष बना रहता है तो निम्न मंत्र को पढ़ते हुए चाकू से 20 पड़ी रेखा व 40 खड़ी रेखा खींचकर उस पर फूंक मारने से लाभ होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ए वाचा।

कमर-पीड़ा निवारण मंत्र

निम्न मंत्र 108 बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। फिर अविवाहित कन्या के हाथ का काता हुआ सूत लेकर उस सूत के 101 धागों को एक साथ लेकर मंत्र से 11 बार अभिमंत्रित करके रोगी की कमर में बांधने से कमर की पीड़ा दूर होती है।

मंत्र इस प्रकार है—

चलता आवे उछलता जाय। मस्य करता उह जाय।
सिद्ध गुरु की आन मंत्र सांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

स्त्री रोग निवारण

गर्भधारण मंत्र :

जिस स्त्री को गर्भ न होता हो तो उस स्त्री को ऋतुकाल के बाद नहा-धोकर मृगछाला पर पवित्र मन से बैठकर संतान प्राप्ति का संकल्प करना चाहिए। फिर 108 बार पढ़कर रात में सम्भोग करती है तो स्त्री को गर्भ होता है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं उलजाल्य ठ ठ ॐ अमुकी।

सपुष्यां कुरु कुरु स्वाहा।।

इस मंत्र को प्रयोग करने से पूर्व दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय शंखाहुली सवा तोले की मात्रा में लेकर उपरोक्त मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित कर बंध्य स्त्री को पिलानी चाहिए। इस प्रकार अभिमंत्रित किए हुए शंखपुष्पी के ताजे रस को नियम से एक सप्ताह तक पिलाना चाहिए और आठवें दिन सहवास करें तो गर्भधारण की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है।

कष्ट दूर करने के लिए

जाती हुई अर्थी के नीचे एक बार निकलें और कहें—हमारा ताप, दुख, रोग, शोक तथा मुसीबत साथ ले जाना। ऐसा कहकर अर्थी की विपरीत दिशा में दूर तक चले जाएं।

दुर्भाग्य दूर करने के लिए

श्रावण के महीने में जब पहली बरसात हो, तब परनाले से बहते पानी से स्नान करने से दुर्भाग्य दूर होता है।

रूहानी अमल

रूहानी अमर इस्लामी तंत्र का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। रूहानी अमल वे आसान टोटके हैं, जिनकी प्रयोग विधि जटिल न होकर सरल होते हुए भी सर्व कार्यसिद्धि हेतु अत्यंत उपयोगी है।

किसी भी प्रकार की परेशानियों से मुक्ति हेतु अथवा किसी भी मनोकामना की सिद्धि हेतु जहां दुसाध्य तंत्र प्रयोग अथवा साधनाएं निष्फल हो जाती हैं, वहीं कभी-कभी उनके स्थान पर ये आसान तथा छोटे-छोटे रूहानी अमल आश्चर्यजनक फल प्रदान कर जाते हैं।

इन रूहानी अमल को आजमाने से पूर्व यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि श्रद्धा तथा विश्वास के अभाव में इन अमलात को प्रयोग में लाने का कोई औचित्य नहीं है।

भूली हुई वस्तु याद आने के लिए

यदि आप कोई वस्तु कहीं रखकर भूल गए हैं और अब आपको याद नहीं आ रही है तो आपको चाहिए कि एक कपड़े में सात गिरह लगा लें। इसके बाद सूरः अलम् नशरह (पारा 30) एक एक बार पढ़कर एक एक गिरह खोलते जाएं। सात बार में सातवीं गिरह खुल जाएगी और इंशाअल्लाह वह खोई हुई या भूली हुई वस्तु याद आ जाएगी।

सफर में कामयाबी के लिए अमल

सफर में जाने से पहले वुजू करके इस्मे आजम या हफीजु नौ सौ अठानवें बार पढ़कर सफर के लिए जाएं। शुरू व अंत में दो दो बार दरुद शरीफ पढ़ें। अल्लाह के हुक्म से आराम व इत्मीनान से सफर खत्म होगा और जिस मकसद के लिए सफर को जा रहे हैं, उसमें कामयाबी मिलेगी।

फतहमन्दी के लिए अमल

किसी अभियान पर जाते समय सूरः फातिहा बिस्मिल्लाह सहित इस तरह पढ़ें कि हर बार इहदिनस्तिरातल मुस्तकीम तक ही की तकरीर करें। इसके बाद आगे को पढ़कर खत्म करें। इसे पढ़ने के बाद घर में उस काम का इरादा करके निकल जाएं, इंशा अल्लाह उस काम में फतह देगी।

घर की सुरक्षा हेतु अमल

रात को सोने से पहले तीन बार आयतल कुर्सी बिस्मिल्लाह सहित पढ़कर तीन बार जोर से ताली बजाएं कि ताली की आवाज पूरे मकान में गूंज जाए। इंशाअल्लाह वह मकान चोरों व डाकुओं के प्रकोप से बचा रहेगा। बहुत से लोगों का इस अमल पर विश्वास है। अल्लाह के पाक फरिश्ते ऐसे घर की देख-भाल करते हैं।

खेत की सुरक्षा हेतु अमल

यदि किसी के खेत को जानवर खाते हों या खेत को खराब कर जाते हों तो दरिया की पाक रेत पर वुजू करके चार बार आयतल कुर्सी पढ़कर यह

रेत थोड़ी सी खेत के चारों कोनों में डाल दें। अल्लाह के हुक्म से खेती पूरी तरह महफूज रहेगी, लेकिन इसके लिए विश्वास और भरोसा होना शर्त है। इस अमल के बाद आपकी खेती को न तो जंगली जानवर और न दुश्मन ही किसी प्रकार का नुकसान पहुंचा सकेंगे।

भूली हुई वस्तु याद आ जाए अमल

यदि कोई चीज किसी जगह पर रखकर भूल गए हैं और वह याद न आ रही हो तो इसके लिए आयत–इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊन– पढ़ना शुरू कर दें। इसके पढ़ने की कोई संख्या नहीं है, जब तक भूली हुई चीज याद न आए, बराबर पढ़ते ही रहें। इंशाअल्लाह वह चीज याद आ जाएगी और आपको मिल जाएगी। इस अमल से चोरी हुई चीज भी कभी कभी मिल जाती है।

अनाज में वृद्धि के लिए अमल

किसान जब खेत से अनाज लाकर दूसरी जगह रखें तो पहले यह अमल करें कि इस अनाज में से मुट्ठी भर अनाज लेकर उस पर सात बार आयतुल कुर्सी पढ़कर दम करें और फिर उस अनाज को जिस पर मुट्ठी में लेकर अमल पढ़ा है, पहली बार उस जगह डाल दें, जहां अनाज जमा होता है और फिर अनाज लाकर वहां जमा करते जाएं। अल्लाह के हुक्म से इस अनाज में बरकत होगी। यदि अनाज दस बीस मन होता है तो वह 25 या 30 मन से भी अधिक हो जाएगा।

मिरगी से बचाव हेतु अमल

जिसे मिरगी की बीमारी हो और वह बेहोश हो जाता है तो उसके सीधे कान में अजान और उल्टे कान में इकामत देनी चाहिए। इसी प्रकार सात या ग्यारह बार करने पर रोग खत्म हो जाता है, वरना मर्ज में कमी तो अवश्य हो जाती है।

मुकदमें में सफलता प्राप्ति हेतु अमल

यदि कोई मुकदमें में फंस जाए तो जुहर की नमाज के बाद तीन या सात आदमी वुजू करके बैठकर 12 हजार बार यह आयत पढ़ें–

व फवजा इहदी इलल्लाह इन्नल्लाह बसीरूम बिलाइबाद।

शुरू व बाद में 11-12 बार दरुद शरीफ पढ़ें। हर आदमी पढ़ते-पढ़ते

अगरबत्ती व लोबान की खुशबू सुलगाता जाए। हर दिन खत्म के बाद कोई भी मीठी चीज पर सूरः फातिहा पढ़कर बांट दिया करें। इंशा अल्लाह उस मुकदमें से नजात हो जाएगी।

गैब से रोजी हेतु अमल

जो आदमी सूरः काफिरून (पारा-30) और सूरः नसर (पारा-30) मिलाकर बीस दिन तक पढ़े और इसे लगातार पढ़ता रहे तो उसे गैब से रोजी मिलेगी। इसे सुबह की नमाज के बाद पढ़ा करें।

कानों का बहरापन दूर करने हेतु अमल

यदि किसी को ऊंचा सुनाई देता हो तो रोगन बादाम लेकर वुजू करके पांच सौ बार या समीउन पढ़कर दम करे। बिस्मिल्लाह शरीफ पहली बार ही शुरू में पढ़े। फिर वह तेल सोते समय एक-एक बूंद कानों में डाले।

सीधी राह पाने के लिए अमल

जब आदमी अपनी राह भूल जाता है तो उसे चाहिए कि अजान पढ़े, फिर अल्लाह का नाम लेकर किसी एक दिशा की ओर चलने लगे। इंशाअल्लाह वही उसकी सीधी राह होगी।

बुखार-जाड़े से बचने के लिए अमल

यदि कोई बुखार जाड़े के कारण परेशान हो तो उसे चाहिए कि सात तार नीले डोरे को लेकर उनको बंट ले, फिर सुबह की नमाज पढ़े। नमाज के बाद सूरः अलम नसरह पढ़े और जिस स्थान पर आए, डोरे में एक गिरह लगा दे। इस सूरः में आठ क आए हैं। इस प्रकार आठ गिरह होंगी। जिसे बुखार आता हो, उस रोगी की उल्टी कलाई में बांधें। बुखार व जाड़ा चला जाएगा। यदि सिर व कमर में दर्द हो या किसी और जगह पर दर्द हो तो यह गंडा उस जगह पर बांध दें, दर्द जाता रहेगा।

ऊपरी बाधा के निवारण हेतु अमल

यदि किसी मकान में जिन्न या आत्माओं का खतरा हो और घर के लोग इनके कारण भयभीत रहते हों तो पांच कोरी ठीकरियां लेकर अस्र की नमाज के बाद हर ठीकरी पर पांच-पांच बार सूरः वल अस्त्र पढ़कर चार ठीकरियां

मकान के चारों कोनों में और एक ठीकरी सेहन में दफन कर दें। अल्लाह ने चाहा तो वह मकान हर प्रकार की बलाओं से सुरक्षित रहेगा।

विशिष्ट इस्लामिक अमल

"अमल" शब्द का शाब्दिक अर्थ है कार्य, पुण्य कर्म, लोकाचार आदि। जिस प्रकार से हिन्दुओं के जन्म शास्त्र में तंत्र-मंत्र की सहायता से मनोकामनाओं की पूर्ति की जाती है, ठीक उसी प्रकार से अच्छे अमल, गंडे तावीज नक्श फलीते तथा कुरआन की आयतों के द्वारा मनोकामना सिद्धि के अतिरिक्त कष्टों का निवारण भी किया जाता है। निम्नांकित विशिष्ट इस्लामिक अमलों का प्रयोग श्रद्धा के साथ करके अभीष्ट की सिद्धि संभव है।

नींद कम आने का अमल

सोते समय यह आयत पढ़ें, यदि नींद कम आती है तो अधिक आने लगेगी—

इन्नल्लाहि व मलाइकतिहि युसल्लुना अलन्नबियि्य,
या अययुहल्लजीना आमनु सल्लू अलयहि व सल्लिम् तस्लीमा।

जिन्नों को भगाने का अमल

जिस स्थान पर मकान या इमारत में जिन्न हों और उनसे लोगों को परेशानी हो तो उस स्थान पर जोर जोर से अजान दें। जिन्न वहां से भाग जाएंगे।

मिरगी रोग दूर करने का अमल

पाक-साफ पानी पर सूरः फातिहा व आयतल कुर्सी और पांच आयतें पहले कुल ऊहिया पढ़कर उसके मुंह पर मारें। अल्लाह के हुक्म से आराम होगा। यदि वह पानी घर में छिड़क देगा तो आसेब घर से निकलकर भाग जाएगा और फिर न जाएगा।

आंधी के नुकसान से बचने हेतु अमल

जब आंधी जोर से चले और किसी प्रकार के नुकसान का खतरा हो तो उस समय सूरः इख्लास व सूरः नास तीन-तीन बार पढ़ना चाहिए।

क्रोध समाप्ति का अमल

यदि कोई व्यक्ति क्रोध और गुस्से से भरा हो तो उसे चाहिए कि वह निम्न मंत्र पढ़े–

आऊजु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम

उपरोक्त अमल को पढ़ने से इंशाअल्लाह गुस्सा दूर हो जाएगा और शैतानी फरेबों से भी निजात मिलेगी।

बुरे स्वभाव से बचने का अमल

यदि कोई आदमी बुरे स्वभाव का हो या तेज कलाम हो तो उसे चाहिए कि अधिकता से इस्तगफार पढ़ा करे अर्थात् यूं पढ़े–

अस्तगफिरूल्लाहा रब्बी मिनकुल्ली जम्बिंव वअतूबु अलयहि

चोरी का माल मिल जाने का अमल

चोरी का माल मिलने के लिए नबी करीम सल्ल पर दरुद भेजकर यह पढ़ें–

लाहवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अजीम

माल/संतान की सुरक्षा के लिए अमल

जो आदमी आयतुल कुर्सी को अपने माल या अपनी औलाद पर पढ़कर दम करे या लिखकर गले में लटका दे तो वो शैतानी हमलों से व बला से सदा बचा रहेगा।

जिन्न/आसेब से बचाव हेतु अमल

यदि आयतुल कुर्सी को लिखकर घर में दाखिल होने वाले दरवाजे पर लटका दी जाए या हर दिन तीन बार पढ़कर घर में फूंक दें तो जिन्न व भूत उस घर में कभी भी दाखिल न हो सकेंगे।

हर बीमारी से निजात का अमल

सूरः फातिहा हर बीमारी की दवा है। फज्र की नमाज के फर्ज व सुन्नतों के बीच 41 बार पढ़कर रोगी के ऊपर दम कर दें। हर बीमारी दूर हो जाएगी।

भूख व तंगहाली से बचाव का अमल

भूख व तंगी दूर करने के लिए "ला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अजीम" पढ़ना बड़ा जरूरी है। जो भी पढ़ेगा, थोड़े ही दिनों में मालामाल हो जाएगा।

दुख, परेशानी व कैद से छुटकारा पाने हेतु अमल

हर प्रकार की बीमारी, दुख, परेशानी और कैद से नजात हासिल करने के लिए नीचे लिखी आयतें करीमा को दिल की गहराई के साथ पढ़ें। यह आयत हर रोग के लिए बड़ी अकसीर है—

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तु मिनज्जालिमीन

आग बुझाने के लिए अमल

जब कोई आग लगी हुई देखें तो अल्लाहु अकबर "बार बार कहें"। आग बुझ जाएगी। उलेमा ने इसे बड़ा कामयाब अमल बताया है।

दिमागी कमजोरी दूर करने का अमल

कुछ लोग घरेलू हालात, आर्थिक स्थिति और बच्चों के कारण मानसिक परेशानी का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोगों के मस्तिष्क में सख्त टेंशन होती है, उन्हें इस कारण हरेक पर गुस्सा आ जाता है। कभी-कभी ऐसे रोगियों की दिमागी रग फट जाने से मौत भी हो जाती है।

ऐसे दिमागी रोगियों को अपनी यह बीमारी खत्म करने के लिए अपने खाने में नमक की मात्रा कम कर देनी चाहिए।

इलाज के लिए किसी मोमी कागज के एक टुकड़े पर जाफरान और गुलाब के अर्क से—

"अर्रजा अत अमा नवील"

लिखकर एक पौंड शहद में डाल दें। यह शहद एक-एक चम्मच तीन बार रोजाना खाएं। जब तक सेहत पूरी तरह ठीक न हो जाए, इस इलाज को न छोड़ें।

हर कार्य में सफलता हेतु अमल

यदि कोई आदमी यह चाहे कि उसकी सारी की सारी मनोकामनाएं पूरी हो आएं तो उसको चाहिए कि वह पांच साल तक बिना किसी नागा इस अमल

को पढ़े और जब तक अमल खत्म न हो जाए, एक दिन की भी नागा न करे, वरना सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।

अमल यह है—

"अल्लाहु हू हू हू"

इस इल्म मुबारक को एक हजार बार दरिया में अपने पांव लटकाए पढ़ता रहे। इस बीच में यदि कोई डरावनी शक्ल नजर आए तो किसी हाल में भी डरना नहीं चाहिए और किसी डर व आतंक को दिल में जगह न दे।

लाभ प्राप्ति के लिए अमल

यदि यह देखा जाए कि किसी कारण अनाज का भाव कम हो गया है और बराबर नुकसान होता जा रहा है तो परेशान होने की जरूरत नहीं और न अपने अनाज को सस्ते दामों में बेचने की जरूरत है, बल्कि खुदा पर भरोसा करते हुए इस अमल को शुरू कर दें। यदि खुदा ने चाहा तो गैब से अनाज की बहुत अधिक मांग पैदा कर देगा, जिससे आपको लाभ ही लाभ होता चला जाएगा। इस अमल को पांच दिन तक बराबर पढ़ना होगा।

"अजर फी या रहीम या करीम या गफूर या सखी"

दौलत कमाने के लिए अमल

यदि कोई गरीब आदमी हो और वह यह चाहे कि मैं मालदार बन जाऊं तो उसे सब्र और हिम्मत से काम लेकर अल्लाह की मदद का इंतजार करना चाहिए।

यह सच है कि तिजारत से लाभ-हानि दोनों ही होते हैं, लेकिन तिजारत के साथ यदि आप इस वजीफे को भी पढ़ना शुरू कर दें तो देखते ही देखते उन्नति होने लगेगी और लोग यही समझेंगे कि यह सारा लाभ तिजारत ही के जरिए हो रहा है।

लेकिन असल में यह इतना ढेर-सारा लाभ तो आपके इस अमल द्वारा होगा, उसी की बरकत से आमिल बहुत जल्द अमीर और दौलतमंद बन जाएगा। अमल यह है—

उ अतीतू गनी या मौला या मौली उ अतीतू गनी

हर दिन तिजारत का काम शुरू करने से पहले 777 बार इस अमल को पढ़ लिया करें। इसके बाद अपना काम शुरू कर दें। इस अमल का कोई समय निर्धारित नहीं है।

जब तक इस अमल को करते रहोगे, इंशा अल्लाह उस समय तक लगातार

लाभ उठाते रहोगे और दिन-प्रतिदिन तरक्की करके दौलत जमा करते रहोगे।

दुख-दर्द निवारक अमल

जो आदमी बहुत अधिक दुख-दर्द का शिकार हो या उसका किसी ऐसी मुहिम से सामना हो जिसका सुधार उसकी ताकत से बाहर हो तो उसे चाहिए कि सुबह की नमाज पढ़कर एक सौ बार यह पढ़े—

ला हवला वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अजीम या हय्यु या कयूमु या फरदु या खातिरू या अ-ह-दु या स-म-दु।

धनवान बनने का अमल

दौलतमंद बनने के लिए सुबह की फज्र नमाज के बाद रोजाना 25 बार सूरः नसर दिल की गहराई के साथ कुछ दिन तक पढ़ें। इसके पढ़ने से गरीबी दूर हो जाएगी और वह मालामाल हो जाएगा।

गरीबी दूर करने का अमल

जो आदमी अपनी गरीबी से तंग आ गया हो, उसे चाहिए कि अधिकांश समय में यह दुआ पढ़ता रहे। खुदा के हुक्म से उसकी तंगी आसानी से खत्म हो जाएगी और उसकी गरीबी मालदारी में बदल जाएगी—

व मा काइमिल इज्ज वलमुल्का पल बकाई या जुल जलाली वल जवदि वल फजली वल अताया व जुल आशिल हीदु या फजालु ललिमा युरीद।

दुखों से निजात पाना

जो आदमी हर सुबह और शाम यह कलिमा सात सात बार पढ़ेगा, अल्लाह उसे दुनिया व आखिरत के दुखों से नजात देगा—

हसबियल्लाहु ला इलाहा इल्लाहू अलयहि तवकल्लतु व हुवा रब्बुल अर्शिल अजीम।

आंधी रोकने का टोटका

दीवार पर सकोरा गूंधे गए आटे से चिपकाकर बंद कर दिया जाता है। विवाह के अवसर पर महिलाएं आंधी से सुरक्षित रहने के लिए इस टोटके को करती हैं। अगर घर के सामने कोई टोना-टोटका करता हो तो अपने भवन के मुख्य द्वार पर कुछ काली गुंजाएं काले वस्त्र में बांधकर उस पर काजल लगाकर लटका देनी चाहिए।

कार्यसिद्धि हेतु

किसी भी कार्यसिद्धि के लिए घर से बाहर जाने से पूर्व घर की दहलीज के बाहर ''लाल घुंघची'' को रखकर अपना कार्य बोलते हुए घुंघची पर बलपूर्वक पैर रखकर आप कार्य के लिए निकल जाएं, अवश्य ही कार्यसिद्धि होगी।

व्यापार वृद्धि हेतु

अगर व्यवसाय स्थल पर ग्राहक कम आ रहे हों, किसी ने आपके व्यवसाय को बांध दिया हो तो रविवार की दोपहर को पांच कागजी पीले नींबू काटकर व्यवसाय स्थल पर रखकर उसके साथ एक मुट्ठी काली मिर्च, एक मुट्ठी.पीली सरसों रख दें। अगले दिन जब दुकान या व्यवसाय स्थल खोलें तो इन सभी सामान को दूर वीराने में जाकर कच्ची धरती में गाड़ दें। इस प्रयोग से व्यवसाय पर किया गया तांत्रिक प्रयोग तुरंत समाप्त हो जाता है।

वर्षा रोकने का टोटका

एक चमकीले काले डोरे में ग्यारह काने व्यक्तियों के नाम उच्चारणपूर्वक लेकर गांठें लगाई जाती हैं। उस डोरे में बंधे कानों को ''वर्षा बंद करो'' यह कहकर वर्षा के जल में फेंक दिया जाता है।

विवाह के अवसर पर वर्षा बंद न होने पर पूड़ी एक कुल्हड़ में रखकर भूमि में दबा दी जाती है।

वर्षा लाने के टोटके

नारियां पुरुष वेश में घरों से बाहर सोते हुए किसानों के ऊपर पानी फेंकती हैं।

वशीकरण टोटका

काली गुंजा के कुछ दाने शुद्ध मधु में डुबोकर रख दें तथा इस प्रक्रिया के समय जिस व्यक्ति का वशीकरण करना हो, उसका स्मरण करते रहें।

दम्पत्ति के झगड़े दूर करने का टोटका

रात्रि को शयन करते समय पत्नी अपने पलंग पर देशी कर्पूर तथा पति के पलंग पर कामिया सिंदूर रखे। प्रातः सूर्योदय के समय पति देशी कर्पूर को

जला दे और पत्नी सिंदूर को भवन में छिटका दे। इस टोटके से कुछ ही दिनों में कलह समाप्त हो जाती है।

धनहानि होने पर

अगर बार-बार धनहानि हो रही हो तो अपने गल्ले के नीचे काली गुंजा के कुछ दाने डाल देने चाहिएं। ऐसा करने से धन की आमद होती रहेगी तथा धन की हानि भी नहीं होगी।

घर से गया व्यक्ति वापस आए

एक नई हांडी जो पानी में न भीगी हो, उसमें एक ताला-ताली लगाकर रख दें और वायुदेव से अमुक नाम, गोत्र, स्थान, निवासी व्यक्ति का पता लगाने की प्रार्थना करें। इस टोटके से घर से गया व्यक्ति शीघ्र आ जाएगा।

नए उद्योग में सफलता हेतु टोटका

पुराने उद्योग में सफलता पाकर उद्योगपति या व्यापारी नया उद्योग प्रारंभ करना चाहते हैं। अकसर ऐसा देखा गया है कि पुराना उद्योग तो अपनी गति से चलता रहता है, लेकिन नए उद्योग में परेशानी शुरू हो जाती है और भिन्न भिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। उनकी निवृत्ति हेतु निम्न टोटका आजमाएं।

विधि : शनिवार के दिन पुराने कार्यालय से कोई भी लोहे की वस्तु लाएं। उसे रखने से पहले उस स्थान पर ग्यारह दाने वाले उड़द दाल दें। लोहे की वस्तु और काले उड़द के दाने निश्चित स्थान पर रख दें। ध्यान रहे कि उन वस्तुओं को दोबारा आगे-पीछे न करें। ऐसा करने से नए उद्योग की स्थिति पुराने उद्योग जैसी ही हो जाएगी और निःसन्देह सफलता मिलेगी।

साझेदारी में सफलता के लिए टोटका

अकसर ऐसा होता है कि साझेदारी में कुछ सालों के पश्चात् दंगे-फसाद की स्थिति पैदा हो जाती है। तनाव और टकराव उत्पन्न होते रहते हैं। साझेदारी दो व्यक्तियों में हो या कई व्यक्तियों के बीच, उसे टोटकों से अति उत्तम बना सकते हैं और सफलता पा सकते हैं।

विधि : दीपावली को रात्रि के समय कच्चे धागे को साझेदार का नाम लेकर रस्सी की तरह बंटने के पश्चात् रोली के दो-चार छींटे लगाएं और लक्ष्मी की उपासना करें। तत्पश्चात् व्यापार स्थल पर कहीं भी टांग दें। इस क्रिया

को प्रत्येक दीपावली वाले दिन करते रहें—अन्यथा प्रभाव निष्फल हो जाएगा। ऐसा करने से साझेदारी बनी रहेगी।

व्यक्तिगत आलस्य परित्याग हेतु टोटका

मेरे पिताजी के एक दोस्त हैं—श्री रघुनाथ प्रसाद जी। उनका सागरपुर में अच्छा-खासा व्यापार है। विभिन्न प्रकार के प्रयासों के बावजूद लाभ की स्थिति नहीं बन पा रही थी। उन्होंने बताया कि आलस्य के कारण व्यापार में हानि का सामना करना पड़ रहा है। बहुत प्रयास के बाद भी कार्य को अंजाम नहीं दे पाता। ऐसी परिस्थिति से मुक्ति के लिए एक संत ने एक टोटका बताया था। वह निम्न प्रकार है।

विधि : मंगलवार को लाल मूंगा (याकूत) लाएं और उसे तांबे या सोने में उसी दिन बनवाकर अनामिका उंगली में "रामदूताय हनुमान नमः" मंत्र का 108 बार जप कर धारण कर लें। अंततः चालीस दिनों के अन्दर आलस्य से मुक्ति मिल जाएगी और विशेष लाभ होगा।

बेरोजगारी दूर करने हेतु या काम न मिलने पर टोटका

अगर आपको नौकरी या काम नहीं मिल रहा है तो घबराएं नहीं, क्योंकि जीवन में जिस विषम वस्तु के पीछे भागते हैं, वह उतनी ही दूर भागती नजर आती है और जिस वस्तु की जरूरत नहीं होती, वह सामने होती है। यह सब तो प्रकृति का नियम है। ऐसे प्रकृति नियमों से अगर आपको परेशानी है तो सरल टोटका अपनाएं।

विधि : एक दागरहित बड़ा नींबू लें और चौराहे पर बारह बजे से पहले जाकर, उसके चार हिस्से कर लें और चारों दिशाओं में दूर-दूर फेंक दें। फलस्वरूप बेरोजगारी की समस्या और काम न मिलने की समस्या समाप्त हो जाएगी।

बीमारी दूर करने हेतु टोटका

क्या आपको किसी बीमारी से मुक्ति नहीं मिल रही? दवा असर नहीं करती? स्वास्थ्य की इच्छा रखते हुए स्वस्थ नहीं हो पा रहे?

विधि : पुष्य नक्षत्र में सहदेवी की जड़ लाकर अपने पास रखें। बीमारी से मुक्ति मिलेगी।

आलस्य मुक्ति के लिए टोटका (एक संत प्रदत्त)

कटेरी की जड़ शहद में पीसकर केवल सूंघने मात्र से ही आलस्य दूर हो जाता है। यह मेरा स्वयं का आजमाया हुआ टोटका है।

कार्य में अधिकतर लाभ हेतु टोटका

क्या आपके अधिकतर कार्य असफल होते हैं? क्या आपको अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है? क्या आप थोड़े परिश्रम से अधिक लाभ पाना चाहते हैं? ऐसी परिस्थिति में निम्न टोटके का प्रयोग करें—लाभ होगा।

विधि : बारह बजे से पहले सूर्य को नमन करें और कच्चे धागे में "ॐ गं गणपतये नमः" को पढ़ते हुए दूर-दूर पर सात गांठ लगाएं। तत्पश्चात् तावीज में भरकर सामने वाली जेब में रख लें, तब बिगड़ा हुआ काम बन जाएगा। अधिकतर कार्य सफल होंगे। विघ्न-बाधाओं से भी मुक्ति मिलेगी थोड़े परिश्रम से ज्यादा लाभ मिलेगा।

नोटः- चमत्कारी लाभ हेतु निम्न मंत्र का भी जाप करते रहें—

ॐ श्री हनुमते नमः।

ॐ नमो हारी संकट मरकटाय स्वाहा।

ॐ श्री पवननन्दाय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आंजनाय स्वाहा।

ॐ महाबलाय स्वाहा।

ॐ हूं पवननंदाय स्वाहा।

ॐ हनुमान की जय।

ॐ हुं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्।

ॐ हनुमन्ते रक्ष सदा।

ॐ हनुमन्ते नमः।।

ॐ अंजनों सुतायं विग्रहे वायुपुत्राय धिमहि तन्नो मारुति प्रचोद्यात्।

इष्ट मित्र

कुछ लोगों की यह इच्छा होती है कि उनके इष्ट मित्रों व पड़ौसियों का उनके प्रति आकर्षण, स्नेह और सम्मान सदैव बना रहे तो रविवार के दिन फूल वाली लौंग लेकर एक-एक लौंग उनका नाम लेकर आग में डाल दें। इस प्रकार प्रत्येक रविवार करते रहें। उनके मन में आपके प्रति कोई दुर्भावना नहीं आएगी।

उम्मीदवारी

किसी पद या किसी चुनाव में विजय पाने के लिए जिस दिन निर्णय होने वाला है, उस दिन अलसी के तेल में एक सफेद सूती कपड़े का टुकड़ा भिगोकर जला दें। आपका नाम चुन लिया जाएगा। इस बात का ध्यान रखें कि कपड़े का टुकड़ा साफ, शुद्ध और पवित्र हो। उसमें किसी भी प्रकार की गंदगी आपका काम बिगाड़ सकती है।

अवांछित मुसीबतों से मुक्ति

कोई अवांछित वस्तु व्यापार, मैत्री के द्वारा आपके पास, आपके घर में न आ पाए जिससे कि आपको कानूनी चंगुल में फंसना पड़े, इससे बचाव के लिए आप हर मास के प्रथम रविवार को लोबान की धूनी अपने निवास और व्यापार स्थल पर दें। ऐसा करने से अनजाने में चोरी की वस्तु खरीदने या तस्करी के माल को ले जाने के अपराध में शामिल न होने पाएंगे। कोई आपको धोखे में रखकर इस प्रकार का काम आपसे नहीं करा सकता है, किंतु अगर आप जानते हुए ऐसा करते हैं और यह उपाय करते हैं तो इसका परिणाम उल्टा ही होगा।

दुखदायी परिजन

कोई अत्यंत निकट का आत्मीय या परिजन अचानक अत्यंत पीड़ादायक हो गया है और आप उससे एकदम तंग आ गए हैं। उससे छुटकारा पाना चाहते हैं, तो जितने अक्षर उसके नाम में हैं, उतने मखाने लेकर उन पर घर का काजल लगाकर आग में जला डालें। आप उससे शीघ्र मुक्ति पा जाएंगे।

पुनः संबंध बनाने हेतु

कुछ संबंध ऐसे होते हैं, जो बनने के बाद टूट जाते हैं। आप ऐसे संबंध को फिर जोड़ना चाहते हैं, पर संबंधित व्यक्ति आपकी उपेक्षा कर रहा है तो उसको अनुकूल बनाने के लिए केले के हरे पत्ते पर लाल चंदन घिसकर अनामिका से उसका नाम लिखकर उपरोक्त विधि से ही सम्पूर्ण करें। टूटा संबंध जुड़ जाएगा।

पति वशीकरण के लिए

जिन स्त्रियों के पति बात-बेबात में झगड़ते रहते हों या फिर कुसंगति के

कारण किसी गलत स्त्री या व्यक्ति के चंगुल में फंस गए हों तो यह निम्न टोटका प्रयोग में लाएं। प्रभुकृपा से हर समस्या सुलझ जाएगी और जीवन सुखमय हो जाएगा।

बृहस्पतिवार और शुक्रवार की रात बारह बजे पति की चोटी (शिखा) के स्थान से कुछ बाल चुपचाप काट लें और उन्हें अपने पास रख लें। पति की बुद्धि सुधर जाएगी और वह वश में हो जाएगा। अगर वह फिर भी वश में न हो तो उन बालों को जला दें और बाहर फेंककर पैरों से रगड़ दें। इस प्रकार करने से वह अवश्य ठीक हो जाएगा।

पुनः संबंध हेतु

प्रायः देखा गया है कि विवाह तक तो संबंध मधुर होता है, पर विवाह के बाद संबंधों में कटुता आ जाती है। इस कटुता में दोष लगभग दोनों ही पक्षों में समान रहता है, अगर विवाह के पश्चात् संबंधों में अति कटुता आ गई हो और स्थिति संबंध विच्छेद तक पहुंच गई हो तो निम्न क्रिया करें–

किसी भी बरगद का हरा पत्ता ले लें। इसके बाद लाल चंदन को गंगा जल में घिसकर उस व्यक्ति विशेष का नाम लिखें। उसके ऊपर लाल गुलाब की कुछ पत्तियां रख दें। इन सबको बारीक पीस लें। भली-भांति पीसकर नाम में जितने अक्षर हों, उतनी ही गोलियां बना लें। अब तक एक गोली नियम से जिसका भी वशीकरण करना है, उसके घर के मुख्य द्वार पर फेंक दें। शीघ्र ही विछोह समाप्त होगा और मिलन होगा। प्रिय मित्रो! अगर आप निम्न मंत्र का जप भी एक निश्चित संख्या में करते हैं तो शीघ्र लाभ होगा। मंत्र इस प्रकार है–

"मोहिनी-सोहिनी बचके-मारो। चलो मोहिनी, जग मोहो, संसार मोहो। राजा मोहो, प्रजा मोहो। सभा के बीच, पंडित मोहो। इंद्र की परी, दोहाई गौरा पार्वती महादेव की। ॐ क्रिया-क्रिया-क्रिया। पट्ट-पट्ट-पट्ट स्वाहा।"

– यदि कोई महिला जिसे संतान नहीं हो रही हो तो उसे चाहिए कि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में बरगद की जड़ को लेकर धागे में बांधकर अपनी भुजा पर धारण करे तो संतान लाभ हो सकता है।

– बार-बार प्रयास करने पर भी यदि आपका कोई काम नहीं बन रहा हो तो किसी ऐसे मंदिर को देखें जहां राम-लक्ष्मण-जानकीजी की मूर्तियां हों तथा सिंदूर लगी हुई हनुमानजी की भी प्रतिमा हो। वहां जाकर

उनसे अपने कार्य होने हेतु प्रार्थना करें तथा हनुमान जी की मूर्ति से सिंदूर लेकर (अपनी अनामिका अंगुली सीधे हाथ की में लें) मां सीताजी के चरणों में लगा दें। ऐसा करने से आपका काम बन जाएगा।

– यदि रोगी व्यक्ति के रोग का कारण समझ में नहीं आ रहा हो तो यह टोटका करें। मिट्टी के सकोरे में हलुवा रख दें। उस पर कोयला डाल दें, कोयले के ऊपर कच्चे चावल डाल दें। इस सकोरे को रोगी के ऊपर सात बार घुमायें। इसमें बरगद और पीपल की छोटी टहनियां रख दें और एक अंडा रख लें, फिर इस सकोरे को लेकर चुपचाप किसी पेड़ के पास जायें और इसे वहां रखकर अंडा उठाकर इसी सकोरे पर मार कर फोड़ दें। सीधे घर आ जायें। रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जायेगा।

– मंगलवार को सोकर बिस्तर से उठते ही उसे तीन बार कोसें, फिर सफेद कागज पर काली स्याही से उस व्यक्ति का नाम लिखें, फिर उस कागज को काले धागे में लपेटकर रख लें; फिर शाम के समय उस कागज को पीपल की जड़ में दबा दें। ऐसा करने से विरोधी आपका विरोध करना छोड़ देगा है।

– गूगल, गंधक, लोहबान, लाख, सर्प की केंचुली तथा पीड़ित व्यक्ति के सिर के बाल—इन सबको पीसकर चूर्ण बना लें और इनको अग्नि में जलाकर उस व्यक्ति को धुआं दें तो भूत-प्रेत बाधा हट जाती है अथवा गाय के गोबर का उपला लेकर लकड़ी के साथ जलाकर उसकी राख ले लें, पानी में भिगोकर एक लड्डू सा बना लें, उस लड्डू में तांबे का सिक्का तथा लोहे की एक कील उसी में लगा दें, उस लड्डू पर सात बिंदी काजल की तथा सात बिंदी रोली की लगा दें। इस लड्डू को सूर्यास्त के समय पीड़ित व्यक्ति पर 21 बार घुमाकर चौराहे पर रख आयें।

– धनलाभ के लिये यह टोटका करें। पहले अपने आस-पास श्यामा तुलसी के पौधे को खोजें। गुरुवार के दिन श्यामा तुलसी के आस-पास उग आई घास आदि को लेकर उसे पीले कपड़े में बांध दें। लक्ष्मी देवी का स्मरण करें और उस पोटली को धूप दीप देकर अपने व्यापार स्थल पर रखें। व्यापार में वृद्धि होती है।

– अगर प्रसव नहीं हो रहा हो, स्त्री को प्रसव वेदना से कष्ट हो रहा हो तो नीम की जड़ लाकर स्त्री की कमर पर या रेशमी धागे से स्त्री के बाये हाथ में बांधने से प्रसव सरलतापूर्वक हो जाता है।

— जानकार लोगों का कहना है कि अगर उल्लू के नाखून को ताबीज में रखकर बच्चों के गले में पहना दिया जाये तो उसे भूत-प्रेत बाधा नहीं आती। उल्लू के पंख सिरहाने रखने से बच्चा सोते में डरता नहीं है।
— घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगा जल से धो लें। इसके बाद स्वास्तिक बनाएं। उस पर चने की दाल तथा थोड़ा सा गुड़ रख दें। इसके बाद स्वास्तिक को बार-बार देखें। अगर वह खराब हो जाए, तो सामान को इकट्ठा कर के जल प्रवाह करें।
— अशोक वृक्ष के सात पत्ते लेकर उनको मंदिर में रखकर पूजा करें। जब वे मुरझाने लगें, तो नये पत्ते रख दें और पुराने को पीपल के नीचे रख आएं, तो घर में सदा सुख-शांति रहेगी।
— रात को दूध को सिरहाने रख कर सुबह उसका घर में छिड़काव करें तो घर में सुख-शांति रहेगी।
— जिस परिवार में निरंतर लड़ाई चलती हो, उस परिवार के लिये यह प्रयोग अति प्रभावशाली है—रवि पुष्य योग में प्राप्त गुड़मार की जड़ को मकान के चारों तरफ गाड़ दिया जाये तो आंतरिक कलह का शमन होता है। यह सिद्ध प्रयोग है।
— चन्द्रग्रहण में सफेद चीते की जड़ उखाड़कर लायें, शहद में उसे पीसकर तिलक करें, घर में सुख-शान्ति, समृद्धि व सौभाग्य होगा।
— पुष्य नक्षत्र में सफेद आक की जड़ उखाड़ कर दाहिनी भुजा में बांधें।
— यदि आप अपना मकान प्रयास करने पर भी नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं और आपके सभी प्रयत्न असफल हो रहे हैं तो प्रत्येक शुक्रवार को नियम से किसी भूखे व्यक्ति को भोजन कराएं और रविवार के दिन गाय को गुड़ खिलाएं। ऐसा करने से अचल संपत्ति मिलेगी।
— सोमवार के दिन थोड़ा सा सादा नमक लेकर उसे अपने सिर पर 24 बार उतार कर घर से बाहर फेंक दें तथा एक पुड़िया में नमक बांध कर अपने पास रखें तथा एक बेदाग नींबू लें और उसे भी अपने सिर पर 31 बार उतार लें तथा उसके चार बराबर टुकड़े कर लें। सायंकाल के समय किसी चौराहे पर जाकर चारों टुकड़े चारों दिशाओं में एक-एक कर फेंक आएं। इससे काम मिलने की संभावना बढ़ जाएगी।
— एक बेदाग बड़ा सा पीला नींबू लें। उसके चार बराबर-बराबर टुकड़े कर लें। दिन ढले चौराहे पर जाकर चारों दिशाओं में उन्हें फेंक दें और वापिस आ जाएं। जल्दी ही लाभ होगा।

— किसी भी सोमवार के दिन फिटकरी का एक टुकड़ा लेकर तवे प गर्म करके फुला लें, फिर उस फिटकरी के टुकड़े को सात बार सि के ऊपर से वार कर किसी गन्दे पानी में बहायें।

— कभी भी किसी काम के लिए या यात्रा पर जाते समय, एक नारिय लें। उसको हाथ में लेकर 21 बार "श्री हनुमते नमः" कह कर, धरत पर मार कर तोड़ दें। उसके जल को अपने ऊपर छिड़क लें और ग को निकाल कर बांट दें तथा स्वयं भी खाएं तो काम बन जाएगा

— दो लौंग लें, एक कपूर का टुकड़ा लें, इनको तीन बार गायत्री मंत्र पढ़क अभिमंत्रित करें। इसके बाद इन्हें जला दें, जलते समय आपका मुर पूर्व की ओर हो तथा गायत्री मंत्र का पाठ भी करते रहें।

— बुधवार को पीली कौड़ी लें, एक जोड़ा लोंग लें, एक जोड़ी छोटी इलायच तथा अपने व्यापार स्थल की एक चुटकी मिट्टी लेकर इन कौड़िय को जला दें, तो जो इनकी राख बनेगी, उस राख को एक पान व पत्ते में रख लें। तांबे का सिक्का लें, जिस में एक छेद कर लें। इस सारी सामग्री को छेद वाले सिक्के के साथ किसी बहते हुए जल मे प्रवाहित कर दें।

— कुश की जड़, बिल्व का पंचांग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर—इन सबका चूर्ण बनाकर चंदन की पीठिका पर नीचे लिखे मंत्र को लिखें। तदनन्तर पंचोपचार से पूजन करें और गौ-घृत के द्वार 44 दिनों तक प्रतिदिन हवन करें।

— नजर लगे बालक के ऊपर से सात बार फिटकरी घुमाकर चूल्हे में डाल दें। इस प्रयोग को करने से नजर उतर जाती है।

— सीपियों की माला पहनने से बालक को दांत निकलते समय परेशानी नहीं रहती है। हाथ व पांव में लोहे या तांबे का कड़ा पहना देने से दांत आसानी से आते हैं।

— ऊंट के बाल छोटे बच्चे की दाहिनी जांघ पर धागा बनाकर बांधने से वह रात में बिस्तर गीला नहीं करेगा। मंगलवार या शनिवार के दिन श्मशान से थोड़ी सी मिट्टी लाकर चांदी के ताबीज में डालें, फिर बच्चे के हाथ से पीपल के वृक्ष के नीचे दबा दें। बच्चा बिस्तर में पेशाब नहीं करेगा।

— मोरपंख को अगर ताबीज में भरकर बच्चे के गले में डाल दें तो उसे जादू-टोने की पीड़ा नहीं रहती।

— हाथी की लीद चांदी के ताबीज में भरकर यदि बालक को पहना दिया जाये तो वह भूत-प्रेत और जादू-टोने से सुरक्षित रहेगा।

— जिस व्यक्ति के बच्चे जीवित नहीं रहते हों, उसे जब भी बच्चा हो तो इस खुशी के अवसर पर मिठाई की जगह अपने परिचितों एवं रिश्तेदारों को नमकीन बांटनी चाहिये। बच्चे जन्म लेकर मरते हों तो जन्म लेने से पांच वर्ष तक बच्चे को पुराने कपड़े पहनायें।

— काले कुत्ते का एक बाल तथा अकरकरा का एक दाना कपड़े में सिलकर गले में पहनाने से आमाशय सम्बंधी रोग तथा ज्वर दूर होता है।

— खरीया मिट्टी का यंत्र बनाकर गले में पहनाने से बच्चे का अधिक रोना कम हो जायेगा। बालक के गले में यदि भेड़िया के दांत का ताबीज पहना दिया जाये तो बाल अपस्मार (मिर्गी) रोग दूर होता है। अकरकरा की जड़ को सूत के डोरे से बांधकर बालक के गले में बांधने से बालक का मिर्गी रोग दूर हो जाता है। संभालू की जड़ पूर्व दिशा से लाकर बालक के गले में पहनाने से फोतों का छिटकना दूर होता है।

— एक शीशी में शहद भरकर उसमें 21 दाने सफेद गुंजा के डाल दें तथा इसके बाद संपुटित श्री सूक्त का पाठ करें, या कराएं। संभव हो, तो खिली हुई खील तथा कमलगट्टे से संपुटित मंत्र की 16 आहुतियों से हवन करें। इसके बाद इस शीशी को पूजा-स्थल पर रख दें।

— प्रत्येक बुधवार को एक कटोरी चावल दान में दें। चावल दान का क्रम एक वर्ष तक चले तथा गणेश जी पर एक सुपारी भी प्रत्येक बुधवार को चढ़ावें।

— श्री महालक्ष्मी का ध्यान कर मस्तक पर शुद्ध केसर का तिलक लगायें, दिन में लाभ के समाचार मिलेंगे।

— प्रत्येक शनिवार को किसी काले कुत्ते को रोटी खिलायें। धनलाभ होगा।

— लाल रंग का रिबन, तांबे के सिक्के के साथ मुख्यद्वार में बांधने से घर में सुख-शांति और धन की वृद्धि होती है।

— घर की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिये घर में सोने का चौरस सिक्का रखें। कुत्ते को दूध दें, अपने कमरे में मोरपंख रखें।

— प्रत्येक गुरुवार को तुलसी के पौधे में दूध अर्पित करने पर धनलाभ होता है।

— पीपल के वृक्ष की जड़ में सरसों के तेल का दीपक जलाकर धनलाभ की प्रार्थना करें, शीघ्र ही धनलाभ होगा।

– शुक्ल पक्ष में सोमवार के दिन एक मुट्ठी साबुत बासमती चावल को बहते हुए जल में श्री महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए डाल दें। धनलाभ होगा। कच्ची घानी के तेल के दीपक में लौंग डालकर हनुमान की आरती करें। अनिष्ट दूर होगा और धन भी प्राप्त होगा।
– एक पाटे पर चौकोर लाल कपड़ा बिछा लें। फिर अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए लाल कपड़े पर लाल चंदन का टुकड़ा, साबुत लाल गुलाब का पुष्य तथा थोड़ी रोली रक्खें, अपने इष्टदेव से बचत हेतु प्रार्थना करें तथा इन सब वस्तुओं को लाल कपड़े में बांध लें। उठा कर इस पोटली को अपनी तिजोरी, गल्ला अथवा संदूक में जहां रुपये रखते हैं, रख दें। ईश्वर की कृपा से बचत होने लगेगी। इस प्रयोग को साल में दो बार, 8 माह के अंतराल में दोहराएं।
– 22 पीपल के पत्ते लें। प्रत्येक पत्ते के ऊपर लाल चंदन से राम-राम लिखें। फिर इन पत्तों को इष्ट का ध्यान करते हुए हनुमान जी पर चढ़ा दें।
– पीपल के वृक्ष की छाया में खड़े होकर लोहे के पात्र में जल, चीनी घी एवं दूध मिलाकर उसकी जड़ में डालने से घर में चिरकाल तक सुख-समृद्धि रहती है और लक्ष्मी का वास होता है।
– घर में वास्तुदोष हो, तो चांदी की एक लुटिया लें। उसमें गंगाजल डालकर उसकी गर्दन पर कलावे में मूंगा पिरोकर बांध दें। तत्पश्चात् ढक्कन लगा दें और इसे घर की उत्तर-पूर्व दिशा में स्थापित करें।
– शुक्रवार के दिन चौराहे के मध्य भाग पर इत्र डालकर शीशी को वहीं छोड़कर आयें तो ऐसे व्यक्ति की समृद्धि बढ़ती है। नये वस्त्रों से सुसज्जित होकर पीपल के तीन पत्तों का पूजन करें, उसके पश्चात् पीपल के पत्तों को अपने पूजा-स्थल पर रख लें। धनलाभ होगा।
– अगर इमली की टहनी को काट कर घर या गल्ले या जेब में रखा जाए तो धन की वृद्धि होती है तथा घर में बरकत रहती है।
– मंगलवार के दिन लाल चन्दन, लाल गुलाब के फूल तथा रोली लें। इन सब चीजों को लाल कपड़े में बांध कर एक सप्ताह के लिए मंदिर में रख दें। घर पर धूपबत्ती किया करें। एक सप्ताह के बाद उनको घर की तथा दुकान की तिजोरियों में रख दें। धनलाभ होगा।
– लकड़ी के बजौट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर पांच लाल पुष्पों को स्थापित करें। प्रत्येक पुष्प पर एक कमल बीज को स्थापित करें। इसका

धूप, दीप, नैवेद्य से संक्षिप्त पूजन करें। एक पीले कागज में कमल बीजों तथा पुष्पों को लपेट कर शुक्ल पक्ष के बुधवार को रात्रि के समय भूमि में दबा दें। लौटते समय मन में स्थाई स्त्रोत की प्रार्थना करें।

- नजर लगे व्यक्ति को पान में गुलाब की सात पंखुड़ियां रखकर खिलाने से नजर का प्रभाव दूर होता है।
- यदि नजर आदि की कोई बांहरी बाधा से ग्रसित है तो घर के पास के वृक्ष की जड़ में शाम को दूध डालकर अगरबत्ती जलाकर रख दें, तो बाहरी बाधा नष्ट हो जाती है।
- खड़िया मिट्‌टी का यंत्र बनाकर गले में लटका दें तो बच्चे का रोना बन्द हो जाएगा।
- सोंठ डालकर पकाए हुए गाय के दूध को पीने से दसवें मास की गर्भ-पीड़ा दूर होती है।
- इंद्रायण के बीज, ककोल और अंकोल को समान भाग में लेकर शहद के साथ घोटकर खिलाने से नवें मास की गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- मंजीठा, काले तिल, शतावर और पीपल की छाल आदि को बराबर लेकर इससे चार गुना दूध के साथ पिलाने से दूसरे महीने का गर्भ नहीं गिरता।
- अतीस, नागरमोथा, हयोबर का काढ़ा, काली मिर्च मिलाकर पीने से गर्भ के रोग नहीं होते।
- जमीरी के फल के चूर्ण को शहद के साथ खाकर गाय का दूध पीने से गर्भ का सूखना बंद होता है।
- गाय के दूध में खांड मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बंद हो जाता है।
- रजोधर्म से निवृत होने के पश्चात् पांच दिन तक जो स्त्री पान की जड़ को घोटकर पी लेती है, उसे गर्भ नहीं ठहरता।
- पुरानी खांड, मुनक्का, शहद, छुहारा और नीलकमल—इनको गाय के दूध के साथ देने से दसवें मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- कैथ के गूदे को ठंडे पानी में पीसकर, गाय के दूध के साथ मिलाकर पिलाने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा दूर होती है।
- अतीस, नागरमोथा, हयोबर का काढ़ा, काली मिर्च मिलाकर पीने से गर्भ के रोग नहीं होते।

— चकमक पत्थर को कपड़े में लपेटकर गर्भिणी स्त्री की जंघा में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
— तिथियों के आधार पर लोम-विलोम क्रिया से नित्यप्रति घी के दीपक घर में जलाने से उस परिवार में कभी कलह, अशांति आदि नहीं होती एवं लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए, एक तारीख को एक, दो को दो, बीस को बीस दीपक जलाएं।
— व्यापार वृद्धि के लिए बारह गोमती चक्र लेकर उसे बांधकर चौखट पर लटका दें और ग्राहक उसके नीचे से निकलें तो व्यापार में वृद्धि होती है।
— प्रमोशन नहीं हो रहा हो तो जितने वर्ष की नौकरी है, गोमती चक्र लेकर शिवलिंग पर चढ़ा दें, निश्चय ही प्रमोशन के मार्ग खुल जाते हैं।
— अर्क (आकड़े), छाक (छिला), खैर, अपामार्ग (आंधीजड़ा), पीपल की जड़, गूलर की जड़, खेजड़े की जड़, दूर्वा एवं कुशा की जड़ को एक पीतल की डिब्बी में रखकर नित्य पूजा करने से उस मनुष्य के जीवन में कभी असफलता प्राप्त नहीं होती है।
— जो व्यक्ति दुकान चलाते हैं, उनके लिए यह अधिक लाभदायक है। जब आप सुबह दुकान खोलें, कार्य प्रारंभ करने से पूर्व नित्य अगर लक्ष्मीजी के चित्र को धूप-दीप कर प्रणाम किया जाए तो अवश्य ही बिक्री बढ़ जाती है।
— भवन के ईशान कोण में श्रीयंत्र ताम्रपत्र अथवा भोजपत्र पर बना कर प्राण प्रतिष्ठा करके नित्य पूजा करने से विविध ऐश्वर्य के साथ लक्ष्मी भी प्राप्त होती है।
— नारियल को चमकीले लाल वस्त्र में लपेटकर घर में रखने से धन की वृद्धि होती है। व्यापार स्थल पर रखने से व्यापार में वृद्धि होती है। जिस घर में एकाक्षी नारियल होता है, वहां स्वयं लक्ष्मी वास करती है। रोग, शोक, दुःख, कष्ट, विपत्ति एवं दारिद्रय नष्ट होता है एवं मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त होता है। व्यापार दिनोदिन बढ़ता है।
— किसी भी मंगलवार को ऋण नहीं लेना चाहिए। साथ ही संक्रांति का दिन, वृद्धि नामक योग, हस्त नक्षत्र तथा रविवार को भी ऋण नहीं लेना चाहिए। इन दिनों में कर्ज वापस करना शुभ है। बुधवार के दिन

किसी को भी ऋण अथवा धन नहीं देना चाहिए, अन्यथा उसके वापस आने में बाधा रहेगी।

– हल्दी व चावल पीसकर उसके घोल से, घर के प्रवेश द्वार पर "ॐ" बना दें। घर समस्त बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

– धन की आवश्यकता सभी को होती है। धन संकट से छुटकारा पाने के लिए आप किसी देवी स्वरूप की उपासना करें और प्रतिदिन पूजा के समय, उस देवी की प्रतिमा पर "लौंग" भी अर्पित करें। यह आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि करेगा।

– अकस्मात धनलाभ के लिए सफेद कपड़े की ध्वजा को पीपल वृक्ष पर लगाना चाहिए। अगर व्यवसाय में आकस्मिक व्यवधान एवं पतन की संभावना प्रबल हो रही हो तो यह प्रयोग करने से स्थिरता आती हैं तथा बाधाएं दूर हो जाती हैं।

– घर के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन सरसों के तेल का दीपक जलाएं तथा दीपक बुझ जाने पर बचे हुए तेल को पीपल के पेड़ पर संध्या के समय चढ़ा दें। इस प्रकार सात शनिवार करने से आर्थिक संकटों से मुक्ति मिलती है। इस प्रयोग का प्रारंभ किसी शनिवार से ही करना चाहिए।

– जिस व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो, उस व्यक्ति को शुक्रवार के दिन कमल का पुष्प लाकर अपनी तिजोरी अथवा किसी अलमारी में लाल वस्त्र में लपेटकर रखना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति धन सरलतापूर्वक जुटा लेता है।

– यौवन काल में या शरीर की अतिरिक्त गर्मी के कारण प्रायः मुंहासे (कीले) हो जाया करते हैं। यह पकने पर फूटते हैं। इनका अगर ठीक उपचार न किया जाए तो चेहरे पर काले निशान डालकर व्यक्तित्व का नाश कर देते हैं। तंत्र ज्ञान में कहा गया है कि 12 ग्राम चिरायता 500 ग्राम पानी में खौलाकर जब कुछ गाढ़ा-सा बन जाए तो उसमें थोड़ा गंगाजल डाल दें। इस काढ़े का नियमित प्रयोग करें।

– किसी भी प्रकार की कर्णपीड़ा में प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमस्कार करें। फिर उत्तर की ओर मुख करके प्राणायाम करें। आसन करते समय कानों को अंगुलियों से बंद कर लें, केवल श्वास छोड़ते समय कानों से अंगुलियां हटा लें। प्रत्येक बार जोर से उच्चारण करें "ॐ वायुदेवाय नमः"–इससे कानों के रोग से मुक्ति मिलेगी।

– नेत्रपीड़ा के लिए प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमन करें। उसके बाद

सूर्यमुखी का फूल सूंघें, तथा शुद्ध जल आंखों में डालें। इस प्रयोग से नेत्रपीड़ा समाप्त होती है। यह प्रयोग सिरदर्द में भी किया जा सकता हैं।

– हिस्टीरिया रोग स्त्रियों को ही होता है। मेरा स्वयं का अनुभव है कि यह रोग अविवाहित एवं संतानहीन स्त्रियों को अधिक होता है। इसमें रोगी के दांत कस जाते हैं और शरीर ऐंठ जाता है। बड़ी कठिनता से होश आता है। इस प्रकार का दौरा पड़ने पर हल्दी या प्याज सुंघाने से शीघ्र लाभ होता है। हिस्टीरिया का दौरा न पड़े, इसके लिए प्रत्येक रविवार को भी पूजन और चन्द्रमा का दर्शन पूजन करना चाहिए।

– प्रायः देखा गया है कि छाती की पसली में तेज दर्द उठता है, जिसे शूल भी कहते हैं। दर्द से आदमी बेचैन हो जाता है। आटे का दीपक बनाएं और उसके समक्ष "राम रमेति राम राम राम" का जाप करें। कुछ समय पश्चात् उस दीप को हाथ से बुझा दें। (मुंह से फूंक मारकर कदापि न बुझाएं) दीपक की बाती निकाल लें और छाती पर मलें। शूल रोग ठीक हो जाएगा। उक्त मंत्र का जाप निरंतर करते रहें।

– बदहजमी या अफ़ारा होने पर तत्काल तुलसी के 7 पत्ते लेकर उन पर "राम दूताय हनुमान, पवनपुत्र हनुमान" कहते हुए 31 बार फूंक मारें और वह पत्ते रोगी को खिला दें। याद रखें, यह पत्ते रोगी चबाए नहीं, तुरंत लाभ हो जाएगा। यह मेरा स्वयं का अनुभूत प्रयोग है।

– अगर दाद, खाज, खुजली का रूप अत्यंत घिनौना हो गया हो तो एक अगरबत्ती शिव की पिंडी के आगे जलाएं। इस अगरबत्ती की विभूति को उक्त लेप में मिला दें। ध्यान रहे, अगरबत्ती केवल शुद्ध चंदन की हो। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का जाप करके अभिमंत्रित कर लें—"ॐ भं भूं ॐ"। भगवान शिव की कृपा से अवश्य ही लाभ होगा। यह क्रिया सोमवार के दिन अधिक प्रभावी होगी।

– बहुत से स्त्री-पुरुषों के सिर के बाल गायब हो जाते हैं। इस प्रकार बालों का झड़ना या टूटना गंजापन कहलाता है। औघड़ मंत्र में इसके लिए एक विचित्र प्रयोग है। इस प्रयोग को संभवतः घृणा या गंध के कारण करने में लोग हिचकते हैं। मैंने स्वयं इसका प्रयोग नहीं किया, पर विधि में बताया है। गधे के सिर की हड्डी को जैतून के तेल से घिसकर लेप बनाएं और गंज के स्थान पर लगाकर रात को सो जाएं। प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके लेप को धो लें।

– बांदा वृक्ष पर उत्पन्न होता है। आम और बेर का बांदा सरलता से प्राप्त होता है। आम के बांदे की पत्तियों को पशुओं को खाने के लिए दिया जाता है। शेष लकड़ी जलाने के काम आती है। बेर के बांदे को पीसकर दही में मिलाकर खाने से आमाशय के रोग ठीक होते हैं।

– बहुत से लोग अनावश्यक रूप से मोटे या थुलथुल हो जाते हैं। उनको इससे परेशानी होती है। ज्यादा मोटा होना भी ठीक नहीं है। जो अपना मोटापा कम करना चाहते हैं, रविवार के दिन काला धागा अनामिका में बांध लें और उसे रांगे की अंगूठी से ढक दें। धीरे-धीरे मोटापा स्वयं कम हो जाएगा।

– बहुत से व्यक्तियों की यदाकदा भूख ही कम हो जाती है। कुछ खाने के लिए मन नहीं होता। शरीर आलस्य और टूटन से भर जाता है। चेहरा निस्तेज होने लगता है। इस प्रकार के रोग से पीड़ित व्यक्ति को रोज कम से कम एक घंटा पेट के बल सोना चाहिए। प्रातःकाल सोकर उठने पर एक गिलास शुद्ध जल को हाथ में लेकर जल की ओर देखें और "ओम अग्निचक्रायहीन नमः" का 108 बार पाठ करें। पाठ करते समय केवल हाथ में लिए जल की ओर देखते रहें। जाप पूरा होते ही सारा जल एकदम पी जाएं और गिलास को औंधा करके रख दें। मेरा यह अनुभूत प्रयोग है, तुरंत भूख लगने लगेगी।

– आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रायः इस बीमारी के कारण व्यक्ति का कामकाज में मन नहीं लगता, बात करते सुस्ती आ जाती है, बदन टूटने लगता है। ऐसे व्यक्ति सुबह स्नान करते समय रेशम का एक धागा हाथ में लेकर सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं और 108 बार "ॐ नमो भगवते सूर्याय स्वाहा" का जाप करें। फिर धागा बाएं हाथ के अंगूठे पर बांध दें। अगर धागा न बांधना चाहें तो प्रतिदिन नियम से एक टांग पर खड़े होकर इस मंत्र का जाप करें।

– उत्तर की तरफ मुंह करके कुशा के आसन पर बैठ जाएं। थोड़ा-सा कपूर हथेली पर रख लें। 108 बार "ॐ नमः शिवायः" का जाप उस कपूर को देखकर करें। फिर स्वयं या किसी अन्य को पेटदर्द हो तो उसे खिला दें, दर्द जाता रहेगा।

– कुछ लोगों के शरीर में वायु का गोला घूमता है, इससे बड़ी तकलीफ और बेचैनी होती है। रविवार या मंगलवार के दिन काठ की नाव की कील और काले घोड़े की नाल का एक छल्ला बनवा लें। यह कड़ा हाथ में पहनने से वायु गोले का वेग शांत हो जाता है।

– सिरदर्द बहुत अधिक होने पर मजीठ के पौधे की जड़ कपड़े में बांध लें। फिर उसे माथे पर रख लें। जब सिरदर्द समाप्त हो जाए तो यह जड़ चौराहे पर दक्षिण की ओर फेंक दें। सिरदर्द दूर होने के बाद एक गिलास ठंडा पानी पी लें। सिरदर्द काफी समय के लिए टल जाएगा।

– आंत उतरने के लिए शनिवार के दिन लाजवंती पौधे की जड़ लाकर छल्ले के रूप में कमर से बांधें तो आंत का उतरना बंद हो जाएगा। भिंडी की जड़ भी इसी तरह प्रयोग करें। तुरंत लाभ होगा।

– आजकल नींद न आने की बीमारी काफी बढ़ गई है। नींद न आने के कारण लोग नींद लाने वाली गोलियों का खुलकर प्रयोग करते हैं। अगर किसी को इस बीमारी से पीड़ित देखते हैं तो उसे यह प्रयोग बता दें। बिस्तर पर लेटने के पश्चात् शरीर एकदम ढीला छोड़ दें और धीरे-धीरे 100 तक गिनती गिनें, उसके बाद सांस रोककर "ॐ कुंभ कर्णाय नमः" बोलें और सांस छोड़ दें। इस प्रकार 108 बार करें। प्रारंभ में थोड़ी बेचैनी तो अवश्य होगी, पर नींद आ जाएगी।

– लोबान, घी, देवदारू, हींग, सरसों, केश नीम की पत्ती, इन्द्र, जौ, गौदन्ती, कुटकी, कटेली, वच, जौ, चना, बकरे के बाल तथा मोर की पूंछ इनको बछड़े के मूत्र में पीसकर सुखा लें, फिर मिट्टी के बर्तन में अग्नि जलाकर उक्त वस्तुओं के चूर्ण की धूप दें तो भूत, प्रेत डाकिनी, शाकिनी आदि का प्रकोप दूर हो जाता है।

– फीलपांव रोग में आक (मदार) का पौधा उत्तर दिशा की ओर से तोड़कर रविवार के दिन लाएं। उसकी जड़ को लाल धागे के सहारे, जहां ये रोग है, वहां बांध दें। जब यह रोग ठीक हो जाए तो उस जड़ को कहीं गहरा गाड़ आएं।

– पीपल वृक्ष की परिक्रमा करने और नियमित दीपक जलाने से नपुंसकत्व, रक्त विकार, ज्वर दूर होते हैं। स्त्रियों को इसे चार मास तक करना चाहिए। इससे पुत्र उत्पन्न होता है। काले तिल और सफेद सरसों को घर या दुकान के मुख्य द्वार पर रखने से बिक्री बढ़ाने में सहायता मिलती है।

– शाम को आधा किलो गाय का कच्चा दूध ले आएं। स्नान करें, शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहनें, किसी साफ-सुथरे बर्तन में दूध डाल दें। इस दूध में इक्कीस बूंद शुद्ध मधु की डालें, भवन के सभी भागों में उसे छिड़क दें। संभव हो तो गायत्री मंत्र पढ़ते रहें। समस्त बाधाएं दूर होंगी।

— बरगद के पेड़ का पत्ता आश्लेषा नक्षत्र के मध्य लाकर घर में रखें, कभी संकट नहीं होगा। पीपल के पत्तों को पास में रखने से गर्भ धारण में परेशानी नहीं आती।

— शरीर से पसीने के कारण, रक्त विकार के कारण अथवा अन्यत्र किसी कारण के फलस्वरूप दुर्गंध आती है, तो ऐसे स्त्री या पुरुष को चाहिए कि जिस दिन पुनर्वसु नक्षत्र हो, उस दिन मेंहदी की मूल और चंदन लाकर अपने पास सदैव रखें। शरीर से अच्छी सुगंध का अनुभव होगा।

— किसी को अगर ऊपरी बाधा है तो उसके सगे-संबंधी यह प्रयोग कर सकते हैं। जिस दिन हस्त नक्षत्र हो, उस दिन चंपा की जड़ लाकर उसके साथ तुलसी, काली मिर्च रखकर ताबीज में बांधें और व्यक्ति के गले में पहना दें।

— अगर कन्या बड़ी हो गई है और उसका विवाह नहीं हो रहा हो अथवा लड़के का विवाह नहीं हो रहा हो तो इस प्रयोग से संबंध निश्चित हो जाता है। यह प्रयोग इच्छा के अनुरूप विवाह कार्य सम्पन्न होने की दृष्टि से भी स्वयं में महत्वपूर्ण है। विवाह के पश्चात् प्रेम बना रहे, पति अनुकूल रहे, प्रेमिका चाहे कि उसके प्रेमी का मन नहीं बदले तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

— वास्तव में ही वे दुर्भाग्यशाली कहे जा सकते हैं, जिनके सामने ऐसी सुविधा उपलब्ध हो और वह लाभ न उठा सकें या अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य सम्पन्न न कर सकें तो दुर्भाग्य के अलावा और क्या कहा जा सकता है! यह प्रयोग वैवाहिक जीवन को पूर्ण रूप से मधुर बनाए रखने में विशेष रूप सें सहायक है।

— पहलवान लोग पैर में, गले में या हाथ में काले डोरे का गंडा पहनते हैं। इसके अलावा उनके अखाड़े में अगर कोई बाहरी पहलवान लड़ने आता है तो चमेली के सात फूल सीने में और दोनों भुजाओं में लगाकर उन्हें अखाड़े के चारों कोनों में और अखाड़े के मध्य में गाड़ देते हैं तो उसकी ही विजय होती है।

— जिन पुरुषों का विवाह काफी आयु तक नहीं होता, वे गुरुवार को कुम्हार के चाक को घुमाने वाले डंडे को ले आते हैं और उसी दिन घर में लीप-पोतकर डंडे को लहंगा, चुनरी पहनाकर उसको सिंदूर, महावर आदि लगाकर दुल्हन के रूप में एक कोने में खड़ा करके गुड़ चावल से पूजते हैं। इस तरह सात बार सात डंडे चुराकर पूजे जाते हैं। कुम्हार

जितनी अधिक गालियां देगा, कोसेगा, उतना ही शीघ्र विवाह होता है।

– अविवाहित अधिक उम्र की कन्या का विवाह शीघ्र होने के लिए देवोत्थान एकादशी कच और देवयानी की मिट्टी की मूरतें बनाकर उन मूर्तियों में हल्दी, चावल, आटे का घोल लगाकर उनकी पूजा करके उन्हें एक लकड़ी के फट्टे से ढक लेते हैं। फिर उस फट्टे पर कुमारी कन्या को बैठा दिया जाता है तो उसका विवाह हो जाता है।

– गरीबी, अभाव से मुक्ति पाकर धनवान बनने के लिए पहली बार ब्याई हुई काली बिल्ली की किसी प्रकार जेर प्राप्त करके उसे सुखाकर रुपए रखने की थैली या संदूक, तिजोरी में रखें। प्रत्येक मंगलवार को धूप दी जाए तो धन व समृद्धि अनायास बढ़ती है।

– बच्चों के अलावा बड़े लोगों को जब कोई संक्रामक रोग हो जाता है या जलोदर, पीलिया, कंठमाला रोग हो जाता है तो मिट्टी के एक सकोरे में एक अंडा, एक लड्डू, दो पैसे और सिंदूर रखकर मरीज के सिर पर सात बार उतारकर गोधूलि बेला में या दिन के 12 बजे चौराहे पर रख दिया जाता है।

– दाढ़ का दर्द होने पर ढाई इंच लोहे की एक कील लेकर दाढ़ का स्पर्श कराकर किसी भी पेड़ में यह कहकर कि "ले तेरा हमाल संभाल" कील को गाड़ दिया जाए तो दाढ़ का दर्द ठीक हो जाता है।

शत्रुनाशक कौआ तंत्र

प्रथम प्रयोग : यदि अवांछित प्रेम उत्पन्न हो जाए जिससे मान-मर्यादा की हानि होती है, ऐसे प्रेम को खत्म करने के लिए रविवार व मंगलवार को कौए की आंख को जलती चिता की आग में जलाकर, कोयलों पर रखकर जिन दो प्रेमियों को उनका स्पर्श करा दिया जाता है, उनमें प्रेम खत्म होकर दूरी बढ़ जाती है। तथा वे एक-दूसरे को देखना तक पसंद नहीं करते।

द्वितीय प्रयोग : किसी सोमवार को कौए के दो पंखों को लेकर अर्द्धरात्रि में श्मशान में जाकर उनको किसी जलती चिता की अग्नि में जलाकर भस्म बनाकर रख लें। यह राख जिन दो प्रेमियों के मस्तक पर डाली जाती है आपस में मित्र होते हुए भी वे शत्रुता का व्यवहार करने लगते हैं।

तृतीय प्रयोग : रविपुष्य योग यानि जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, किसी गिरगिट को मारकर उसका रक्त निकालकर एक शीशी में रखें तथा

इसी शीशी में समान मात्रा में कौए का रक्त मिलाएं तथा दोनों के वस्त्रों का छोटा छोटा टुकड़ा लेकर उसी शीशी में डालकर तर कर लें।

इसके बाद कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को अर्द्धरात्रि के समय चिता से अग्नि लेकर उनकी भस्म बनाकर रख लें, फिर मुक्त रूप से उन दोनों के मस्तक पर यह भस्म रविवार या मंगलवार को डाल देने से दोनों में घोर शत्रुता हो जाती है। यह शक्तिशाली प्रयोग सदा के लिए दुश्मनी पैदा कर देता है।

कौआ वशीकरण तंत्र (टोटका)

यदि कोई स्त्री किसी पुरुष से प्रेम करती हो, परन्तु पुरुष उसकी तरफ मुंह उठाकर भी न देखता हो तो स्वयं स्त्री यह प्रयोग करे।

किसी भी महीने के सोमवार की चतुर्दशी तिथि को कौए के घोंसले से कुछ पंख लाएं तथा उन्हें अंजीर की लकड़ी में बांधकर, उस लकड़ी से किसी काली कुतिया को सात बार मारें तथा उसके बाद वह लकड़ी घर लाकर पंखों समेत जलाकर भस्म तैयार करके उस भस्म को अपने थूक से तर करके छोटी छोटी गोलियां बना लें। इनमें से एक गोली से जिस भी पुरुष को मारेगी, वह प्रयोगकर्ता के वशीभूत हो जाता है तथा उसके कहे अनुसार कार्य करने लगता है।

शत्रुताकारक उलूक टोटका प्रयोग

शत्रुताकारक प्रयोग हेतु साधक को चाहिए कि वह माघ मास की अमावस्या को एक उल्लू अर्द्धरात्रि के समय पकड़कर लाए तथा पूजा करने के बाद, पूंछ से तीन पंख निकालकर उल्लू को उड़ा दे।

अगले दिन अर्द्धरात्रि में किसी भी श्मशान में, जो नदी या तालाब के पास हो, वहां जाकर नदी में स्नान करने के समय दाएं हाथ में पंखों को किसी कपड़े में बांधकर रखे। स्नान के बाद जलती चिता के सामने बैठकर निम्नलिखित मंत्र का 1008 बार जप करे तथा उपरोक्त प्रयोगों के समान पूर्वाभिमुख अर्थात् पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके लाल कम्बल अथवा कुशा के आसन पर बैठकर मंत्रजाप पूर्ण करके वापस लौट आए।

मंत्रजाप करते समय प्रत्येक बार मंत्र पढ़कर पंख पर फूंक मारनी चाहिए। यह किन्हीं दो व्यक्तियों की मित्रता, जिससे साधक को नुकसान होने की आशा हो, उनके बीच दुश्मनी कराने के लिए कारगर प्रयोग होता है। मंत्र से सिद्ध करने के बाद इसकी भस्म बनाकर रख लेनी चाहिंए। प्रयोग के लिए साध्य व्यक्तियों के द्वार पर बिना किसी के देखे व टोके आधी आधी भस्म जमीन

में गाड़ देनी चाहिए। इसके प्रभाव से दोनों व्यक्तियों में आपस में दोस्ती के बजाय दुश्मनी हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है–

"ॐ नमः उलूक राजाय, लक्ष्मी वाहनाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।"

थकावट न लगने का तंत्र (टोटका)

किसी बृहस्पतिवार को श्मशान घाट, जो नदी किनारे स्थित हो, वहां प्रातःकाल जाकर स्नान करें तथा किसी प्रकार एक कौआ पकड़कर लाएं तथा उसे पिंजड़े में बन्द करके रख दें। कौआ पकड़ने से पहले नदी में स्नान करके शुद्ध हो लें, तब कौए को पकड़ने तथा कार्यसिद्धि के लिए श्मशान देवता भैरव को मांस तथा मदिरा का भोग लगाएं। शिव-गणेश की भी पूजा करें। इसके बाद कौआ लेकर वापस आ जाएं।

अगले दिन प्रातःकाल कौए को देशी पान पीसकर, उसका रस कौए के पीने के पानी में मिला दें तथा उसे खाने को कुछ न दें, बल्कि भूखा रखें। चौथे दिन एक तोला पारा लेकर एक कप में पान के रस में मिलाकर धूप में रख दें। सूखने के बाद एक छटांक गेहूं के आटे में थोड़ी खाण्ड मिलाकर, उस पारे को शुद्ध देशी घी में मिलाकर (यानी गूंथकर), पूरी सेककर उसका चूरमा बनाकर कौए को खिला दें। इसके ठीक दसवें दिन इसे लेकर पुनः उसी श्मशान में रात्रि के समय जायें तथा अर्द्धरात्रि को जलती चिता के सामने पूर्वाभिमुख होकर बैठें तथा कौए के पेट को चीरकर अमाशय से पारे की गोली निकाल लें। यह काफी चमकदार होती है। इसे निकालकर कौवे को जमीन में गाड़ दें। गोली लाकर गौमूत्र में डुबोकर रखें, चौथे दिन गौमूत्र से निकालकर साफ करके रख लें।

जब भी पैदल चलना हो, उसे लाल वस्त्र में लपेटकर कमर में बांध लें। इसके प्रभाव से रात-दिन बिना थकान के चला जा सकता है। थकान का जरा भी अहसास नहीं होता।

दुष्ट व्यक्ति से छुटकारा

प्रायः हमारी माता और बहनें गलत लोगों के बहकावे में आ जाती हैं और वे अपनी गलत इच्छापूर्ति हेतु समय-समय पर उन्हें ब्लैकमेल करते हैं। ऐसा मेरी जानकारी में भी कई बार आया है। ऐसे में उनकी समस्या बड़ी जटिल होती है तथा वे विवशता के दलदल में फंसती चली जाती हैं। ऐसे जटिल प्रयोगों से कोई परेशान हो तो बचाव के लिये निम्नलिखित प्रयोग करें–

किसी भी प्रकार के सफेद सूती कपड़े को सर्वप्रथम गंगाजल में धो लें। फिर स्वयं के द्वारा बनाये गये काजल से (बाजार का बना काजल नहीं होना चाहिये) उस दुष्ट व्यक्ति का नाम अपनी तर्जनी उंगली से उस कपड़े पर लिखें। उसके नाम में जितने अक्षर हों, उतनी बार उस पर थूकें तथा फिर पैर से रगड़ें। इसके बाद शौचालय में जाकर उसे फेंक दें। उस पर विष्ठा कर उसे कहीं दूर फेंक दें। अगर उन दिनों माहवारी हो रही हो तो वह कपड़ा भी उस पर फेंक दें। उस दुष्ट व्यक्ति से हमेशा के लिये पीछा छूट जायेगा।

दुग्धपान में सावधानी

प्रायः हमारी माताओं और बहनों को शिशु पालन की कोई प्रारंभिक जानकारी नहीं दी जाती, फिर भी वे शिशु पालन में कोई कमी नहीं रखती हैं। कुछ एक त्रुटियां हैं, जो मैं माताओं-बहनों में प्रायः देखता हूं। अगर इन त्रुटियों से बचें तो बच्चे स्वस्थ व निरोग रहेंगे।

बच्चे को दुग्धपान क़राते समय शिशु को आंचल में छुपाकर रखें। दूध के पात्र को छुपाकर रखें। अगर सम्भव हो तो दुग्धपान कराते समय बच्चे को प्यार भरी नजर से बार-बार देखती रहें। ऐसा करने से बच्चे में आत्मविश्वास पैदा होगा और आपकी प्यार भरी नजर उसकी मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूत करेगी। महाभारत से एक दृष्टांत प्रस्तुत है—

दुर्योधन शारीरिक दृष्टि से काफी हृष्ट-पुष्ट था। इस विषय में कहा जाता है—एक बार दुर्योधन की माता ने अति ममतावश दुर्योधन से कहा—"दुर्योधन! मैं तेरे शरीर पर अपनी ममताभरी दृष्टि डालूंगी। जहां-जहां मेरी दृष्टि पड़ेगी, वह स्थान वज्र के समान कठोर हो जायेगा।"

दुर्योधन ने सारे वस्त्र उतार दिये, जब गांधारी ने पट्टी खोलकर देखा तो दुर्योधन के शरीर का नितंब वाला हिस्सा केले के पत्तों से ढका था।

मां ने रूष्ट होकर पूछा—"पुत्र! यह क्या है?"

दुर्योधन ने बताया—"माता श्री! लज्जावश मैंने ऐसा किया।"

"पुत्र! मां से लज्जा कैसी?" गांधारी ने पूछा।

दुर्योधन चुप रह गया। प्रमाण बताते हैं, भीम ने उसी हिस्से पर गादा माकर दुर्योधन का अंत किया था।

अस्तु, मां की प्यार भरी नजर कवच के समान होती है। इस कवच को प्राप्त करने का सही समय दुग्धपान या स्तनपान का समय ही होता है।

माताओं, बहनों को स्वयं लेटकर स्तनपान नहीं कराना चाहिये। इससे

बच्चों को नाना प्रकार के कर्ण रोग लग जाते हैं। अगर मातायें इन बातों क ध्यान रखेंगी तो निश्चय ही वे अपनी संतान को बलिष्ठ, निरोगी औ आत्मविश्वासी बना पायेंगी।

भंडार-वृद्धि कारक मंत्र

आये देवि दक्षिणि! तीन वर्ण की लक्ष्मी। गे लक्ष्मी ब्रह्मा क माय रिद्धि-सिद्धि हमारे हाथ। आव लक्ष्मी कर जाप, जन्म जन्म के हर पाप। अन्न पुरावे अन्नपूर्णा। प्रीत पुरावे महेश। नीलेश्वर के नेउंता विन्हा। दस पावे पन्च दृह होये जाये। दोहाई सिद्ध पुरुष काहा, लक्ष्मी काः।

इस मंत्र को चालीस दिन तक प्रतिदिन 108 बार जपकर सिद्ध करें। फिर भोज समारोह का जो भी सामान बना हो, वे खाद्य वस्तुएं एक स्थान पर भंडारगृह में थोड़ी-सी अछूती भोजन सामग्री निकालकर सुरक्षित रखें तथा माता अन्नपूर्णा व भगवान शंकर को भोग लगाकर उस सामग्री में से सभी थोड़ी-थोड़ी वस्तुएं लोटा, डोरी यह सब लेकर कुयें पर जायें।

मंत्र को बार-बार पढ़ते रहें, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके थोड़ी सामग्री कुएं में अर्पित करें। फिर लोटे को डोरी के सहारे कुयें में पहुंचाकर एक हाथ से ही एक लोटा पानी भरकर बाहर निकालें, डोरी को खोलकर लोटे सहित सामग्री को लेकर घर लौट आयें। अब लोटे को भण्डारघर में रख दें व बची थोड़ी सी सामग्री भोज रूप होने से पूर्व की जाने वाली पूजा में चढ़ाकर अपना पारम्परिक कृत्य पूरा कर अखण्ड दीपक जलायें, फिर इस मंत्र का 108 बार जप करें। इसके बाद लोगों को भोजन करायें। इस प्रयोग से भण्डारघर में कोई कमी नहीं होगी।

गण्डा, डोरा, भभूत, तावीज और टोटके

गण्डा, डोरा, भभूत, पलीता, टोटके और तावीज ये सभी तंत्र के अभिन्न अंग हैं या यूं कहिए कि ये सभी यंत्र विज्ञान के उपकरण हैं। इन्हीं के सहयोग और प्रयोग से तांत्रिक बाधाग्रस्त लोगों की चिकित्सा करता है। तंत्र-मंत्र-यंत्र एक है, पर प्रयोग अलग-अलग हैं।

एक संत थे। एक दिन किसी ने उनकी चादर चुरा ली। संत ने राजा के पास शिकायत की। खोज करने पर चोर पकड़ा गया। राजा ने संत को भी बुला भेजा। संत के दरबार में आने पर राजा ने पूछा—"आपकी कौन-कौन सी वस्तुएं चोरी हुई हैं?"

संत ने उत्तर दिया—"मेरी चादर, रजाई और धोती चोरी हो गई है। इसके

साथ ही तौलिया, आसन, तकिया और छाता भी चोरी हो गया है। मैं तो पूरी तरह से लुट चुका हूं।"

चोर यह सुनकर चादर संत की तरफ फेंकते हुये बोला—"मुझे तो केवल इस चादर का ही पता है...और वस्तुओं की मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

संत चादर उठाकर चलने लगा तो राजा ने कहा—"जब आपकी चादर ही चोरी हुई थी तो आपने ढेर सारी वस्तुएं क्यों गिना दीं?"

संत ने उत्तर दिया—"राजन्! मेरी चादर में सब कुछ छिपा है। मैं इसे ओढ़ता हूं, इसलिए यह मेरी रजाई है। पहन भी लेता हूं, इसलिए यह मेरी धोती भी है। शरीर पोंछता हूं, इसलिए यह तौलिया है। तह करके इससे आसन और तकिए का भी काम लेता हूं और कभी सिर पर रख लेता हूं, तो ये छाते का भी काम देती है।"

संत के इस उत्तर से सभी आश्चर्यचकित थे। इसी प्रकार उपरोक्त वस्तुएं अनेक हैं, पर तंत्र एक है। टोने-टोटके में सबसे अधिक आवश्यक बात यह है कि इसे पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ सम्पन्न किया जाए। जब भी टोटकों का प्रयोग किसी गलत उद्देश्य के लिए होता है तो साधक को लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है, इसीलिए सम्मोहन, वशीकरण इत्यादि से संबंधित टोटके उसी समय करें, जब आप स्वयं सत्य की राह पर हों और जो कार्य आप करने जा रहे हैं, वे सामाजिक मर्यादा के अनुकूल हों।

आइए, अब सभी प्रयोगों पर क्रमवार दृष्टि डालें।

गण्डा

यह काले अथवा लाल धागे से बना होता है, इसे प्रायः शाबर मंत्र से अभिमंत्रित किया जाता है। धागे में मंत्र पढ़कर गांठें भी लगाई जाती हैं। अब मैं गण्डा अभिमंत्रित करने का मंत्र लिख रहा हूं।

मंत्र इस प्रकार है—

उत्तर बांधो, दक्खिन बांधो, बांधो मरी मसानी, डायन भूत के गुण बांधो, बांधो कुल परिवार, नाटक बांधो, चाटक बांधो, बांधो भुइयां बैताल, नज्रस्-गुजर देह बांधो, राम दुहाई फेरो।

डोरा

गण्डे का एक रूप डोरा भी है। इसमें अंतर केवल इतना है कि डोरे में गांठें नहीं लगाई जाती हैं। डोरा वैसे ही अभिमंत्रित किया जाता है। डोरा चार प्रकार का होता है—लाल, सफेद, काला, हरा। इन रंगों के डोरे बनाए जाते हैं। डोरा अभिमंत्रित करने का मंत्र इस प्रकार है—

कालि देवि! कालि देवि! सेही देवि! कहां गेलि, विजूवन खण्ड गेलि, कि

करे गेलि, कोइल काठ काटे गेलि। कोइल काठ काटि कि करोति। फला
का थैल धराएल, कैल कराएल, भेजल भेजायल। डिठ मुठ गुणवान काटि क
पानि मस्त करे। दौहाई गौरा पार्वति क, ईश्वर महादेव क, कामरू कमक्ष्या म
इति सीता-राम-लक्ष्मण-नर सिंघनाथ कः।

भभूत

भभूत को विभूति भी कहते हैं। भभूत प्रायः गुलाब की अगरबत्ती क
नाथ सम्प्रदाय के लोग धूती की राख की विभूति बनाते हैं। भभूत को कपड़छ
करके अभिमंत्रित करते हैं। भभूत प्रायः मंगलवार या रविवार को ही अभिमंत्रि
की जाती है।

भभूत अभिमंत्रित करने का मंत्र इस प्रकार है—

सामा तु आर बांध, सामा तु चारो कोना बांध।
सामा के संग, सामा को जला दिया।।
सामा तु भूत बांध, सामा तु पिशाच बांध।।
सामा तु दानो बांध, सामा तु अकिन बांध।।
सामा तु चुड़ैल बांध, सामा तु बैताल बांध।।
सामा तु संसार बांध सामा तु आसमान बांध।।
दोहाई कामरू कमक्ष्या, नैना योगिनि की।।

अथवा

आकाश बांधो, पाताल बांधो, बांधो तावा ताई।
धरती माता तोहे बांधो। दोहाई भैरो बाबा की।।

तावीज

यह यंत्र का ही एक रूप है। तावीज बनाने के लिए चांदी या तांबे क
खोल लिया जाता है। उसमें यंत्र या सामग्री भर दी जाती है। इसके पश्चात
तावीज को अभिमंत्रित किया जाता है। तावीज गले या हाथ पर बांधा जात
है। तावीज अभिमंत्रित करने का मंत्र इस प्रकार है—

बिसमल्ला रहमान रहीम। सैयद वीरानावाला, भोला नंगी पीठ पीलाण
गोड़ा। उल्टा घोड़ा, उल्टा जीण, उल्टा चल वीराने पीर। सवा सेर का तोसा
खाय, अस्सी कोस का घाव जाय। अग्र भेजूं, अगर जाय। मग्र भेजूं, मग्र जाय।
पूरब भेजूं, पूरब जाय। पछिम भेजूं, पछिम जाय। उत्तर भेजूं, उत्तर जाय। दखण
भेजूं, दखण जाय। तम चलता कोण चल। शीतर से लार चल। वत्तर सव लीन
चलै। वाई से खाजा चल। सवा लाख सैयद चल। कांहां कुं चलै? कावरू देश
कमक्षा देवी को बंद करने कुं चल। क्या क्या ले चल? सित्तर समण की बेड़ी
से चल। सवा समण की हतकड़ी ले चल। हात डाक हतकड़ी, पग डाल बेड़ी,

गल डाल जंजीर। सत्तर स बेलीयां कुं पकड़ कर ल्याव रै वीराना पीर। भागा नाटा भूत कुं, पलीत कुं, जींद कुं, खईस कुं, देवी कुं, परी कुं, मड़ा कुं मसाण कुं, डंडणी-संकणी कुं, चुड़ी कुं, चुड़ैल कुं, काला-गोरा सेतर पाल कुं, खटखट टंक पीछाड़। बेक कर बंध ल्याव। ईस गड़ी, ईस सायत जाहां ईस काया का चोर होय, जासु ल्याव हमार हाजर करो। सीस खीलावो, मुख बोलावो, तो बीबी फातमा का दूध पीया पखाण ख्वार तुमारी कार। जो लोप तुमारी कार, जाकु वाल-जाल भस्म कर राल। रहीम करीम मुरान-मुरतज्या अली मददगार वा हक कलमा अल्ला हो अल्ला मुहम्मद पाक रसुलील्ला।

टोटका

यह क्रिया प्रधान होते हैं। तांत्रिक कुछ सामग्री प्राण प्रतिष्ठित करके, श्मशान चौराहे, जंगल, नदी के किनारे रखने के लिए दे देता है। शेष क्रियाएं तांत्रिक गोपनीय रखता है। टोने-टोटके अभिमंत्रित करने का मंत्र इस प्रकार है–

ॐ नृसिंह। नृसिंह की महतारी, कातय सूत, नहि सूत के पागा। बिना इसे बांधे को? नृसिंह को कहती है महतारी–दादू करत मो बादी मारे। करूं बदिनियां राड़। औघट केर खिलाड़ी मारे, चिटका केर मसान। भूत-प्रेत संहारि के मारे। करुवा देव उड़ाव। हाक पड़ी नृसिंह की जाग-जाग वीर वहा हनुमान।

अब कुछ टोटके प्रस्तुत–

– महाकाली का पूजन करें तथा शुद्ध घी का दीपक जलाएं, प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
– पीपल के पत्ते पर कुंकुम से ॐ बनाकर लाल रंग का अक्षत चढ़ाएं तथा उस पत्ते को किसी मंदिर में चढ़ा दें, सफलता प्राप्त होगी।
– तीन बिल्व पत्रों को शिवलिंग पर चढ़ाकर जाएं, कार्यों में सफलता मिलेगी। बाहर जाने से पूर्व काली सरसों के कुछ दाने घर के बाहर बिखेर दें।
– गुड़ तथा चना किसी फकीर को देने से सौभाग्य की प्राप्ति होगी। अपने ऊपर से एक रोटी को 31 बार उतारकर चौराहे पर रख दें।
– बाहर जाते समय चुटकी भर हींग को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। पीली सरसों अपने ऊपर से सात बार घुमाकर अपने आगे घर से बाहर फेंक दें। ऐसा करने से कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
– चुटकी भर नमक अपने दरवाजे पर गिराकर कार्य पर जाएं। देशी घी के दीपक में एक इलायची डालकर दुर्गा के समक्ष लगा दें। भगवान

शिव को खीर का भोग लगाएं एवं प्रसाद को बांटें। कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी।

शाबर मंत्र और टोटके

शास्त्रों में कहा गया है "मंत्राधीनास्तु देवता" अर्थात् देवता मंत्र के वश या अधीन होते हैं। मंत्र की शक्ति से मानव समाज परिचित है तथा उसके कल्याणकारी पक्ष से संपूर्ण विश्व लाभान्वित हो रहा है। मृत्यु जीवन का एक कटु एवं अनिवार्य सत्य है, किंतु अपमृत्यु, अकाल मृत्यु एवं मृत्यु तुल्य कष्ट सदैव त्याज्य माने गए हैं। इनके निवारण के लिए ऋषियों ने अनेक विधियां बताई हैं। उनमें सर्वाधिक प्रचलित, उपयुक्त, अकाट्य एवं सरल शाबरी तांत्रिक प्रयोग हैं।

जन-सामान्य में प्रायः यह मान्यता है कि तांत्रिक प्रयोग श्रमसाध्य एवं घृणित होते हैं और इन्हें अंतिम चरण में पहुंचते व्यक्ति के लिए किया जाता है, किंतु यह भ्रांत धारणा है। तंत्र साधना अथवा प्रयोगों को निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है–

1. आरोग्यता प्राप्ति
2. असाध्य रोगों से मुक्ति
3. ग्रह दोष निवारण
4. प्रतिकूल समय के फलों की न्यूनता
5. दरिद्रता से मुक्ति
6. पुत्र प्राप्ति
7. महामारी से मुक्ति
8. प्राकृतिक आपदा का निवारण
9. दुर्भिक्ष से मुक्ति
10. सांसारिक आपदाओं से बचाव आदि

मंत्र शास्त्र में वर्णित जिन प्रयोगों तथा कर्मों को करने से रोग, शोक, महामारी, भय, शारीरिक व्याधियां तथा अन्य उपद्रव शांत हो जाएं, उन्हें शांति **कर्म** कहा जाता है।

शांति कर्मों का उल्लेख प्रायः सभी धर्मों, मतों, सप्रदायों तथा साधना पद्धतियों में किया गया है। भारतीय जीवन में आज भी जीवन प्रणाली मंत्रों पर ही आश्रित अनुभव होती है।

ऐसे ही साधारण भाषा के मंत्र, जिन्हें शाबर मंत्र कहा जाता है, ग्राम्य क्षेत्र में पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा में सुरक्षित हैं।

शाबर मंत्रों के विषय में कहा जाता है कि भगवान शिव ने गुरु गोरखनाथ के द्वारा सरलीकरण कराकर प्रस्तुत किए हैं, इनका उद्देश्य ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' है।

ऐसे ही कुछ शांति प्रयोगों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रभावशाली शाबर मंत्र जन-सेवार्थ प्रकाशित किए जा रहे हैं। इन मंत्रों में भाषागत परिवर्तन नहीं करना चाहिए, इन्हें यथारूप ही स्वीकार करना चाहिए।

आधासीसी रोग निवारण मंत्र

निम्न मंत्र दीपावली, ग्रहण या होली की रात्रि को दस माला जपकर 108 बार लोबान की आहुति देने से सिद्ध होता है। आधासीसी दर्द निवारण के लिए 31 मंत्रों से फूंक देने से पीड़ा का शमन होता है।

शंकर शंकर खोजा जाई
शंकर बैठे जंगल माई
भूत बैताल जोगिनि नचाय
सब देवन की जय जय मनाय
गोरखनाथ के पूजे पाय,
अधकपारी दर्द दुड़ाय।

नेत्र पीड़ा निवारण मंत्र

ॐ नमों आदेश गुरु को
श्रीराम की धुणी लछमण का बाण
आंख वरद करे तो गुरु गोरखनाथ की आण
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
सत्यनाम आदेश गुरु की।

उपरोक्त मंत्र दीपावली की रात्रि में 1109 बार जपकर, इतनी ही संख्या में मंत्रों की आहुति देने से सिद्ध होता है। प्रयोग करते समय लोहे के तीर से 31 मंत्रों द्वारा झाड़ने से नेत्रपीड़ा दूर होती है।

देह रक्षा का प्रयोग

केवल ग्रहण काल में 1109 मंत्रों से आहुति देने पर यह मंत्र प्रयोग के लिए सिद्ध हो जाता है। दुर्गम, निर्जन अथवा भयहारी स्थान पर केवल 21 बार जाप करने से सुरक्षा होती है।

ॐ नमो आदेश गुरु को पग राखे

पद्‌मिनी पीण्डी राखे परमेश्वरी जांघ
राखे जंघेश्वरी पेट राखे परमेश्वरी
सीस राखे सरदन्ती, रोम रोम की रक्षा
इसी घड़ी इसी ताल नहीं करे तो योगी गोरखनाथ
की कार शब्द सांचा,
पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

धनदायक तांत्रिक टोटके

जब हम किसी घर की कल्पना करते हैं तो हमारे सामने सर्वप्रथम गृहिणी का ही चित्र उभरता है। यही वास्तविक आदर्श अनुभव होता है और यह आदर्श जब टूटता है तो अनुभव होता है कि हमारा घर टूट रहा है, क्योंकि पुरुष के बिना नारी कितनी भी अधूरी क्यों न हो, नारी के बिना हर पुरुष का घर वीराना है। नारी पुरुष की प्रेरणा है। उसके बिना सब कुछ अधूरा है।

हम यह भी कह सकते हैं कि हर पुरुष की सफलता के पीछे किसी-न-किसी नारी का हाथ होता है। इस विषय में अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। अगर रत्नावली ने तुलसी को प्रेरणा न दी होती तो आज वे महान कवि नहीं होते। कार्ल मार्क्स को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में उनकी पत्नी जैनी मार्क्स का त्याग और प्रेरणा ही महत्वपूर्ण है। यशोधरा, उर्मिला का चरित्र और व्यक्तित्व इस बात को प्रदर्शित करता है कि स्त्री में प्रेरणा बनने की ललक शाश्वत रूप से रही है और उसने कहीं भी कभी भी, पति की प्रगति में बाधा उत्पन्न नहीं की।

पत्नी का सहयोग परिवार की प्रगति के लिए नई दिशाएं स्थापित कर सकता है। परिवार में कठिन और विषम परिस्थितियों के कारण पत्नी ही पति की प्रेरणा स्रोत बनती है और वही उसका मनोबल बढ़ाती है। पत्नी का सहयोग पाकर पति हर प्रकार के संघर्ष से जूझ जाता है।

अगर पत्नी पति के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार अपनाएगी तो पति को भावनात्मक सहयोग नहीं मिलेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिवारिक आशाओं की पूर्ति के लिए पत्नी के सहयोग की भी आवश्यकता होती है। इन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए निरंतर सहयोग और परस्पर विश्वास होना नितांत आवश्यक है। नारी का व्यवहार भी पति के प्यार को बढ़ाता है। वह ख्याति अर्जित करता है। सदैव अपने अभावों, दोषों अथवा असफलताओं के लिए पति को दोषी ठहराना तथा उन्हें अपमानित करना आपके हित में नहीं है।

वास्तव में इस प्रकार के आचरण से स्त्री को कोई लाभ नहीं होगा। अपनी कमियों अथवा पति की कमियों का प्रदर्शन दूसरों के सामने बिलकुल न करें। इससे आपकी कठिनाइयों में और वृद्धि होगी तथा आप समाज में हंसी की पात्र बनेंगी।

नारी का व्यवहार परिवार को सजाने, संवारने और बनाने में सहारा बनेगा, पति-पत्नी के मिले-जुले प्रयत्न से ही घर को प्यार के मंदिर में बदल सकेंगे। इसीलिए आप अपनी इस महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानें। पत्नी की यह भूमिका ही उसे गृहलक्ष्मी का मान-सम्मान प्रदान करेगी और उसकी पारिवारिक अपेक्षाओं को भी पूरा करेगी।

दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं है, कारण जन्मकुंडली का न मिलना या अशुभ समय पर वि ाह का होना। तब आप ज्योतिषी अथवा तांत्रिक की शरण में जाएं। वह स. ांना अथवा ग्रहों के उपाय के द्वारा आपकी समस्या का समाधान कर देगा।

ंरे निजी विचार में जो माता-पिता यह चाहते हैं कि उनके बेटे अथवा बेटी का दाम्पत्य जीवन सुखद हो, जो युवक-युवतियां चाहती हैं कि उनका जीवन सरल, सुखद हो, जो युवक यह चाहते हैं कि उनकी पत्नी उनकी कल्पना के अनुसार हो, जो युवक सफल पत्नी पाकर दाम्पत्य जीवन को और अधिक मधुर बनाना चाहते हैं– तब उन्हें निःसन्देह सुखी वैवाहिक जीवन और सुशील संतान के लिए उपाय करने चाहिएं।

हमारे ऋषि मुनियों ने मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास नाम से ये चार आश्रम हैं। जीवन का क्रम इन चार आश्रमों के क्रम में ही समाहित किया गया है। आज की भाषा में "आश्रम" का अर्थ वह स्थान होता है, जहां कोई महात्मा रहता है, किंतु गृहस्थ के जीवन क्रम को क्यों "आश्रम" कहा गया है? जहां जप करते हैं, वह "आश्रम" है अथवा आरंभ से अंत तक सब कुछ यहां तय होता है, इसलिए इसका नाम आश्रम है।

उक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि गृहस्थाश्रम में भी अन्य आश्रमों के जैसे ही धर्म को पूरा करने के लिए मानव श्रम करता है। यही उसकी तपस्या है। यही उसकी साधना है।

हमारे देश में जीवन का मुख्य लक्ष्य है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों को प्राप्त करना। इनमें से गृहस्थ ही अर्थ और काम को प्राप्त कर सकता है। अन्य आश्रमों के लोग तो धर्म और मोक्ष की ही साधना कर सकते हैं। बिना धर्म के जो अर्थ साधा जाता है, उससे अनर्थ होता है और जो काम प्राप्त

किया जाता है, वह दुःख देता है। धर्म समेत अर्थ तथा काम द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, जो गृहस्थाश्रम में ही संभव है।

मानव के व्यक्तित्व का आधार उसका शरीर है। शरीर का निर्माण सात धातुओं से हुआ है—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक (वीर्य) ये सात धातुएं हैं।

तंत्र शास्त्र के अनुसार स्थूल शरीर को "अन्नमयकोश" कहा गया है—कांति, धृति, स्वस्थता, सुन्दरता आदि इस अन्नरस से विकसित होते हैं। कहा गया है कि जिस प्रकार का अन्न हम खाते हैं, उसके अनुसार हमारा मन बनता है और कांति, गंध आदि गुण भी बदलते रहते हैं। वेदों में पंचाग्नि विद्या का उल्लेख है। पांच प्रकार की अग्नियों में आहुतियां देने की बात कही गई है। सूर्य आदि पांच तेजों, द्रव्यों का उल्लेख किया जाता है, उसी प्रकार अन्न, प्राण, मन, विद्वान तथा आनंद नाम के पांच कोशों की अग्नि मानकर उनमें "सार द्रव्यों" की आहुति देने की बात कही गई है। शरीरगत "जठराग्नि" में आहार की आहुति होती है। स्थूल देह में सारभूत बिन्दु की आहुति "प्राणाग्नि" में होती है। इसी प्रकार आगे भी अन्य अग्नियों में आहुतियां देने से इन विभिन्न स्तरों की मलिनता दूर होकर अंत में अमृत स्थिति प्राप्त होती है। यह सारी प्रक्रिया यश कहलाती है।

वेदों में स्त्री-पुरुष संयोग को "यश" नाम दिया गया है। इसलिए गृहस्थ जीवन को "आश्रम" कहा गया है। दांपत्य जीवन केवल काम चेष्टा नहीं है। उसका एक दूसरा रूप भी है।

इस विषय में गर्भाधान संस्कार उपयोगी होगा। आज के जीवन में प्रेम और विवाह का अर्थ इतना सूक्ष्म नहीं होता। प्राचीनकाल में अगस्त्य आदि ऋषि गृहस्थ जीवन द्वारा सिद्धियां प्राप्त कर सके थे। आज के पुरुष के लिए ये चीजें अगम्य हैं। हम लोगों ने संस्कृति से प्राप्त इन विशेषताओं को स्वयं ही खो दिया है।

तंत्र मार्ग में नारी को आवश्यक साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है। नारी तंत्र की साधना, इस क्रम में दक्षिणाचार बाहरी साधना है। शरीर को नियंत्रित करने का कार्य साधना से किया जाता है। 7वीं शताब्दी के पूर्व दक्षिणाचार की साधना प्रचलित थी। उस समय क्रियातंत्र पर ही विशेष ध्यान दिया जाता था। 7वीं-8वीं शताब्दी के तंत्र-ग्रंथ वामाचार की पंचम कार समन्वित साधना की ओर संकेत करते हैं। सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध या आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से लेकर ग्यारहवीं, बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से वज्रयान के संस्कृत ग्रंथ विपुल मात्रा में लिखे गए। तंत्र विज्ञान के माध्यम से लाखों

मनुष्यों ने दुखों से मुक्ति पाई है। सुख-सुविधाएं प्राप्त की हैं और पारलौकिक सुधार भी किया है। इस कारण भारत के इस विज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अब मैं एक बार फिर अपने सहृदय पाठकों के लिए तंत्र के लिए कुछ विशेष प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूं—

गर्भपात हेतु : रवि पुष्य नक्षत्र में धतूरे की जड़ लाएं, कुंवारी कन्या के हाथ से कते सूत को गले में बांधें तो गर्भपात हो जाता है। तीन धारी डंडा, थूहर के दूध को ललाट, कंठ व मस्तक में लगाने से गर्भपात हो जाता है।

रजस्वला होने के लिए : रविवार के दिन जंगली कोए की चोंच लाएं। धूप देकर गुप्तांग में रखें तो खून चालू हो, फिर धोकर मुंह में रखें तो खून बंद हो। ज्येष्ठा नक्षत्र में अडूसे की मूल लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांध देने से स्त्री तीस दिन के भीतर रजस्वला हो जाती है। करियारी कन्द, अपामार्ग और इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण कर पोटली बनाकर गुप्तांग में रखने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

हिस्टीरिया के लिए : भेड़ की जूं को कम्बल के रोएं में लपेटकर तांबे के ताबीज में डालकर पहनने से हिस्टीरिया दूर होता है।

प्रदर रोग के लिए : उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा की ओर वाले स्थान से "व्याघ्र नखी" की जड़ लाएं। इसे स्त्री की कमर में बांध देने से प्रदर रोग दूर हो जाता है।

मासिक व पेड़ू रोग के लिए : मासिक की खराबी के कारण स्त्री के पेड़ू में दर्द रहता हो तो उसे रात्रि में कमर में मूंज की रस्सी बांधकर सो जाना चाहिए, तथा प्रातःकाल उसे खोलकर चौराहे पर फेंक देनी चाहिए।

चनक आने पर

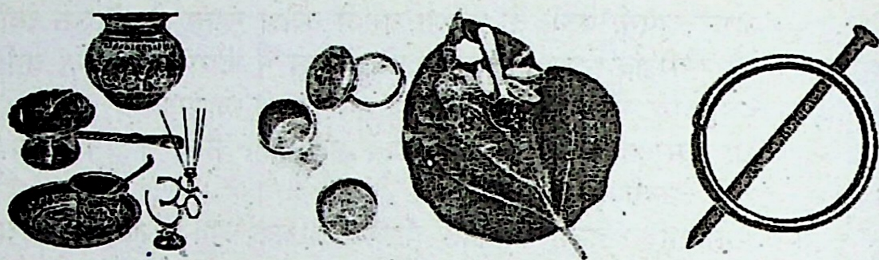
जो औरत पैरों की ओर से जन्मी हो, उस औरत से जिस व्यक्ति के चनक पड़ गई हो, वह मौन उस औरत के पास जाए, संकेत से दर्द का स्थान दिखाए और वह औरत दर्द वाले स्थान पर हल्के सात मुक्के या सात बार पैर से मारे, तो इस तरह शनिवार, रविवार या किसी भी दिन सात समय करने से दर्द ठीक हो जाता है।

अंत में केवल इतना ही तंत्र ग्रन्थों में कहा गया है कि संतान न होने अथवा संतान की मृत्यु के लिए मनुष्य के द्वारा किए गए पाप भी कारण बनते हैं। सर्प शाप, गुरु जन का शाप आदि का उल्लेख किया जाता है। इन सबकी शांति के उपाय भी बताए गए हैं। अतएव अधिकांश में इस प्रकार की कमियां

दूर की जा सकती हैं। इन बातों को प्रमाणित किया जा सकता है। विस्तार भय से विवरण प्रस्तुत नहीं किए जा रहे हैं।

विवाह और संतान का जीवन भर का साथ है। सुखी वैवाहिक जीवन ही मनुष्य को प्रगति पथ पर बढ़ाता है। सुखी विवाहित दम्पत्ति ही राष्ट्र की नींव हैं। गृह-कलह का परिणाम सदैव दुःखद होता है। गृह कलह से पीड़ित, पत्नी से लड़कर आया न्यायाधीश किसी मुकदमें का निर्णय कैसे लिख सकता है! सरकारी अधिकारी कार्यालय में क्या करता है? सब जानते हैं। साहब लड़कर आया है बीवी से। साहब बिगड़ेगा कर्मचारी पर, कर्मचारी घर आकर बिगड़ेगा बीवी पर। मनुष्य संवेदनाओं का दास है। मस्तिष्क ही उसकी प्रगति का आधार है। शांत-संतुलित प्रसन्न मस्तिष्क ही मनुष्य को उन्नत बनाता है, गृह-कलह के भयानक परिणाम और उसका फल सर्नविदित है।





कुछ लाभदायक टोटके

— मोती शंख, सीप, समुद्री झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने के टुकड़े को चमकीले लाल वस्त्र में बांधकर मौली से मुख्य द्वार पर लटकायें।
— अध्यापन कार्य करने वालों को पुखराज धारण करने से उनकी कार्य-क्षमता में प्रभाव बढ़ता है।
— राजनीति में सफलता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले जातकों को उड़ीसा का गोमेद धारण करना चाहिए।
— कला, फिल्म लाईन, ग्लैमर, मॉडलिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए हीरा प्लेटिनम या चांदी की अंगूठी में बनवाकर दाहिनी हाथ की अनामिका में पहनना चाहिए।
— पुलिस व सेना में काम करने वालों को लाल मूंगा पहनना चाहिए, क्योंकि मूंगा पहनने से उन्नति मिलती है।
— शिक्षा में अगर बाधा उत्पन्न हो रही है तो क्रिस्टल का बना हुआ कछुआ मेज पर रखने से एकाग्रता में वृद्धि होती है।
— प्रतिदिन प्रातः हाथ-मुंह धोकर थोड़ा शुद्ध मधु चख लिया करें और स्नानादि से निवृत होकर सूर्य को तांबे के लोटे में गुड़-चीनी मिश्रित जल से अर्घ्य दें; घर में सुख, शांति और ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।
— किसी भी परिवार की महिलाओं में अगर अधिक क्लेश रहता हो अथवा आपस में शत्रुता हो तो आप रविवार को किसी मिट्टी के पात्र में आग रखकर उस पर कबूतर की सूखी बीट को रखकर उसका धुंआ कमरों में कर दें।
— लोहे, तेल, शराब व बिजली की मशीनरी वाले व्यापारियों को अभिमंत्रित नीलम धारण करने का परामर्श दिया जाता है।

– अगर अपनी पत्नी के कारण घर में क्लेश रहता हो तो उस व्यक्ति को गौरीशंकर रुद्राक्ष लाल धागे में गले में धारण कर लेना चाहिए, इससे घर में स्थितियां सामान्य होती चली जायेंगी।
– श्री रामरक्षास्त्रोत का लक्ष्मीदायक मंत्र जाप करने से धन की प्राप्ति होने लगती है।
– सात साबुत हल्दी की गांठें, पीतल का एक चौकोर टुकड़ा एवं थोड़ा सा गुड़ अगर लड़की अपने हाथ से ससुराल की ओर फैंक दे तो वह ससुराल में सदैव सुरक्षित और सुखी रहेगी।
– आप घर के भण्डार-कक्ष में अगर आश्लेषा नक्षत्र में बरगद का पत्ता लाकर रखें तो भण्डार भरा रहेगा अथवा भरणी नक्षत्र में पीपल का बांदा लाकर रखने से सभी भण्डार भरा रहता है।
– हल्दी की गांठों की माला बनाकर निम्न मंत्र का प्रतिदिन जाप करने से भाग्य की विडम्बनाओं का नाश होता है–

मंत्र महामुनि विषय ब्याल के।
मेटत कठिन कुअंक भाल के।।

– जिस भवन में गणेश की पूजा होती है, वहां समृद्धि आती है और लाभ भी होता है। गणेश की स्थापना अपने भवन के द्वार के ऊपर तथा ईशान कोण में कर पूजा की जा सकती है, परंतु गणेश को कभी तुलसी न चढ़ाएं।
– अगर भवन में द्वारवेध हो, तो वहां रहने वाले सदैव कष्ट में रहते हैं। भवन के द्वार के सामने अगर वृक्ष, मंदिर, खंभा आदि हो, तो इसे द्वारवेध कहा जाता है। ऐसे द्वार पर गणेशजी की बैठी हुई प्रतिमा लगानी चाहिए, इसका आकार 11 अंगुल से अधिक नहीं होना चाहिए। जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, तब सफेद या सफेद मंदार के मूल से गणेशजी की स्थापना करनी चाहिए। इसे सिद्धिकारक कहा जाता है। इसके पहले गणेशजी को रिद्धि-सिद्धि के साथ पदार्पण करने के लिए निमंत्रण देना चाहिए और दूसरे दिन रविपुष्य योग में लाकर भवन के ईशान कोण पर उनकी स्थापना करनी चाहिए। घर में पूजा के लिए लाई जाने वाली गणेशजी की मूर्ति बैठी अवस्था में हो, तो बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है। कला अथवा शिक्षा में विकास के लिए गणेशजी की पूजा करनी है, तो नृत्य करती हुई गणेश प्रतिमा ही लगानी चाहिए।
– प्राचीन काल से सृष्टि के विकास में स्त्री-पुरुष की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसे संचालित करने हेतु स्त्री और पुरुष को परस्पर एक ऐसे

हमसफर की खोज रहती है, जो दुःख-सुख में उसका साथ निभाएं, जिसे शादी-विवाह की संज्ञा प्राप्त है। दाम्पत्य जीवन के आंगन में संतान रत्न कन्या व पुत्र को संभालने, उन्हें खड़ा करने की प्रत्येक माता-पिता की अभिलाषा रहती है तथा ऐसे सुयोग्य, सुन्दर, सुशील जीवन-साथी के साथ उनका विवाह रचा देने, जो जीवन-पथ पर एक दूसरे के पूरक बनकर चलते हुए इस सृष्टि के कार्यों को भली-भांति संचालित करें। किन्तु इस बदलते परिवेश में चुनौतियों के साथ सुयोग्य जीवन-साथी की चुनौतियां भी बढ़ी हैं। नवयौवन की आहट आते ही प्रत्येक व्यक्ति वैवाहिक रिश्ते मे बंधने के सपने संजोता है। किन्तु अधिकांश मामलों में दम्पति को कन्या के अनुरूप वर खोजने में भारी मशक्कत करनी पड़ती है। इन प्रयासों में कई बार उचित समय ढलने लगता है और कन्या सहित संबंधित लोगों की चिंताएं बढ़ने लगती हैं कि उसके हाथ कैसे पीले होंगे? ऐसे मामलों का वास्तु अध्ययन बताता है कि वास्तुदोष से युक्त भवन मांगलिक कार्यों में बाधा पहुंचाते हैं। वास्तु एक ऐसा ज्ञान है, जिसके प्रभाव से कोई अछूता नहीं रह पाता, चाहे वह वैवाहिक मामले ही क्यों न हो! कुछ वास्तु नियम हैं, जो कन्या संतान के विवाह में हो रहे विलम्ब को समाप्त कर उसे विवाह के अनुपम रिश्तों में जुड़ने की सूचना शीघ्र ही दे सकते हैं।

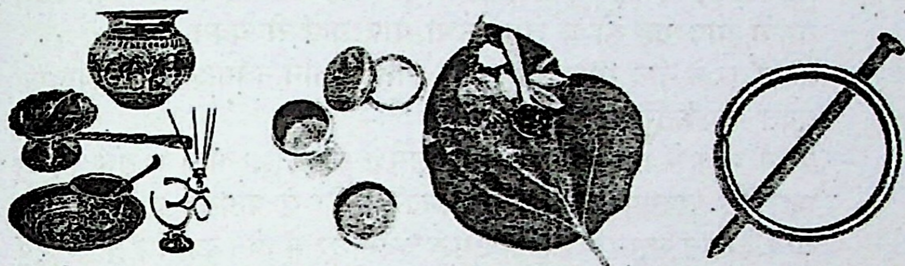
— जिस कन्या की शादी की इच्छा हो, उसे उत्तर-पश्चिम का कोना दे दीजिए तो शीघ्र ही विवाह की मधुर शहनाई बज उठेगी।
— जिस कन्या की शादी अभी नहीं करनी हो उसे उत्तर-पश्चिम के कोने से दूर रखें, अन्यथा उसके मन में अशान्ति होगी और वह अन्यत्र प्रस्थान का विचार कर सकती है।
— दक्षिण-पश्चिम का कोना अगर कन्या को दिया गया है तो उसके विवाह में देरी की संभावना बढ़ जाती है।
— यथोचित समय शीघ्र विवाह की इच्छा वाली कन्या के कमरे में पूर्व दिशा की तरफ शिव-पार्वती, राधा कृष्ण और लक्ष्मी नारायण के चित्र लगाने से विवाह शीघ्र होगा व अच्छा वर मिलेगा।
— कन्या के सोने का कमरा एकदम स्वच्छ व अनावश्यक सामान रहित होना चाहिए।
— दीवारों का रंग हल्का होना चाहिए। कन्या एक मेहमान की तरह है, उसकी सही तरीके से परवरिश करनी चाहिए। दीवारों पर हल्के गुलाबी रंग का प्रयोग शुभ फल देगा। पानी की व्यवस्था उत्तर दिशा में उत्तम

फल देती है। पानी का निकास उत्तर-पूर्व की तरफ अच्छा माना गया है, जो वैवाहिक कार्यों में सहायक होता है।

- घर का उत्तरी कोना कटा हुआ या खराब है तो यह कन्या के सुख को समाप्त करता है। उत्तर या उत्तर-पश्चिम के कोने कटे या वास्तुदोष युक्त होने से विवाह में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
- कन्या को पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके खाना खाना चाहिए। उसे गोल या कोने कटी टेबल में नहीं खाना चाहिए, इससे शुभ कार्यों में बाधा पहुंचती है। कन्या को दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके नहीं खाना चाहिए, इससे विवाह में विलम्ब होता है।
- कन्या संतान को सोते समय दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम की तरफ सिर करके सोना चाहिए, जिससे उसके विवाह की सूचना शीघ्र ही आपको मिलेगी।
- पूजा गृह ईशान कोण में बनाएं, इसे अत्यंत साफ व स्वच्छ रखें; किसी तरह का भार इस स्थान पर न रखें।
- प्रत्येक व्यक्ति यह कैसे जाने कि कुछ शापित दोषों के कारण उसे कष्ट व व्याधियों का सामना करना पड़ रहा है? शापित दोष, जो कि जन्मकृत माने जाते हैं अर्थात् इस जन्म में हम भगवान की पूजा करते हैं, अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य अनुसार दान भी देते हैं तथा पितरों आदि का श्राद्ध करते हैं। इतना कुछ करने के पश्चात् भी कष्टों का सामना करना पड़ता है, जैसे संतान का सुख देरी से मिले, विवाह में बाधा आए, नौकरी व व्यवसाय में परेशानी हो, ऋण लेने की स्थिति बने या घर में अकाल मृत्यु का भय, संतान का राह से भटकना, वैवाहिक सुख में बाधा आदि। क्यों होता है ऐसा? पितृ दोष या वंश परम्परागत-दोष के कारण मनुष्य को कष्ट एवं बाधा होती है। इनका निवारण करके हम जीवन को सुखी बना सकते हैं। इसके लिए हमें सबसे पूर्व शापित दोष को जानना आवश्यक है।
- जन्मपत्री में पंचम स्थान दूषित अष्टमेश पंचम स्थान में हो और उसमें शनि व साथ में शुक्र भी हो तथा गुरू की युति अष्टम भाव में हो।
- पंचम में गुरू व राहु की युति हो या पंचम भाव पर पापी ग्रहों की दृष्टि हो, तो भी संतान सुख में बाधा आती है।
- लग्न में शनि पांचवें घर में, राहु अष्टम में, व द्वादश स्थान में मंगल होने पर।
- जन्मपत्रिका में पितृशापित सुतक्षय निम्न ग्रह योग से होता है—

- नवमेश 6, 8, 12 भावों में हो व गुरू पाप ग्रहों के साथ में या पंचम घर में पाप ग्रह हो व लग्न सभी पाप ग्रहों से युक्त हो।
- पंचम घर में नीच राशि में सूर्य हो। साथ में शनि नवमांश में सूर्य पापग्रह युक्त पापकर्तरी हो।
- प्रथम भाव में पाप ग्रह हो तथा दशमेश 6, 8, 12 भाव में पुत्र कारक बृहस्पति पापग्रह के साथ या उनकी राशि में पापग्रह होने से।
- व्ययेश लग्न स्थान में हो, अष्टमेश पंचम घर में हो। दशमेश के अष्टम स्थान में होने के कारण पितरों से शापित जन्मपत्रिका मानी जाती है। अतः संतान पीड़ा होती है।
- इन योगों के उपायस्वरूप पितृ ऋण चुकाने से शापित दोषों का निवारण करने से पितृ तृप्त हो जाते हैं। उन्हें मुक्ति मिल जाती है। ऐसा नहीं करने पर वे पिशाच योनि में प्रवेश कर पाते हैं तथा कष्ट देना प्रारम्भ कर देते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्म है कि माता-पिता की सेवा करे। उनको कष्ट न दे। अपने मृत मां-बाप का विधिपूर्वक श्राद्ध करे। अपने कुल में किसी का भी श्राद्ध न करना इस कारण इस जन्म में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। निवारण पश्चात् उनका शाप, आशीर्वाद में बदल जाता है।
- शीघ्र विवाह हेतु तांबे के पात्र में जल भरकर उसमें हल्दी डालकर सूर्य को अर्घ्य दें। शीघ्र विवाह होगा।
- भय निवारण के लिए हनुमान जी के सामने तेल का दीपक जलाकर भय निवारण की प्रार्थना करें।
- किसी भी कार्य पर जाने से पहले कच्ची घानी का तेल, काले उड़द और काले तिल का दान करें। काम बनेंगे।





कालसर्प दोष शान्ति के टोटके और उपाय

प्रायः सभी जातियों में नाग किसी न किसी रूप में पूजे जाते हैं, लेकिन भारत में उनकी पूजा देवता के रूप में बड़ी श्रद्धा व विश्वास से की जाती है। मान्यता है कि नाग सृष्टि के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुए। उनकी चर्चा वेदों में कई रूपों में मिलती है। पौराणिक मान्यता है कि वे कश्यप और कद्रु की संतान हैं।

शतपथ ब्राह्मण में महानाग के अर्थ में नाग शब्द का उल्लेख हुआ है। भारतीय मान्यता में जिस तीन प्रमुख लोकों—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—की चर्चा है, उसमें पाताल इनका लोक माना गया है। रामायण में राम-रावण युद्ध के मध्य पाताल लोक का नागवंशी और रावण का रिश्ते का भाई अहिरावण राम-लक्ष्मण का अपहरणकर्ता बतलाया गया है।

नागों का अस्तित्व ब्रह्मा द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रारम्भ से है। पृथ्वी को शेषनाग पर धारण बतलाया गया है। भगवान विष्णु शेष शैय्या पर विराजमान होकर सृष्टि का पालन कर रहे हैं। आशुतोष भगवान शिव नागों को गले में डालकर "नागेंद्रहार" कहलाए। समुद्र मंथन के लिए नागराज वासुकी को देवताओं और असुरों ने रस्सी बनाया था। प्राचीन ग्रंथों में अनेक प्रकार के सर्पों का उल्लेख मिलता है। अग्निपुराण में 80 प्रकार के नागों का वर्णन है। प्राचीन काल से ही नागों का अस्तित्व वर्णित है।

नागपंचमी के रूप में नागों की पूजा जीव मात्र की पूजा का प्रतीक है। नागपंचमी श्र्वर्ण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाई जाती है। कारण वर्षा प्रारम्भ होते ही बिलों में पानी भरने के कारण सर्प बाहर आ जाते हैं। भय के कारण कोई इनका वध न कर दे, इसलिए इस दिन उनकी पूजा का

विधान किया गया है, क्योंकि सांप केवल भक्षक ही नहीं, कीट-पतंगों और चूहों से फसलों के रक्षक भी हैं। प्रायः समूचे भारत में नागपंचमी पर नाग की पूजा की जाती है। सांप के विष का प्रयोग जीवनरक्षक औषधि बनाने में भी किया जाता है। वैसे भी सर्प धन का रक्षक और काम का प्रतीक है।

ज्योतिषीय दृष्टि से राहु का जन्म नक्षत्र भरणी तथा केतु का जन्म नक्षत्र आश्लेषा है। राहु के जन्म भरणी के देवता यम हैं तथा आश्लेषा केतु का नक्षत्र है, जिसका स्वामी सर्प है। इन्हीं राहु-केतु के नक्षत्र स्वामी को कालसर्प कहा गया है। राहु और केतु के मध्य सातों ग्रह होने पर कालसर्प योग का निर्माण होता है और इस प्रकार की जन्मपत्रिकाओं में जो परिणाम दिखलाई देते हैं, वह लगभग एक जैसे होते हैं।

- जब सातों ग्रह पक्ष में होते हुए भी जातक को उचित फल प्राप्त न हो, अथक प्रयास के बाद भी प्रत्येक काम में बाधा उत्पन्न हो, ऋणग्रस्तता हो, मुकदमे में झूँठा आरोप हो, पारिवारिक संकट हो, संतान से पीड़ा हो या संतान न हो, जातक अपनी ही संपदा का उपयोग ना कर पा रहा हो, अचानक होने वाली घटनायें घटित हों तो अनायास ही ध्यान जाता है कि कहीं राहु-केतु के मध्य होकर कालसर्प योग तो नहीं बन रहा। तब मानना होता है कि यह एक दुर्योग है। ज्योतिषीय मत से राहु को कालपुरुष का दुःख माना गया है।
- राहु शत्रुता रखता है सूर्य चन्द्र, गुरू व मंगल से, अतः राहु, गुरू के साथ बैठकर चांडाल योग बनाये, तब कालसर्प योग बुरे फल देता है। राहु, चन्द्र के साथ बैठकर ग्रहण योग बनाये, तो कालसर्प योग कष्ट प्रदान करता है। राहु, सूर्य के साथ बैठ कर ग्रहण योग बनाये तो भी कालसर्प का अशुभ फल प्राप्त होता है। राहु, मंगल के साथ बैठकर अंगारक योग बनाये तो कालसर्प वाला जातक अभावग्रस्त होता है।

कालसर्प दोष शान्ति के टोटके

- शिवलिंग पर चांदी का नाग बनाकर अभिषेक कराया जाता है। संकटनाशक और काल को भी जीतने वाले महामृत्युंजय महाकाल शिवलिंग पर नाग की पूजा की जाती है।
- महामृत्युंजय एवं शिव कवच का नियमित पाठ करें। भगवान रुद्र की उपासना करें, इसलिए कि वे ही महाकाल हैं।
- पांच फन वाला चांदी का नाग लेकर शिवलिंग पर रुद्राअभिषेक करवा

कर घर में ही उसकी स्थापना करें व कालसर्प योग वाले जातक नियमित पूजा करें।

तक्षक नामक कालसर्प योग–

– राहु की वस्तुएं बहते जल में शनिवार को बहायें।

– कांसे के बर्तन में चांदी का टुकड़ा घर में छिपाकर किसी अंधेरे स्थान में रखें।

कर्कोटक नामक कालसर्प योग–

– ॐ नमः शिवाय लिखा अखण्डित बेलपत्र शिवलिंग पर चढ़ायें।

– 41 दिन तक तांबे के खोटे सिक्के बहते जल में बहायें।

शंखनाद नामक कालसर्प योग–

– घर के मुख्य द्वार पर अभिमंत्रित धातु से निर्मित स्वास्तिक लगायें।

– कच्ची हरिद्रा का नियमित तिलक करें।

पातक नामक कालसर्प योग–

– भगवान शिव पर चांदी के सर्पों का जोड़ा चढ़ायें।

– साबुत काली मसूर की दाल बहते जल में प्रवाहित करें।

विषाक्त नामक कालसर्प योग–

– भगवान शिव का अभिषेक पंचामृत से करें।

– केवल स्टील के बर्तन में जल या दूध पीयें।

शेषनाग नामक कालसर्प योग–

– नाग की आकृति वाली चांदी की अंगूठी बनवा कर शनिवार को मध्यमा अंगुली में धारण करें।

– घर में काला कुत्ता पालें, अथवा काले कुत्ते को नियमित दूध पिलायें।

अनंत नामक कालसर्प योग–

– बहते पानी में जटा वाला नारियल बहायें तथा पंचमी का उपवास करें।

– गेहूं, पुराना गुड़ और लोहे का मंदिर में दान करें।

कुलिक नामक कालसर्प योग–

– चांदी के नाग की अंगूठी कनिष्ठिका में पहनें।

– स्टील की गोली सदैव अपनी जेब में रखें।

वासुकि नामक कालसर्प योग–

– नित्य महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

– पक्षियों को दाना डालें, लाल चंदन घोलकर सूर्य को रोज अर्घ्य दें।

शंखपाल नामक कालसर्प योग–

– शिवलिंग पर तांबे का सर्प चढ़ायें।

– धनिये को बहते जल में बहायें, चांदी का सिक्का जेब में रखें।

पदम नामक कालसर्प योग–

– शयन कक्ष में मोरपंख रखें, तांबे का सिक्का जेब में रखें।

– साबुत हरी मूंग नियमित जल में बहायें।

महापद्म नामक कालसर्प योग–

– राहु यंत्र घर में स्थापित करें।

– बहते जल में जटावाला नारियल बहायें।

शीघ्र फल प्राप्ति के लिये टोटके और उपाय–

जब कोई उपाय काम में नहीं आये तो फल प्राप्ति के 41 दिन तक निरंतर निम्न उपाय करें–

सूर्य–बहते जल में पुराना गुड़ बहायें।

चन्द्र–पानी का बर्तन रात को अपने सिरहाने रखें। प्रातः इसे कीकर की जड़ में डाल दें।

मंगल–बहते पानी में गुड़ की रेवड़ियां बहायें या मीठे भोजन का दान करें।

बुध–छेद करके तांबे का पैसा किसी नदी में बहायें।

शुक्र–गाय का दान करें या गाय को चरी खिलायें।

शनि–तेल में स्वयं का प्रतिबिंब देखें और सुबह उससे अपने बदन पर मालिश करें।

– जातक के जीवन में सबसे मूल्यवान वस्तु मन की शान्ति है। यह वह वस्तु है कि अगर यह आपके पास होगी तो आप इसे दूसरों को प्रदान नहीं कर सकते। यह तो प्रत्येक मनुष्य अपने लिए उपायों द्वारा ही कमा पाता है। परन्तु आप लोगों को यह तो बता सकते हैं कि किस प्रकार का उपाय करने से शान्ति जीती जा सकती है। ऊंचे रहन-सहन या उच्च स्तर का जीवन बिताने मात्र से यह प्राप्त नहीं हो सकती। समस्त भौतिक सुख-सुविधायें मन को शान्ति प्रदान नहीं कर सकतीं। धन, शक्ति, शारीरिक बल अथवा सत्ता द्वारा कभी भी शान्ति नहीं मिलती है।

– गुंजा प्रायः लाल रंग की होती है, वैसी ही सफेद भी आती है। जहां वह सफेद गुंजा हो, उसकी जड़ पुष्य नक्षत्र में ले आएं। जिस दिन जड़ लेने आएं, पवित्र होकर जाएं तथा मार्ग में किसी से बोलें नहीं।

उस वृक्ष को पहले दिन जाकर निमंत्रण दे आए। जड़ को अपने शुक्र में भावना देकर जिस भी किसी को खिला दें, वह वश में होता है।

– अगर व्यवसाय स्थल पर ग्राहक नहीं आ रहे हों, किसी ने आपके व्यवसाय को बांध दिया हो, तो इस प्रयोग को करें।

– कृष्ण पक्ष के रविवार की दोपहर को पांच पीले कागजी नींबू काट कर व्यवसाय स्थल पर रखकर उसके साथ एक मुट्ठी साबुत काली मिर्च, एक मुट्ठी प्रियंगु तथा एक वास्तविक हत्थाजोड़ी रख दें। अगले दिन जब व्यवसाय स्थल खोलें तो सभी सामान को दूर ले जाकर दक्षिण दिशा में गाड़ दें। इस प्रयोग से व्यवसाय पर किया गया बंधन समाप्त हो जाता है तथा व्यापार बढ़ने लगता है।

– भाग्योदय हेतु शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन प्रातः स्नान कर, पीले वस्त्र धारण करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अपने सामने पीला वस्त्र बिछाएं। चौकी पर मध्य में चावल की ढेरी लगाकर उस पर ''द्विमुखी रुद्राक्ष'' स्थापित कर शुद्ध घी का दीपक गुलाब की धूपबत्ती प्रज्ज्वलित करें।

– कुंकुम या केसर से तिलक कर मोली, जनेऊ तथा पुष्पमाला अर्पित करें। भाग्य में वृद्धि की कामना करते हुए एक लोटे में दूध और जल मिलाकर उसमें द्विमुखी रुद्राक्ष को डालकर, किसी भी शिव मंदिर में जाकर शिवलिंग पर चढ़ा दें।

– इसी प्रकार ग्यारह सोमवार को यह प्रयोग संपन्न करें, आपका भाग्योदय होगा।

– किसी भी कार्य सिद्धि के लिए घर से बाहर जाने से पूर्व घर की देहरी के बाहर ''लाल घुंघची'' को रख कर उस लाल घुंघची पर पैर रखकर आप अपने कार्य के लिए निकल जाएं, कार्य सिद्धि होगी; आवश्यकता केवल श्रद्धा एवं विश्वास की है।

– शनिवार के दिन कोरा मिट्टी का बर्तन लेकर उसमें ''जटावाला नारियल'' का हत्था जोड़ी लेकर एक श्वेत कागज पर काली स्याही से शत्रु का नाम लिखकर नारियल के साथ चमकीले काले धागे में बांधकर बर्तन के भीतर मुंह बंद कर गड्ढा खोदकर गाड़ दें तथा उसके ऊपर पत्थर रख दें।

– अगर पर्याप्त धनार्जन के बाद भी धन संचय नहीं हो पा रहा हो, तो एक रुपए का सिक्का और काली गुंजा का एक बीज लेकर धरती में दबा देना चाहिए।

- अगर चोरी से बार-बार धनहानि हो रही हो, तो अपने गल्ले के नीचे वाली गुंजा के दाने डाल देने चाहिएं। ऐसा करने से धन की वृद्धि होती रहेगी तथा धन की हानि भी नहीं होगी।
- काली गुंजा के दानों की माला पिरोकर अगर बाएं हाथ में कलाई पर बांध ली जाए, तो ऐसे व्यक्ति को धन से संबंधित सफलता मिलती है तथा गड़ा धन भी प्राप्त होता है।
- कच्ची घानी के सरसों के तेल से मिट्टी के जलते हुए दीपक में अगर गुंजा के दाने डाल दिए जाएं तथा उस दीपक को घर के मुख्य द्वार पर रख दिया जाए, तो परिवार में सुख-शांति स्थापित होती है तथा आर्थिक बाधाएं घर से दूर होती हैं।
- अगर गुंजा लेकर संध्या काल में जब सूर्यास्त हो रहा हो, गुंजाओं के परस्पर मुख मिलाते हुए किसी शत्रु के घर में रख दिया जाए, तो उस परिवार में कलह अवश्य उत्पन्न होती है।
- जिन व्यक्तियों को अपनी सुरक्षा के प्रति भय रहता हो तथा अकारण ही मन सशंक्ति रहता हो, उन्हें गुंजा चमकीले पीले वस्त्र में बांधकर अपने पास रखनी चाहिए।
- अनेक परिवारों में विवाह के समय वर को एक कंगन पहनाया जाता है, जिसमें रत्ती पिरोई गई होती है। इसको पहनने से वर की सुरक्षा होती है तथा उसका जीवन समृद्ध और सुखमय रहता है। एक प्रकार से यह तांत्रिक टोटका सामाजिक परम्परा का रूप ले चुका है।
- जिन बच्चों को बार-बार नजर लगती हो, उनके गले में गुंजा के दाने चमकीले लाल वस्त्र में बांधकर पहना देने चाहिएं। इससे बुरी नजर से वे सुरक्षित रहेंगे।
- अगर किसी को क्रोध करने की आदत ही बन गई है, शांति जिसके मस्तिष्क से ही निकल चुकी है, ऐसे व्यक्ति को शयन करते समय उसके सिरहाने जल से भरा एक गिलास रखें और उस गिलास में चमेली के पुष्प डाल दें। शुक्रवार से इस उपाय को प्रारंभ करें। इस उपाय से कुछ ही समय में ही उसका क्रोध शांत होता चला जाएगा।
- बिल्व पत्र पर छह अंगुल लम्बी अनार की कलम से लाल चंदन की स्याही से ''श्रीं'' लिखकर शिवलिंग पर अर्पित करें। 31 दिन तक चढ़ाए गए बिल्वपत्र तथा पुष्प माला आदि को एकत्रित करके बहते पानी में बहा दें। 31 दिन के पश्चात् मनोकामना पूर्ण होने लगेगी।
- ग्रहण होली अथवा दीपावली के दिन पीले रंग का लड्डू बनाकर थाल

के मध्य में रख दें। फिर ताजे लाल गुलाब के फूलों की माला बना कर उन लड्डुओं को ठीक प्रकार से ढक दें। जिस मनुष्य को बुलाना हो, उसका पहना पुराना वस्त्र लेकर उस पर बैठकर उसका नाम लेकर पुकारता जाए, वह स्वयं ही लौट आएगा।

— अगर दुकान अथवा भवन को नजर लग गई हो, तो उसे दूर करने के लिए दुकान अथवा भवन के प्रवेश द्वार की चौखट पर पांच बेदाग एवं पीले कागजी नींबू तथा हरी मिर्च लेकर उन्हें एक धागे में पिरोकर कृष्ण पक्ष के शनिवार के दिन लटका देना चाहिए। इससे अगर आपकी दुकान अथवा भवन को किसी व्यक्ति की नजर का दोष होगा तो उससे सुरक्षा होगी।

— अगर आपको घर में ऐसा अनुभव हो रहा है कि रोज परस्पर झगड़े हो रहे हैं। कार्य में विघ्न-बाधाएं आ रही हैं—ऐसा लग रहा है कि घर में प्रेत-आत्माओं का प्रवेश हो रहा है, तब उसके लिए 31 दिन तक प्रतिदिन सूर्य अस्त के समय गाय का आधा किलो कच्चा दूध व उसमें तीस बूंद शुद्ध मधु मिलाकर साफ बर्तन में डालकर, स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहन कर अपने घर के ऊपर की छत से जो खुली जगह हो या जितने भी कमरे हों, उन सब कमरों में उस दूध के छींटे देते हुए मुख्य द्वार के बाहर उस दूध की धार देते हुए शेष बचे दूध को वहीं गिरा दें। ऐसा 31 दिन करने पर घर बाधाओं से सुरक्षित हो जाएगा।

— अगर किसी स्त्री के संतान नहीं हो रही हो, तो जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई हो और अर्थी पर बांध कर श्मशान घाट ले जाया जा रहा है और वो अर्थी किसी चौराहे पर पहुंचे तो उस समय जिस स्त्री के बच्चा नहीं हो रहा है, वह स्नान कर पहले से ही उस चौराहे पर खड़ी रहे और जब अर्थी चौराहे पर पहुंचे, तुरन्त उस अर्थी के नीचे से निकल जाए, ध्यान करते हुए कि तुझे मेरे पुत्र रूप में जन्म लेना है। कहते हैं कि इस प्रयोग से संतान हो जाती है।

— पूर्णमासी के दिन मोरशिखा की जड़ लाएं। रवि-पुष्य नक्षत्र के दिन कुंवारी कन्या के हाथ से बंटे सूत को उस पर सात बार लपेट दें और उसको बाईं भुजा पर बांध लें तो प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

— जिस किसी को आत्मा का दोष लग जाए तो गंधक, गुग्गल, लाख, लोबान, हाथी दांत, सांप की कांचली व ग्रसित व्यक्ति के मस्तक का एक बाल लेकर सबको मिलाकर पीसकर उसको जलाएं और उसका धुआं दें, दोष हट जाता है।

– अनेक बार व्यक्ति का चौराहे में रखी हुई कुछ वस्तु पर पैर पड़ जाता है, या कोई घूमती हुई अशरीरी आत्मा छूती हुई निकल जाती है या प्रेतात्मा का साया पड़ जाता है तो व्यक्ति अस्वस्थ हो जाता है, ज्वर रहने लगता है, खाना-पीना छूट जाता है तो उस समय गाय के गोबर का उपला और जली हुई लकड़ी की राख को पानी से भिगोकर एक लड्डू पर सात सात टीका लगा दें और उस लड्डू व उपले को अस्वस्थ व्यक्ति के ऊपर से घुमाकर चुपचाप सूर्य अस्त के समय जाकर चौराहे पर रख दें। वह व्यक्ति जल्द ही स्वस्थ हो जाएगा।

– नजर लगे व्यक्ति के ऊपर चारों ओर से सफेद फिटकरी का टुकड़ा घुमाकर अग्नि में डाल दें। तीन दिन लगातार तीनों समय करें तो व्यक्ति स्वस्थ हो जाएगा।

- धान कूटने वाला मूसल और सींकों वाली झाड़ू, अस्वस्थ व्यक्ति के ऊपर वार कर, उसके सिरहाने रख दें और बाएं पैर का जूता उस अस्वस्थ व्यक्ति के ऊपर से सात बार घुमाएं और प्रत्येक बार उल्टा जूता जमीन पर पीटें तो अस्वस्थ व्यक्ति ठीक हो जाएगा।

– किसी को भी नजर लग गई हो, खाना-पीना छूट गया हो, अस्वस्थ रहने लगा हो, तो चौराहे की मिट्टी में नमक, राई व सात साबुत लाल मिर्च मिलाकर शनिवार व रविवार को तीनों समय (सुबह, दोपहर व शाम को) सूर्य अस्त के समय उस व्यक्ति के ऊपर से घुमाकर चूल्हे में डाल दें तो उसकी नजर तुरन्त उतर जाएगी।

प्रिय पाठको! एक पत्थर (रत्न) होता है—संगे यशब। मेरे अनेक साथी विद्वान कमजोर दिल वाले अथवा सदैव भयभीत रहने वालों को धारण करने का परामर्श देते हैं। यह गलत है। इस कार्य के लिए तो हौल दिली पत्थर होता है। संगे यशब अवसाद, तनाव, डिप्रेशन के लिए होता है। आप इसी कार्य के लिए धारण करें।

– व्यापार स्थल, भवन या दुकान के सभी वास्तु-दोषों को दूर करने के लिए प्रातः पोंछा लगाते समय पानी में सेंधा नमक डालकर पोंछा लगाना चाहिए।

जिन व्यक्तियों को अनजान कारणों से शारीरिक, मानसिक परेशानियां हों, उन्हें निम्नलिखित उपाय करने पर शीघ्र मुक्ति प्राप्त होती है—

- अपने रूमाल में अथवा साड़ी के पल्लू में एक कोने में थोड़ी सी हीरा हींग बांधनी चाहिए तथा उसे दिन में एक बार अवश्य सूंघना चाहिए।
- प्रातःकाल नीम की कोंपलें चबानी चाहिएं।

- जब भी किसी कारण से श्मशान में जाना पड़े, तो बाहर निकलकर नीम की पत्तियां अवश्य चबानी चाहिएं।
- सोते समय सिरहाने सफेद कपड़े में फिटकरी का टुकड़ा लपेट कर रखना चाहिए। लाभ प्राप्त होगा।

प्रिय पाठको! टोटके, उपाय, प्रयोग तो केवल मानसिक बल प्रदान करते हैं। इनके पीछे शक्ति तो भगवान और सद्गुरू की होती है। कहा है–

राम मरे तो मैं मरूं, नहि तो मेरी मरे बलाय।
अविनाशी का बालका, मरे ना मारा जाए।।

– आप कष्ट, रोग, ऋण के समय प्रभु और सद्गुरू को स्मरण रखें, फिर दुख पास नहीं आएगा।

– भवन के मुख्यद्वार पर बाहर की ओर फूलों का गुलदस्ता या छोटी घंटियां लगानी चाहिएं। अपनी धार्मिक आस्था के अनुसार मुख्य द्वार के बाहर मांगलिक प्रतीकों को भी प्रदर्शित करना चाहिये। इन प्रतीकों के प्रयोग से सौभाग्य एवं समृद्धि में वृद्धि होती है।

– दीपावली के दिन पीपल के पांच साबुत पत्तों की व्यवस्था करें। दीपावली पूजन से पहले पीपल के नीचे पांचों पत्तों को रख दें। प्रत्येक पत्ते पर पनीर का एक टुकड़ा तथा छेने की मिठाई रखें। फिर आटे का दीपक बना लें। तत्पश्चात् प्रत्येक पत्ते पर जल में दूध, शहद व शक्कर मिलाकर डालें। इसके पश्चात् पीपल के वृक्ष के नीचे पत्ते अर्पित कर दें। फिर एक अलग स्थान पर गुलाब की अगरबत्ती, दीपक व दूध भी अर्पित करें और हाथ जोड़कर वापस आ जाएं। इसके पश्चात् अगले शनिवार व मंगलवार को भी यही क्रिया करें। इसमें आपको पत्तों का प्रयोग नहीं करना है। बस एक ही स्थान पर पनीर के टुकड़ों के साथ छेने की मिठाई, जल, गुलाब की अगरबत्ती तथा दीपक अर्पित करने हैं अर्थात् दीपावली की रात्रि से उपाय आरंभ करके दीपावली के पश्चात् मंगलवार या शनिवार को भी करें। अगर दीपावली मंगलवार अथवा शनिवार को ही पड़ती है, तो भी आपको एक बार अगले मंगलवार व शनिवार को उपाय करना है। इस उपाय का प्रभाव आप स्वयं अनुभव करेंगे।

– एक चुटकी गेहूं का आटा लेकर दुकान के मुख्य द्वार के दोनों कोनों पर डाल दें। लेकिन ऐसे स्थान पर डालें कि किसी की दृष्टि न पड़े। यह प्रयोग केवल शुक्ल पक्ष में ही करें।

- एक नींबू में चार लौंग गाड़कर निम्न मंत्र का जाप 31 बार करें—"ॐ हनुमते नमः"—और इस नींबू को अपने पास रखें।
- घर से निकलने के पूर्व 21 रुपए घर के किसी गुप्त स्थान पर रखें, सफलता मिलने पर उसे किसी भिखारी को दे दें।
- थोड़ा सा कच्चा सूत ले, उस पर केसरिया रंग चढ़ायें और 31 बार "ॐ हनुमते नमः" का जाप करके उस सूत को व्यापार-स्थल पर बांध दें।
- पीपल के पेड़ के नीचे शनिवार को तेल का दीपक जलाना चाहिए। उसकी जड़ों में शक्कर मिश्रित जल चढ़ायें और भुने हुए चने चढ़ायें।
- रविवार के दिन रेशमी काला धागा अनामिका उंगली में बांध लें। उसे रांगे की अंगूठी से ढक दें। मोटापा धीरे-धीरे कम हो जाएगा।
- घर में गेहूं का आटा सोमवार या शनिवार को ही पिसवायें। पिसवाने के पूर्व उसमें सवा मुट्ठी चने मिला दें।
- कांसे के बर्तन में शुद्ध घी लेकर जिस मंदिर या स्थान पर अखंड ज्योति जल रही हो, उसमें कांसे के बर्तन में घी को मिला दें।
- रात को पति अपने सिरहाने सिंदूर रख ले व पत्नी अपने सिरहाने कपूर रख ले। पति सुबह सिंदूर को घर के किसी कोने में डाल दे और पत्नी देसी कपूर को जला दे।
- अशोक के पेड़ के सात पत्ते किसी भी देवता के मंदिर में रखकर उनकी पूजा करें। पत्ते मुरझाने पर पुनः बदलें और पुराने पत्ते पीपल के पेड़ के नीचे रखें।
- घर में फिटकरी का एक बड़ा टुकड़ा काले कपड़े में बांधकर घर के किसी ऊंचे स्थान पर रख दें।
- एक देसी पान डंठल समेत, गुलाब का फूल और कुछ बताशे पान पर रखकर रोगी पर से इकत्तीस बार उतारें और गुप्त रूप से किसी चौराहे पर रख दें। रोगी पर दवा का प्रभाव होने लगेगा।
- गुड़हल के 108 फूलों की माला लाल धागे में बनायें। जिस मंदिर में मां भगवती की प्रतिमा हो, उसके गले में वह माला पहना दें और हाथ जोड़कर अपनी मनोकामना कहें। मनोकामना पूरी होगी।
- सफेद दाढ़ी वाले बैठे हुए हनुमानजी की तस्वीर के सामने बैठकर उनके चरणों में 21 गुलाब के फूल चढ़ायें। ऐसा ग्यारह दिन करें।
- धुंध की जड़ सिरहाने रखने से या केवाच की जड़ पीसकर उसका चूर्ण सिर पर लगाने से नींद आ जाती है।

– दीपावली के पूजन के साथ ही 50 ग्राम शुद्ध शहद, एक खोपरा, 250 ग्राम शक्कर तथा केसर की 3 डिब्बी अर्पित करके मां से अपने कार्यसिद्धि का निवेदन करें।
– पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी की जड़ को गुरूवार को उखाड़कर घर के प्रवेश द्वार पर लटकाने से घर को बुरी नजर नहीं लगती।
– मंगलवार को एक छोटा सा टुकड़ा गुड़ लेकर सायंकाल में चौराहे पर जाकर दक्षिण की ओर मुंह करके एक टुकड़ा पूर्व दिशा में फेंक दें और दूसरा टुकड़ा पश्चिम में फेंक दें। बिना पीछे मुड़े घर आ जायें।
– परीक्षा में जाते समय थोड़ा सा मीठा दही परीक्षार्थी को खिलायें।
– सात दिन तक लगातार एक नींबू के चार टुकड़े करके चौराहे पर चारों दिशाओं में फेंक दें और बिना पीछे देखे वापस आ जावें। रोजगार मिलेगा।
– दांयी ओर सूंड वाली गणेश की मूर्ति या तस्वीर घर या दुकान पर लगायें और उसके सामने अखण्डित लवंग और पूजा वाली सुपारी रखें, जब भी काम के लिए बाहर जायें, लौंग और सुपारी साथ में ले जायें। कार्य सिद्ध होगा। काम हो जाने पर लौंग को चूस लें और सुपारी वापस गणेश जी के सामने रख दें।
– गुरूवार को पश्चिम दिशा में लगाये गए पौधों पर प्रतिदिन धूप देकर जल चढ़ायें।
– काली हल्दी की गांठें बांधकर उनकी माला बनाकर 89 खारकों के साथ गणेश मंदिर में गणेशजी के चरणों में अर्पित करें और उनमें से नौ खारक और माला गणेशज़ी को अर्पित कर, 80 खारकों को वापस लें, उसमें से एक खारक रोज खाया करें। अस्सी दिन में कार्य बन जायेगा।
– गुरूवार को ळक्ष्मी मंदिर के सामने काले कुत्ते को पूर्णपोली खिलायें। यह केवल एक ही गुरुवार को करें।
– एक मुट्‌ठी गुड़, एक मुट्‌ठी साबुत नमक, एक मुट्‌ठी गेहूं, तांबे के दो सिक्के—इन सबको एक सफेद वस्त्र में बांधकर, घर के ऊंचे स्थान पर रख दें। यह उपाय सोमवार, बुधवार, गुरुवार या रविवार को ही करें।
– बड़ के पेड़ की 108 बार प्रदक्षिणा लगायें। तीन सौ दिन में 21 हजार प्रदक्षिणा पूरी होनी चाहिएं। संतान प्राप्त होगी।

– गायत्री जप प्रतिदिन 108 बार 90 दिन तक करते रहें।
– रविवार को उपवास रखें।
– शुक्रवार को हल्दी मिश्रित तेल का लेप करें। पूजन सामग्री भी पीली होनी चाहिए।
– मंगलवार को नाखून काटकर पुड़िया में बांधकर मुख्य द्वार के सामने फेंकें।
– मंगलवार को काले धतूरे की जड़ को तिजोरी में रखें।
– बड़ी सौंफ और शक्कर किसी टाट के कपड़े में बांधकर घर के ऊपर कहीं फेंक दें।
– घर की तिजोरी में पांच हल्दी की गांठें एवं 21 कमल-गट्टे बांध कर रख दें।
– गुरुवार के दिन केले के पेड़ पर पीले चने की दाल और हरिद्रा चढ़ावें और नौ प्रदक्षिणा लगायें।
– पलाश के फूल गोमूत्र में कूटकर छाया में सुखाकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन स्नान के पानी में इस चूर्ण को डालकर नहायें। डेढ़ वर्ष लगातार करने से कालसर्प योग नष्ट हो जाएगा।
– राहु का निम्न जाप 72 हजार बार करने से कालसर्प योग नष्ट हो जाएगा–

घर के प्रवेश द्वार पर चांदी का प्राण प्रतिष्ठित स्वास्तिक लगायें।
पीड़ित के सिर पर से नारियल और नींबू को सात बार उतारकर होली की अग्नि में डाल दें।
मेष, वृश्चिक राशि के लोग खैर की लकड़ी होली में अर्पित करें।
वृषभ, तुला राशि के लोग गूलर की लकड़ी होली में अर्पित करें।
मिथुन, कन्या राशि के लिए अपामार्ग की लकड़ी होली में अर्पित करें।
धनु, मीन राशि के लोग पीपल की लकड़ी होली में अर्पित करें। कर्क राशि के लोग पलाश की लकड़ी होली में अर्पित करें।
सिंह राशि के लोग मदार की लकड़ी होली में अर्पित करें।
थोड़ा आटा और चीनी लें। दोनों को मिला लें। रात्रि में जब शिशु सो रहा हो, तब यह मिश्रण लेकर बच्चे के सिर से पैर तक सात बार घुमाएं। उसके पश्चात् दरवाजे के बाहर जाकर हथेली में रखा हुआ यह मिश्रण फूंक कर उड़ा दें। यह लगातार तीन दिन तक करें। नजर लगी होगी, तो आराम होगा।
– जिस बच्चे को नजर लगी हो, उस बच्चे के सिर के ऊपर से साबुत

रूई 20 ग्राम एवं नमक 10 ग्राम लेकर सिर से पैर तक सात
यह प्रयोग शनिवार की रात्रि को ही करें।

- बच्चे को नजर लगी है या नहीं, यह पता लगाने के लिए एक रूई की बाती लें। उसे दीपक में सरसों के तेल में जलाएं और बच्चे के ऊपर से सात बार घुमाएं। अगर नजर लगी होगी तो बत्ती चर-चर करके जलेगी और तेल भी गिरेगा। इस प्रकार तीन दिन लगातार करें। वीरवार को न करें।
- सूर्योदय से पहले स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर सूर्योदय के पश्चात् सूर्य के सामने लाल मिर्च के कम से कम 31 बीज छोड़ दें और कहें—मेरा इस स्थान से शीघ्र तबादला हो जाना चाहिये। तीन दिन बराबर करें तो बहुत शीघ्र उस स्थान से तबादला हो जायेगा।
- वर या कन्याएं पीपल को 54 दिन तक लगातार जल चढ़ाएं, विवाह में आने वाली बाधाएं दूर होंगी। यह क्रिया रविवार को नहीं करें। कन्याएं रजोधर्म के समय जल न चढ़ाएं।
- अगर कोई लड़का अथवा लड़की अपने प्रेम के लिए दीवानी हो और उसे उस दीवानापन से मुक्त कराना हो तो लोहे के एक टुकड़े को तीन बार आग में गर्म करके तीन बार पानी से बुझाएं और बुझाते समय हर बार यह भावना दें—जिस प्रकार यह गर्म लोहा पानी में शीतल होता है, इसके मन को भी शीतल कर दें। यह क्रिया 9 दिन तक करें।
- अगर जी तोड़ परिश्रम के बाद भी व्यवसाय में उन्नति नहीं हो रही हो तो सोमवार के दिन गुरु पुष्य योग में प्रातःकाल हरे रंग के कपड़े की एक छोटी थैली तैयार करें। इस थैली में 7 मूंग, 10 ग्राम साबुत धनियां, एक पंचमुखी रुद्राक्ष, चांदी का 1 रुपये का एक सिक्का, 2 सुपारियां और हल्दी की 2 गांठें रखकर गणेश को शुद्ध घी के मोदक का भोग लगाएं। फिर यह थैली तिजोरी या बॉक्स में रख दें। लाभ होगा।
- अगर कन्या के विवाह में विलंब हो रहा हो, तो उसे गुरुवार को पीले और शुक्रवार को सफेद वस्त्र ना पहनाएं। वस्त्र नए होने चाहिएं। यह प्रयोग पांच सप्ताह तक करें, अच्छे प्रस्ताव अपने लगेंगे और विवाह शीघ्र होगा।
- जिस समय कन्या के परिजन वर-पक्ष से विवाह वार्तालाप के लिए जा रहे हों, उस समय कन्या अपने बालों को खोले रखें तथा उनके लौट कर आने तक न बांधें। कन्या को चाहिए कि अपने परिजनों को विवाह

वार्ता के लिए प्रस्थान करते समय प्रसन्नतापूर्वक मिष्ठान खिलाकर विदा करे।

– शीघ्र विवाह के लिए कन्याओं को 16 सोमवार का उपवास तथा प्रत्येक सोमवार को शिव मंदिर में जाकर जलाभिषेक करना चाहिए और शिव जी से शीघ्र विवाह की प्रार्थना करनी चाहिए।

– मनोनुकूल वर की प्राप्ति हेतु कन्या को शिव-गौरी की पूजा करनी चाहिए।

– विवाह के इच्छुक लड़के या लड़कियां शुक्रवार को भगवान शंकर का जलाभिषेक करें तथा शिवलिंग पर 108 पुष्प चढ़ाएं। ऐसा 16 शुक्रवार करें, विवाह शीघ्र होगा।

– गुरुवार को लक्ष्मीनारायण मंदिर में कलगी और बेसन के लड्डू चढ़ाएं और भगवान से शीघ्र विवाह की प्रार्थना करें।

स्फटिक से बने लक्ष्मी के चरण चिन्हों को पूजाघर में रखकर प्रतिदिन धूपदीप द्वारा पूजन करना चाहिए। अगर किसी विशेष व्यापारिक अनुबन्ध की अभिलाषा हो, किसी व्यक्ति को दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो, किसी नये कार्य में धन निवेश करके व्यवसाय बढ़ाना हो, तो यह प्रयोग विशेष सफलता देता है। कार्य पूर्ण होने के पश्चात् भी अगर माता लक्ष्मी के चरणों की आराधना जारी रखी जाए, तो लाभ के नए स्त्रोत मिलते रहते हैं। स्फटिक चरण चिन्हों को घर एवं कार्यालय दोनों स्थानों पर रखा जा सकता है।

इस प्रकार स्फटिक गणेश, स्फटिक शंख एवं स्फटिक श्रीयंत्र को एक साथ पूजाघर में रखकर प्रतिदिन धूप-दीप द्वारा उनका पूजन करना चाहिए।

घर के साथ-साथ अपने कार्यालय, व्यापारिक संस्थान, दुकान अथवा शोरूम के पूजाघर में भी स्फटिक गणेश, स्फटिक शंख एवं स्फटिक श्रीयंत्र की स्थापना करके प्रतिदिन पूजन करना चाहिए।

नजरदोष निवारण हेतु

– शनिवार के दिन हनुमान मंदिर में जाएं एवं उन्हें गुड़-चने का प्रसाद चढ़ाएं। तत्पश्चात् हनुमान जी की मूर्ति के कंधे पर से थोड़ा सिन्दूर लेकर नजरदोष से पीड़ित व्यक्ति के माथे पर लगा दें। इससे शीघ्र नजर दोष से मुक्ति प्राप्त होगी।

– नजर दोष से पीड़ित व्यक्ति को पान में सात गुलाब की पंखुड़ियां रखकर खिलाने से शीघ्र नजरदोष दूर होता है।

– शनिवार अथवा रविवार के दिन नजरदोष से पीड़ित व्यक्ति के सिर

पर से थोड़ा दूध उतारें। फिर इस दूध को कुत्ते को पिला दें। नजर दोष से राहत प्राप्त होती है।

- मूंगे से बने हनुमान जी की स्थापना करें और उनका नित्य पूजन करें।
- सफेद सूत में होली के पर्व पर काले धतूरे की जड़ बांधकर पीड़ित व्यक्ति को पहनाने से ऊपरी बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है।
- प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाएं। साथ ही देसी कर्पूर पर 5 अखण्डित लौंग जलाकर उनकी भस्म का तिलक अपने माथे पर करें। इस भस्म से अपने घर के मुख्य द्वार पर स्वस्तिक भी बनाया जा सकता है। इस प्रयोग से शत्रु शान्त होते हैं, मुकदमे आदि में सफलता प्राप्त होती है एवं आत्मविश्वास भी बढ़ता है।
- होली के दिन अथवा किसी भी शनिवार को काले कपड़े में बांधकर काले तिल एवं काले उड़द सिर पर से सात बार उतारकर जल में प्रवाहित कर दें।
- पुष्य नक्षत्र में चमेली की जड़ को ताबीज में भरकर अपने बाजू पर बांधें।
- 45 शुक्रवार तक आटे में पनीर मिलाकर उसे गाय को खिलाएं एवं 45 शुक्रवार तक निरन्तर इस प्रयोग को करते रहें।
- अगर अशुभ ग्रहों के फलस्वरूप संतान प्राप्ति में बाधा आ रही हो, तो जातक को रविवार का उपवास करना चाहिए और जल में लाल पुष्प और रोली मिलाकर सूर्य देवता को अर्ध्य देना चाहिए।
- किसी भी नदी से गुजरते समय एक रुपए का सिक्का अवश्य डालें। इससे सभी आकस्मिक बाधाओं से परिवार की सुरक्षा होती है।
- अमावस्या के दिन एक लाल रंग का सवा गज कपड़ा लें एवं उसमें कुछ चावल, सवा पांच रुपए एवं एक नारियल रखें। फिर इस पोटली को अपने घर के किसी कोने में सुरक्षित रख दें। रखते समय अपने पितरों का स्मरण करें।
- प्रत्येक गुरूवार को गाय को गुड़ एवं भीगी हुई चने की दाल खिलाएं तथा छोटे बच्चों को रेवड़ियां बांटें।
- किसी भी विशिष्ट कार्य पर जाने से पूर्व भगवान शिव को 3 बिल्व पत्र चढ़ाएं।
- घर से निकलने के पूर्व गणेश को दूर्वा चढ़ाएं तथा उसमें से एक पुष्प अपनी ऊपर की जेब में रखकर ले जाएं।

— किसी कार्य के लिए घर से बाहर जाते समय जातक का जो स्वर चला रहा हो, उसी गांव को सर्वप्रथम घर से बाहर रखें, तो कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यदि दायां स्वर चल रहा हो, तो अति उत्तम है।

— अगर रोगग्रस्त व्यक्ति पर औषधि का प्रभाव नहीं हो रहा हो, तो गुलाब का एक पुष्प एवं सात बताशे पान के एक पत्ते पर रखकर उसके ऊपर से उसारें एवं इसे किसी भी चौराहे पर ले जाकर रख दें।

— अगर रोग बहुत पीड़ादायक हो, तो उस कष्ट से मुक्ति हेतु जौ के आटे में काले तिल एवं सरसों का तेल मिलाकर एक मोटी रोटी बनाएं, फिर उसे रोगी के ऊपर से सात बार उसारकर किसी भैंस को खिला दें।

— अगर आप सर्दी से पीड़ित हों, तो प्रत्येक सोमवार को 250 ग्राम कच्चे चावल दान करें। सोमवार के दिन चन्द्र की हीरा नक्षत्र में बहते हुए जल में एक सिक्का प्रवाहित करने से सर्दी जुकाम से राहत प्राप्त होती है।

— किसी भी शुभ मुहूर्त में तांबे का छल्ला धारण करने से रक्तचाप रोग में लाभ प्राप्त होता है।

— शनि की अशुभ साढ़ेसाती के फलस्वरूप अशुभ परिणाम प्राप्त हो रहे हों, तो किसी भी शनिवार के दिन पुराने कपड़े पहनकर किसी शनि मंदिर में जाएं। साथ में काले उड़द, सरसों का तेल भी ले जाएं। वहां जाकर काले उड़द शनि महाराज के समक्ष रखें एवं सरसों के तेल का दीपक जलाएं। तत्पश्चात् अपना पुराना वस्त्र वहीं छोड़कर नंगे पांव वापस आ जाएं।

— अगर आप वायु सम्बन्धी विकारों से ग्रस्त हों, तो 7 शनिवार तक भूरे रंग की गाय अथवा किसी भी रंग के सांड को 250 ग्राम गुड़ खिलाएं।

— अगर आपने वाहन खरीदा है, अथवा अशुभ ग्रहों की दशा चल रही है, तो दुर्घटना होने की आशंका रहती है। ऐसी स्थिति में किसी भी शनिवार के दिन एक काले रंग की पोटली में काले तिल, उड़द, सुपारी एवं सिन्दूर रखकर इसे अपने वाहन के आगे के भाग में बांध दें।

— यदि विवाह में अनेक समस्याएं आ रही हों अथवा विवाह योग्य आयु होने पर भी विवाह संबंध तय नहीं हो पा रहा हो, तो शुभ मुहूर्त में एक गौरी शंकर रुद्राक्ष भगवान शिव को चढ़ाकर धारण करें।

— एक दागरहित बड़ा पीला नींबू चौराहे पर लेकर जाएं और वहां उस नींबू की चार फांक करके चारों दिशाओं में फेंक दें। तत्पश्चात् अपनी

मनोकामना का स्मरण कर बिना पीछे मुड़े, चुपचाप वहां से वापस आ जाएं। इस प्रयोग से शीघ्र ही भाग्योदय होता है।

— कृतिका नक्षत्र में काले घोड़े की नाल से बना एक लोहे का छल्ला मध्यमा अंगुली में धारण करें।

— साक्षात्कार में सफलता प्राप्ति हेतु 5 अभिमंत्रित पीली कौड़ियों पर हल्दी का तिलक लगाकर अपने ऊपर से नौ बार उसारें एवं उन्हें किसी को उचित दक्षिणा के साथ दे दें। सफलता मिलेगी।

— पुष्य नक्षत्र में अथवा अन्य किसी शुभ मुहूर्त में सफेद आक की जड़ किसी ताबीज में भरकर धारण करें। धारण करने से पूर्व पंचोपचार से उसका पूजन करें।

— होली या नवरात्र के प्रथम दिन से आरम्भ कर प्रत्येक बुधवार को बकरियों को हरा चारा खिलाएं।

— शनिवार के दिन अष्टधातु का एक कड़ा बनवाएं। इस कड़े को घर लाकर गंगाजल से धोकर पूजन करें। तत्पश्चात् यह कड़ा पहन लें।

— प्रातःकाल स्नानादि से निवृत होकर सूर्योदय के समय एक लोटा जल भगवान सूर्य को अर्पित करें तथा काले रंग का धागा अंगूठे में बांधें।

— मंगलवार के दिन अथवा होली के शुभ पर्व पर एक लाल कपड़ा लें। इस लाल कपड़े में थोड़ा सेंधा नमक बांध लें। तत्पश्चात् हनुमान के मंदिर में जाएं तथा इस पोटली को हनुमान जी के चरणों में स्पर्श करवाएं। वापस आकर यह पोटली किसी धागे की सहायता से गर्भवती महिला के पेट पर बंधवा दें। इस प्रयोग के फलस्वरूप संतान की रक्षा होती है तथा गर्भपात नहीं होता है।

— अगर बच्चे को बहुत सावधानी बरतने के पश्चात् भी बार-बार चोट लग जाती हो, तो शुभ मुहूर्त में चांदी का चन्द्रमा एवं तांबे का सूर्य बनवाकर गले में पहना दें। लाभ प्राप्त होगा।

— अगर आपके गुप्त शत्रु अधिक हों और प्रति दिन आपको नुकसान पहुंचाते हों, तो यह प्रयोग आपके लिए रामबाण सिद्ध होगा।

— होली, नवरात्र अथवा किसी भी पुष्य नक्षत्र में सफेद आक का पौधा अपने घर में मुख्य द्वार के निकट लगाएं एवं प्रतिदिन सायंकाल के समय इसके समक्ष एक घी का दीपक प्रज्ज्वलित करें तथा मन ही मन अपने शत्रुओं से मुक्ति की प्रार्थना करें।

— घर से बाहर निकलने से पूर्व दो लौंग भगवान गणपति को चढ़ाएं। इसके पश्चात् उनमें से एक लौंग अपने साथ रखकर ले जाएं।

- यदि बहुत समय से पदोन्नति के योग नहीं बन रहे हों, तो जितने वर्ष की नौकरी आप कर चुके हैं, उतने ही प्राण प्रतिष्ठित गोमती चक्र किसी भी सोमवार के दिन अथवा होली के दिन शिवलिंग पर चढ़ा दें। कुछ समय में पदोन्नति के योग बनेंगे।
- अगर कोई दुष्ट व्यक्ति आपको परेशान करता हो या काफी समय से आपके पीछे पड़ा हो अथवा नौकरी या कार्य व्यवसाय में आपका नुकसान कर रहा हो तो एक सफेद रंग का आधा मीटर कपड़ा लें। उस पर काजल से तर्जनी अंगुली की सहायता से उस व्यक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात् उस व्यक्ति के नाम में जितने अक्षर हों, उतनी बार उस पर थूकें एवं किसी बड़े पत्थर से उसे दबा दें। शीघ्र ही उस दुष्ट व्यक्ति से मुक्ति प्राप्त होगी।
- हनुमान जी के मंदिर में प्रतिमा के समक्ष बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। पाठ करने से पूर्व हनुमान जी का पूजन करें एवं उन्हें गुड़-चने का भोग लगाएं। संकल्प में पीड़ा पहुंचाने वाले शत्रु का नाम भी लें एवं उस व्यक्ति से मुक्ति की प्रार्थना करें। पाठ के अंत में देसी कर्पूर के ऊपर एक जायफल एवं दो लौंग की आहूति दें। तत्पश्चात् हनुमान जी को साष्टांग प्रणाम कर अपने घर वापस आ जाएं।
- काली गुंजा के कुछ दाने अभीष्ट व्यक्ति का नाम लेते हुए शहद की शीशी में डाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। कुछ ही दिनों वह व्यक्ति आपके अनुकूल हो जाएगा।
- यदि आपकी संतान आपका कहना नहीं मानती हो, तो माता को अपनी मांग में से थोड़ा सिन्दूर लेकर बच्चे के मस्तक पर उसका तिलक लगाना चाहिए।
- अगर व्यापार में निरन्तर धनहानि हो रही हो तो सर्वार्ध सिद्धि योग के दिन अपने गल्ले के नीचे काली गुंजा के कुछ दाने रखें।
- नवरात्र के दिनों में अपने गल्ले में अथवा तिजोरी में यह पुष्प स्थापित करें।
- पूर्णमासी के दिन जल में थोड़ा दूध एवं चावल मिलाकर चन्द्रमा को अर्घ्य दें एवं अपने व्यवसाय में उन्नति की प्रार्थना करें।
- जिन व्यक्तियों को नजर लग गई हो, उन्हें निम्नलिखित प्रयोग मंगलवार की रात्रि को करना चाहिए। थोड़ी सी काली राई नजर से पीड़ित व्यक्ति के ऊपर सिर से पांव तक 21 बार उतारना चाहिए और उसे चूल्हे में जला देना चाहिए। राख को पीड़ित व्यक्ति के पैर से मसलवाकर

पानी में बहा देना चाहिए। किसी भी प्रकार की नजर दूर हो जाती है।

- जो व्यक्ति शनि की शैया अथवा साढ़ेसाती से पीड़ित है, वह शनिवार के दिन सवा पाव काली राई लेकर उसे अपने ऊपर से उसारकर तिल्ली के तेल के साथ शनि का तेल मांगने वाले व्यक्तियों को दान कर देना चाहिए। अगर संभव हो, तो साथ में उसे अपना पहना हुआ चमड़े का जूता भी दे देना चाहिए।
- जो व्यक्ति ऋण की दलदल में फंसे हुए हों तथा ऋणमुक्ति का कोई उपाय नहीं सूझ रहा हो, ऐसी स्थिति में काली राई का प्रयोग चमत्कार करता है। अमावस्या के दिन अर्द्धरात्रि के समय काली राई को लेकर घर की छत पर आकर तीन बार घूमकर काली राई के दाने सभी दिशाओं में फेंकने चाहिएं। अगर यह प्रयोग रात्रि के समय किसी तिराहे पर किया जाए तो और भी अच्छा प्रभाव देता है।
- अगर आप असाध्य रोग से पीड़ित हैं अथवा आए दिन रोगी रहते हैं, तो सोमवार के दिन काली राई का दान करना चाहिए। ऐसा करने से चमत्कारिक लाभ होता है।
- जिन व्यक्तियों को प्रतिदिन दुर्घटना का सामना करना पड़ रहा है, तो उन्हें मंगलवार के दिन हनुमानजी के मंदिर में सिन्दूर दान करना चाहिए। इससे शीघ्र लाभ मिलता है।
- जिन व्यक्तियों को नजरदोष की शिकायत रहती है, उन्हें मैग्नेट की माला अथवा ब्रॉसलेट धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।
- कच्ची घानी के सरसों के तेल के मिट्टी के जलते हुए दीपक में अगर काली गुंजा के दाने डाल दिए जाएं तथा उस दीपक को घर के मुख्य द्वार पर रख दिया जाए, तो घर में सुख-शांति स्थापित होती है तथा शारीरिक, आर्थिक एवं अन्य सभी प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।
- काली गुंजा को शुक्रवार को तिजोरी में रखने से आय में वृद्धि होती है।
- परीक्षा के लिए जाते समय परीक्षार्थी को मिष्ठान एवं दही का सेवन करना चाहिए।
- भवन एवं व्यावसायिक संस्थान के भवन की सुरक्षा के लिए मुख्य द्वार की चौखट पर काले घोड़े की नाल ठोकने से उस घर के निवासी बुरी नजर के प्रभाव से सुरक्षित रहते हैं।
- नवीन वाहन एवं मशीनरी आदि को नजरदोष से बचाने के लिए उस

पर काले रंग का धागा अथवा चुटीला बांध देना चाहिए।

– वट वृक्ष के ग्यारह पत्ते लेकर उन पर लाल चंदन से राम राम लिखें और उन्हें हनुमानजी को पहना दें। ऐसा ग्यारह मंगलवार तक करें। यह गोपनीय प्रयोग है। ग्यारह मंगलवार में ही आपको शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे।

– शुक्ल पक्ष के रविवार को काले कपड़े पर कटा हुआ नींबू, ग्यारह काली मिर्च, काली सरसों रखें और उसे बांध दें। उस पोटली को दक्षिण दिशा में ले जाकर रख दें। दूसरे दिन व्यवसाय स्थल की झाड़ू निकालते के पश्चात् उस पोटली को निर्जन स्थान पर ले जाकर गाड़ दें। ऐसा करने से व्यवसाय में वृद्धि होती है।

– गृह क्लेश से पीड़ित व्यक्ति को सूर्योदय से पूर्व जगना चाहिए और सूर्योदय से पूर्व ही घर की सफाई कर लेनी चाहिए। सूर्योदय होने पर स्नानादि से निवृत होकर भगवान सूर्य को अर्ध्य देना चाहिए। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में गृह क्लेश समाप्त होने लगते हैं।

– शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के समीप सायंकाल तिल्ली के तेल का दीपक जलाएं। नारियल का एक गोला साढ़ेसाती से पीड़ित व्यक्ति को अपने ऊपर सात बार उसार कर जंगल में चींटियों के बिल के पास रख देना चाहिए।

– गृह क्लेश से पीड़ित व्यक्ति को अपने घर के मुख्य द्वार पर काले घोड़े की नाल लगानी चाहिए; इससे शत्रुओं के अभिचार कर्म से मुक्ति मिलती है। गृह क्लेश से पीड़ित घर में शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को स्फटिक का श्रीयंत्र क्लेश से पीड़ित परिवार को सामूहिक रूप से तीर्थ यात्रा पर जाना चाहिए। ऐसा करने से गृह क्लेश में कमी आती है।

– गृह क्लेश से पीड़ित व्यक्ति को मंगलवार को हनुमानजी के मंदिर में दस से पन्द्रह मिनट तक अवश्य बैठना चाहिए। लौटते समय बंदरों को चने खिलाना चाहिए।

– गृह क्लेश से पीड़ित व्यक्ति को नित्य चींटियों को आटा डालना चाहिए। पत्नी के कारण गृह क्लेश से पीड़ित व्यक्ति को गौरी-शंकर रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

– गृह क्लेश वाले व्यक्ति को सोमवार को रात्रि में शिव मंदिर में शिवलिंग पर एक पाव कच्चा दूध चढ़ाना चाहिए।

– जन्म लेने वाली प्रथम संतान अगर लड़का है, तो उसकी "नाल" उसके छठ के कपड़े में बांधकर अपने पास सुरक्षित रख लें। किसी भी कार्य

की सिद्धि के लिए घर से निकलते समय इसको भी अपने रैं मिल जाया करें। आपका वांछित कार्य अवश्य ही पूर्ण होगा। पी

- ऋणमुक्ति के लिए होली के दिन रात्रिकालीन यह प्रयोग करें। सर्वप्रथम लाल रंग का एक वस्त्र लें। उस वस्त्र पर लाल चन्दन का टुकड़ा, लाल गुलाब के अखण्डित देसी गुलाब के पुष्प, रोली तथा समान मूल्य के 58 सिक्के रखें। इसके पश्चात् इसकी एक पोटली बनाएं एवं धूप-दीप से उसकी पूजा करें। तत्पश्चात् इसे अपनी तिजोरी में रख दें। एक वर्ष पश्चात् इसी पर्व पर इस प्रयोग को दोहराएं। प्रयोग के समय अपने इष्ट देव से निरन्तर ऋणमुक्ति के लिए प्रार्थना करते रहें। इस प्रयोग के फलस्वरूप शीघ्र ही लिए गए ऋण से मुक्ति प्राप्त होती है और धनागम के नवीन अवसर प्राप्त होते हैं।
- दिन के समय संभोग न करें। किसी अमावस्या व शुभ तिथियों को तो कभी नहीं। रसोई पकने के पश्चात् गाय को सदैव एक रोटी खिलाएं और संभव हो तो पांच आटे की लोई खिलाना प्रारम्भ करें। इससे वंश वृद्धि होती है, अपव्यय रुकता है और धन की कमी नहीं रहती। सबसे महत्वपूर्ण बात कि पुण्य आपके भाग्य खाते में एकत्र होते रहते हैं।
- धन आने के पश्चात् पंद्रह अनर्थ आ जाते हैं। इनसे बचेंगे तो लक्ष्मी का स्थाई वास हो जाता है। अन्यथा धन को सुख नहीं मिलता। ये पंद्रह अनर्थ हैं—चोरी, हिंसा, झूठ, दंभ, काम, क्रोध, गर्व, मद, भेद, बुद्धि, बैर, अविश्वास, स्पर्धा, लंपटता, जुआ और शराब पीना।
- मंगलवार के दिन कभी भी ऋण न लें। इस दिन लिया धन सरलता पूर्वक चुकता नहीं होता है।
- बुधवार के दिन किसी को ऋण न दें। इस दिन हाथ से निकली वस्तु मुश्किल से ही वापस आती है। इस दिन दान देना अच्छा होता है।
- सूर्य संक्रांति के पुण्य काल में ऋण कदापि न लें। अर्थात् संक्रांति के साढ़े छह घंटे पहले से साढ़े सात घंटे बाद तक।
- रविवार के दिन चंद्र हस्त नक्षत्र में हो तो भी ऋण से बचें।
- एकादशी के दिन और अमावस्या को धन का निरादर नहीं करें। संभव हो तो इस दिन लक्ष्मी का पूजन अवश्य करें।
- भगवान विष्णु, श्री महालक्ष्मी की नियमित पूजा करने से भी धन संपदा बढ़ती है।
- दक्षिणावर्ती शंख घर में रखने से धन आता रहता है।

ादों में रुद्री का पाठ और शिव अभिषेक करने से आर्थिक
नहीं रहती।

पितरों का स्मरण, ब्राह्मण भोजन कराने से भी निर्धनता दूर

नवरात्रि में दुर्गा सप्तशती का विधिवत् पाठ करने से आर्थिक स्थिति अच्छी होती है।

— पूरनमासी के दिन सत्य नारायण भगवान की कथा परिजनों के मध्य कराते रहें। इससे परिवार में सुख-समृद्धि आती है।

— श्वेतार्क गणपति का नियमित पूजन करें। विशेष रूप से रवि पुष्य अथवा गुरू पुष्य के दिन गणपति पूजन से माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

— संकटनाशक गणपति स्त्रोत, श्री कनकधारा स्त्रोत और श्री सूक्त लक्ष्मी सूक्त के नियमित पाठ गुरू पुष्य से प्रारम्भ करें और नियमित करें। इससे कभी हाथ तंग नहीं रहता। अगर स्फटिक के श्री यंत्र की पूजा इस पाठ के साथ की जाए तो आर्थिक विपन्नता दूर हो जाती है।

— पूर्णमासी के दिन दोपहर के समय हल्दी की 21 गांठों को चमकीले पीले कपड़े में रखकर तिजोरी में रख दें।

— होली की रात्रि में कच्चा सूत लेकर उसे शुद्ध केसर से रंगें और अपने कार्य-स्थल पर रख दें। यह उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

— दुर्भाग्य से बचने के लिए दुकान, कार्यालय या घर में पूर्णमासी के दिन मोरपंख लगाएं। ये नकारात्मक ऊर्जा को अपने भीतर सोख लेते हैं। इनको घर में रखने से किसी की बुरी नजर नहीं लगती। कम से कम छह मोरपंख अवश्य रखे जाएं।

— धन समृद्धि में वृद्धि के लिए घोड़ी के प्रसव के समय शिशु के साथ आने वाली झिल्ली का थोड़ा सा टुकड़ा घर ले आएं और उसे घर में स्थापित करें।

— दीपावली की सायं को दोनों समय मिले उड़द के बने दो बड़े लेकर उन पर दही व सिंदूर लगाएं। उन्हें पीपल के पेड़ के नीचे रख आएं। ऐसा 21 दिन करें। धनलाभ अवश्य ही होगा।

— घर में लक्ष्मी स्थापित करने के लिए निम्न मंत्र विधि विधानपूर्वक सिंदूर से पूजन कक्ष की दीवार पर लिखें। बही खाता या किसी ताम्र पत्र पर लिखकर संदूक या तिजोरी में रखें। इससे लक्ष्मी की कृपा वर्ष भर रहेगी।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी महागृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं नमः।

– आपको अपने जीवन में परिश्रम व आशा के अनुरूप फल नहीं मिल रहा है तो अपने व्यावसायिक स्थल या घर के मंदिर में श्री यंत्र की स्थापना करें। और प्रतिदिन कमल के फूल भेंट करें।

– नौकरी की प्राप्ति व आय बढ़ाने के लिए पूर्णमासी के दिन से घर के प्रवेश द्वार से लेकर पूजा घर तक जितने भी द्वार हैं, सभी पर गेहूं की ढेरी बनाएं और उस पर पूजन के उपरांत दीपक की स्थापना करें। इससे दरिद्रता दूर होती है व लक्ष्मी कृपा होने लगती है।

– शुक्रवार की सायं हाथ में सुपारी व तांबे का सिक्का लेकर पीपल के समक्ष प्रणाम करके अर्पण करें। अगले दिन सुबह पीपल का एक साबुत पत्ता लेकर उसे अपनी गद्दी के नीचे रख दें। कारोबार अच्छा चलेगा।

– ऋण मुक्ति का कोई मार्ग न मिल रहा हो तो अमावस्या की रात में 12 बजे लगभग घर की छत पर जाकर तीन बार छत के गोल चक्कर लगाकर राई को दाहिने हाथ से दसों दिशाओं में फैंक दें।

– श्री महालक्ष्मी पूजन के पश्चात् व्यापार वृद्धि यंत्र का पूजन कर सकते हैं। पूजा के बाद इसे चमकीले लाल वस्त्र पर अपने प्रतिष्ठान के पूजा स्थल पर रखें और नियमित धूप-दीप दिखाएं।

– लाल चंदन, लाल गुलाब के फूल और रोली लेकर चमकीले से रेशमी लाल रंग के कपड़े में बांधकर धन रखने के स्थान पर रख दें। ऐसा प्रत्येक तीन महीने बाद, पहले पड़ने वाले मंगलवार को करना है। ऐसा करने से घर में धन स्थायी हो जाता है।

– आक के पौधे की जड़ से बने गणपति की प्रतिष्ठित प्रतिमा के सम्मुख गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें व चावल चढ़ाकर मोदक का प्रसाद लगाएं। रुका धन वापस मिल जाता है।

– किसी भी शुभ लग्न के लगते ही यह प्रयोग प्रारम्भ करना है। सबसे पहले जटायुक्त एक नारियल लें और उस पर से जटा हटा दें। उसे साफ करके उसे आधा इस प्रकार से काटें कि उसका नीचे वाला हिस्सा बिना चटके साबुत रहे। काटे गए नारियल में एक देशी पान, एक साबुत सुपारी, दो लौंग, एक साबुत बताशा, एक छोटी इलायची, चुटकी भर काले रंग की राई, इतने ही काले तिल, थोड़ी सी नमकीन और सफेद रंग की मिठाई इसमें भर दें। अब इसमें रखीं सामग्रियों पर थोड़ा कामिया सिंदूर व रोली लगाएं। इस नारियल को एक बिना प्रयोग किया हुए लाल रंग के कपड़े में ढककर घर से बाहर निकलें और नंगे पैर किसी तिराहे या चौराहे के मध्य रख दें। अब मन ही मन लक्ष्मी से

प्रार्थना करें कि वे आपके कार्य को पूरा करें एवं धन मार्ग प्रशस्त करें।

— जिसके परिवार में मोती शंख होता है, उसके घर में अक्षय भंडर बना रहता है।

— अगर इस मोती शंख में जल भरकर "अमुक वशमानाय स्वाहा" मंत्र का 21 बार उच्चारण कर वह जल उस पर डाल दें तो वह वश में होता है। इस मंत्र में अमुक के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसको अपने वश में करना है।

— दक्षिणावर्ती शंख में जल भर कर मस्तक पर रोज छिड़कने से पाप नाश होता है।

— शंख में जल भर कर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

-- पूजन के पश्चात् शंख में दूध भरकर यदि बांझ स्त्री पिये तो उसके संतान होती है।

- अगर मोती शंख घर में होता है तो किसी प्रकार का रोग या संकट घर में नहीं व्याप्त होता।

— अगर मोती शंख के सामने नित्य अगरबत्ती लगाई जाये तो उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य में सम्मान होता है तथा व्यापार में वृद्धि होती है।

— अगर नौ गोमती चक्र बुधवार के दिन अपने सिर पर घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें, तो व्यक्ति पर किये गये तांत्रिक प्रभाव की समाप्ति हो जाती है।

— अगर गोमती चक्र चांदी में जड़वा कर बच्चे के गले मे पहना दिया जाये तो बच्चे को नजर नहीं लगती और वह स्वस्थ बना रहता है।

— अगर सात गोमती चक्र दीपावली के दिन पूजा-घर में स्थापित करें और उन्हें लक्ष्मी मानकर पूजन अर्चन करें तो उसके जीवन में निरन्तर उन्नति बनी रहती है।

— अगर स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो सात गोमती चक्र अपने सिर पर घुमा कर दान में दे दें, तो रोग समाप्त होना प्रारम्भ हो जाता है।

— अगर 21 गोमती चक्र लाल पोटली में बांधकर दुकान में किसी भी स्थान पर रख दें तो जब तक वह पोटली दुकान में रहेगी, तब तक व्यापार में उन्नति होती रहेगी या व्यापार रुक गया है तो वापस प्रारम्भ हो जायेगा। व्यापार में कोई कमी नहीं आयेगी।

— गीमती चक्र को व्यक्ति सिन्दूर की डिब्बी में घर में रखे तो परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।

- अगर भूत-प्रेतों का उपद्रव हो तो दो गोमती चक्र लेकर घर के ऊपर घुमाकर आग में डाल दें तो घर से भूत-प्रेत का उपद्रव समाप्त हो जाता है।
- यदि घर में बीमारी हो या किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो एक गोमती चक्र लेकर उसे चांदी में पिरोकर रोगी के पलंग के पाये पर बांध दें, रोगी का रोग समाप्त होने लगता है।
- व्यापार वृद्धि के लिए दो गोमती चक्र लेकर उसे बांधकर ऊपर चौखट पर लटका दें, और ग्राहक उसके नीचे से निकले, तो व्यापार में वृद्धि होती है।
- प्रमोशन नहीं हो रहा हो तो एक गोमती चक्र लेकर शिव मंदिर में शिवलिंग पर चढ़ा दें, निश्चय ही प्रमोशन के रास्ते खुल जाते हैं।
- पति-पत्नी में मतभेद हो तो तीन गोमती चक्र लेकर घर के दक्षिण में फेंक दें, मतभेद समाप्त हो जायेगा।
- पुत्र प्राप्ति के लिए पांच गोमती चक्र लेकर किसी नदी या तालाब में विसर्जित करें, पुत्र प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
- अगर बार-बार गर्भ गिर रहा हो तो दो गोमती चक्र लाल कपड़े में बांधकर कमर में बांध दें तो गर्भ गिरना बंद हो जाता है।
- अगर शत्रु बढ़ गये हों तो तीन गोमती चक्र लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर उन तीनों गोमती चक्रों को जमीन में गाड़ दें तो शत्रु परास्त रहते हैं।
- यदि कोर्ट कचहरी जाते समय घर के बाहर गोमती चक्र रखकर उस पर दाहिना पांव रखकर जावें तो उस दिन कोर्ट-कचहरी में सफलता प्राप्त होती है।
- भाग्योदय के लिए तीन गोमती चक्र का चूर्ण बनाकर घर के बाहर बिखेर दें तो दुर्भाग्य दूर होता है।
- राज्य में सम्मान प्राप्ति के लिए दो गोमती चक्र किसी को दान में दे दें तो राज्य में रुके हुए कार्य पूरे हो जाते हैं।
- श्वेतार्क की मूल को लाकर जलाया जाये और उसकी राख से सभी को तिलक किया जाए तो वह तिलक लक्ष्मी को आकर्षित करने वाला होता है। इसकी राख को बचाकर रखा जाये और जब कभी आर्थिक संकट दिखाई देने लगे तो इसका तिलक किया जाये तो आर्थिक समस्याएं दूर होने लगती हैं।
- 21 हकीक पत्थर लेकर जमीन में गाड़ दें तो उस दिन से ही उसके

परिवार में आर्थिक उन्नति होने लगती है।

– जो व्यक्ति धन की इच्छा रखते हैं, उनको चाहिए कि 27 हकीक पत्थर लेकर उसके ऊपर लक्ष्मी का चित्र स्थापित करें तो निश्चय ही उसके घर में आर्थिक उन्नति होती है।

– अगर 21 हकीक पत्थर लेकर किसी मंदिर में चढ़ा दें और कहें कि मैं अमुक कार्य में विजयी होना चाहता हूं तो निश्चय ही उस कार्य में विजय प्राप्त करता है।

– अगर 21 हकीक पत्थर पर शत्रु का नाम लेकर यदि जमीन में गाड़ दें तो उसी समय से शत्रु का पतन प्रारम्भ हो जाता है।

– संतान सुख के लिए दीपावली के दिन 21 हकीक पत्थर लेकर पूजा करके बाहर फेंकता है तो उसके घर में पुत्र की प्राप्ति होती है।

– दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के समय दो पीले हकीक लक्ष्मी जी के चरणों में रखें। पूजन के उपरान्त अर्द्धरात्रि में इन दोनों हकीक पत्थरों को घर के किसी कोने में भूमि खोद कर गाड़ दें। इस प्रयोग से लक्ष्मी आप पर प्रसन्न होगी और शीघ्र ही आर्थिक रूप से उन्नति का अनुभव करेंगे।

– दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के पश्चात् एक पीला हकीक पत्थर अपने दायें हाथ की मुट्ठी में बंद कर लें और फिर पत्थर को अपने गल्ले में रखें। आप देखेंगे कि आय की मात्रा बढ़ रही है।

– दीपावली के दिन रात्रि में पूजा उपासना करने के पश्चात् एक पीली हकीक माला लें और उससे 108 बार "ॐ ह्रीं हीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" मंत्र का जाप करें। इसके पश्चात् इस माला को अपने पूजा घर में रखें अथवा मां लक्ष्मी के चित्र पर चढ़ा दें। शीघ्र ही आप स्वयं को आर्थिक रूप से दृढ़ पायेंगे।

– अगर दुकान या व्यापार से उतनी आय नहीं हो रही हो जितनी आप मेहनत कर रहे हैं तो मुख्यद्वार के दोनों ओर विघ्न-विनाशक भगवान गणेश का चित्र इस प्रकार लगाएं कि एक की दृष्टि मकान के भीतर तो दूसरे की दृष्टि बाहर की ओर पड़े।

– ऋणमुक्ति के लिए चांदी का हाथी शुक्लपक्ष के बुधवार को सूर्यास्त के पूर्व घर में रखें।

– अगर किसी को धन दिया है और वह वापस नहीं कर रहा है तो पंद्रह दिन तक चांदी के गिलास में पानी पिएं। पानी पीने के पश्चात् गिलास उल्टा रख दें। किसी भी कुत्ते को लगातार दूध पीने को दें। इन पंद्रह

दिनों में किसी मंदिर में दूध दान देकर धन वापसी की प्रार्थना करें।

– अगर पैतृक संपत्ति नहीं मिल पा रही है तो अमावस्या को किसी भूखे को आदरपूर्वक भोजन कराएं और हर रविवार को गाय को गुड़ खिलाएं। कुछ माह ऐसा करने से संपत्ति प्राप्ति का लाभ मिलेगा।

– एक मिट्टी की हांडी में मदार (आक), धतूरे, चिरचिटे, दूध, बट, पीपल—इन सभी की जड़, आम, गूलर और शमी का पत्ता घी, दूध, चावल, मूंग, गेहूं, तिल, शहद और मट्ठा भरकर शनिवार के दिन शाम के समय पीपल के पेड़ की जड़ में गाड़ने से धन का आगमन होता है।

– अपने भोजन में से एक रोटी निकालकर उसके तीन भाग करके एक भाग गाय, दूसरा भाग कुत्ते और तीसरा कौवे को नित्य खिलाएं तो बाधाएं दूर होंगी और धन का आगमन होगा।

– खोए के गोले को ऊपर से काटकर उसमें देशी घी और खांड भरकर सुनसान जगह के समीप इस प्रकार गाड़ें कि उसका मुंह खुला रहे, ताकि चींटियों को खाने में असुविधा न हो।

– घर में जिस गति से पैसे आते हैं, उसी गति से निकल जाते हैं तो यह उपचार करें—शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार को लाल गुलाब के फूल लाल कपड़े में रखें, पैसे घर में टिकें, इस भावना के साथ धूप-दीप-नैवेद्य अर्पित करते हुए प्रार्थना करें। फिर उसकी पोटली बनाकर अपनी तिजोरी या आभूषणों के साथ रखें। महीने भर बाद शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार को फूल विसर्जित कर दें और उसी लाल कपड़े में दोबारा नया लाल गुलाब रखकर इसी प्रकार पोटली बनाकर रखें, लाभ होगा।

साधक किसी भी दिन यह प्रयोग प्रारंभ कर सकता है। घर में विवाह का कार्य, सफलता एवं सुख-शांति रहे व किसी कार्य में विघ्न न पड़े, इस हेतु यह प्रयोग किया जाता है। स्थापना की प्रातः स्नान कर सामने गणपति का चित्र रखें। किसी बाजोट पर चमकीला लाल वस्त्र बिछाकर उस पर एक थाली में कुंकुम में स्वास्तिक बनाकर पुष्प आदि का आसन लगाकर गणेश को स्थापित करें। फिर एक सिक्का लेकर उस पर सुपारी रखकर उसे मौली जिसे कलावा भी कहते हैं, से बांध लें। इस प्रकार पांचों सुपारियों को तैयार कर गणपति के पास में एक पंक्ति में स्थापित कर लें। अगर संभव हो तो श्वेतार्क गणपति भी स्थापित करें। फिर धूप-दीप, अगरबत्ती करें एवं लाल पुष्प चढ़ाएं। किसी ब्राह्मण पुत्र या कुंवारी कन्या को भोजन कराकर उसे दक्षिणा, वस्त्र आदि भेंट स्वरूप प्रदान करें और गणेश को घर के पूजागृह अथवा व्यापारिक स्थल पर

स्थापित कर दें एवं तांत्रिक सुपारियों को घर के आसपास गणेश मंदिर में अर्पित कर दें। इस प्रयोग से निकट भविष्य में होने वाला कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होता है और किसी प्रकार का कोई विघ्न उपस्थित नहीं होता।

नवरात्र में घटस्थापना के दिन रात्रि को साधक मां पिताम्बरा के "बगलामुखी" यंत्र को लाल कपड़े पर साभने पट्‌टे पर स्थापित कर दोनों तरफ गेहूं की दो ढेरी रख कर उस पर एक तेल का व एक घी का दीपक जलाएं। फिर हरिद्रा माला से निम्न मंत्र की 21 माला प्रति रात्रि जाप करें।

जप मंत्र इस प्रकार है–

करोति सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु घापद।

जब जाप समाप्त हो जाए तो यंत्र दक्षिण दिशा में किसी स्थान पर गाड़ दें एवं माला को तोड़कर मणियों को बहते जल में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग को करने से आपकी सभी विपत्तियों का शमन धीरे-धीरे होने लगेगा और शुभ परिणामों को प्राप्त करने लगेंगे।

शनिवार या चतुर्दशी को एक जटा वाले नारियल पर कामिया सिंदूर लगाएं और कलावे से उसे लपेट कर हनुमान के मंदिर में रख आएं। यह उपाय धनदायक है।

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार को बहेड़े की जड़ और पौधा लाकर उनका पूजन करें। पूजन के पश्चात् उन्हें चमकीले लाल कपड़े में बांधकर गल्ले में रखें। आय में वृद्धि होगी।

चांदी एक का सिक्का चमकीले लाल वस्त्र में लपेटकर तिजोरी में रखें अथवा घर के द्वार पर टांग दें। यह टोटका धनवृद्धि में सहायक होता है।

पीली कौड़ी एक सस्ती वस्तु है, लेकिन यह भी लक्ष्मी जी को अत्यंत प्रिय है। श्री महालक्ष्मी द्वारा पीली कौड़ी से लगाव इस बात का प्रतीक है कि उनकी कृपा केवल धनवानों पर ही नहीं, बल्कि निर्धनों पर भी रहती है। वैसे भी धन की आवश्यकता निर्धन व्यक्तियों को ही अधिक होती है।

यह भी लक्ष्मी एवं गणेश का संयुक्त यंत्र होने से महायंत्र का रूप ले लेता है। श्री गणेश विघ्न विनाशक और रिद्धि-सिद्धि प्रदान करने वाले देवता हैं, जबकि श्री महालक्ष्मी धनदायी माता हैं। इस यंत्र को ताम्रपत्र अथवा रजतपत्र पर उत्कीर्ण करवाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करने के बाद विधिवत पूजन कराएं। उसके पश्चात् इसे अपनी तिजोरी, अलमारी अथवा पूजा-स्थल आदि स्थानों पर रखें।

इस यंत्र पर लिखे मूल मंत्र का 1008 बार जप करें तथा 108 मंत्रों का हवन करें। इतना कहने पर वह अपना प्रभाव दिखाना प्रारंभ कर देता है। यह यंत्र केवल शुद्ध, सात्विक एवं व्रत रखने वाले परिवार में अधिक फलता है।

स्वास्तिक श्री महालक्ष्मी का अतिप्रिय प्रतीक है, इसमें पवित्रता, आध्यात्मिकता और सात्विकता का भाव प्रकट होता है। शुभ दिनों अथवा त्यौहारों में भवन के द्वार पर श्री महालक्ष्मी के स्वागत हेतु स्वास्तिक का चिन्ह बनाया जाता है, जो मानव कल्याण का महत्व दर्शाता है।

पौराणिक मान्यता है कि सौरमंडल के चारों ओर चार विलक्षण शक्ति केन्द्र हैं–पूर्व में वृद्धाश्रवा इंद्र, पश्चिम में पूषा इंद्रवेदा इंद्र, उत्तर में स्ताक्षप अरिष्टनेमि इंद्र तथा दक्षिण में बृहस्पति इंद्र। इन चारों से घिरे शक्ति केन्द्र का नाम वेदों में स्वास्तिक मंडल है। सभी मंगल कार्यों में स्वास्तिक का प्रयोग होता है। यह विघ्न विनाशक श्री गणेश का भी प्रतीक है। वास्तुशास्त्र में राजप्रासादों के लिए स्वास्तिक को शुभ माना गया है। जिस स्थान पर महालक्ष्मी की स्थापना करके पूजन करना होता है, वहां पहले स्वास्तिक का चिन्ह बनाया जाता है। इससे लक्ष्मी की दिव्यता स्पष्ट होती है।

श्री यंत्र को श्री विद्या का यंत्र भी कहते हैं। इन विद्याओं में षोडशी अर्थात् श्री विद्या का काफी महत्व है। श्रीयंत्र और षोडशी की आराधना से भोग एवं मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। मुख्य रूप से श्रीयंत्र के निम्न तीन प्रकार हैं–

भूपृष्ठीय श्री यंत्र

भूपृष्ठीय श्रीयंत्र को समतल धातु पर यंत्र की आकृति में बनाया जाता है।

कूर्मपृष्ठीय श्री यंत्र

इस श्री यंत्र में नीचे का आकार चौकोर और ऊपरी भाग कछुए की पीठ के समान होता है।

मेरुपृष्ठीय श्री यंत्र

मेरुपृष्ठीय श्री यंत्र की आकृति पर्वत के समान होती है। ये तीनों रूप क्रमशः भूप्रस्तर, कैलाश प्रस्तर और मेरू प्रस्तर के नाम से भी जाने जाते हैं।

श्री यंत्र का निर्माण रवि या गुरु पुष्य योग, नवरात्र तथा दीपावली आदि शुभ मुहूर्त में किया जाना चाहिए। श्री यंत्र का पूजन आश्विन मास की कृष्ण नवमी में आर्द्रा नक्षत्र से प्रारंभ करना अति श्रेष्ठ है। इसके सामान्य पूजन के आरंभ में श्री गणेश एवं गुरु का स्मरण करना आवश्यक है। श्री यंत्र के कमल दल में केसर का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूजन में कुंकुम, सिंदूर एवं

चंदन का प्रयोग करें। यंत्र को पंचामृत से स्नान कराकर उसे ग्रहण करने का विशेष फल होता है।

गरीबों, ब्राह्मणों या संन्यासियों को भोजन, वस्त्र और रुपये दान करें। अहंकार का त्याग करें। दान से धन की वृद्धि होती है। **घृणिः सूर्याय नमः श्री सूर्य नारायणाय इति अर्घ्य समर्पयामि। दत्तम् नमम**। मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। इससे सभी दोष दूर होंगे और धन-धान्य की प्राप्ति होगी। सात रत्ती का माणिक्य रत्न सूर्य यंत्र में जड़वाकर सूर्य के सम्मुख रखें और "आदित्य हृदय स्तोत्र" का नियमित रूप से पाठ करें। इससे धन की प्राप्ति होती है, रोग और शत्रुओं का शमन होता है तथा जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है। जो व्यक्ति सूर्योदय से पूर्व में उठकर स्नान करके भगवान की पूजा करता है, लक्ष्मी उस पर प्रसन्न रहती है। जो व्यक्ति दिन में उत्तर और रात्रि में दक्षिण की ओर मुंह करके मल-मूत्र का त्याग करता है, लक्ष्मी उस पर प्रसन्न रहती है।

जो व्यक्ति मूर्ख, अनपढ़ व अकर्मण्य होकर अर्थ-प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता, लक्ष्मी उससे क्रुद्ध रहती है। जो व्यक्ति दूसरे की स्त्री और धन को हड़प लेता है, चोरी अथवा घूसखोरी करता है, उसे लक्ष्मी दोष लग जाता है। इस दोष के कारण कुछ काल बाद या अगले जन्म में व्यक्ति दरिद्र हो जाता।

जिस परिवार में पति-पत्नी में एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान बना रहता है, जिस घर में कलह नहीं होती, उसमें लक्ष्मी का वास होता है। जो घर स्वच्छ और वास्तुदोष रहित होता है, वहां लक्ष्मी स्थिर रहती है। जो लोग परिश्रमी, बुद्धिमान और साहसी होते हैं, लक्ष्मी उन पर सदैव प्रसन्न रहती है। जो गृहिणी बार-बार भोजन करने वाली, भोजन पकाते समय ही खाने वाली तथा अशुद्ध परोसने वाली होती है, लक्ष्मी उससे दूर चली जाती है। आलसी, दिन में सोने वाले, प्रातः या सायं काल में संभोग करने वाले लोगों से लक्ष्मी रूठ जाती है। जो व्यक्ति माता-पिता और गुरू का अनादर करता है, उनकी सेवा-सुश्रूषा नहीं करता, उससे भी लक्ष्मी अप्रसन्न रहती है।

- जो व्यक्ति बुधवार को कमलगट्टे के बीज लेकर शुद्ध देसी घी के साथ एक-एक करके अग्नि में समर्पित करता है और आहुतियां देता है, उसके घर से दरिद्रता निश्चय ही समाप्त हो जाती है।
- जो कमलगट्टे की माला गले में धारण किये रहता है, उस पर लक्ष्मी प्रसन्न रहती है।
- अगर नित्य 108 कमल के बीजों से आहुति दें और ऐसा 21 दिन तक

करें तो आने वाली कई पीढ़ियां सम्पन्न बनी रहती हैं।

– अगर दुकान में कमलगट्टे की माला बिछा कर उसके ऊपर भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित किया जाता है तो व्यापार निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है।

– कमलगट्टे की माला भगवती लक्ष्मी के चित्र पर पहना कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर देता है तो उसके घर में लक्ष्मी का आगमन बना रहता है।

– अगर मोती शंख को व्यापार स्थल पर स्थापित किया जाए तो दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है। इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

– अगर मोती शंख अपने पूजा स्थान में स्थापित किया जाये तथा उसमें जल भरकर लक्ष्मी के चित्र या विग्रह पर चढ़ाया जाये तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।

– मोती शंख को घर में स्थापित कर दें और नित्य एक-एक चावल का दाना शंख में भरते रहें। इस प्रकार 109 दाने इस शंख में डालें और इस प्रकार 21 दिन तक प्रयोग करें। यह प्रयोग करने से दरिद्रता समाप्त हो जाती है।

– अगर व्यापार में घाटा हो रहा है या दुकान में आय नहीं हो रही है तो एक मोती शंख दुकान के गल्ले में रखा जाये तो व्यापार में वृद्धि होती है।

– जिसके परिवार में 31 मधुरूपेण रुद्राक्ष होते हैं और उसकी नित्य पूजा होती है, उस घर में दरिद्रता नहीं रहती है।

– शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन 21 मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर व्यक्ति शिवलिंग पर चढ़ाये तो दरिद्रता समाप्त हो जाती है।

– 109 रुद्राक्षों से जो दीपावली के दिन अग्नि में घी और शक्कर के साथ आहुति देता है और प्रत्येक आहुति के साथ "ॐ श्री श्री श्रियै नमः" मंत्र का उच्चारण करता है, उसके घर में धन का आगमन प्रारंभ हो जाता है।

– अगर घर से रोग जा ही नहीं रहा हो, कोई न कोई रोगी बना रहता हो तो 21 मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर उसके सारे सदस्यों के ऊपर घुमाकर अगर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दिया जाता है तो रोग समाप्त हो जाता है।

– धन-वैभव एवं समृद्धि प्राप्ति हेतु 7 लघु नारियल स्थापित कर उस

पर शुद्ध केसर से तिलक करें। इस प्रकार पूर्ण श्रद्धा भाव से की हुई पूजा चिर लक्ष्मी वरदान सिद्ध होगी।

— मां अन्नपूर्णा भी लक्ष्मी का ही रूप है, अगर आप चाहते हैं कि घर में अन्न-धन का भंडार भरा रहे, कभी घर में अन्न की कमी ना हो तो आप 21 लघु नारियल किसी पीले वस्त्र में बांधकर रसोई के पूर्वी कोने में बांध दें। अन्नपूर्णा आपके भंडारगृह में अपनी उपस्थिति दर्ज करवायेगी।

— 21 लघु नारियल को लक्ष्मी के चरणों में रखकर फिर किसी लाल कपड़े में उन लघु नारियल को लपेट कर तिजोरी में रखें। ऐसा करने वाले व्यक्ति के घर में लक्ष्मी स्थित रहती है। और व्यक्ति मालामाल होकर जीवन यापन करता है।

— अगर आप समझते हैं कि आपकी संपत्ति में वृद्धि नहीं हो रही, तो इस उपाय को करें : किसी भी बृहस्पतिवार को जलकुंभी लेकर आएं। उसे पीले कपड़े में बांधकर घर में कहीं पर लटका दें। उसको बार बार छूना नहीं। एक सप्ताह के पश्चात् उसको बदल कर नयीं कुंभी ऐसे ही बांध दें। इसको नौ बृहस्पतिवार करें।

— यह प्रयोग कम से कम इक्कीस सप्ताह तक करना आवश्यक होता है। प्रयोग को प्रारंभ करने वाले बुधवार को पीली कौड़ी लें, एक जोड़ा अखण्डित लवंग लें, एक जोड़ी छोटी इलायची तथा अपने व्यापार स्थल की एक चुटकी मिट्टी लेकर इन को जला लें, जो इनकी राख बनेगी, उस राख को एक पान के पत्ते में तांबे का सिक्का लें, जिसमें एक छेद कर लें। इस सारी सामग्री को छेद वाले सिक्के के साथ किसी तेजी से बहते जल में प्रवाहित कर दें। जिस दिन सारी सामग्री को जल में प्रवाह करें, उस दिन का उपवास रखें तथा कन्या को भोजन करायें।

— अनेक बार कई युवाओं के विवाह में विलंब नजर आता है। यह उपाय उन युवाओं के लिए है जिनके विवाह में विलंब होता हो। शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें। 10 रुपये की देशी घी की जलेबी, 21 मंगलवार को, हनुमान जी को चढ़ाएं और प्रार्थना करें। विवाह के योग शीघ्र बनने लगेंगे।

— अगर आपके बच्चे अध्ययन में कमजोर हैं अथवा उनका पढ़ाई में ध्यान न लगता हो तो घर को या उनके कक्ष की उत्तर-पूर्व दिशा में ग्लोब को अवश्य रखिए, क्योंकि इस क्षेत्र का तत्व पृथ्वी है। इस कारण उनके

ज्ञान एवं शिक्षा में अत्यधिक वृद्धि होगी। उत्तर-पूर्व में ग्लोब रखने से आपके व्यापार में उन्नति हो सकती है और आपके विदेश जाने की संभावना बढ़ सकती है।

— गंगाजल में गुंजा मूल को चंदन की भांति घिसें। उत्तम होगा कि किसी कुमारी कन्या के हाथों पिसवा लें। यह लेप माथे पर चंदन की भांति लगायें, लेप करें। ऐसा व्यक्ति जहां भी जाता है, उसे हर विशेष सम्मान प्राप्त होता है।

— निःसंतान दंपत्ति गौ दान करें। या फिर प्रति गुरुवार के दिन किसी गरीब को खाना खिलायें।

— बच्चों की नजर उतारने का एक और सहज सुलभ टोटका है। यह टोटका मातायें प्रायः बच्चों के लिये करती रहती हैं। अगर शिशु बच्चा रो रहा है तो चुपचाप चौराहे से थोड़ी-सी धूल, उसमें थोड़ी-सी राई (सरसों) मिला लें, नमक भी मिला लें और इनके साथ-साथ साबुत लाल मिर्ची ले लें। इस सभी सामग्री को मुट्ठी में लेकर पीड़ित शिशु के ऊपर से घुमाकर चूल्हे की जलती हुई आग में डाल दें। यह क्रिया रविवार को तीनों समय करें। ऐसा करने से पीड़ित व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

— घर में तुलसी का पौधा उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में रखें। तुलसी के पौधे पर कलावा, लाल चुन्नियां नहीं बांधनी चाहिए। तुलसी का पौधा अपने आप में पूर्ण मंदिर के समान माना जाता है। घर में तेज खुशबूदार पौधे को नहीं लगाना चाहिए। घर में चौड़े पत्ते वाले पौधे, बौनसाई पौधे व ऐसी बेलें जो नीचे की तरफ झुकी होती हैं, नहीं लगाना चाहिए।

— मोती शंख में जल भर कर मस्तक पर प्रतिदिन छिड़कने से पाप नाश होता है। शंख में जल भर कर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

— पूजन के उपरान्त शंख में दूध भरकर अगर स्त्री पिये तो उसके संतान होती है।

— अगर मोती शंख घर में होता है तो किसी प्रकार का रोग या संकट घर में नहीं व्याप्त होता।

— अगर मोती शंख के सामने नित्य अगरबत्ती लगाई जाये तो उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य में सम्मान होता है तथा व्यापार में वृद्धि होती है। जिसके घर में मोती शंख होता है, उसके घर के भंडार भरे रहते हैं।

— पांच गोमती चक्र और चावल की ढेरियां बनायें और उनके ऊपर पांच

लघु नारियल स्थापित करें। इन सभी पर कुंकुम का तिलक करें, अक्षत चढ़ाएं, फिर पुष्प की पंखुड़ी चढ़ाकर सामग्री को चमकीले लाल कपड़े में बांध कर अपने घर में रख दें, तीन महीने के भीतर-भीतर आपको अपने कार्य में अनुकूलता प्राप्त हो सकती है और व्यापार पुनः स्थापित हो जाता है, रुका हुआ धन लौट आता है। इस उपाय के प्रभाव से आपको कोई धोखा भी नही दे पाता है।

— साबुत हल्दी की गांठ तकिए के नीचे रखकर सोने से विवाह में आने वाले अवरोध समाप्त होते हैं। यह उपाय गुरूवार से ही आरम्भ करें।

— गाय को बेसन और रसायन रहित खिलाकर जाने से बिगड़ा कार्य बनता है।

— कच्ची घानी का सरसों का तेल, काला कबंल, गोमेद रत्न और सांप पीपल के नीचे रखने से रुके हुए कार्य बन जाते हैं।

— अमावस्या के दिन गोटा लगी काली पताका किसी वीरान स्थान पर ऊंचे में लगाने से सम्मान में वृद्धि होती है।

— पूर्णमासी के दिन चन्द्र दर्शन के बाद खीर का भोग बहते जल में प्रवाहित करें। नौकरी का योग बनता है। यह 9 पूर्णमासी करें।

— विवाह में विलम्ब दूर करने के लिए सोते समय अपने सिरहाने पीले गुलाब के पांच फूल रखने चाहिएं। सुबह उठकर उस फूल को प्रवाहित कर दें।

— तीन सौ ग्राम की सींकों वाली झाड़ू लेकर उसे चौराहे पर खोलकर वहीं डाल आने से तुरन्त विवाह के योग बनेंगे।

— शुक्ल पक्ष के गुरूवार को पुराना ताला बिना चाबी वाला लेकर कन्या घड़ी के विपरीत दिशा में सात बार शरीर से वार कर शाम को चौराहे पर रख दे तो शीघ्र विवाह होता है।

— प्रेम प्रसंग में बाधाएं आ रही हों तो रात की रानी के फूल को अपने रूमाल में दिनभर रखें तथा सूर्यास्त से पूर्व उस फूल को पीपल के नीचे रख दें। बाधाएं दूर हो जायेंगी।

— घर के मुख्य द्वार पर तुलसी का पौधा लगाएं। सुबह-शाम सभी इकट्ठे दीपक जलायें व सुख-शांति की कामना करें।

— निर्धन स्त्रियों को साड़ी एवं श्रृंगार का सामान, अन्य कोई घरेलू सामग्री अवश्य दान करें।

— अगर आपकी सास के साथ परिवार का कोई अन्य सदस्य भी आपसे

विरोध रखता है तो आप शनिवार को कीकर के वृक्ष पर भोजन रखकर जल अर्पित करें।

- अगर आप गाय को नियमित रूप से रोटी पर गुड़ रखकर खिलाती हैं तो आपके प्रेम में वृद्धि होगी।
- अगर घर के सभी सदस्यों में तनाव उत्पन्न हो रहा हो तो पूजाघर में गंगाजल रखकर उसको घर में छिड़कना चाहिए।
- रसोईघर में भोजन करने से राहु के प्रकोप से सुरक्षित रहेंगे।
- शुक्रवार के दिन से लगातार 51 दिनों तक एक रुपये से मां लक्ष्मी से सम्पन्नता के लिए प्रार्थना करें। धनलाभ होगा।
- एक चांदी की डिब्बी में कामिया सिन्दूर भर लें। इसके भीतर पीली कौड़ी श्री यंत्र और कमल का फूल डालकर बंद कर दें। लक्ष्मी पूजा के पश्चात् डिब्बी को अपने घर, व्यावसायिक प्रतिष्ठान-दुकान आदि पर रखें।
- हाथी को गन्ने या कुछ मीठी वस्तु अपने हाथ से खिलायें तो धनलाभ होगा।
- प्रातःकाल स्नान करने के पश्चात् सबसे पहले लक्ष्मी विष्णु की प्रतिमा को कमलगट्टे की माला और पीले पुष्प अर्पित करें, धनलाभ होगा।
- इक्कीस पीले हकीक के पत्थरों का पूजन करें। पूजन के पश्चात् उन्हें अपने निवास में कहीं भी गाड़ दें तो आपके निवास में मां लक्ष्मी का स्थाई वास रहेगा।
- किसी भी निर्धन सुहागिन स्त्री को अपनी पत्नी के द्वारा सुहाग सामग्री अवश्य दिलवायें, सामग्री में इत्र अवश्य होना चाहिए।
- 501 ग्राम सूखे छुआरों का पूजन करें, अगले दिन उन छुआरों को लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रखें।
- कुबेर यंत्र को पंचामृत से स्नान कराकर कामिया सिन्दूर, कुमकुम, केशर, लाल चंदन के साथ घिसकर तिलक करें तो धनलाभ अवश्य होगा।
- लक्ष्मी पूजन में घर में 21 पीली कौड़ियां लक्ष्मी जी पर चढ़ायें। फिर अगले दिन इन कौड़ियों को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी अथवा व्यवसाय स्थल में रखने से धनलाभ होता है।
- व्यापार वृद्धि यंत्र को पंच-गव्य से शुद्ध कर नागकेशर अर्पित करें। इस उपाय से व्यवसाय में गति आयेगी।

- प्रत्येक अमावस्या की शाम किसी विकलांग व्यक्ति को भोजन करायें तो सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।
- रात्रि में थोड़ी फिटकरी लेकर उसे दुकान में घुमायें, फिर उसको उत्तर दिशा की तरफ फेंक दें, दुकान में ग्राहकी बढ़ेगी तथा धनलाभ में वृद्धि होगी।
- लाल चमकीले रेशमी रूमाल में हत्था जोड़ी बांधकर अपनी तिजोरी में रखने से धन आगम होने लगेगा।
- प्रातःकाल पति-पत्नी विष्णु-लक्ष्मी के मन्दिर में जाकर लक्ष्मी जी को पोशाक चढ़ायें। सुगन्धित गुलाब की अगरबत्ती जलायें और दान करें तो धनलाभ होता है।
- एकांक्षी नारियल की लक्ष्मी पूजा के साथ पूजा करें, अगले दिन उसे उठाकर तिजोरी अथवा जहां आप रुपये रखते हैं, वहां रख दें। ऐसा करने से आर्थिक उन्नति होती रहती है।
- रात में इक्कीस गोमती चक्र तिजोरी में स्थापित करने से खुशहाली बनी रहती है।
- घर में धनवृद्धि के लिए नरक चतुर्दशी के दिन लाल चन्दन, लाल गुलाब के पांच फूल और रोली लाल कपड़े में बांधकर पूजा करें, उसके पश्चात् अपनी तिजोरी में रखें। ऐसा करने से घर में धन रुकने लगता है।
- काली हल्दी, पांच पूजा वाली सुपारियां और पांच पीली कौड़ियां गंगाजल से शुद्ध करके लाल कपड़े में बांधकर पूजन के समय चांदी की कटोरी में रखें। पूजा के साथ इनकी भी पूजा करें। अगले दिन प्रातः अपनी तिजोरी में रखें, मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।
- शाम को काले उड़द के दो साबुत पापड़ लेकर इस पर थोड़ा सा दही और सिन्दूर लगायें, इसके पश्चात् उन्हें बड़ के पेड़ के नीचे रखें। धनलाभ होगा।
- परिवार में सुख-शांति बनी रहे, वैमनस्य न बढ़े, इसलिए एक मिट्टी के पात्र में अंगारे पर लोबान को डालकर उसका धुआं प्रत्येक कमरे में दे दें। ऐसा करने से परिवार में प्रेम बढ़ेगा।
- नौकरी की कामना रखने वाले व्यक्ति को शाम को चने की दाल लक्ष्मी पर छिड़क देनी चाहिए। दाल को महालक्ष्मी के पूजन के पश्चात् पीपल में विसर्जित कर दें।
- कच्ची हल्दी और चावल पीसकर उसके घोल से घर के प्रवेश-द्वार पर ॐ या स्वास्तिक बना दें।

— प्रातःकाल सबसे पहले किसी असहाय को सतनजा दान करें। इससे सुख समृद्धि आती है।
— प्रातःकाल गन्ने की जड़ को घर लाकर रात्रि में लक्ष्मी पूजन के साथ इसकी भी पूजा करें तो आपके धन में वृद्धि होगी।
— पूजन के पश्चात् घर के सभी कमरों में मोती शंख और डमरू बजाना चाहिए। इससे दरिद्रता घर से बाहर जाती है।

तंत्र में पशु-पक्षी

ईश्वर ने सृष्टि में अनेक प्रकार के जीवों की रचना की है। मनुष्य इन जीवों में सर्वश्रेष्ठ है, फिर भी उसके पास चमगादड़ जैसी शक्ति, कुत्ते जैसी घ्राणशक्ति और उल्लू जैसी आंखें नहीं हैं! कुछ पशु-पक्षियों को आने वाली प्राकृतिक और पारिवारिक घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। वे उड़ने, छटपटाने, फड़फड़ाने लगते हैं। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। भारतीय शास्त्र में तो इसका विशद विवेचन शकुन-अपशकुन के रूप में है।

सामान्य जीवन में भी देखा गया है कि अगर बिल्ली रास्ता काट जाए तो प्रायः काम बिगड़ जाता है। रात को कुत्ते रोने लगें तो समझ लो कि आसपास कहीं मौत मंडरा रही है, उल्लू नाम लेकर पुकारे (प्रायः ऐसा होता कम है) तो अवश्य वह व्यक्ति मरता है। कौवे घर के सामने कांव-कांव करें तो कोई आने वाला है, यदि कौवा सिर पर अचानक बैठ जाए तो जातक को अपनी मृत्यु की झूठी घोषणा करनी पड़ती है। ये विश्वास जो एक सीमा तक सही है, हमारे जीवन में बहुत गहरे बैठ गए हैं। यहां तक कि बड़े-बड़े विदेश रिटर्न लोग भी जब नया मकान आदि बनवाते हैं तो काली हांडी जरूर लटका देते हैं। बसों, ट्रकों पर 'बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला' लिखा रहता है।

एक बार मैं हाथी पर यात्रा कर रहा था। बारिश के कारण रास्ता बहुत कीचड़ भरा हो गया था। अतएव मेरे एक परिचित ने गांव में स्टेशन तक जाने के लिए अपना हाथी लगा दिया था। अचानक हाथी एक स्थान पर रुक गया। उसने महावत के अंकुश के बावजूद आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। तब महावत वापस लौट पड़ा और बोला, "बहल जी! आगे खतरा है। लौट चलिए।" मैं लौट आया। कुछ देर बाद पता चला कि नदी का बांध टूट गया है और वहां का सारा क्षेत्र पानी से भर गया है। वास्तव में रोमांचक बात थी। अगर हाथी को पूर्वाभास न होता तो शायद हाथी समेत मैं बह गया होता।

पशु-पक्षियों में इसी महत्व के कारण तंत्र शास्त्र में उनका भी अपना उपयोग और महत्व है। उनके द्वारा तंत्र साधना से सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। तंत्र

में जिन पशु-पक्षियों का विशेष महत्व है और जिनका विशेष रूप से उपयोग होता है, मैं उनका वैज्ञानिक ढंग से विवरण प्रस्तुत करूंगा। मैं आपके सामने ''इंद्रजाल बड़ा'', "सेवड़े का जादू'', "सांवरी तंत्र", ''डामर तंत्र'' जैसी बकवास नहीं रखूंगा, जिसमें अंधकार में देखने के लिए बिल्ली की आंखों को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर काजल लगाने की विधि बतलाई गई है। मेरे एक परिचित के रिश्तेदार ने बड़े उद्यम से इस क्रिया को किया, नतीजा, बेचारे की आंखें जाते-जाते बचीं। कुछ समय अस्पताल में पड़ा रहा। उल्लू के मांस से वशीकरण मंत्र के प्रयोग की वर्णित विधि की, तो लड़की का भाई जूता मारकर खोपड़ी गंजी कर गया। लड़की की परछाई देखने को न मिली। गुप्त धन का तंत्र किया तो रात में संदिग्ध अवस्था में घूमते देखकर पुलिस पकड़ कर ले गई।

उल्लू

इस निरीह प्राणी का तंत्र शास्त्र में सर्वथा महत्व है। कुछ तांत्रिक तो उल्लू को बराबर अपने साथ रखते हैं। तंत्र द्वारा वह इसको सिद्ध कर लेते हैं। उल्लू का श्मशान घाट में तंत्र साधना में भी बड़ा महत्व है। उल्लू पर तो ''उलूक तंत्र'' ही रचित है, उसमें उल्लू पर ही सारे तंत्र दिए गए हैं। हड्डियां, आंखें, कान, पंख, चोंच आदि का उपयोग वर्णित है। उल्लू का बोलना भारी अपशकुन माना गया है। तंत्र में उल्लू का प्रयोग वशीकरण के लिए किया जाता है।

साधना के समय अनेक तांत्रिक उल्लू को अपने साथ रखते हैं। उसके द्वारा उन्हें घटनाओं का पूर्वाभास, भूत-प्रेत के दर्शन, सामने बैठे व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान हो जाता है। उल्लू का स्वर तांत्रिक समझने लगते हैं। तंत्र साधना में बतलाया गया है कि उल्लू का बायां पैर अभिमंत्रित करके जिसके भी घर में रख दोगे, उसके घर में कलह और धनहानि शुरू हो जाएगी।

बिल्ली

बिल्ली पारिवारिक प्राणी है। संसार भर में यह इसी रूप में स्थापित है। इसका केवल रास्ता काट जाना बड़ा अशुभ माना जाता है। तंत्र में बिल्ली का अति श्रेष्ठ स्थान है। तंत्र शास्त्रों में कहा गया है कि बिल्ली बच्चों को जन्म देते समय जो ''जेर'' बाहर करती है, वह जिसे मिल जाए, वह मालामाल और सदा सुखी हो जाता है। समस्या इसके प्राप्त होने की है। इसे प्रायः अनुपलब्ध बतलाया गया है। कारण यह है कि एक तो बिल्ली इसे तुरन्त खा जाती है।

फिर बिल्ली कब, कहां, कैसे बच्चे जन्म देती है, पता नहीं चलता। यहां तक कि पालतू बिल्ली भी बच्चे पैदा कर देती है और जेर का पता नहीं चलता। कब, कहां बच्चे दे बैठी, घर के लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं।

कुछ लोगों ने गर्भ धारण करने पर बिल्ली को पिंजरे में डाल दिया, उस पर सख्त पहरा लगा दिया। बिल्ली ने बच्चे जने और जेर बाहर आई, पर उस ओर हाथ बढ़ाते ही वह खूंखार हो उठी। फिर वह विद्युत गति से "जेर" खा बैठी है। तंत्र शास्त्र में बिल्ली की यह "जेर" महान ऐश्वर्य व सुखदायिनी मानी गई है। आजकल कुछ व्यवसायी लोग नकली "जेर" भी बेचते देखे गए हैं। उनसे बचें।

सियार

सियार का तो बड़ा महत्व है। "सियार सिंगी" तांत्रिक प्रयोग की विशिष्ट वस्तु है। इसको रखने वाला कभी दुर्घटनाग्रस्त नहीं होता है। सियार सिंगी की एक और विशेषता है कि सिंदूर में अगर इसको रख लिया जाए तो उसके बाल अपने आप बढ़ने लगते हैं। सियार सिंगी प्राप्त करने की विधि भी अनोखी है।

गांव देहात या जंगलों में रात को सियार सामूहिक रूप से "हुआं-हुआं" करते हैं। ऐसा करते समय उसकी गर्दन पर एक गांठ सी उठ आती है। एक विशेष जाति के लोग तीर चलाकर सियार को मार डालते हैं और उसी उभरी गांठ को काट लेते हैं। यही सियार सिंगी कहलाती है, जिसे पास रखने से व्यक्ति कभी दुर्घटनाग्रस्त नहीं होता है।

सर्प

सर्प शकुन-अपशकुन का विषय है। काला नाग यदि निद्रामग्न व्यक्ति के सिर पर अपना फन फैला दे तो यह योग "राजयोग" है। यानी वो आदमी राजा बनेगा। स्वप्न में भी सर्प दर्शन का अपना महत्व है। इसके दर्शन, पूजन के अनेक प्रकार के फल बताए गए हैं। काम मनोविज्ञान में यह "सैक्स" का सबसे बड़ा प्रतीक माना गया है। तंत्र शास्त्र के जनक भगवान शंकर का यह प्रिय आभूषण है। तंत्र शास्त्र में काला नाग जिसके फन पर "पदम चिन्ह" है, श्रेष्ठ माना गया है। सर्प तंत्र में सर्प के अनेक चमत्कारी प्रयोग हैं। मारण क्रिया में इसका प्रयोग किया जाता है। वैसे इसका विधान भी बड़ा टेढ़ा है, पर तंत्र में इसका प्रयोग किया जाता है।

तंत्र विज्ञान कहता है कि सर्प की केंचुल अगर अर्श से पीड़ित व्यक्ति

लंगोट में रखे तो वह रोग जड़ से दूर होता है। जिस बच्चे को बार-बार नजर लग जाती हो, अगर सर्प की केंचुल यंत्र में भरकर गले में डाल दी जाए तो बच्चा अनेक प्रकार की बाधाओं से बच जाता है।

कौआ

कौवे का भी तंत्र शास्त्र में अपना स्थान है। हमारे प्राचीन साहित्य में ऐसे लोगों का भी उल्लेख मिलता है, जिनको पक्षियों की भाषा का भी ज्ञान था। चिड़ियों और कौवों की बोली वह समझ जाया करते थे। उनसे वार्तालाप करते थे। यह असंभव बात नहीं है पशु-पक्षियों से भी उनकी भाषा में वार्तालाप संभव है। पश्चिम में इस संबंध में अनेक सफल प्रयोग हुए हैं। कौवा भी अपना स्थान तंत्र में रखता है, उसकी ''बीट'' का तांत्रिक उपयोग होता है। उसका रक्त ''अभिचार कर्म'' में प्रयुक्त होता है। कौए की आंख को निकालकर तंत्र स धनाओं में उसका उपयोग होता है।

कौओं को किसी के द्वारा पालतू नहीं बनाया जाता। वह ''चोर और बदमाश'' माना गया है। कौवे के पंखों से हवन होता है और उसकी भस्म मोहनीकरण के काम में आती है। कौवे का पंख किसी का अनिष्ट करने के लिए, आवारा बनाने के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। तंत्र शास्त्र में ''काक तंत्र'' नाम से एक अलग ही विधान है। कौवे का पंख और उल्लू का पंख दोनों बांधकर एक लाल कपड़े में लपेट कर रख देने पर कलह शुरू हो जाती है। यह क्रिया तंत्र शास्त्र में वर्णित है।

चमगादड़

चमगादड़ का भी तंत्र में प्रमुख स्थान है। इसके गले में मोती के समान छोटी सी गोल हड्डी होती है। इसे ''गुरिया'' कहा जाता है। बच्चे के गले में डालने पर अनेक प्रकार के रोग शांत हो जाते हैं। इस गुरिया को यंत्र की तरह कमर में धारण करने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं। स्त्री की कमर, पेडू की पीड़ा में लाभदायक होता है। गर्भपात भी नहीं होता। प्रसव के समय पीड़ा नहीं होती है। इसको पानी में घिसकर लेप करने से सिरदर्द शांत होता है।

छिपकली

छिपकली पारिवारिक प्राणी है। इसका गिरना अशुभ माना गया है। ''शकुन अपशकुन'' विज्ञान में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन है। छिपकली पतन को बड़ा महत्व दिया गया है, शायद इसी कारण तंत्र में छिपकली का अपना

स्थान बन गया है। छिपकली की दुम अगर आप काट दें तो कुछ समय बाद यह नई निकल आती है।

तंत्र में छिपकली की पूंछ के अनेक तांत्रिक प्रयोग बतलाए गए हैं। इसे सोने, चांदी, तांबा या अष्ट धातु के ताबीजों में भरकर बच्चों (शिशुओं) के गले में पहनाने से कई प्रकार के रोगों का निदान बतलाया गया है। इसकी पूछ वशीकरण, धनप्राप्ति आदि क्रियाओं में भी प्रयुक्त की जाती है। तंत्र में इसके नाना प्रकार के चमत्कारी प्रयोग बतलाए गए हैं। यह भी तंत्र का एक उपयोगी जीव माना गया है।

मयूर

मोर जहां सुंदरता में सर्वोपरि है, वहां हमारा राष्ट्रीय पक्षी भी है। मोर का भी तंत्र में प्रमुख स्थान है। इसकी सुन्दरता और उत्कृष्टता को देखकर ही हमारे पूर्वज तांत्रिकों ने इसका तंत्र में उपयोग किया है। तंत्र में उल्लेख मिलता है कि अगर इसके मस्तक की कलंगी को अपने पास रखा जाए तो रखने वाला व्यक्ति सब जगह सम्मान पाता है।

भेड़

इस निरीह प्राणी का हमारे तंत्र-शास्त्र में सर्वथा महत्व है। जहां एक ओर यह ऊन देकर सर्दी से हमारी रक्षा करती है, वहां दूसरी ओर अपने शरीर के अंगों से हमारी अनेक समस्याएं भी हल करती है।

तंत्र में कहा गया है कि जिस वृक्ष के नीचे भेड़ का सींग लटका दिया जाए तो उसके फल शीघ्र पकते हैं। और बहुत मीठे होते हैं।

खरगोश

यह बेहद सुंदर और भोला जीव है। बच्चे तो इसे बेहद प्यार करते हैं। तंत्र शास्त्र में खरगोश के अनेक उपयोग बतलाए गए हैं। तंत्र विज्ञान कहता है कि अगर खरगोश के दांत को ताबीज में भरकर विद्यार्थी अपने पास रखें तो स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

हुदहुद

— यह एक बहुत सुंदर पक्षी है। इसकी चोंच सामान्य, सिर पर मोर और मुर्गे के समान कलंगी होती है। तंत्र में उल्लू के बाद यह सबसे चर्चित पक्षी है। तंत्र शास्त्र में कहा गया है कि अगर इसके मस्तक को (कलंगी सहित)

सुखाकर कोई अपने पास ताबीज की तरह रखे तो उसकी स्मरण-शक्ति भी बढ़ती ही है, साथ ही वह सब जगह सम्मान भी पाता है।

— प्रतिदिन कड़वी नीम की पत्तियां चबाने से सर्प का विष चढ़ने का भय नहीं रहता।

— चैत्र मास की मेष संक्रांति में मसूर की दाल के साथ नीम की पत्तियों को खाने से एक वर्ष तक विषैले-से-विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

— नीम की निम्बोली पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

— नींबू की मूल, चावल के पानी से गर्भवती औरत को पिलावें तो जिसके पुत्र होता हो, उसके पुत्री होगी।

— अगर कोई स्त्री, पुरुष राई मन्त्रित कर छुपके से मकान में फेंकता हो या कोई अन्य टोटका करता हो, ऐसी अवस्था में जिस व्यक्ति को आपने टोना-टोटका करते हुए देख लिया हो उससे अपने मकान के मुख्य द्वार की देहली सात बार कटवा लें तो उसके द्वारा किये गए टोने-टोटके स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं।

— बच्चों को उलटी व दस्त हों तो रविवार को बच्चे के सिर पर से गेहूं का आटा 21 बार उवारें व एक पानी का लोटा भी सात बार उवारें। घर के बाहर कहीं भी कैसी भी हड्डी पड़ी हो, उसके ऊपर वह आटा डालकर लोटे के पानी से हड्डी के चारों ओर डाल दें। अगर इससे भी सुधार न हो तो दिन में तीन बार यह क्रिया करें, लाभ होगा।

— अगर किसी के पशु को नजर लग गयी हो तो गाय व भैंस के गले में तीन कौड़ी, एक लोहे का छल्ला, मौली या लाल रेशम के धागे में पिरोकर डाल दें। नजर तुरन्त उतर जायेगी।

— झाड़ू को हाथ में लेकर मन ही मन संभाव्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करें और नजर लगे व्यक्ति पर से झाड़ू उतारें, झाड़ू की दो-तीन-चार सींकें तोड़कर उसे दूर फ़ेंक दें।

— दोपहर में जहां गदहा लोटा हो, वहां की धूल पूर्व या पश्चिम मुख होकर बायें हाथ से उठा लेवें, तत्पश्चात् सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंकें तो उच्चाटन होता हैं।

— शनि अधिक खतरनाक हो तो शनि के मन्दिर जावें, तेल दान करें। शनिवार को पीपल में जल सींचकर 7 परिक्रमा देवें। जल में थोड़े से काले तिल डालें। ऐसा करने पर शनिदेव प्रसन्न हो जाते हैं।

— शनि की साढ़ेसाती, ढैया व दशा के प्रभाव से बचने के लिए प्रति

शनिवार सूर्यास्त के समय कीड़ीनगरा सींचें तो आशातीत सफलता मिले।

— काले घोड़े के नाल की अंगूठी शनि पुष्य को बनाकर पहनें, इससे बहुत शान्ति मिलती है तथा बाधा दूर होकर कार्य में सफलता मिलती है।

— शनि के दिन पानी वाले नारियल की जटा उतारकर उसके छेद में यथासम्भव देसी शक्कर भर दें। तत्पश्चात् सायंकाल के समय काले वस्त्र से उस नारियल को ढक कर बिना टोके व बोले, कीड़ीनगरा वृक्ष के स्थान पर जाकर नारियल को इस प्रकार गाड़ें कि अन्य पशु व पक्षी इसे न खा सकें। इस प्रकार जातक का भला हो जाता है।

— सर्प की रीढ़ की हड्डी पुष्य नक्षत्र में लाकर उसे अभिमंत्रित कर पाउडर बनाकर घर में बिखेर दें, रात्रि को बहुत से सांप दीखेंगे, किरायेदार मकान छोड़कर चला जायेगा।

— आप जहां भी बैठे हों, 27 का अंक अंगुली से शून्य अंग पर लिख दीजिए। पांवों की शून्यता नष्ट हो जायेगी।

— अगर मंगल और बुध इकट्ठे हों और बहिन के स्वास्थ्य आदि पर अशुभ प्रभाव पड़ रहा हो तो मंगल से सम्बन्धित वस्तुएं, जैसे खांड, सौंफ आदि किसी सुराही में भरकर बाहर वीराने में दबा दें।

— जब तक विशेष रूप से आदेश न हो, तब उपाय दिन के समय ही करने चाहिए।

— असाध्य रोग होने पर काले बैंगन का साग तेल में करके, तेल में ही तली हुई तीन पूड़ियां व्यक्ति पर सात बार न्यौछावर करके गरीब को खिला दें।

— काले तिल, जौ का पीसा हुआ आटा और तेल मिश्रित एक रोट पकावें, फिर उस पर तेल मिश्रित गुड़ चुपड़कर व्यक्ति पर सात बार उवारकर काले भैंसे को खिलावें।

— श्रावण मास में प्रतिदिन 108 बिल्व पत्रों पर सफेद चंदन लगा कर इसे महादेव पर चढ़ावें। 31 दिन का यह प्रयोग है। इससे धन-धान्य व लक्ष्मी बढ़ती है। रोग व बाधा की निवृत्ति होती है।

— यदि कोई पुरुष कौवे और कौवी का समागम देख ले, तो छः मास में उसकी मृत्यु हो जाती है। इस दोष से बचने के लिए यदि व्यक्ति अपनी मौत की झूठी खबर ससुराल भेज देता है तो उसका बचाव हो जाता है अथवा शिवजी के मंदिर में जाकर सफेद नमक की डली से कौवे की आकृति बनाकर चुपचाप लौट आवे। पीछे मुड़कर न देखे

तो दोष का निवारण हो जाता है। वे दोनों बातें अनुभूत व सत्य हैं।

– पति की आयुवृद्धि के लिए व तलाक को रोकने के लिए पुष्य नक्षत्र में अभिषेक कराकर पत्नी पुखराज धारण करे।

– पुरुष को पुखराज की अंगूटी सम रत्ती की पहनावें। साथ ही सप्तमेश का रत्न धारण करावें। अगर सप्तमेश गुरू का शत्रु ग्रह हो तो पुखराज को वाम हाथ में और सप्तमेश को दाहिने हाथ में धारण करें। चैत्र मास की अमावस्या से 13 अमावस्या तक उपवास करें और दूध या उसकी मिठाई ब्राह्मण को खिलावें। कार्य-सिद्धि होने पर 21 ब्राह्मणों को भोजन करावें।

– ऐसी मान्यता है कि पंचक में मरने पर पांच जनों की मृत्यु होती है। अतः किसी की मृत्यु पंचक में हो तो शेष पंचकों की संख्यानुसार पुतले बनाकर शव के साथ जला दें।

– किसी की पंचक में कन्या हो तो शेष पंचकों की पुतलियां बनाकर झोली में उसके साथ झुलावें और नामकरण के दिन उनके भी कोई-न-कोई नाम देकर उन्हें पीपल के समीप भूमि में गाड़ दें। क्योंकि पंचकों में कन्या होने पर 5 कन्यायें होती हैं।

– किसी के प्रथम कन्या हो जाये और आगे भी कन्या होने का भय हो तो उसके आगे कन्या न जन्मे, इसलिए कन्या के नामकरण के दिन उसका पूजन कर उसके चरणों में नमस्कार कर प्रार्थना करें और बन्धुओं को खीर-जलेबी का भोजन करावें तो कन्या के पश्चात् पुत्र ही होवें।

– अगर संतान रात को रोती हो और दिन को शान्त रहती हो तो उसे दूर करने के लिए दिन को दीपक जलाकर उसकी माता सड़क पर कुछ खोजती हो, ऐसा अभिनय करें। तब संतान का रात का रोना बन्द हो जाता है।

– शिशु को दस्त और उलटियां होती हैं, वह मां के स्तन के दूध का दमन करता रहता है। तब सात कागज की पुड़ियों में थोड़ी थोड़ी गुलाल डालकर बांधें और सात खाली बांधें। फिर पानी भरकर एक लोटा उस शिशु पर सात बार उतारकर घर के बाहर चुपचाप जाकर घर के बायीं तरफ सड़क पर पुड़िया फूंक से उड़ा दें और पानी बाहर चबूतरे पर गिरा दें।

– शिशु अगर बार-बार चौंक उठता हो तो चौराहे पर दीवा रखें अर्थात् चार बत्तियां रूई की डालकर चुपचाप चौरास्ते जावें। पानी के लोटे में कुंकुम डालकर बच्चे पर सात बार उतारकर साथ ले जावें और पहले दीया रखकर उसे जला दें। फिर उसके चारों तरफ गोल पानी का कुंडाला करके घर लौटें। चमक चली जायेगी।

— तीन लड़कों पर अगर लड़की उत्पन्न हो या तीन लड़कियों पर लड़का पैदा हो तो इससे घर में कोई न कोई उपद्रव, शारीरिक, मानसिक व आर्थिक क्षति होने की संभावना मानी जाती है। अतः तीन पुत्र हों तो चौथा भाई राखी बांधकर बनाया जाता है व चौथी बहिन धर्म की बनाई जाती है। इससे यह दोष मिट जाता है।

— थाली के नीचे पानी का त्रिकोण बनाकर उस भोजन की थाली रखने से नजर नहीं लगती है।

— भोज के समय मिठाई के मध्य एक कोयला रख देने से रसोई पर नजर नहीं बैठती है।

— भोजन के लिए बनी सामग्री अगर वस्त्र से ढकी रहे तो जब तक सभी निमंत्रित भोजन न कर जावें, तब तक रसोई समाप्त नहीं होती है।

— मूल, जेष्ठा, मघा, आश्लेषा नक्षत्रों में जन्म होने पर 27वें दिन 27 औषधियों व 27 प्रकार के जलों को एकत्र कर उस पानी से बालक व बालक के माता-पिता को अभिषेक कराने से नक्षत्र दोषोद्रव उत्पात की संभावना समाप्त हो जाती है।

— छायादान करने से शान्ति होती है। कांसे के कटोरे में तेल व द्रव्य डालकर उसमें बालक व उसके माता-पिता का मुख दिखाकर किसी देवालय में दान करने से दोष शान्त हो जाते हैं।

अगर बालक जन्म-जन्म कर मर जाते हों, तो उसे बचाने के लिए निम्न टोटके हैं—

(1) बालक को जन्म नाम से न पुकारें।

(2) बालक का लाड़-प्यार स्वयं नये कपड़े सिलाकर न करें और 5 वर्ष तक मांगकर कपड़े पहनावें।

(3) शुक्र के दिन चना और गुड़ व खट्टी-मिट्ठी गोलियां मिलाकर उन भुने हुये चने को बालकों में बांटें।

— गुरूवार के दिन सूर्यादय से पहले बुधवार को लड्डू लाकर व्यक्ति पर सात बार उतारकर रख दें और घर का कोई सदस्य जल्दी उठकर उन लड्डुओं को गायों को खिलावे। शुक्रवार के दिन गरीबों को चना और गुड़ बांटें।

— हर रविवार को लाल वस्तु का दान करें। नित्य सरस्वती का ध्यान करें। मंगल और शनि के दिन महादेव का पूजन करें। विद्या अध्ययन में आयी बाधा समाप्त होगी।

— केसर, चंदन, जायफल, जावित्री, गोरोचन—इन पांचों चीजों का मिश्रण

कर स्याही बनाकर अनार की कलम से, कांसे की थाली में गायत्री मंत्र लिखकर उसे प्रसव कष्ट से पीड़ित प्रसूता को दिखाया जाये, फिर पानी से धोकर वह पानी उसे पिला दिया जाये। ऐसा करने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

— गर्भिणी स्त्री की कमर में लाजावर्त धारण कराने से गर्भ की रक्षा होती है। प्रसवकाल में प्रसव-पीड़ा से मूर्छित गर्भिणी स्त्री के सिर पर पत्थर चट्टा की मूल को रखने से बिना दर्द के प्रसव करने में समर्थ हो जाती है।

— नीम, कुटकी, हरड़, बलागंगेरन, अमोघा, गेंदा, सफेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावर—इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकायें और दाहिने कान तथा दाहिने हाथ में धारण करें और सिद्ध किये हुये दूध-घी का सेवन करें तथा इन्हीं से औटाये हुये जल में प्रत्येक पुष्य-नक्षत्र में स्नान करें, तो गर्भ स्थिर हो जाता है।

— मिट्टी के दिये को दहकती आग पर इतना तपायें कि वह लाल हो जाये। इस लाल दिये पर गाय की बछिया का मूत्र इस प्रकार छिड़कें कि धीरे-धीरे मूत्र की वाष्प निकले। नेत्र रोगी को दिये के पास इस प्रकार बैठा लें कि उसकी वाष्प का प्रभाव उस पर पड़े। इस प्रकार उसके रोग नष्ट हो जायेंगे।

— नेत्र-पीड़ा पर, जिस नेत्र में पीड़ा हो, उसके विपरीत पैर के अंगूठे पर आक के दूध से तर फाया रखें। अगर दोनों नेत्रों में कड़क, चुभन तथा पानी आदि बह रहा हो तो दोनों ही अंगूठों पर फाया रखें। लाभ होगा।

— लोहे का छल्ला बायें और दायें दोनों हाथ की अंगुली में धारण करने से पथरी रोग दूर होने लगता है।





तांत्रिक बहल

महाशक्तिशाली टोने-टोटके और उपाय

आज का युग कर युग है। प्रत्येक व्यक्ति भागमभाग, व्यस्तता व आपाधापी में रहता है तनाव उसे चारों तरफ से घेरे रहता है। उसके जीवन में समस्याओं व आपदाओं की अधिकता है। वह अदृश्य बाधाओं, गुप्त शक्तिओं, ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव से ग्रसित है।

ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं एवं आपदाओं की सरल ढंग से मुक्ति तंत्र मार्ग से सम्भव हैं। तंत्र विज्ञान में मनुष्यों की समस्याओं का निदान बेहद सरल रूप में है।

लोगों का कहना है कि टोने-टोटकों में गुप्त शक्ति होती है, जो लोगों की समस्याओं एवं आपदाओं का निवारण करती है। किंतु ये गुप्त शक्तियां किस प्रकार कार्य करती हैं, किस क्षेत्र तथा किस सीमा तक ये शक्तियां उपयोगी है, इन टोटकों से क्या, कैसे और कब संभव है इसकी जानकारी दुर्लभ है।

टोने-टोटके क्या हैं? इनको कैसे, कब व कहां उपयोग किया जा सकता है? किस प्रकार इनके सहयोग से लाभ प्राप्त किया जा सकता है? क्या इनके प्रयोग से कोई हानि भी हो सकती है? आदि अन्य अनेकों प्रश्नों का उत्तर यह पुस्तक प्रदान करती है।



साथ ही जीवन में हर मोड़ पर, हर समय काम आने वाले अन्य अनेकों अद्भुत महाशक्तिशाली टोने-टोटके एवं उपायों को भी इस पुस्तक में समाहित किया गया है।

मानव समाज के हित के लिये तांत्रिक बहल के जीवन क्षेत्र के अनुभवों का निचोड़-रूपी जनउपयोगी व अनूठी पुस्तक जो किसी वरदान से कम नहीं है।

A.H.W. RAJAT SERIES I.S.B.N. 978-81-7718-371-9



रजत प्रकाशन 100/-